स्थान-नामः समय के साक्षी

(ललितपुर जनपद के संदर्भ में)

डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी

जानकी प्रकाशन

जानकी प्रसाद स्मृति सेवा समिति

ग्राम छिल्ला (बानपुर) जिला ललितपुर (उत्तर प्रदेश)-284402 भारत

प्रकाशक : जानकी प्रसाद स्मृति सेवा समिति ग्राम छिल्ला (बानपुर) जिला ललितपुर (उत्तर प्रदेश)-284402 के लिए पं. बाबूलाल द्विवेदी द्वारा प्रकाशित मोबाइल नं. 9838303690
ई मेल rn_dwivedi@yahoo.co.in

© : प्रकाशक

प्रकाशन वर्ष : 2012
पहला संस्करण

मूल्य : चार सौ पचास रुपए मात्र

मार्गदर्शन : श्री युत् जुगुल किशोर, अपर पुलिस अधीक्षक उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद ई मेल kishore_jugul@yahoo.com

मुद्रक : अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-110 032
e-mail : arpitprinto@yahoo.com

ISBN 978-81-908912-2-6

STHAN-NAAM : SAMAY KE SAKSHI
(Lalitpur Janpad ke Sandarbh Men)
by Dr. Rakesh Narayan Dwivedi

मानव की उस उच्चतर चेतना को समर्पित;
जिसने स्थान-नामों का न केवल नामकरण किया,
अपितु उन्हें सामूहिक रूप में संस्वीकृत भी किया।

निवेदन

मुझे बाल्यकाल से ही स्वाभाविक जिज्ञासा तथा पारिवारिक परिवेश के कारण तरह-तरह के शब्दों के वैयुत्पत्तिक अर्थ जानने की इच्छा होती थी। शिक्षा के उच्चतर विकास के साथ-साथ अनेक शब्दों की मेरी अर्थ-जिज्ञासा पूरी होती चली गई, किंतु स्थान-नामों को जानने-समझने की इच्छा पूरी न हो सकी। प्रस्तुत अध्ययन इसी की प्रतिपूर्ति हेतु किया गया नैष्ठिक परिणाम है।

स्थान-नाम-अध्ययन (Toponymy or Toponomastics) स्थान-नामों का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह नाम-विज्ञान (Onomastics), जिसमें सब प्रकार के नामों का अध्ययन किया जाता है, की एक मुख्य शाखा है। यह व्युत्पत्तिशास्त्र (Etymology), जिसमें शब्दार्थ के उद्भव एवं विकास का अध्ययन होता है, से संबंधित तो है पर उससे अपना पृथक अस्तित्व रखता है। नाम-विज्ञान की एक अन्य शाखा व्यक्ति-नाम विज्ञान (Anthroponomastics) है।

स्थान-नामों के अध्ययन की परंपरा—सर्वप्रथम विदेशों में स्थान-नामों का अध्ययन प्रारंभ हुआ। अंग्रेजी भाषा में 1876 ई. में स्थान-नामों के अध्ययन को 'टोपोनिमी' अभिहित किया गया। हमारे देश में यह अध्ययन भाषा-विज्ञान के अंतर्गत ही आगे बढ़ा, जबकि नाम-विज्ञान अतिभाषिकीय अध्ययन की मांग रखता है। रायबहादुर हीरालाल ने 1917 ई. में 'मध्य प्रदेश के भौगोलिक नाम', डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने 1926 ई. में तथा श्रीकृष्णपाद गोस्वामी ने 1946 ई. में बंगाल के स्थान-नामों पर काम किया। अन्यत्र भी यह काम कुछ स्फुट लेखों तक ही सीमित रहा। 1936 ई. में डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने 'अवध जिलों के नाम' में हिंदी प्रदेश के स्थान-नामों की व्यवस्थित शुरूआत की। 1963 ई. में डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने पाणिनिकालीन स्थानों के नामों पर समीक्षात्मक प्रकाश डाला है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने भाषाविज्ञान संबंधी पुस्तकों में यथाप्रसंग नाम-विज्ञान पर अध्ययन-संकेत किए हैं, जबकि डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया ने अपनी 'शब्द श्री' तथा 'भाषा-

भूगोल' पुस्तकों में पर्याप्त विस्तार से इस विषय पर प्रकाश डाला है।

स्थान-नामों पर अप्रकाशित शोध-कार्य—1964 ई. में लक्ष्मीनारायण शर्मा द्वारा आगरा नगर के मुहल्ला-नामों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन एम.ए. भाषा विज्ञान परीक्षा के निबंध के रूप में प्रस्तुत हुआ। डॉ. श्रीप्रकाश कुर्ल द्वारा आगरा विद्यापीठ से पी-एच डी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध Socio-Linguistic Study of Place Names of Saharanpur District 1965 ई. में स्वीकृत हुआ। आगरा विश्वविद्यालय से डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा का पी-एच डी शोध-प्रबंध 1967 ई. में 'ब्रज के स्थान-अभिधानों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन' स्वीकृत हुआ। 1972 ई. में उज्जैन विश्वविद्यालय से 'जालौन जनपद के संदर्भ में स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन' विषय पर डॉ. यामिनी का शोध-प्रबंध स्वीकृत हुआ। वाराणसी के स्थान-नामों का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन डॉ. सरित किशोरी श्रीवास्तव ने काशी हिंदू वि.वि. से 1974 ई में पूरा किया। जिला रायपुर और दुर्ग के स्थान-नामों पर रायपुर वि.वि. से 1976 ई में डॉ. नारायणसिंह साहू ने पी-एच.डी शोध-कार्य किया। सागर वि.वि. से डॉ. रामप्रकाश गुप्त ने 'बांदा जिले के स्थान-नामों का समाज भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' 1979 ई में पूरा किया। मेरठ वि.वि. से 1981 ई में डॉ. राममेहर सिंह वाजपेई का शोध प्रबंध 'मेरठ जिले के स्थान-नामों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन' स्वीकृत हुआ। 1989 ई में डॉ. सुशील कुमार पांडेय का कानपुर विश्वविद्यालय से पी-एच डी उपाधि हेतु शोध-प्रबंध 'जनपद कानपुर के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' स्वीकृत हुआ। अन्य जनपदों के स्थान-नामों पर भी शोध-कार्य हुए हैं, जैसे इलाहाबाद (उमाशंकर त्रिपाठी), बदायूं (अवधेश कुमार पाठक), बिजनौर (शुभा माहेश्वर), भिंड (अरविंद कुमार), मंडला (प्रतापसिंह), सागर (मंजुलता), सोनीपत (आनंद कुमार), कन्नौजी (सरोजिनी देवी), चंबल (मासूम अहमद), टिहरी (महावीर प्रसाद), पीलीभीत (सविता), बरेली (ममता) इत्यादि।

प्रकाशित शोध-कार्य—हिंदी भाषा में स्थान-नामों पर किए गए शोध-प्रबंधात्मक अध्ययनों में सर्वप्रथम डॉ. उषा चौधरी का 'मुरादाबाद जिले के स्थान-नामों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन' नंदन प्रकाशन लखनऊ से 1970 ई. (स्वीकृत 1968) में प्रकाशित हुआ। इसके बाद डॉ. सरयूप्रसाद अग्रवाल का 1973 ई. (स्वीकृत 1965) में 'अवध के स्थान-नामों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन' हिंदी समिति लखनऊ से तथा 1983 ई (स्वीकृत 1979) में डॉ. कामिनी का 'दतिया जिले के ग्राम-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन नाम से आराधना ब्रदर्स कानपुर से प्रकाशित हुए। इन्हीं का डी.लिट्.

शोध-प्रबंध 'बुंदेली-भाषी-क्षेत्र के स्थान-अभिधानों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन 1985 ई. में प्रकाशित हुआ। लगभग इसी समय छत्तीसगढ़ के अभिलेखीय नामों को केंद्र में रखकर किया गया डॉ. चितरंजन कर का पी-एच डी शोध प्रबंध 1982 ई. में 'नाम विज्ञान' नाम से विवेक प्रकाशन रायपुर से प्रकाशित हुआ। छत्तीसगढ़ी स्थान-नामों पर डॉ. विनयकुमार पाठक ने रायपुर वि.वि. से 1979 ई. में अपना शोध-कार्य किया, जो सन् 2000 ई. में प्रकाशित हुआ।

आवश्यकता—हिन्दी में स्थान-नामों पर हुए अब तक के कार्यों के परिचय को इस 'निवेदन' में प्रस्तुत करना संभव हो गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि हिंदी में इस दिशा में कितना कम कार्य हुआ। यद्यपि बोलियों की दृष्टि से स्थान-नामों के अध्ययन का सूत्रपात पूर्वी तथा पश्चिमी हिंदी की सभी प्रमुख बोलियों- अवधी, छत्तीसगढ़ी, खड़ी बोली, ब्रज तथा बुंदेली में हो गया है किंतु ललितपुर जनपद के स्थान-नामों को आधार बनाकर कोई अध्ययन प्रस्तुत नहीं हुआ है। बहुत से स्थान-नाम बोली या भाषा भेद लिए हुए समान तो होते हैं, किंतु स्थानीयता का योग उन्हें विशिष्ट बना देता है। उनमें निहित संकेत-सूत्रों को उद्‌घाटित करने की दृष्टि से अधिकाधिक स्थान-नामों का अध्ययन आवश्यक है।

महत्व—किसी स्थान-विशेष की पहचान कराने में प्रयुक्त शब्द स्थान-नाम (Toponym) कहलाते हैं। स्थान की संरचना प्राकृतिक होती है, किंतु मानव सभ्यता के विकास की विशिष्टता का योग भी उसमें रहता है। जिस प्रकार शरीर के किसी अंग-विशेष को पृथक चिन्हित करने के लिए उसका नामकरण किया जाता है, उसी प्रकार किसी क्षेत्र के पृथकत्व-बोध के लिए उसका स्थान-नाम रखा जाता है। यह एक सांस्कृतिक आवश्यकता है। स्थानों का नामकरण मानव सभ्यता के विकास का एक महत्वपूर्ण सोपान है। स्थान-नाम अपने समय के मूक साक्षी होते हैं। अत: स्थान-नामों के अध्ययन से क्षेत्र-विशेष की मानव सभ्यता के बहुत से दिलचस्प और उपयोगी पहलुओं को अनावृत किया जा सकता है, जो कदाचित् किसी अन्यथा प्रकार से ज्ञात न हो पाएं। इसीलिए कहा गया है स्थान-नाम इतिहास की पादटिप्पणी (Footnotes of History) और पुरातत्व के जीवाश्म (Fossils of Archaeology) हैं। यह व्यक्तियों के वास्तविक संभाषण के महत्वपूर्ण प्रतिनिधि हैं। भाषा जहां अपने वाक्य, रूप, अर्थ, ध्वनि आदि स्तरों पर परिवर्तनशील रहती है, वहां स्थान-नाम बहुधा सांस्कृतिक आवश्यकता के कारण इन भाषाई परिवर्तनों से असंपृक्त रहते हैं।

भाषा विज्ञान, मानव विज्ञान, भूगोल, नृ-जाति विज्ञान, समाज, राजनीति, अर्थ, इतिहास, संस्कृति, पर्यावरण, पुरातत्व, मिथक-शास्त्र, वर्णन-शास्त्र, सूक्ति-शास्त्र इत्यादि विषयों का अध्ययन स्थान-नामों के बिना अपूर्ण रह जाता है। स्थान-नामों

के अध्ययन से उनकी अर्थ-व्याख्या एवं मूल व्युत्पत्ति ज्ञात की जा सकती है। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में स्थान-नाम अंतर्विषयी अध्ययन की मांग करते हैं। इसीलिए भाषा-विज्ञान की दृष्टि से किए गए इस अध्ययन को संपन्न करने में लेखक को अतिभाषिक एवं भाषेतर क्षेत्रों में उतरना पड़ा है। स्थान-नाम विज्ञानी किसी कवि या कहानीकार की भांति होता है, जो किसी विशिष्ट स्थान की उत्पत्ति नाम-सौंदर्य के साथ सुनाता है। इस नाम-सौंदर्य का आस्वाद किसी काव्य अथवा कथा-रस से कम नहीं होता।

ललितपुर जनपद के स्थान-नामों को केंद्र में रखकर किए गए इस अध्ययन से यहां की सामाजिक पद्धतियों, रीति-रिवाज, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं, नैतिक मर्यादाओं, सौंदर्य बोध, जातीय इतिहास एवं परिवर्तित सामाजिक दृष्टिकोण को समझने में सहायता मिल सकती है।

इस शोध-कार्य की आधार-सामग्री ललितपुर जनपद के 697 आबाद ग्राम तथा 57 गैर आबाद ग्रामों के अतिरिक्त जनपद के चारों नगर क्षेत्रों और उनके कुछ मुहल्लों के नाम हैं। इनकी सूची पुस्तक के परिशिष्ट भाग में दी गई है। यह स्थान-नाम राजस्व अभिलेखों, मतदाता सूचियों, जनगणना विभाग की वेबसाइटों एवं ग्रामों तथा जनपद भ्रमण के दौरान प्राप्त हुए हैं। जनपद में 24 वन ग्राम भी हैं, किंतु वह आबाद ग्रामों के नामों से भिन्न नहीं हैं।

इस अध्ययन को सात अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है। प्रथम अध्याय में ललितपुर जनपद की भौगोलिक स्थिति, मृदा, जलवायु आदि का विवरण है। सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक परंपरा, राजनैतिक परिवर्तन तथा ललितपुर जनपद की बोली का सामान्य परिचय इस अध्याय में वर्णित है।

द्वितीय अध्याय में स्थान-नामों में प्रयुक्त शब्दावली का विवेचन रूप-रचनात्मक स्तर पर हुआ है। रूप और अर्थ का संगठन, अक्षर-संगठन, स्थान-नामों में प्रयुक्त उपसर्ग, प्रत्यय तथा विभेदक एवं एकपदीय, द्विपदीय, बहुपदीय तथा वाक्यांशमूलक स्थान-नामों का विश्लेषण भी इस अध्याय में हुआ है।

तृतीय अध्याय में स्थान-नामों में प्रयुक्त शब्दावली को तत्सम, तद्भव, देशज तथा विदेशी शब्दावली में वर्गीकृत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में स्थान-नामों का अर्थतात्विक विश्लेषण हुआ है; जिसमें वैदिक, रामायण, गोंड़, महाभारत, पौराणिक, बुद्ध, हर्ष, चंदेल एवं बुंदेलकालीन संदर्भ प्राप्त हुए हैं।

पंचम अध्याय में स्थान-नामों के ध्वनिगत परिवर्तनों को रेखांकित किया गया है।

षष्ठ अध्याय में स्थान-नामों का भाषा-भौगोलिक वितरण के कोण से अध्ययन किया गया है, जिसमें प्रमुख पूर्वपद, परपद, प्रत्यय एवं विभेदकयुक्त स्थान-नामों का वर्गीकरण किया गया है।

सप्तम् अध्याय उपसंहार है, जिसमें अध्ययन की स्थापनाओं एवं इसके विविध आयामों को उद्घाटित करने के साथ-साथ शोध-समाहार किया गया है।

पुस्तक के परिशिष्ट भाग में जनसंख्या एवं क्षेत्रफल के आंकड़ों के साथ जिले के स्थान-नामों की वर्णक्रमानुसार सूची, प्रमुख प्रत्यय, उपसर्ग, परपद तथा विभेदकों की तालिकाएं दी गई हैं।

प्रस्तुत अध्ययन संपन्न करने में मुझे जिन पुस्तकों, विद्वानों, वेबसाइटों का जाने-अनजाने सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सबके प्रति मैं आभारी हूं। पारिवारिक सहयोगियों में पूज्य-द्वय - पिताश्री पं. बाबूलाल द्विवेदी एवं 'भैया' श्री जुगुल किशोर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक- के प्रति सर्वदा मेरे मन में कृतज्ञ-भाव रहा करता है। मुझे उनका आशीर्वाद ही नहीं, सक्रिय सहयोग भी मिला है। आदरणीय श्री अरविंद नायक एडवोकेट महरौनी को उनके द्वारा किए गए सहयोग-संकेतों के लिए आभारी हूं। जीवनसंगिनी श्रीमती किरन एवं आयुष्मती पीयूषान्विति को लेखनानुकूल वातावरण बनाए रखने के लिए साधुवाद, क्योंकि मैंने उनके हिस्से का समय इस कार्य को पूरा करने के लिए लिया है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली - पत्रांक एफ 6-2(6)/2008 (एमआरपी/एनआरसीबी) दिनांक 1 दिसंबर, 2008 - के सहयोग से किए गए शोध-कार्य के परिणामस्वरूप पूरी हुई यह पुस्तक भाषा-विज्ञान के विद्वानों एवं सुधी पाठकों के बीच पहुंचकर स्थान-नामों के माध्यम से संबंधित समाज एवं संस्कृति को समझने में तनिक भी उपयोगी हुई तो मेरा यह प्रयास सार्थक होगा।

'शब्दार्णव', उरई

राकेश नारायण द्विवेदी

विषयानुक्रम

निवेदन 5

अध्याय – 1 : जनपद ललितपुर: एक विहगावलोकन 13

जलवायु, वर्षा, मृदा, भूतल मानचित्रण, फसलें, उद्योग-धंधे, नामकरण, इतिहास, राजनैतिक चेतना, लोकगीत एवं लोकनृत्य, चित्रकला, पर्यटन स्थल, प्रशासनिक गठन, बैंकिंग व्यापार एवं वाणिज्य, मुद्रा एवं सिक्के, व्यापारिक मार्ग, मेला, मूल्य नियंत्रण एवं राशनिंग, यातायात एवं संचार, जनसंख्या एवं उसकी वृद्धि, जनसंख्या की सघनता, लिंग अनुपात, जनसंख्या के अनुसार ग्रामों का वर्गीकरण, भाषा, साहित्यकार, धर्म और जाति, प्रमुख समुदाय, धार्मिक विश्वास एवं प्रथाएं, सामाजिक जीवन, वेश-भूषा, स्थापत्य कला, राज्य विधानसभा एवं लोकसभा में जिले का प्रतिनिधित्व, चिकित्सा, शिक्षा

अध्याय – 2 : रूप रचना की दृष्टि से स्थान-नामों का विवेचन 81

लोकमाताओं पर आधारित स्थान-नाम, स्थान-नामिक प्राचीनता, स्थान-नामों का उद्गम एवं विकास, नाम: स्वरूप-निर्वचन, स्थान-नामों में प्रत्यय, स्थान-नामों में विभेदक पद, स्थान-नामों में उपसर्ग, स्थान-नामों में सामासिकता, स्थान-नामों में संधि, समासों में ध्वनि-परिवर्तन, बहुपदीय रचना पर आधारित स्थान-नाम, स्थान-नामों के पूर्वरूप, पूर्वपदों के विविध रूप, स्थान-नामों का वर्गीकरण-ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, सामान्य एवं विशिष्ट, स्थान-नामों में अक्षर-संगठन, पद रचना – (क) मौलिक या अयौगिक, (ख) यौगिक (ग) योगरूढ़, स्थान-नामों की रूप रचनात्मक कोटियां 1. एकपदीय स्थान-नाम 2. द्विपदीय स्थान-नाम 3. बहुपदीय स्थान-नाम 4. वाक्यांश मूलक स्थान-नाम।

अध्याय – 3 : स्थान-नामों में प्रयुक्त शब्दावली 132

1. स्थान-नामों में तत्सम शब्द 2. स्थान-नामों में अर्ध तत्सम शब्द

3. स्थान-नामों में तद्भव शब्द 4. स्थान-नामों में देशज शब्द
5. स्थान-नामों में ध्वन्यात्मक शब्द 6. स्थान-नामों में विदेशी शब्द
7. स्थान-नामों में स्थानीय शब्द 8. स्थान-नामों में संकर शब्द

अध्याय - 4 : स्थान-नामों का अर्थतात्विक आधार 152

1. ऐतिहासिक आधार 2. राजनीतिक आधार
3. सामाजिक आधार 4. सांस्कृतिक आधार
5. धार्मिक आधार 6. प्राकृतिक आधार

अध्याय - 5 : स्थान-नामों का भाषा एवं ध्वनि संबंधी विवेचन 185

स्थानीय भाषागत विशिष्टताएं-1. सानुनासिक प्रयोग 2. अल्पप्राणीकरण 3. महाप्राणीकरण 4. ओकारांत प्रवृत्ति 5. 'ह' कार लोप की प्रवृत्ति 6. 'र' कार लोप की प्रवृत्ति 7. स्वर संबंधी परिवर्तन 8. व्यंजन संबंधी परिवर्तन 9. स्थान-नामों के लिखित व उच्चरित रूपों में अंतर 10. व्याकरणिक रूपरेखा 11. स्थान-नामों से संबंधित लोकोक्तियां 12. स्थान-नामों की आक्षरिक संख्या

अध्याय - 6 : स्थान-नामों का भाषा-भौगोलिक विवेचन 205

(क) पूर्वपदों वाला भूभाग (ख) परपदों वाला भूभाग
(ग) विभेदकों वाला भूभाग (घ) प्रत्ययों वाला भूभाग

अध्याय - 7 : उपसंहार 217

स्थापना एवं निष्कर्ष

परिशिष्ट 223

एक - ललितपुर जनपद के स्थान-नामों की सूची
दो - स्थान-नामों में प्रयुक्त उपसर्ग, पूर्वपद, परपद एवं विभेदक पद

संदर्भ-स्रोत सूची 252

अध्याय - 1

जनपद ललितपुरः एक विहगावलोकन

बुंदेलखंड भारतवर्ष का हृदयस्थल है, किंतु ललितपुर जनपद बुंदेलखंड का हृदयस्थल ही नहीं, हृदयाकृति का भी जनपद है। यह जनपद 24.11 डिग्री से 25.13 डिग्री (उत्तर) अक्षांश पर तथा 78.11 डिग्री से 79.00 डिग्री देशांतर रेखाओं के मध्य में स्थित है। इस जनपद के उत्तर में उत्तर प्रदेश का झांसी जिला, दक्षिण में मध्य प्रदेश का सागर जिला, पूर्व में म.प्र. के टीकमगढ़ एवं छतरपुर जिले तथा पश्चिम में म.प्र. के ही शिवपुरी एवं अशोकनगर जिले स्थित हैं। इस प्रकार यह तीन ओर से मध्य प्रदेश से घिरा हुआ है। बेतवा नदी इसकी उत्तरी सीमा को उत्तर प्रदेश के झांसी जनपद से पृथक करती है।

ललितपुर जनपद के परिचय को जानने के लिए हमें बुंदेलखंड क्षेत्र की सीमाओं से भी परिचित होना आवश्यक है। वर्तमान बुंदेलखंड लगभग 23.10 डिग्री से 26.27 डिग्री उत्तरी अक्षांश पर तथा 78.00 डिग्री से 81.34 डिग्री पूर्वी देशांतर के मध्य फैला हुआ है। इस भूगोल में उत्तर प्रदेश के झांसी मंडल के तीन जिले (ललितपुर, झांसी एवं जालौन), चित्रकूट मंडल के चार जिले (बांदा, चित्रकूट, हमीरपुर एवं महोबा), मध्य प्रदेश के सागर मंडल के पांच जिले (टीकमगढ़, छतरपुर, सागर, पन्ना एवं दमोह) तथा ग्वालियर मंडल का जिला दतिया सम्मिलित है। इस प्रकार तेरह जनपदों से बुंदेलखंड का भूगोल निर्मित होता है, किंतु सांस्कृतिक दृष्टि से यह क्षेत्र इन जनपदों से बाहर इसके सीमावर्ती जिलों में भी फैला हुआ है। मध्य प्रदेश के भिंड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, गुना, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, जबलपुर एवं सतना जिलों में भी बुंदेली संस्कृति का प्रसार है।[1] इस क्षेत्र में महाराष्ट्र की कला-संस्कृति, राजस्थान के स्थापत्य एवं पंजाब के शौर्य की त्रिवेणी का अद्‌भुत संगम हुआ है।

भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के दक्षिण-पश्चिम भाग में ललितपुर जनपद 1 मार्च 1974 से पूर्व 1891 ई तक झांसी जिले का भाग था। यह जनपद ब्रिटिश शासन

काल में (1861 से 1891) तक जनपद मुख्यालय रहा।[2] 1 मार्च 1974 को यह स्वतंत्र जिला बना। इस जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 5039 वर्ग कि.मी. है।

जनपद की कुल जनसंख्या वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार 9,77,734 है, जिसमें 5,19,413 पुरुष तथा 4,58,321 स्त्रियां हैं। ग्रामीण जनसंख्या 8,35,790 तथा शहरी जनसंख्या 1,41,944 है। इस प्रकार जिले की संपूर्ण जनसंख्या का 86 प्रतिशत भाग गांवों में निवास करता है। जिले की सरकारी वेबसाइट के अनुसार यहां 2,43,788 अनुसूचित जाति के व्यक्ति निवास करते हैं। जिले की साक्षरता दर 49.93 प्रतिशत है।

राजस्व की दृष्टि से यह जनपद तीन तहसीलों (महरौनी, ललितपुर एवं तालबेहट), छः ब्लाकों (बार, जखौरा, तालबेहट, विरधा, मड़ावरा एवं महरौनी), 48 न्याय पंचायतों तथा 340 ग्राम पंचायतों में विभक्त है। जिले के कुल ग्रामों की संख्या 754 है। जिले में एकमात्र नगरपालिका परिषद (ललितपुर) है तथा तीन नगर पंचायतें (पाली, महरौनी, एवं तालबेहट) हैं। जिले में 9 रेलवे स्टेशन एवं ब्रॉडगेज की 75 किलोमीटर रेलवे लाइन बिछी हुयी है। ललितपुर से वाया खजुराहो सिंगरौली तक जाने वाली रेलवे लाइन का निर्माण कार्य अभी जारी है। इस जिले में 15 पुलिस स्टेशन हैं, जिनमें 11 ग्रामीण क्षेत्र में तथा 4 नगरीय क्षेत्र में स्थित हैं। जिले में डाकखाने 7 नगरीय क्षेत्र में तथा 146 ग्रामीण क्षेत्र में स्थित हैं। कुल राष्ट्रीय बैंकों की संख्या 25 तथा अन्य बैंकों की 13 हैं। ग्रामीण बैंक शाखाएं 20, सहकारी बैंक शाखाएं 10 तथा कृषि - ग्रामीण एवं सहकारी - बैंकों की 3 शाखाएं हैं। जिले के कुल 754 गांवों में से 697 गांव आबाद है।

ललितपुर जनपद में पानी की अच्छी प्राकृतिक निकासी होती है। जिले के उत्तर-पूर्वी भाग में बेतवा, जामनी, धसान, नारायनी, शहजाद, सजनाम आदि नदियों का प्रवाह है। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद यहां बहुत से बांधों और कृत्रिम जलाशयों का निर्माण हुआ। बुंदेलखंड के अन्य भागों के समान यहां पुराने तालाब भी मिलते हैं।

बेतवा इस जिले की सबसे बड़ी नदी है। बेतवा नदी का प्रवाह बुंदेलखंड के अधिकांश भाग में होने एवं सिंचाई, विद्युत तथा पेयजल उपलब्ध कराने के कारण इस नदी को बुंदेलखंड की गंगा कहा गया है। यह नदी भोपाल के निकट से निकलकर ललितपुर जिले की सीमा में धोजरी गांव को सबसे पहले अभिसिंचित करती है। यहीं पर बेतवा में नारायनी नदी का संगम हो जाता है। बेतवा नदी का प्रवाह ललितपुर जिले की पश्चिमी सीमा को निर्धारित करता है। झांसी जिले का पृथक्करण भी उत्तर-पूर्वी सीमा में इस नदी द्वारा होता है। जिले में इस नदी पर

माताटीला बांध बना है। 1952-64 में बने इस बांध की लंबाई 6.30 कि.मी. है। इसकी ऊंचाई 3353 मीटर तथा जल संग्रहण क्षमता 1132.68 क्यूसेक मीटर है। बेतवा नदी पर ही इस जिले में उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश सरकारों के संयुक्त तत्वावधान में बहुउद्देशीय राजघाट बांध का निर्माण हाल के वर्षो में हुआ है। इस बांध से बिजली उत्पादन के साथ-साथ उ.प्र. तथा म.प्र. के भू-भागों की सिंचाई हो रही है। बेतवा नदी को पुराणों में वेत्रवती कहा गया है।

धसान नदी का पुरातन नाम दशार्ण है, यह नाम दस छोटी नदियों का समुच्चय होने के कारण पड़ा है। यह बेतवा की सहायक नदी है। धसान नदी ललितपुर जिले की दक्षिण-पूर्वी सिरे का संस्पर्श करती है। जिले के जिस भाग में यह नदी बहती है, मान्यता है कि वहां कभी पांडवों ने अपना अज्ञातवास का समय व्यतीत किया था। पांडव वन और बनगांव के रूप में वर्तमान स्थान-नाम इस इतिहास गाथा को सुरक्षित बनाए हुए हैं। जिले में 38 कि.मी. के प्रवाह के बाद यह नदी पड़ोसी जनपद टीकमगढ़ (म.प्र.) की सीमा में प्रविष्ट कर जाती है।

जिले के दक्षिण-पूर्वी भाग में ही एक और छोटी सी नदी जमड़ार है, जिसे यम विड़ार का विकसित भाषा रूप समझा गया है।[3] यह नदी इस जिले के मड़ावरा ब्लॉक मुख्यालय के निकट से विकसित हुई है। 'मधुकर' पाक्षिक के संपादक के रूप में उस समय कुंडेश्वर में निवासरत पं. बनारसीदास चतुर्वेदी ने जमड़ार के स्रोत की यात्रा की थी।[4] इस नदी की कुल लंबाई 40 मील अर्थात् लगभग 60 कि.मी. से अधिक नहीं है। यह नदी जामनी नदी में जहां मिलती है, उस स्थान को बानपुर के पास अजयपार के नाम से जाना जाता है। अजयपार (अजय अपार ह्रद - अजयपार की दहर) के एक द्वीप सर्वर्तुक रमणारण्य को बाण की पुत्री उषा ने अपना विहार स्थल चुना था। यहां से वरोरुओं (स्त्रियों) को कुंडेश्वर शिवधाम के दर्शनार्थ बनाए गये घाट-बरीपाल घाट-को बरीघाट कहा जाता है। स्थानीय बोली में 'रमन्ना' अभिहित किया हुआ स्थान रमणारण्य का तद्भव है।[5] जमड़ार और जामनी नदी के इस संगम स्थल को पं. बनारसी दास चतुर्वेदी ने 'मधुवन' नाम दिया था।

जामनी नदी बेतवा की महत्वपूर्ण सहायक नदी है। जिले में मदनपुर गांव के निकट के जंगल से इसका प्रवेश होता है। इसका बहाव दक्षिण से उत्तर की ओर है। जनपद की यह दूसरी सबसे बड़ी नदी है। जमुनियां गांव के पास इस नदी पर जामनी बांध बना है। यह बांध 1962-73 में बनाया गया, जिसकी लंबाई 6.40 कि.मी., ऊंचाई 19.18 मीटर तथा कुल जल भंडारण क्षमता 92.89 क्यूसेक मीटर है। यह नदी ओरछा (म.प्र.) के पास बेतवा में मिलती है।

सजनाम नदी जामनी नदी की सहायक नदी है। यह नदी जिले के चंदावली

गांव के निकट जामनी में मिल जाती है। इस नदी पर सिंदवाहा गांव के निकट 1977-90 में 5.15 कि.मी. लंबाई का बांध बनाया गया। जिसकी ऊंचाई 18.78 मीटर तथा जल संग्रहण क्षमता 83.50 क्यूसेक मीटर है।

जिले की एक और नदी है शहजाद, जिस पर जिले में दो बांध बने हैं। यह नदी दूधई के तालाब से निकली है। शहजाद नदी पर ललितपुर में गोविंद सागर बांध 1947-53 में बनाया गया। इसकी लंबाई 3.60 कि.मी., ऊंचाई 18.29 मीटर तथा जल भंडारण क्षमता 96.80 क्यूसेक मीटर है। ललितपुर नगर को पेयजल आपूर्ति इस बांध द्वारा की जाती है। सजनाम नदी पर ही हजारिया गांव, जहां यह नदी जामनी नदी में मिल जाती है, से पूर्व शहजाद बांध बना है। यह बांध 1973-92 में बना था, जिसकी लंबाई 4.16 कि.मी. ऊंचाई 18.00 मीटर तथा जल संग्रहण क्षमता 130 क्यूसेक मीटर है।

इस जिले में एक और प्रवाहित होने वाली रोहिणी नाम की छोटी नदी है, यह धसान की सहायक नदी है। इसका बहाव उत्तर-पूर्व दिशा से महरौनी तहसील में जिले के दक्षिण-पश्चिम कोने तक होता है। इस नदी पर इसी नाम का बांध 1976-84 में बना है जिसकी लंबाई 1.65 कि.मी., ऊंचाई 15.50 मीटर तथा कुल जल संग्रहण क्षमता 92.89 क्यूसेक मीटर है।

कुल मिलाकर अभी तक इस जिले में 7 बांध निर्मित हैं, जो एशिया में सर्वाधिक हैं। यही नहीं, साइफन पद्धति से बने बांधों में भारत के तीन स्थानों में से एक ललितपुर जिला है। जनपद के इन बांधों के अतिरिक्त हाल में मायावती सरकार द्वारा जिले में भोंरट, कचनोंदा तथा उटारी बांधों के निर्माण के लिए भी धनराशि अवमुक्त की जा चुकी है। भोंरट बांध का निर्माण वर्तमान जामनी बांध से बीस किलोमीटर की दूरी पर जामनी नदी पर महरौनी तहसील के भोंरट गांव के पास जारी है। दिनांक 23 सितंबर 2009 को देखी गई उत्तर प्रदेश के सिंचाई विभाग की वेबसाइट के अनुसार इसकी आगणित लागत 3548.15 लाख है। इस बांध से 7900 हेक्टेयर रबी फसल की सिंचाई संभव हो सकेगी। इसमें 6.5 गुणा 6.5 मीटर के खड़े गेट लगने प्रस्तावित हैं। इस बांध की लंबाई 3.6 किलोमीटर रहेगी। उटारी बांध का निर्माण सजनाम नदी की सहायक उटारी नदी पर महरौनी तहसील के ही सूरी कलां गांव के पास चल रहा है। इस परियोजना की लागत 1662.50 लाख रुपए रहने का उम्मीद है। उटारी बांध से 1800 हेक्टेयर क्षेत्रफल की रबी फसल लहलहाने की संभावना है। इस बांध में 6.00 गुणा 7.50 मीटर के चार खड़े गेट लगेंगे। जिले का एक अन्य निर्माणाधीन बांध सजनाम नदी पर ललितपुर तहसील में कचनोंदा कलां के पास है। जनपद में बांसी, तालबेहट, जखौरा, जमालपुर, रजवारा, लड़वारी में

झील और तालाब हैं तो गंगारी ताल, धौरी सागर जैसे बड़े तालाब भी हैं। वर्षा के जल को बांध एवं बंधियों द्वारा रोककर छोटी-छोटी लिफ्ट सिंचाई योजना जनपद में प्रगति पर हैं। गोविंद सागर बांध, जामनी, शहजाद, सजनाम एवं रोहिणी नहर प्रणालियों से निकली नहरों की लंबाई वर्ष 1991 तक 731 कि.मी. है। माताटीला एवं राजघाट बांध का पानी सिंचाई हेतु जनपद को नहीं मिलता है। इस प्रकार अब जिले की चारों प्रमुख नदियों - बेतवा, जामनी, सजनाम एवं शहजाद - पर दो-दो तथा एक-एक रोहिणी एवं उटारी नदी- पर बांध हो गए हैं।

यहां उल्लेखनीय है कि इतने बांध और जलाशय होने के बाद भी जिले की 93 प्रतिशत सिंचाई यहां के किसानों द्वारा निर्मित कुओं पर निर्भर है। जनपद की जमीन ढालू होने के कारण वर्षा का पानी नदियों और नालों के माध्यम से बह जाता है। इसलिए जिस वर्ष वर्षा कम होती है, उस वर्ष सिंचाई की विकराल समस्या उत्पन्न हो जाती है।

जलवायु—जनपद की जलवायु राज्य के दक्षिणी पठारी भाग में स्थित होने के कारण भिन्न प्रकृति की है। जिससे गर्मी में प्रखर धूप के साथ 47.8 डिग्री सेंटीग्रेड तक तापमान पहुंच जाता है।[6] सर्दी के मौसम में बहुत ठंडक भी रहती है। मार्च से मध्य जून तक गर्मी, मध्य-जून से सितंबर तक मानसून, अक्टूबर से नवंबर तक मानसूनोत्तर तथा दिसंबर से फरवरी तक सर्दी का मौसम रहता है। दिन का अधिकतम तापमान मई-जून में रहता है तथा सबसे कम तापमान जनवरी में देखा जाता है।

वर्षा—यहां प्राय: जून के मध्य से सितम्बर अंत तक वर्षा होती है। जुलाई में मौसम की अधिकांश वर्षा हो जाती है। अगस्त और सितंबर में भी वर्षा होती है। जनवरी में शीत लहर कभी-कभी वर्षा के साथ चलती है। दिसंबर-जनवरी में ही कोहरे और पाले का प्रकोप रहता है। मई में तपन और लू चलती है। विगत शताब्दी के बाद ग्लोबल वार्मिंग और जलवायुगत परिवर्तनों के कारण अब मौसम की भविष्यवाणी सटीक नहीं बैठती है। जिले की सामान्य वर्षा की औसत दर 918 मिलीमीटर है। इंदिरा गांधी नेशनल कला अकादमी नई दिल्ली की वेबसाइट के अनुसार बुंदेलखंड में 1906 से लेकर 1950 के वर्षो तक बीस बार वर्षा न होने के कारण अकाल पड़ा। इससे स्पष्ट होता है कि इस अंचल में औसतन हर दो साल में एक बार वर्षा नहीं होती है। कृषि प्रधान अर्थ व्यवस्था के चलते इस क्षेत्र का विकास की दौड़ में पिछड़ने का यह अकाल सर्वप्रमुख कारण है।

मृदा—इस जिले में बुंदेलखंड में पाई जाने वाली सभी चार प्रकार की मिट्टियां पाई जाती है। विंध्य पहाड़ियों की चट्टानों से यहां की मिट्टी विकसित हुई है जिसमें ग्रेनाइट, ग्नीस, क्वाट्र्जाइट और कहीं-कहीं सेंड स्टोन, लाइम स्टोन एवं स्लेट पत्थर

पाये जाते हैं। यहां की मिट्टी को दो व्यापक श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। 1. काली और 2. लाल। सामान्यत: इन मिट्टियों को चार समूहों में बांटा जा सकता है।

1. **बुंदेलखंड** 1-इसे स्थानीय भाषा में रांकड़ मिट्टी कहा जाता है, इसके दो रूप हैं, पहला रूप जिले के दक्षिणी भाग में पहाड़ी किनारों से लगा हुआ है, दूसरा जिले के उत्तरी भाग में पायी जाने वाली रांकड़ मिट्टी है। यह मिट्टी खेती के लिए उपयुक्त नहीं है, इस मिट्टी पर वनारोपण किया जा सकता है। इसमें भू-क्षरण की आशंका रहती है जिसको बांध/बंधी बनाकर संरक्षित किया जा सकता है।
2. **बुंदेलखंड** 2- इसे पडुवा मिट्टी कहा जाता है। यह भी रांकड़ की तरह लाल मिट्टी होती है। यह इस जिले के मध्य क्षेत्र में पाई जाती है। यह बालू मिश्रित मिट्टी है, जिसमें उर्वरता भी होती है। यह खेती के लिए पानी अधिक मांगती है।
3. **बुंदेलखंड** 3- काली मिट्टी का यह समूह दो प्रकारों में मिलता है, पहले को कावड तथा दूसरे को मार कहा गया है। यह मध्य भारत में पायी जाने वाली मिट्टी से मिलती जुलती है। कावड़ मिट्टी अनाज उत्पादन की दृष्टि से अच्छी मानी गई है। ललितपुर और महरौनी तहसील के दक्षिणी भाग में यह मिट्टी पाई जाती है। समय से खेती करने पर ही इस मिट्टी से अच्छी उपज ली जा सकती है। ललितपुर तहसील के दक्षिणी भाग में बालाबेहट के आसपास मार मिट्टी पाई जाती है। यह काली और उर्वर मिट्टी है। इसका भी समय प्रबंधन अच्छी पैदावार लेने के लिए आवश्यक होता है।
4. **बुंदेलखंड** 4 - बाढ़ से खेतों में जमी हुई जो मिट्टी है वह इस जिले के पश्चिमी भाग में पाई जाती है।

भूतल मानचित्रण—इस जिले के भूतल को देखने पर सामान्यत: यह क्षेत्र पहाड़ी दिखता है। विंध्य उपत्यकाओं के बीच बेतवा के किनारे दक्षिण में ऊंची पर्वत मालाएं स्थित हैं, जो समुद्री सतह से 650 मीटर ऊंची है। हल्के लाल रंग की ग्रेनाइट की चट्टानें दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पश्चिम की ओर देखी जाती हैं। जनपद का अधिकांश भाग कंकरीला, पथरीला एवं ऊबड-खाबड़ है। जामनी नदी और उसकी सहायक नदियों से घिरा क्षेत्र जिले की पूर्वी सीमा से टीकमगढ़ (म.प्र.) जिले को अलग करता है।

फसलें—इस जिले की मुख्य फसलें रबी और खरीफ मौसम की हैं। रबी की प्रमुख फसलें गेहूं, चना, मटर, मसूर, अलसी तथा खरीफ की ज्वार, मक्का, उर्द,

सोयाबीन, तिली आदि है। मूंग की फसल भी खरीफ के बाद बहुत थोड़े हिस्से में कुछ कृषक उगा लेते हैं। मूंगफली और गन्ना भी यहां की फसलें हैं। जिले का कुल सिंचित क्षेत्र 1.85 हेक्टेयर है जो शुद्ध बोए गए 2.53 लाख हेक्टेयर का 69 प्रतिशत है।[7]

उद्योग-धंधे—जनपद में कोई बड़ी औद्योगिक इकाई स्थापित नहीं है। दिनांक 16.01.08 की प्रदेश सरकार की प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया हैं कि एन. टी. पी. सी. का 2000 मेगावाट से ऊपर का थर्मल पावर प्लांट ललितपुर में स्थापित होगा। एन. टी. पी. सी. के अध्यक्ष टी. शंकर लिंगम ने बताया कि यह अभी तय नहीं है कि यह उपक्रम उ.प्र. सरकार की संयुक्त भागीदारी में अथवा एन. टी. पी. सी. का स्वयं का होगा। मड़ावरा क्षेत्र में एक फास्फेट का कारखाना स्थापित करने की चर्चा चलती रहती है। छोटी औद्योगिक इकाईयों के नाम पर यहां स्टोन क्रेशर लगे हुए हैं। एक एक्सप्लोसिव कारखाना भी ललितपुर झांसी रोड पर स्थित है। इस जनपद में बांधों और प्राकृतिक तथा ऐतिहासिक स्थलों को लेकर पर्यटन उद्योग की अच्छी संभावनाएं हैं। यहां की नदियों से निकली बालू तथा इमारती लकड़ी से भी रोजगार-सृजन हो सकता है। जिले की बुंदेली बोली में जब सिख बंधु पंजाबी के शब्द-रूपों का और मुस्लिम भाई उर्दू-फारसी के शब्द-रूपों का बुंदेली संस्कार देते हैं तब इस बोली का माधुर्य सुनते ही बनता है। यहां की बोली में मुस्लिम भाई को 'चच्चा' कहने के रिवाज में उम्र का कोई बंधन नहीं है। पुराने 'दाऊ' और 'कक्का' के संबोधनों को 'अंकल' ने स्थानापन्न कर दिया है। 'काकी' और 'ताई' भी अब 'आंटी' बन गई हैं।[8]

स्थानीय परंपरा के अनुसार बुंदेली बोली और संस्कृति का प्रथम महाकाव्य आल्हखंड के रचयिता जगनिक का इस जिले के मदनपुर गांव में जन्म हुआ था।[9] यद्यपि बुंदेलखंड विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तकों में इन्हें आगरा जिले की खैरागढ़ तहसील का निवासी बताया गया है।

नामकरण—बहुत समय पूर्व गोंड़ राजा सुम्मेर सिंह ने अपने स्वास्थ्य संवर्धन के लिए एक सिद्ध झील में नहाया। यह राजा अपनी पत्नी के साथ इसी झील के किनारे रहने लगा। कुछ समय बाद इनके एक कन्या हुयी, जिसका नाम 'ललित कुंवर' रखा गया। इसी कन्या के नाम पर इस स्थान का नाम ललितपुर पड़ा। यह झील आजकल ललितपुर शहर के मध्य में सुमेरा तालाब के नाम से प्रख्यात है।[10] ललितपुर जनपद के गजेटियर तथा 'एंटिक्विटीज इन दि डिस्ट्रिक्ट ऑफ ललितपुर' में यह नाम सुम्मेरशाह की पत्नी के नाम पर बताया गया है वहीं ललितपुर स्मारिका में इसके संपादक द्वारा सुम्मेरसिंह गोंड़ की पुत्री के नाम पर इसे बसा हुआ बताया

गया है, जबकि कल्हणकृत राजतरंगिणी के अनुसार कश्मीर नरेश ललितदिव्य के नाम पर उसके सेवकों ने इस स्थान का यह नामकरण किया। जो भी हो इतना अवश्य है कि ललितपुर के नामकरण और स्थापन में गोंड़ राजा सुम्मेरसिंह का योगदान रहा है। इस नगर के विभिन्न मंदिर और मूर्तियां भी इस निष्कर्ष की पुष्टि करते हैं। प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की 150वीं वर्षगांठ पर प्रकाशित पुस्तक 'बानपुर विविधा' में पं. बाबूलाल द्विवेदी के आलेख 'इतिहास और जनश्रुतियों के आलोक में नगर ललितपुर' में दी गई एक जनश्रुति का उल्लेख है कि चंदेरा के राजा चंद्रदेव की चार लड़कियों में सबसे छोटी ललिता का विवाह सुम्मेरसिंह के साथ हुआ। सुम्मेरसिंह मुंह खोलकर सो रहा था, तभी एक सांप उसके पेट में चला गया। तब से कृशकाय सुम्मेरसिंह रुग्ण रहने लगा। ललिता देवी को स्वप्न में सुम्मेरसिंह के स्वस्थ होने का उपाय पता लगा और उसने चंदेरा के निकट एक देवी मंदिर एवं अपने नाम पर एक नगर बसाया। इसी का नाम ललितपुर हुआ किंतु इस किंवदंती का उल्लेख कनिंघम की पुरातात्विक रिपोर्ट के भाग-10 में भी हुआ है, जिसके अनुसार यह देश के कई भागों में क्षेत्रीय परंपरा के अनुसार सुनी-सुनाई जाती है।

इतिहास—ललितपुर जिले का प्राचीन इतिहास यहां के स्थानीय पुरातत्व और शिलालेखों से प्राप्त होता है। इस जनपद का इतिहास प्रागैतिहासिक काल से ही प्रारंभ हो जाता है। यहां मिले पूर्व पाषाण कालीन औजारों से यह निष्कर्ष पुष्ट होता है कि विंध्य के जंगलों में मनुष्यों का निवास था। इस काल को भू-विज्ञानियों ने पैलियोलिथिक और नेयोलिथिक कहा है। जिले के दौलतपुर गांव के बाहर चांदी मंदिर से चट्टानों पर बनी मूर्तियों के मिले भग्नावशेषों से विदित है कि आदिवासियों में कलात्मक विकास प्रारंभ हो चुका था।[11] परंपरानुसार, पांच पांडवों ने मदनपुर गांव के निकट की जंगल-घाटी में अपना अज्ञातवास काटा था। सागर (म.प्र.) तथा ललितपुर (उ.प्र.) जनपदों की सीमा-क्षेत्र में यह बियावान जंगल फैला हुआ है।

शिशुपाल के पिता वक्रदंत की राजधानी चंदेरी (चंद्रावती = ग्रीक भाषा में संद्रावती) थी। ललितपुर इसी चंदेरी का भाग हुआ करता था। वक्रदंत के बाद यहां राजा बने शिशुपाल को 3101 ई.पू. में कृष्ण ने मार दिया था। चंदेरी को प्राचीन षोडश महाजनपदों में से एक चेदि के नाम से जाना जाता रहा। चेदियों व ललितपुर के नागरिकों ने महाभारत में पांडवों का समर्थन किया था।[12]

यहां के आदिवासियों को सहरिया (शावर) कहा गया। यह आदिवासी जिले के कई गांवों में निवास करते हैं। इनका रहन-सहन का स्तर अत्यंत शीर्ण है। आदिवासियों के बाद यहां गोंड़ हुए। जिले के दक्षिणी भाग की पहाड़ियों के गांवों में यह देखे जा सकते हैं। शावरों का वेदों और महाभारत में उल्लेख हुआ है, जिसमें

कहा गया है कि इन्हें पांडवों ने हराया था। 'नग्न शावर' तथा 'पर्ण शावर' जंगली जातियां हैं। वराह मिहिर ने इनकी भाषा को 'शावरी भाषा' की संज्ञा दी है। विदेशी इतिहासकार टालेमी और प्लिनी ने इन्हें 'स्वारी' और 'शबराई' अभिधान से अभिहित किया है, जो पत्ते खाकर रहते थे। यह काले रंग के तथा असभ्य लोग थे।

माना जाता है कि गोंड़ों का आगमन सहरिया आदिवासियों के बाद हुआ। जिले के कई मंदिरों में लगे ग्रेनाइट पत्थरों पर गोंड़ों का उल्लेख हुआ है। गोंड़-पूर्वजों को यहां सम्मान से गोंड़ बाबा और उनके ठिकाने को गोंड़वानी कहा जाता है। यह लोगों को युद्ध में हराकर जंगलों और खेतों में अपना मनोरंजन करते थे। जनपद के जनमानस में आज भी यह पुष्ट धारणा है कि गोंड़ों ने अपना बहुत सा सोना, चांदी, बर्तन इत्यादि ज़मीन में दबा रखा था। कदाचित् युद्धों में संलग्न रहने के कारण गोंड़ों को ऐसा करना पड़ा होगा। इन्हीं के नाम पर मध्य भारत के एक बहुत बड़े भू-भाग को गोंड़वाना के नाम से जाना जाता है। मंडला (म.प्र.) का गोंड़ राजवंश 664 ई से आरंभ होता है। एक गोंड़ राजा ने कलचुरियों का विनाश किया था। वर्धन वंश के सम्राट हर्ष के पतन के पश्चात हैहयवंशीय कलचुरियों ने अपनी शक्ति बढ़ाकर त्रिपुरी को अपनी राजधानी बनाया था।

जिले के दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी की घाटी में बसे गांवों के कुछ व्यक्ति अपने को राजगोंड़ का वंशज बताते हैं। ललितपुर के कुछ गांवों में बसे नाथों को भी यहां के बुद्धिजीवी गोंड़ों से संबंधित बताते हैं।[13] बेहट शब्द गोंड़ों का दिया हुआ है, जिसका अर्थ 'ग्राम' होता है। ललितपुर जनपद के अंतर्गत तालबेहट और बेहटा इत्यादि स्थान-नाम गोंड़ों द्वारा बसाए गए हैं।[14]

गोंड़ों के बाद इस जिले में चंदेलों का आधिपत्य हुआ। चंदेलों से पूर्व यहां गुप्तों का भी साम्राज्य रहा। गुप्तों के होने के प्रमाण यहां के शिलालेखों और पुरातत्व में विद्यमान है। देवगढ़ से दो शिलालेख, एक नाहरघाटी का और दूसरा सिद्ध की गुफा, प्राप्त हुए हैं, जिनमें नाहरघाटी शिलालेख पर संवत् 609 उत्कीर्ण है, इसमें शासक का नाम नहीं है। देवगढ़ का दशावतार मंदिर इतिहासकारों ने गोविंद गुप्त द्वारा बनवाया गया बताया है।[15] देवगढ़ के जैन मंदिर भी गुप्त काल में बनवाए गये।

गुप्तों के बाद जिले में कन्नौज के देववंश का राज्य स्थापित हुआ। देवगढ़ के जैन मंदिर के सामने एक तोरण पर भोजदेव का नाम दिया गया है और इस पर संवत् 919 तथा शक 784 (सन् 888) है। भोजदेव का नाम ग्वालियर, पवा, बनारस, नागपुर इत्यादि के शिलालेखों में भी मिलता है। इससे यह विदित होता है कि भोजदेव एक बड़ा राजा था। ऐतिहासिक महत्व का एक अन्य शिलालेख जखौरा के पास सीरौन गांव में मिला है। इस पर महिपाल देव संवत 960, भोजदेव, महेंद्र पाल

संवत 964, क्षितिपाल और देवपाल सं. 1025 जैसे शासकों के नाम उत्कीर्ण हैं। इस शिलालेख से यह भी स्पष्ट है कि नारायण और विष्णु भट्टारक ने यहां के जैन मंदिरों में दान किया था।

जिले के मदनपुर गांव, जिसका पुराना नाम पाटन था, में एक धार्मिक राजा मंगलसेन हुआ, मंगलसेन की स्मृति में यहां की महिलाएं व्रत रखती हैं। चंदेल राजा मदन वर्मा के नाम पर इस गांव को मदनपुर कहा गया। देवपत और खेवपत नामक दो वैश्यों ने देवगढ़ और दूधई के जैन मंदिरों का निर्माण कराया। वहीं पाणाशाह नामक एक धनी सेठ ने चांदपुर और बानपुर के जैन मंदिरों को बनवाया।[16]

इस प्रकार यह यहां का परंपरागत इतिहास प्राप्त होता है। जिले में ठोस धरातलीय साक्ष्य चंदेल राजाओं के प्राप्त होते हैं। चंदेल वंश की स्थापना चंद्रवर्मा ने की। इसी के नाम पर इस राजवंश को चंदेल वंश कहा गया। इसकी राजधानी महोबा (जनपद) थी। इसने खजुराहो के मंदिर और कालिंजर (बांदा) का किला संवत् 214 में बनवाया।[17] ललितपुर जनपद में चंदेल शक्ति गोंड़ों को समाप्त करके विकसित हुई थी।[18] चंदेलों के प्रारंभिक शासक चंद्रवर्मा के बाद नान्नुक सन् 881 में हुए। इसके बाद वाक्पति और जय शक्ति (जेजाक) हुए इसके नाम पर ही बुंदेलखंड को जैजाकभुक्ति कहा गया यद्यपि रिपोर्ट ऑन दि एंटिक्विटीज इन दि डिस्ट्रिक्ट ऑफ ललितपुर में जयशक्ति का उल्लेख नहीं है। इस रिपोर्ट के अनुसार वाक्पति के बाद विजय, पश्चात् राहिल शासक हुए। राहिल के बाद हर्ष, हर्ष के बाद यशोवर्मन, यशोवर्मन के बाद धंग 950 ई. तक शासक रहे। पुरातात्विक अभिलेखों के अनुसार देवलब्धि के पौत्र यशोवर्मन ने इस क्षेत्र में मंदिर बनवाये थे। वर्तमान दूधई देवलब्धिपुर का विकसित भाषा रूप है जो देवलब्धिपुर से दुग्धपुर, फिर दूधई हुआ।[19] चंदेलकाल में दूधई झांसी-ललितपुर मंडल का मुख्यालय था।[20] इस शहर की स्थापना के तीस वर्ष बाद भारत-यात्रा पर आए इतिहासकार अलबरूनी ने दूधई को एक बड़ा नगर बताया है।[21]

धंग के बाद चंदेलों में विद्याधर शासक हुआ, जिसकी गणना उत्तरी भारत के शक्तिशाली शासकों में थी। देश पर महमूद गजनवी के आक्रमण हो रहे थे। गजनवी देश के मंदिरों को लूट रहा था। इसी समय ललितपुर को चंदेरी में विलय कर दिया गया। 'चंदेलकालीन बुंदेलखंड का इतिहास' के पृ. 76 पर दिए गए विवरण के अनुसार चंदेल नरेश कीर्तिवर्मन ने चंदेरी नगर को बसाया। इसके योग्य मंत्री वत्सराज के नाम पर ललितपुर जिले के अनेक स्थान-नामों की स्थापना हुई। चंदेरी कभी हिंदू तो कभी मुस्लिम शासकों के अधीन रहने लगी। मदनपुर से प्राप्त दो छोटे शिलालेखों के अनुसार दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान का पुत्र सोमेश्वर और

पौत्र अर्ण ने मदन वर्मन के बाद बने चंदेल शासक परमर्दिदेव (परमाल) 1165-1202 ई. को 1183 ई. में एक बहुत बड़े युद्ध में परास्त किया। परमाल के दो बड़े सामंत- आल्हा और ऊदल थे, जिनके शौर्य का वर्णन जगनिक के आल्हखंड में किया गया है। यहां की लोक परंपरा में विश्वास है कि जगनिक मदनपुर निवासी भट्ट ब्राह्मण थे।

इसी समय वीरभद्र के पुत्र पंचम गहरवार क्षत्रिय ने यहां बुंदेला राजवंश स्थापित किया। बुंदेलखण्ड नाम विंध्येलखंड का विकसित भाषा रूप है। विंध्य और इला पर्वत श्रेणियों के बीच अवस्थित होने के कारण विंध्येलखंड कहलाया। विंध्य पर्वत से घिरे क्षेत्र पर अपनी राजसत्ता स्थापित करते हुए पंचम गहरवार ने विंध्येला उपाधि धारण की। विंध्येला शब्द से बुंदेला शब्द प्रचलित हुआ। छत्रप्रकाश तथा वीरसिंह देव चरित्र के आधार पर कथा है कि पंचम गहरवार विंध्यवासिनी देवी के परम भक्त थे। यह अपनी रक्तबूंदों को देवी मां पर अर्पित करते थे, जिससे यहां के कुछ लोग इनका आस्पद बुंदेला मानते हैं। 'हक़ीक़त-उल-आलिब' में लिखित बुंदेलखंड की उत्पत्ति की कथा के अनुसार गहरवार वंश के राजा हरदेव एक बांदी के साथ खैरागढ़ से आकर ओरछा के निकट बस गए। उन्होंने वहां के खंगार नरेश का वध कर दिया और बेतवा व धसान के बीच के देश के स्वामी बन गए। उनके उत्तराधिकारी बांदी पुत्र होने की वजह से बुंदेला कहलाये और यह प्रदेश बुंदेलखंड कहलाने लगा।[22] किंतु यह अभिधान भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नहीं प्रतीत होता है। ललितपुर जनपद के आसपास के क्षेत्र को बुंदेलखंड नाम 1531 से 1554 ई. तक चरखारी के शासक रहे बुंदेला शासक भारती चंद्र ने दिया था। ओरछा बुंदेला राजवंश की राजधानी हो गई थी। यहां के महाराज मधुकर शाह (1554-1592 ई.) के ज्येष्ठ पुत्र रामशाह सन् 1592 में ओरछा की राजगद्दी पर बैठे। रामशाह को सम्राट जहांगीर ने 1605 ई. में गद्दी से हटाकर बार (ललितपुर) की जागीर दी थी। 1612 ई. में बार में रामशाह के निधन के पश्चात उनके मृत ज्येष्ठ पुत्र संग्राम सिंह के ज्येष्ठ पुत्र भरत सिंह बार के जागीरदार बने। वह बड़े पराक्रमी और महत्वाकांक्षी थे। उन्होंने सन् 1616 ई. में चंदेरी के सूबेदार गोदाराय पर चढ़ाई कर उसे पराजित कर 1617 ई. में चंदेरी को अपने अधीन कर लिया था। भरत सिंह ने चंदेरी का राजा बनते ही चंदेरी राज्य को चार प्रशासनिक इकाइयों—दूधई, हर्षपुर (बांसी), गोलकोट (ईशागढ़) तथा भानगढ़, संभागों में बांट दिया था। भरत सिंह के छ: छोटे भाई थे, जिनमें क्रमश: कृष्णसिंह को बांसी, रूपसिंह को बिजरौठा, कीर्तिसिंह को ककराना, ध्रुवसिंह को खड़ेसरा, चंद्रभान को जामुनधाना एवं मानसिंह को बरौदा डांग की जागीरें दी थीं।

सन् 1630 में भरतसिंह की मृत्यु के पश्चात देवीसिंह (1630-63), दुर्गसिंह

(1663-87) दुर्जन सिंह (1687-1736), मानसिंह (1736-50) शासक रहे। मानसिंह ने अपने तीसरे पुत्र धीरज सिंह को बानपुर की जागीर दे दी थी। राजा मानसिंह की मृत्यु के पश्चात अनुरूद्ध सिंह (1750-75ई.) रामचंद्र (1775-1802) प्रजापाल (1802) एवं मोर प्रहलाद (1802-42) चंदेरी तथा कैलगुवां में राजा रहे।

मोर प्रहलाद के समय चंदेरी राज्य सागर के मराठा मामलतदार रघुनाथ राव (अप्पा साहब) एवं ग्वालियर के सिंधिया की वैमनस्यता एवं छीना झपटी में फंस गया था। 1810 ई. में सिंधिया ने अपने फ्रेंच सेनापति जॉन वैप्टिस्ट को चंदेरी पर आक्रमण करने भेजा, जिसने चंदेरी के अतिरिक्त वर्तमान ललितपुर जनपद के तालबेहट, बांसी, कोटरा, ननौरा, रजवारा, ललितपुर, जाखलौन, जेवरा, देवगढ़ एवं महरौनी से लेकर वर्तमान सागर जिले के मालथौन के इलाकों को छीनकर सिंधिया राज्य में शामिल कर लिया था। इस उपलक्ष्य में सिंधिया ने प्रसन्न होकर जॉन वैप्टिस्ट को महरौनी इलाक़े की जरया ग्राम की जागीर दे दी थी। बुंदेलखंड में जरया एक मात्र फ्रेंच जागीर थी जो 1947 ई. तक स्थापित रही। यहां फ्रेंच परिवार निवास करते हैं। सागर के मामलतदार रघुनाथराव के मोंरा जी मराठा मड़ावरा और बालाबेहट क्षेत्र लेकर संतुष्ट रह गये थे।

सन् 1810 ई. में मोर प्रहलाद जॉन वैप्टिस्ट के डर से मराठों की सुरक्षा में झांसी में श्यामजी के चौपरा की हवेली में रहे थे। मोर प्रहलाद के निधनोपरांत उनके पराक्रमी एवं महत्वाकांक्षी पुत्र मर्दन सिंह (1842-1858 ई.) बानपुर के राजा बने। मर्दन सिंह ने अपने कूटनीतिक तरीकों से चंदेरी को पुन: अपने राज्य में मिलाने की कोशिश की और डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी इत्यादि इतिहासकारों के अनुसार मर्दन सिंह ने चंदेरी क्षेत्र के खुरई, खिमलासा, नरयावली, मालथौन आदि परिक्षेत्रों को अपने अधिकार में कर लिया था। वह अपना साम्राज्य आगे बढ़ा ही रहे थे कि सर ह्यूरोज ने ठनगना, मदनपुर घाटी के दूसरे रास्ते से प्रवेश कर मड़ावरा, महरौनी और बानपुर के किलों को तोपों से ध्वस्त कर दिया। ह्यूरोज यहीं नहीं रुका। उसने आगे बढ़कर तालबेहट के किले को ध्वस्त कर दिया। ह्यूरोज के सहयोगी मेजर ओर ने कैलगुवां किले को नष्ट कर डाला। मर्दन सिंह के तीनों क़िले- बानपुर, तालबेहट तथा कैलगुवां-क्षत-विक्षत कर दिए गये। यहां से ह्यूरोज के आगे बढ़ने पर झांसी की रानी ने उससे लोहा लिया था। शोध प्रबंध 'बुंदेलखंड का वृहद इतिहास' के लेखक डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी के अनुसार बार-बांसी के जंगलों में भटकते रहने पर निराश होकर मर्दन सिंह ने 28 सितंबर 1858 को अंग्रेजों के समक्ष आत्म समर्पण पर दिया था[23] जबकि श्री श्रवण कुमार त्रिपाठी पत्रकार तालबेहट द्वारा दिए

गए विवरण के अनुसार मुरार (ग्वालियर) के जंगलों में अंग्रेजों ने मर्दनसिंह को उनके मित्र शाहगढ़ नरेश बखतवली सिंह के साथ बंदी बना लिया था। वहीं डॉ. महेंद्र वर्मा ने अपने शोध प्रबंध चंदेलकालीन कला और संस्कृति (चांदपुर-दूधई के परिप्रेक्ष्य में) में मर्दन सिंह को अंग्रेजों द्वारा 13 जून 1857 को क़ैद करना लिखा है। अंग्रेजों की गिरफ्त में आने के बाद इनका परिवार बानपुर से दतिया जा पहुंचा था।

ललितपुर स्मारिका के संपादकीय में दिया गया है कि 'ऐतिहासिक घटनाक्रमों में राजा मर्दनसिंह समेत अनेक रण बांकुरों की अपने ही शत्रुओं के प्रति प्रदर्शित 'उदारता' सामने न आई होती तो आज स्वाधीनता का इतिहास कुछ और ही होता।' किंतु ऐसी टिप्पणी का कोई समुचित आधार इतिहास ग्रंथों में नहीं मिलता। स्मारिका-संपादक ने यहां की पारंपरिक उक्ति 'ललितपुर कबहुं न छोड़िये जब तक मिले उधार' को मर्दनसिंह की अंग्रेजों के प्रति कथित सहिष्णुता और उदारता से जोड़ दिया है, वस्तु स्थिति यह थी कि मर्दन सिंह की इच्छा अंग्रेजों के सहयोग से सिंधिया के आधिपत्य से चंदेरी ले लेने की रही, परंतु परिस्थितियों के परिवर्तन से चंदेरी कंपनी सरकार के हाथ में जा पहुंची थी। जब चंदेरी सिंधिया के अधिकार में थी तो मर्दन सिंह सिंधिया के शत्रु और कंपनी सरकार के सहयोगी थे, लेकिन जैसे ही चंदेरी अंग्रेजों के अधिकार में दे दी गई तो वह अंग्रेजों के विरोधी और लक्ष्मीबाई झांसी एवं बिठूर के धूधूपंत पेशवा मराठों के सहयोगी मित्र बन गए थे। अंत में वह झांसी की रानी की सलाह के अनुसार ही चलने लगे थे।[24]

पुनरावलोकन करते हुए ललितपुर जिले के इतिहास को अधोलिखित शीर्षकों और कालखंडों में विभक्त किया जा सकता है -

1. पैलियोलिथिक तथा नेयोलिथिक काल (सावर युग)
2. आदिवासी काल
3. पांडव काल — 3101 ई. पू.
4. गुप्त वंश काल — लगभग 300 से 600 ई.
5. देव/गुर्जर-प्रतिहार वंश काल — लगभग 850 से 965 ई.
6. चंदेल काल — लगभग 1000 से 1250 ई.
7. मुस्लिम काल — लगभग 1250 से 1600 ई.
8. बुंदेला काल — लगभग 1600 से 1857 ई.
9. अंग्रेज काल — 1858 ई. से 1947 ई.
10. स्वातंत्रयोत्तर काल — 1947 ई. से

राजनैतिक चेतना—1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर देश की स्वतंत्रता तक हुए सभी संग्रामों और आंदोलनों में ललितपुर जनपद की अहम् एवं

अग्रणी भूमिका रही है। यहां के दैनिक जागरण के ब्यूरो चीफ अजय तिवारी 'नीलू' के अनुसार प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चिनगारी जनपद के छोटे से ग्राम नाराहट से शुरू हुई थी। इतिहासकारों ने इसे बुंदेला विद्रोह कहा।[25] विद्वानों की दृष्टि में यह एक असंगठित और दिशाहीन विद्रोह था। मधुकरशाह और उनके लघु भ्राता गणेशजू ज़मींदारों पर भारी करारोपण के बाद न्यायालय में गए। यहां न्याय न मिलने पर इन्होंने सैन्य शक्ति एकत्र कर 8 अप्रैल 1842 को नाराहट के राव विजय सिंह के बगीचे में खाने के लिए एकत्रित अंग्रेज सैनिकों पर हमला कर दिया। हमले में विद्रोही विजयी रहे। 1857 ई. की क्रांति में भी यहां के बहादुर क्रांतिकारी अंग्रेज शासकों को छकाते रहे। बानपुर नरेश मर्दनसिंह का सर ह्यूरोज से राहतगढ़ दुर्ग पर पहला और निर्णायक युद्ध हुआ। मर्दनसिंह ने बुंदेलखंड की हल्दीघाटी कही गई मदनपुर घाटी पर अपना मोर्चा जमा लिया था, पर नत्थे खां ने मर्दनसिंह के दीवान बख्शी बृजलाल को अंग्रेजों से मिला दिया। इन्होंने मर्दन सिंह को धोखा देकर मदनपुर घाट से हटवाकर अमझराघाट करवा दिया। ह्यूरोज इसी मौके की तलाश में था। उसने मदनपुर घाटी के रास्ते से आकर झांसी तक के साम्राज्य को ललितपुर से उखाड़ दिया। मर्दन सिंह को बुंदेलखंड से कहीं दूर लाहौर की जेल में रखा। जीवन के अंतिम दिनों में अंग्रेज सरकार ने अनुरोध किए जाने पर मर्दनसिंह को वृंदावन (मथुरा) में रख दिया। 20 वर्ष की कठोर यातनाएं सहते-सहते इस योद्धा का 22 जुलाई 1879 को स्वर्गारोहण हो गया।

स्वाधीनता संघर्ष के अनेक चरणों में ललितपुर जनपद के सेनानियों ने अपने खून और पसीने को एक किया है। ललितपुर स्मारिका के अनुसार जनपद में ललितपुर शहर से 37, तालबेहट से 15, सैदपुर से 11, बानपुर से 8 तथा पाली से 7 स्वत्रंतता संग्राम सेनानियों को सरकारी दर्जा प्राप्त है। इसके अतिरिक्त जिले के ग्राम सुनौनी से 3, बनगुवां से 1, जखौरा से 1, ककरुआ से 1, पिपरई से 1, कपासी से 3, बंट से 3, जाखलौन से 2, दैलवारा से 2, नैनवारा से 1, बार से 4, बरौदा डांग से 1, गैंदोरा से 2, सतवांसा से 2, साढूमल से 3, मड़ावरा से 1, लुहर्रा से 1, सिंदवाहा से 2, महरौनी से 1, सिलावन से 1, गौना से 2, लड़वारी से 1, पठा से 1 और गोरा से 1 स्वतंत्रता सेनानियों ने देश के स्वाधीनता संग्राम में अपनी सामर्थ्य से अधिक योगदान दिया। जिले में सरकारी दर्जा प्राप्त कुल 119 स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुए हैं, जबकि 'बानपुर विविधा' में यह सूची 133 सेनानियों की दी गई है, यह किस आधार पर है इसका उल्लेख तो पुस्तक में नहीं है, किंतु यह वही नाम है, जो नेहरू महाविद्यालय के संस्थापक एवं ललितपुर नगरपालिका अध्यक्ष रहे पं. हरिहरनारायण (लल्लू) चौबे द्वारा प्रकाशित लघु पुस्तिका 'रजत नीराजना' में भी दिए गए हैं।

लोकगीत एवं लोकनृत्य–राई यहां का प्रमुख लोक नृत्य है। श्रृंगार प्रधान यह नृत्य श्री कृष्ण के समय से चला आ रहा बताया जाता हैं किंतु कुछ लोगों का मानना है कि महाराष्ट्र के बाजीराव पेशवा जब बुंदेलखंड केसरी महाराज छत्रसाल की मदद करने यहां आए, तब इस क्षेत्र में महाराष्ट्र के लोगों का आवागमन प्रारंभ हो गया। इस प्रकार महाराष्ट्र की संस्कृति का प्रभाव इस नृत्य पर बताया गया है।[26] राई नृत्य के पद संचालन की द्रुतगति को देखकर लगता है कि जिस प्रकार राई का दाना अपनी चाल में ढलकता है, वैसी ही द्रुतगति का संचालन व तालबद्धता इस नृत्य में देखते ही बनती है। जन्माष्टमी से लेकर फाल्गुन मास तक यह नृत्य चलता है। वैवाहिक एवं मांगलिक अवसरों पर भी इस नृत्य का प्रचलन है। ललितपुर जिले में विभिन्न संस्कारों एवं मांगलिक अवसरों पर अनेक गीतों एवं नृत्यों का स्वाभाविक प्रचलन है। शिशु के जन्म, सगाई, विवाह, नववधू द्वारा देवी पूजन, कुआं पूजन जैसे अवसरों पर विविध लोकगीत गाने का प्रचलन है।

पांडवों की प्रवास स्थली रहने के समय से प्रारम्भ यहां का सैरा नृत्य बड़ा आकर्षक एवं लोकरंजक है। जिसमें मोर पंख व हाथों में डंडे लेकर नवयुवक घूम-घूमकर लयबद्धता के साथ नाचते हैं। सहरिया जनजाति द्वारा विकसित किए जाने के कारण कदाचित् इसे सैरा नृत्य कहा गया।

कुम्हार जाति के पुरुषों द्वारा किए जाने वाले नृत्य को धुरिया नृत्य कहा गया है। इस नृत्य में स्त्री चरित्र को भी पुरुषों द्वारा ही संपन्न किया जाता है। कहार (ढीमर) जाति के लोगों द्वारा ढिमरयाऊ नृत्य (मछुआ गीत) किया जाता है तो अहीर (यादव) जाति के नर्तकों द्वारा ब्रजक्षेत्र के चांचर नृत्य की भांति ढोल, तासा आदि वाद्य यंत्रों के साथ पाई–डंडा नृत्य करने का प्रचलन है। इस जाति के लोगों द्वारा दीवाली पर दीवाली नृत्य अथवा युद्ध नृत्य तथा बरेदी नृत्य किया जाता है।

वर्षा के मौसम में यहां आल्हा गीत गाए जाते हैं। ढीमर जाति के लोगों द्वारा रावला समूह नृत्य, धोबी जाति के व्यक्तियों द्वारा धोबिया नृत्य या धोबिया राग कहा गया है। मडावरा विकास खण्ड में स्थित रनगांव में बेड़िया लोगों द्वारा 'तोहरा' लोकनृत्य किया जाता है।

चित्रकला–16वीं शताब्दी की फ्रेस्को पेंटिंग जिले के तालबेहट के नरसिंह मंदिर में देखी जा सकती है।

पर्यटन स्थल–जिले में अनेक धार्मिक तथा सैर-सपाटे की दृष्टि से मनोहारी स्थान है। इनका संक्षिप्त परिचय अधोप्रस्तुत है–

1. देवगढ़–ललितपुर गजेटियर के अनुसार स्वतंत्रता से पूर्व इस क्षेत्र में प्रतिमाओं का इतना बड़ा भंडार था कि यहां की कुल जनसंख्या के प्रति दस व्यक्ति

एक कलाकृति को पूज सकते थे। इस प्रकार देव मूर्तियों का गढ़ होने के कारण इसे देवगढ़ समझा गया, किंतु यह देववंश के समय अपने उत्कर्ष पर रहने के कारण देवगढ़ कहलाया। यह सागर मठ भी कहलाता है क्योंकि यहां सागर जैसी नदी के निकट चट्टान काटकर मंदिर बनाए गए हैं।

वि0सं. 991 के गुर्जर प्रतिहार कालीन शासक भोजदेव के अभिलेख में देवगढ़ का नाम लुअच्छगिरि बताया गया है। देवगढ़ में पर्वत शृंखला के नीचे 5वीं शताब्दी में निर्मित विश्वप्रसिद्ध गुप्तकालीन दशावतार मंदिर के भग्नावशेष मौजूद हैं। यहां का क़िला कन्नौज के प्रतिहारों ने 9वीं शताब्दी में डेक्कन के राष्ट्रकूटों से चुनौती लेने के लिए बनवाया था। देवगढ़ में जैन प्रतिमाओं का भी विशाल भंडार है। देवगढ़ ललितपुर से 33 किमी पश्चिम में सड़क मार्ग से जुड़ा है।

2. बानपुर—महाभारत में उल्लिखित 'बाणपुर' को इसी स्थान से जोड़ा जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार यहां बाणासुर नाम का दैत्य राज्य करता था। बाणाघाट, उषा कुंड, रमन्ना आदि इस असुर शासक और उसके कालखंड के नाम पर पुकारे जाते हैं। यहां चंदेलकालीन जैन मंदिर तथा नृत्य करती हुई बाइस भुजी गणेश की विशिष्ट मूर्ति मौजूद हैं। नृत्य गणपति की इस मूर्ति का तांत्रिक रहस्य जिज्ञासुओं के लिए अबूझ बना हुआ है। जनसंख्या की दृष्टि से बानपुर ललितपुर तथा तालबेहट नगर के बाद जिले का तीसरा सबसे बड़ा स्थान है। ललितपुर से इसकी दूरी वाया बिल्ला, छिल्ला 34 किमी है। पान की खेती यहां का एक अन्य आकर्षण है। अनेक अन्य मूर्तियों के अतिरिक्त वराहमूर्तियां भी यहां से प्राप्त होती रहती हैं।

3. दूधई—जिला मुख्यालय से यह गांव 45 किमी दूर है। इतिहासकार अलबरूनी के विवरण में इस स्थान का उल्लेख मिलता है। यहां के प्रसिद्ध चंदेलकालीन तालाब से ही शहजाद नदी निकली है। दूधई के खंडहर बताते हैं कि इनका कला सौष्ठव खजुराहो के मंदिरों से अधिक रूपवान था। चंदेलशासक देवलब्धि के नाम पर इसका नाम दूधई बताया जाता है।

4. पाली—मान्यता है कि यह स्थान लगभग 450 वर्ष पूर्व बुंदेला सरदार राव भुजबलसिंह ने बसाया था। पान यहां की मुख्य व्यावसायिक फसल है। त्रिमुखी नीलकंठ महादेव का एक चंदेलकालीन मंदिर यहां का प्रमुख आकर्षण है। इस मंदिर के पीछे महर्षि च्यवन का आश्रम बताया जाता है। यहां की वादियां नैनीताल की याद कराती हैं। पाली नगर पंचायत है, जो जिला मुख्यालय से 22 किमी दूर सड़क मार्ग से जुड़ा है।

5. तालबेहट—बानपुर नरेश मर्दनसिंह की कर्मभूमि रहा यह नगर तालाब के किनारे बसा है। इसका प्राचीन नाम जिरियाखेड़ा था। मर्दनसिंह के पूर्वज बुंदेला

शासक भरतशाह द्वारा यहां बनवाए गए किले को भारतगढ़ दुर्ग कहा जाता है। रूपा एंड कंपनी नई दिल्ली से प्रकाशित आइएएस दंपत्ति विजय शर्मा एवं रीता शर्मा की पुस्तक 'दि फोर्ट्स आफ बुंदेलखंड' के पृ. 78 के विवरणानुसार भरतशाह ने चंदेरी क़िले के क़िलेदार गोदाराय के विद्रोह को दबाने में मुग़लों की सहायता की थी। इसके बदले में भरतशाह को चंदेरी का राज्य मिला था। तालबेहट राष्ट्रीय राजमार्ग 26 के अतिरिक्त चेन्नई तथा मुंबई से दिल्ली रेलवे मार्ग से भी जुड़ा है।

6. मदनपुर—चंदेल शासक मदनवर्मन के नाम पर यह स्थान अभिहित हुआ। यहां अनेक प्राचीन वैष्णव एवं जैन मंदिरों के अतिरिक्त आल्हा-ऊदल की बैठकें बनी हुई हैं। जनश्रुति के अनुसार परमाल के राजकवि जगनिक (आल्हखंड के रचयिता) का जन्म स्थान मदनपुर ही है। संवत् 1239 में पृथ्वीराज चौहान की चंदेलशासक परमर्दिदेव (परमाल) पर विजय का वर्णन यहां से प्राप्त एक शिलालेख में मिला है।

7. मड़ावरा—श्री गणेश प्रसाद वर्णी स्मृति ग्रंथ के पृष्ठ 76 के अनुसार संवत् 1650 के आसपास सागर से आकर मराठा पंडितों ने मड़ावरा से एक किमी पूर्व में स्थित कसई ग्राम में एक विशाल दुर्ग का निर्माण किया और क़िले के पश्चिमी मड़ावरा नगर को नए रूप में बसाकर उसका नाम मराठा गांव रखा। यह संबोधन संवत् 1870 तक प्रचलित रहा। स्व. नेमीचंद्र ज्योतिषाचार्य के अनुसार मठंबर शब्द से मड़ावरा अभिधान बन सकता है।

8. बालाबेहट—ललितपुर से 48 कि.मी. दूर दक्षिण में स्थित यह स्थान 18वीं शताब्दी में मराठा सरदार बालाजी द्वारा स्थापित किया गया था। जनपद में मड़ावरा के अतिरिक्त बालाबेहट में मराठों के किले बने थे। इनके अतिरिक्त नवीं शताब्दी में कन्नौज के प्रतिहार राजा द्वारा देवगढ़ के किले को छोड़कर जिले के शेष किले चंदेरी राजवंशजों एवं उनके जागीरदारों द्वारा बनवाए गए। एक अन्य मत के अनुसार बालाबेहट गंगाराम नामक व्यक्ति द्वारा बसाया गया था। बालाबेहट के क़िले के भीतर एक झरने में शाश्वत पानी का सोता है।

9. बार—एक दंत कथा के अनुसार यहां 52 वावली एवं 12 बाग होने के कारण चौदहवीं शताब्दी में इसका नाम बहार था। जो कालांतर में बार हो गया। 1616 ई में रामशाह के पुत्र भरतशाह ने इसे अपनी जागीर का मुख्यालय बनाया था। बार में चंदेल शासक कीर्ति वर्मन के मंत्री वत्सराज द्वारा निर्मित तालाब बच्छ सागर के नाम से जाना जाता है। पहाड़ियों पर बुंदेला भवन एवं चंदन के पेड़ बार को विशिष्टता प्रदान करते हैं।

10. बांसी—राष्ट्रीय राजमार्ग 26 पर बसे इस स्थान को चंदेरी नरेश भरतशाह (1612 -1616 ई) ने अपने भाई कृष्णाराव को दे दिया था। इन्होंने 1618 ई में एक सुंदर क़िले का निर्माण कराया था। यहां एक चंदेलकालीन तालाब भी है।

11. बिरधा—इस विकास खंड में स्लेब स्टोन प्राप्त होता है जो इमारत बनाने के काम में आता है। ललितपुर से इसकी दूरी 20 कि.मी. है।

12. महरौनी—ललितपुर के पूर्व में 37 कि.मी. दूरी पर स्थित इस तहसील मुख्यालय में 1750 ई में चंदेरी नरेश मानसिंह द्वारा बनवाया गया पुराना क़िला मौजूद है। जो 1811 ई में मराठा सरदार सिंधिया के लिये अंग्रेज कर्नल फिलौस द्वारा जीत लिया गया था।

13. धौर्रा—यह गांव हजारों वर्ष पुरानी परंपरा का माना जाता है। कहा जाता है कि एक बार मगध के पौराणिक राजा जरासंध ने मथुरा पर आक्रमण करके कृष्ण एवं बलराम को रणभूमि छोड़ने को मजबूर कर दिया था जिससे श्री कृष्ण का एक नाम रणछोर पड़ा। धौर्रा के निकटस्थ ग्राम धौजरी के जंगल में रणछोर जी का शिखर विहीन मंदिर मौजूद है। मंदिर में कृष्ण, सुभद्रा एवं बलराम की अभिराम प्रतिमाएं हैं। इस मंदिर के निकट मुचकुंद गुफा स्थित है। कहा जाता है कि मुचकुंद ऋषि की गुफा में कालयवन से युद्ध करते हुए श्री कृष्ण भागकर छिप गए थे। मुचकुंद ने कालयवन को भस्म कर दिया था। सेना द्वारा दौड़ते हुए (धौर) श्री कृष्ण की तलाश करने के कारण इस स्थान का नाम धौर्रा पड़ गया। यह ग्राम ललितपुर से लगभग 29 कि.मी. दूर रेल तथा सड़क मार्ग से जुड़ा है।

14. पवा—इस स्थान पर सन् 1738 में पावागिरि नाम के जैन मंदिर स्थापित किये गये। जैनियों का यह सिद्ध क्षेत्र है। तालबेहट से यह स्थान 5 कि.मी. उत्तर पूर्व में है।

15. सीरौन खुर्द—यह गांव ललितपुर से उत्तर पश्चिम में 20 कि.मी. दूर सड़क मार्ग से जुड़ा है। यहां से डॉ. हाल द्वारा खोजे गये सीयडोंणि अभिलेख में ब्राह्मण धर्म के विभिन्न देवी-देवताओं के पक्ष में किए गए व्यक्तिगत दानों का उल्लेख मिलता है। पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट विकास खंड जखौरा के अनुसार यह अभिलेख वर्तमान में यहां के शांतिनाथ मंदिर की धर्मशाला की दीवार में लगा हुआ है।

16. सोंरई—मड़ावरा के समीपवर्ती इस ग्राम में शाहगढ़ के अंतिम राजा बखतवली द्वारा एक बड़े बाग का निर्माण कराया गया था। सोंरई के किले को महाराजा छत्रसाल बुंदेला के पोते पृथ्वीसिंह ने बनवाया था। सोंरई में रॉक फॉस्फेट तथा यूरेनियम धातु की खोज करने की योजना सरकारों द्वारा बनाए जाने की बात की जाती रही है।

17. धौरीसागर—यहां महाराजा छत्रसाल ने इंपीरियल सेना को 1668 ई में हराया था। यहां एक विशाल झीलनुमा तालाब है।

18. नाराहट—शेर चीतों जैसे वन्य पशुओं की आहट के कारण इस स्थान का नाम नाराहट पड़ा। भारी करारोपण के कारण 8 अप्रैल 1842 को यहां के जमीदार मधुकर शाह व उनके छोटे भाई गणेशजू ने कुछ सहरिया आदिवासियों और लोधी परिवारों को साथ लेकर अंग्रेज सिपाहियों पर हमला कर दिया इसे बुंदेला विद्रोह के नाम से अभिज्ञात किया गया है। ओरछा के राजा रुद्रप्रताप सिंह के उत्तराधिकारी राव कल्याण राय (1594 ई) के परिवार के लिये यह गांव उवारी (राजस्व की पूरी छूट) के रूप में प्रदान किया गया था। 1867 ई में ज़मींदारी शासन लागू होने के बाद भी यहां के सामंत उवारीदार कहे जाते थे।

19. कैलगुवां—1811 ई में सिंधिया द्वारा चंदेरी को जीतने पर यहां के राजा मोद प्रहलाद को कैलगुवां सहित 31 गांव जागीर में प्रदान किए गए थे। 1830 ई तक मोद प्रहलाद ने अपना निवास रखा। 1830 में मोर प्रहलाद बानपुर रियासत के राजा बन गए थे। कैलगुवां के समीप बीजरी एवं पुराधंधकुआ खदानों में डायस्फोर एवं गौरा पत्थर (पैराफ्लाईट) प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

प्रशासनिक गठन—ललितपुर नाम के विश्व में तीन स्थान हैं। यह तीनों स्थान दक्षिण एशिया में स्थित हैं। एक बांग्लादेश में, दूसरा नेपाल के बागमती क्षेत्र में और तीसरा भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में।[27] ललितपुर जिला जब 1 मार्च 1974 को झांसी से पृथक होकर गठित हुआ तब इसमें तत्कालीन तहसीलें महरौनी और ललितपुर सम्मिलित थीं। वर्ष 1978 में इन दोनों तहसीलों से कुछ गांवों को लेकर (वर्तमान में आबाद गांव 165) तीसरी व नई तालबेहट तहसील बनाई गयी। इसकी कुल जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 246864 है। महरौनी तहसील में वर्तमान में 269 आबाद गांव है। इसकी कुल जनसंख्या 325124 है। ललितपुर तहसील में 263 आबाद गांव है। 2001 की जनगणना के अनुसार इस तहसील की कुल जनसंख्या 405746 है।

ललितपुर जिले के प्रशासनिक क्षेत्र में चंदेरी का कुछ भाग, नाराहट तालुका तथा बानपुर और शाहगढ़ के राज्य सम्मिलित थे। सन् 1860 ई. में यह अंग्रेजों के प्रशासन में आ गया तथा बानपुर और मड़ावरा नवनिर्मित तहसीलों के मुख्यालय क्रमश: इन्हीं गांवों में स्थापित कर दिए गए। सन् 1861 में जिले का चंदेरी का भाग एक तहसील बन गया। जिसका मुख्यालय ललितपुर हो गया। वर्ष 1870 में नार्थ वेस्ट प्राविंसिज म्यूनिसिपल इंप्रूवमेंट्स एक्ट, 1868 (एक्ट 4 ऑफ 1868) के अंर्तगत ललितपुर में नगर पालिका स्थापित हुई। ललितपुर में वर्तमान नगरपालिका का स्वरूप वर्ष 1916 में यू0पी0 म्यूनिसिपैलिटीज एक्ट 1916 (एक्ट 2 ऑफ

1916) प्रदान किया गया।[28] सन् 1866 में बानपुर और मड़ावरा तहसीलों को समाप्त करके एक नई तहसील महरौनी बनाई गई। महरौनी स्थान दोनों के मध्य में भी है। यहां सन् 1930 में यू0पी0 टाउन एरियाज एक्ट 1914 के अंतर्गत नगर क्षेत्र का सृजन किया गया। इसी अधिनियम के अंतर्गत 1913 ई. में तालबेहट नगर क्षेत्र तथा वर्ष 1978 में पाली नगर क्षेत्र का सृजन किया गया। पंचायत राज अधिनियम लागू होने के बाद इन्हें नगर पंचायत कहा जा रहा है।

जिले की तत्कालीन दोनों तहसीलों - महरौनी तथा ललितपुर - में यहां के समस्त गांव वितरित हुए थे। वर्ष 1861 में गठित जनपद ललितपुर 1891 तक पृथक जिला बना रहा। इसी वर्ष यह झांसी जिले का उपखंड बना दिया गया। 1 मार्च 1974 को यह जिला पुन: अस्तित्व में आ गया। जिला परिषद अधिनियम 1961 द्वारा 15 नवम्बर 1974 को ललितपुर में जिला परिषद का गठन हुआ था।

जिला परिषद (पंचायती राज अधिनियम 1992 के बाद जिला पंचायत) जिले के ग्रामीण क्षेत्रों सामान्य सुविधाओं की व्यवस्था करता है। वर्तमान में जिला पंचायत के वार्डों की संख्या 17 है। जिले में नियोजित विकास हेतु 6 विकास खंड हैं। जिले में सबसे पहले जखौरा विकास खंड 1955 ई. में सृजित हुआ, तत्पश्चात 1956 में महरौनी तथा तालबेहट, 1961 में बार एवं अंत में 1962 में मड़ावरा विकास खंड की स्थापना हुई। जिले में कुल 48 न्याय पंचायतें तथा 340 ग्राम पंचायतें अस्तित्व में हैं। क्षेत्र पंचायत के वार्डों की वर्तमान संख्या 414 तथा ग्राम पंचायत के वार्डों की संख्या 4216 है। जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में मतदान केंद्रों की संख्या 647, मतदान स्थलों की संख्या 900 तथा कुल मतदाता 5,16,261 हैं।29 जिले के कुल गांव 754 हैं, जिनमें 697 गांव आबाद तथा 57 गांव गैर आबाद है। इनके अतिरिक्त जिले में 24 वन ग्राम भी हैं। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार जिले में क्षेत्रफल तथा जनसंख्या का वितरण इस प्रकार है -

	कुल ग्राम	*क्षेत्रफल (वर्ग किमी)*	*जनसंख्या*
ग्राम	754	4801.32	8,35,790
वन ग्राम	24	2171	-
नगर क्षेत्र		20.54	1,41,944
योग	778	5039	9,77,734[30]

क्र.	*ब्लॉक*	*आबाद गांव*	*गैर आबाद गांव*	*कुल गांव*	*कुल जनसंख्या*	*क्षेत्रफल वर्ग किमी.*	*न्याय पंचायत*	*विकास खण्ड कार्यालय से रेलवे स्टेशन की दूरी (किमी)*
1	तालबेहट	104	2	106	132855	689.34	47	1
2	जखौरा	139	10	149	170297	941.74	68	7
3	बार	89	4	93	130406	659.05	55	19
4	बिरधा	146	14	160	156121	1046.13	64	22
5	महरौनी	97	13	110	127764	733.36	55	39
6	मड़ावरा	122	14	136	118347	731.70	51	64
	योग	697	57	754	835790	4801.32	340	

यह जनपद झांसी मंडल के अंतर्गत आता है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह मंडल में सबसे बड़ा जिला है। झांसी मंडल में ललितपुर के अतिरिक्त झांसी एवं जालौन जनपद सम्मिलित हैं। मंडल का सर्वोच्च प्रशासक आयुक्त है। यह मुख्य रूप से शासन एवं मंडल के अधीन जिले के बीच एक संपर्क सूत्र के रूप में कार्य करता है तथा मंडल के जिलों का पूर्ण प्रशासनिक नियंत्रण रखता है।

जिला प्रदेश में प्रशासन की मूल इकाई है। यह एक जिलाधिकारी (कलेक्टर) के प्रभार में रहता है। जिलाधिकारी जिला की प्रशासनिक इकाई की धुरी है। जिला मजिस्ट्रेट के रूप में वह दंड प्रक्रिया संहिता तथा अन्य विशेष अधिनियमों के अंतर्गत प्रदत्त कर्तव्यों का पालन एवं अधिकारों का प्रयोग करता है। वह जिले में कानून व्यवस्था, विभिन्न नियमों तथा शासकीय आदेशों को लागू कराता है। आर्म्स एक्ट, 1959 के अंतर्गत अग्निशस्त्र रखने हेतु लाइसेंस प्रदान करने का अधिकार भी जिलाधिकारी को है। वह जिले की पुलिस व्यवस्था से सीधे संबद्ध होता है तथा जिले के सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी के रूप में अवसर की गंभीरता को देखते हुए पुलिस को सीधे आदेश प्रदान करता है। जिलाधिकारी जिले की विकास प्रक्रिया के हर पहलू से संबद्ध रहते हुए नियामक तथा उत्तरदाई पद है।

जिले के सामान्य एवं राजस्व प्रशासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए जिलाधिकारी के सहायतार्थ एक अपर जिलाधिकारी होता है। अपर जिलाधिकारी स्वतंत्र रूप से जिले में जिलाधिकारी के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में कार्यों को देखता है। अपर जिलाधिकारी के अतिरिक्त ललितपुर जनपद में तीन परगनाधिकारी अलग-अलग ललितपुर, महरौनी तथा तालबेहट संभाग (सब डिवीजन) हेतु हैं।

इनके अतिरिक्त मुख्य विकास अधिकारी एवं परियोजना निदेशक भी जिलाधिकारी की सहायतार्थ नियुक्त हैं।

सामान्य एवं राजस्व प्रशासन की दृष्टि से ललितपुर जिला तीन संभागों- ललितपुर, महरौनी एवं तालबेहट- में विभाजित है। प्रत्येक संभाग में उसी नाम की तहसील का क्षेत्रफल सम्मिलित है। ललितपुर तहसील में बालाबेहट एवं ललितपुर परगना, तालबेहट तहसील में तालबेहट एवं बांसी परगना तथा महरौनी तहसील में महरौनी, बानपुर एवं मड़ावरा परगना सम्मिलित हैं। प्रत्येक संभागीय तहसील एक परगनाधिकारी के प्रभार में है जो अपने संभाग में सामान्य प्रशासन के प्रयोजनार्थ प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट के अधिकार रखता है। परगनाधिकारी को ही उपजिला मजिस्ट्रेट (एस.डी.एम.) कहा जाता है। यह जानकर अटपटा लगता है कि एक तहसील में कई परगने हैं, पर परगनाधिकारी एक ही है। इनका कार्यक्षेत्र तहसीलवार रहता है।

प्रत्येक तहसील का प्रभार एक तहसीलदार को प्राप्त है जिसकी सहायता हेतु नायब तहसीलदार नियुक्त हैं। तहसीलदार अपनी तहसील में द्वितीय श्रेणी के मजिस्ट्रेट के रूप में अधिकारों का प्रयोग करता है तथा राजस्व प्रशासन को चलाने के लिए वह सहायक कलेक्टर के रूप में परगनाधिकारी की सहायता करता है। तहसीलदार अपनी तहसील के कार्यालय तथा राजस्व न्यायालय के प्रभारी अधिकारी के रूप में कार्य संपादित करता है। संप्रति ललितपुर जिले में प्रत्येक माह के पहले एवं तीसरे मंगलवार को तहसील दिवस का आयोजन होता है, जिसमें चक्रानुक्रम से एक-तहसील में जिलाधिकारी की अध्यक्षता तथा अन्य दो तहसीलों में उप जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जनता की समस्याओं का निस्तारण किया जाता है।

राजस्व प्रशासन की दृष्टि से तहसीलें परगनों, लेखपाल हलकों तथा कानूनगो हलकों में विभाजित हुई हैं।

प्रशासनिक तंत्र की एक कड़ी के रूप में न्यायपालिका का महत्वपूर्ण स्थान है। जिला स्तर पर न्याय पालिका जिला न्यायाधीश के प्रभाराधीन है। इसका मुख्यालय ललितपुर में स्थित है। यह न्यायालय प्रदेश के उच्च न्यायालय इलाहाबाद के प्रभार क्षेत्र में है। जिला न्यायाधीश जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में जिले का उच्चतम न्यायालय है। जिला न्यायाधीश के रूप में वह दीवानी मामलों एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में आपराधिक (फौजदारी) मामलों को देखते हैं। जिला एवं सत्र न्यायाधीश के अतिरिक्त ललितपुर में एक विशेष न्यायाधीश एवं विशेष न्यायाधीश (आवश्यक वस्तु अधिनियम), सिविल जज एवं सहायक सत्र न्यायाधीश, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, मुंसिफ मजिस्ट्रेट एवं अपर मुंसिफ मजिस्ट्रेट कार्यरत हैं। महरौनी में अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, अपर सिविल जज तथा मुंसिफ मजिस्ट्रेट की तैनाती है।

जिला पुलिस प्रशासन के रूप में यह जिला झांसी परिक्षेत्र में सम्मिलित है। परिक्षेत्र का मुख्यालय झांसी में स्थित है। इसमें झांसी, ललितपुर एवं जालौन जनपद सम्मिलित हैं। जिले में शांति एवं व्यवस्था बनाये रखने, अपराधों की रोकथाम, अपराध की जांच करने, अपराधी को पकड़कर न्यायालय के माध्यम से दंड दिलवाने एवं जनसाधारण को भयमुक्त जीवन प्रदान करने जैसे काम जिला पुलिस के जिम्मे है। इसके निष्पादन के लिये जनपद में एक पुलिस अधीक्षक, एक अपर पुलिस अधीक्षक तथा चार पुलिस उपाधीक्षक हैं। जिले में कुल पंद्रह थाने हैं। थाने चौकियों में विभक्त हैं।

जिले में प्रशासन, विकास एवं कल्याणकारी कार्यों के लिए सरकार ने अनेक विभाग स्थापित कर रखे हैं। केंद्र सरकार के कुछ कार्यालय भी जिले में स्थित हैं। केंद्र सरकार के आयकर, केंद्रीय उत्पाद शुल्क (सेंट्रल एक्साइज), राष्ट्रीय बचत, डाक विभाग, दूरसंचार कार्यालय तथा रेलवे विभाग जिला ललितपुर में स्थित हैं। जिले में कुल 9 रेलवे स्टेशन हैं जो दिल्ली-मुंबई मुख्य रेलमार्ग से जुड़े हैं, यह हैं - माताटीला, तालबेहट, बिजरौठा, जखौरा, दैलवारा, ललितपुर, जीरोन, जाखलौन तथा धौर्रा। रेलवे लाइन (ब्रॉड गेज) की जिले में कुल लंबाई 75 किलोमीटर है। ललितपुर से खजुराहो संपर्क रेलमार्ग निर्माणाधीन है। जिले में एक मुख्य डाकघर, 14 उप डाकघर तथा 146 शाखा डाकघर कार्यरत हैं। दो तारघर कार्यालय भी जिले में हैं। जिले में वर्ष 2007-2008 तक कुल 8343 टेलीफोन, 264 पी.सी.ओ. तथा 193 बस स्टॉप हैं। भारी संख्या में मोबाइलों के प्रचलन से टेलीफोनों की संख्या निरंतर घटती जा रही है।

पुस्तक के परिशिष्ट भाग में दी गई संदर्भ-स्रोत सूची के अतिरिक्त ललितपुर जनपद के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व की जानकारी के स्रोत इस प्रकार हैं-

हरग्रीव्ज- ऐंटिक्विटीज ऑफ चांदपुर दूधई - इलाहाबाद विश्वविद्यालय, 1911

महेंद्र वर्मा- चांदपुर दूधई की कला और संस्कृति- कानपुर वि.वि. 1974

कैलाश मड़बैया- बानपुर की शान- धर्मयुग, 26 जनवरी 1975

सुनीता गुलाटी- हिस्ट्री आफ इकोनामिक कंडीशन झांसी एंड ललितपुर (1862-1900)

महेंद्र अवस्थी- ललितपुर जिले में भूमि विकास बैंक- झांसी वि.वि. 1987

वंदना जैन- सीरौन खुर्द से प्राप्त मंदिर के वास्तु एवं मूर्तिकला का अध्ययन- सागर

अभय कुमार- स्टडी ऑफ आर्कीटेक्चर एंड आर्ट रिमेंस एट बानपुर-सागर 1982

महेंद्रमोहन जोशी- ललितपुर जिले का सामाजिक आर्थिक विकास (1886-1947)- सागर विश्वविद्यालय, 1989

रुचिरा श्रीवास्तव- जनपद ललितपुर में जैन मंदिरों का सांस्कृतिक अध्ययन- सागर 1994

अरुण कुमार गुप्त- ललितपुर जनपद में सेवा केंद्रों का अध्ययन- सागर विवि 1995

महेश प्रसाद शुक्ल- मदनपुर से प्राप्त पुरावशेषों का अध्ययन- सागर

अनीता जैन- मदनपुर की मूर्तिकला का अध्ययन- सागर विश्वविद्यालय[31]

बैंकिंग, व्यापार एवं वाणिज्य—महाभारत में वर्णित शिशुपाल के चेदि राज्य में वर्तमान ललितपुर परिगणित था। इससे यह कहा जा सकता है कि महाभारत में उल्लिखित महाजनी की प्रक्रिया यहां अपनाई जाती रही होगी। मध्यकाल में जिला ललितपुर के मदनपुर दूधई तथा ललितपुर प्रमुख व्यापारिक केंद्र थे। इन केंद्रों में वित्तीय व्यापार सामान्यत: हुंडियों (बिल ऑफ एक्सचेंजेज) के माध्यम से होता था, जो व्यापारियों तथा साहूकारों द्वारा जारी किए जाते थे। इन हुंडियों का प्रचलन किंचित् परिवर्तनों के साथ आधुनिक युग तक रहा, जिसे अब नए रूप में बैंकों द्वारा अपना लिया गया है। आधुनिक बैंकिंग संस्थाओं में सर्वप्रथम इलाहाबाद बैंक की स्थापना वर्ष 1887 में झांसी नगर में हुई। इस क्षेत्र में आधुनिक बैंकिग का यह प्रथम प्रयास था।[32]

वर्ष 2007-2008 तक ललितपुर में कुल राष्ट्रीयकृत बैंकों की संख्या 27 है, जिले में ग्रामीण बैंक शाखाएं 20 तथा अन्य गैर राष्ट्रीयकृत बैंक शाखाएं 13 हैं। इस प्रकार कुल 60 बैंक शाखाएं जनपद में कार्यरत हैं। ललितपुर जनपद के ग्रामीण अपनी वित्तीय आवश्यकताओं के लिए ऋण पर निर्भर रहते हैं। यह स्थिति प्राचीन काल से ही चली आई है, इसीलिए यहां यह लोकोक्ति प्रचलित हुई -

ललितपुर तब तक न छोड़िये जब तक मिले उधार।

ऋण का पुराना 'सवाई' प्रकार आज भी जिले में देखा जाता है। इसमें ऋणी अनाज के रूप में ऋण प्रदान करता है तथा उसे 25 प्रतिशत अधिक अनाज के साथ वापस करता है।

जिला ललितपुर सामान्यत: सूखा, बाढ़ एवं अत्यधिक आर्द्रता जैसी दैवी आपदाओं से प्रभावित रहा है। इसका सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव जिले की कृषि पर पड़ता रहा है जो खरीफ फसलों पर मुख्यत: देखा जा सकता है। खराब कृषि उत्पादन ने ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को भी प्रभावित किया, क्योंकि ग्रामीण अर्थ व्यवस्था मुख्यत: कृषि पर ही आधारित हैं। ग्रामीणों की आर्थिक विपन्नता ही उनकी

ऋणग्रस्तता का प्रमुख कारण है। अर्थाभाव के कारण जनपद ललितपुर जन अपने कृषि एवं सामाजिक कार्यों- जन्म, मृत्यु, विवाह- आदि के दिखावटी तथा जरूरी खर्चों के लिए महाजनों एवं व्यापारियों से ऋण लेते रहे। किसान सामान्यत: अपनी भूमि को बंधक रखकर बड़ा ऋण प्राप्त करते थे जिसके परिणामस्वरूप 1869 तथा 1873 ई. के मध्य बहुत बड़ी संख्या में किसान महाजनों को अपनी संपत्ति हस्तांतरण करने हेतु विवश हुए। भूमि हस्तांतरण रोकने के लिए बुंदेलखंड लैंड एलीनेशन एक्ट, 1903 इस क्षेत्र में लागू किया गया, किंतु इसका प्रभाव यह हुआ कि अब कृषक दूसरे कृषकों से ऋण लेने लगा। बड़े काश्तकार महाजनी का कार्य करने लगे। छोटे ऋणों के लिए आभूषण व अन्य मूल्यवान वस्तुओं को भी रेहन पर रखने हेतु स्वीकार किया जाता था। वस्तु के मूल्य का लगभग 75 प्रतिशत तक ऋण प्रदान किया जाता था। ऋणों की ब्याज दर सामान्यत: 12 प्रतिशत से लेकर 36 प्रतिशत वार्षिक तक हुआ करती थी। सामान्यत: महाजन कृषकों से ऋण का भुगतान फसल पर अनाज के रूप में लेता था किंतु अनाज का मूल्य ऋण देने की तिथि के मुल्य के आधार पर निश्चित किया जाता था। इस प्रक्रिया के लाभ को देखते हुए छोटे ग्रामीण व्यवसायी भी महाजनी के व्यवसाय की तरफ आकर्षित हुए।

व्यावसायिक महाजनों एवं साहूकारों को अनुचित लाभ लेने की प्रक्रिया से शोषित ग्रामीणों को मुक्ति दिलाने हुए सहकारी समितियों, ग्रामीण बैंकों, सहकारी एवं अन्य व्यावसायिक बैंकों के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित होने से ग्रामीण ऋणग्रस्तता में कुछ परिवर्तन अवश्य आया है, किंतु अभी तक व्यावसायिक साहूकारी को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सका है। शासन द्वारा ग्रामीणों की सहायतार्थ कई योजनाओं को प्रारंभ किया गया है, फिर भी ग्रामीण आकस्मिक ऋणों हेतु बड़े काश्तकारों, साहूकारों तथा संपन्न संबंधियों पर निर्भर है।

मुद्रा तथा सिक्के - प्राचीनकाल में प्रारंभिक समाज मुद्रा तथा सिक्कों के प्रयोग से पूर्णत: अनभिज्ञ था। समाज में वस्तुओं का विनिमय प्रचलित था। कालांतर में सामाजिक विकास के साथ समाज में श्रम विभाजन के परिणामस्वरूप वस्तुओं के व्यापार हेतु निश्चित मूल्यों की इकाई की आवश्यकता समझी गई। जिसने मुद्राओं और सिक्कों के प्रचलन को जन्म दिया।

वर्तमान जिला ललितपुर में प्राचीन काल में प्रचलित मुद्राओं तथा सिक्कों के संदर्भ में निश्चित सूचना उपलब्ध नहीं है। अलग-अलग काल और शासन में अलग-अलग मुद्राएं प्रचलित हुईं। वर्ष 1860 में ब्रिटिश प्रशासन के अंतर्गत आने के पूर्व तक क्षेत्र में प्रचलित मुद्राओं तथा सिक्कों के संदर्भ में मात्र यह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में प्रशासकों के परिवर्तन के साथ-साथ विभिन्न मुद्राएं तथा

सिक्के प्रचलित रहे होंगे। ब्रिटिश शासन काल में चांदी के रुपए तथा तांबे के आना पाई आदि सिक्कों का प्रचलन जिले में आया। इस समय जिले में लंबे समय से चले आ रहे 'गजशाही रुपया' सिक्के प्रचलित थे। वर्ष 1891 तक ब्रिटिश भारतीय रुपये तथा जिले में प्रचलित 'गजशाही रुपये' में क्रमश: 100 रुपये से 116 रुपये में विनिमय हुआ करता था। ब्रिटिश मुद्रा प्रणाली के अंतर्गत एक रुपया 16 आने का तथा एक आना 12 पाई के बराबर हुआ करता था। साथ ही एक आना चार पैसे के बराबर तथा एक पैसा तीन पाई के बराबर होता था। देश की स्वतंत्रता के उपरांत मुद्रा प्रणाली में और अधिक सरलता प्रदान करने हेतु वर्ष 1957 में भारत सरकार ने पूरे देश में दशमलव मुद्रा प्रणाली लागू की जिसमें पुरानी व्यवस्था समाप्त कर वर्तमान व्यवस्था प्रचलित हुई। इसमें भी अब पुराने प्रचलित एक, दो तथा तीन पैसों के सिक्के प्रचलित नहीं रहे। यहां तक कि 5, 10, 20, 25 तथा 50 पैसों के सिक्कों का भी अब जिले में चलन नहीं हैं। सिक्कों तथा नोटों की आपूर्ति का कार्य जिले में भारतीय रिजर्व बैंक से प्राप्त कर भारतीय स्टेट बैंक की स्थानीय शाखा द्वारा किया जाता है।

व्यापारिक मार्ग–भौगोलिक रूप से ललितपुर जिला गंगा जमुना के दोआब एवं मालवा क्षेत्र तथा मध्य भारत एवं दक्षिण भारत के मध्य संपर्क मार्ग रहा है। ललितपुर के दक्षिण में मदनपुर से विंध्य क्षेत्र को पारकर दक्षिण में जाने का यह सबसे पुराना मार्ग रहा है, जिसका प्रयोग गुप्त सम्राट, प्रतिहार सम्राट तथा चंदेल शासकों द्वारा समुचित रूप से किया गया है। जिला ललितपुर तीन तरफ से मध्य प्रदेश से तथा एक तरफ जिला झांसी से घिरा हुआ है। ललितपुर वर्तमान में सड़क मार्ग से मध्य प्रदेश के जिले गुना, सागर, चंदेरी तथा टीकमगढ़ से जुड़ा है तथा झांसी होते हुए उत्तर प्रदेश के प्रमुख औद्योगिक नगर कानपुर से जुड़ा है। साथ ही यह जिला मध्य रेलवे के प्रमुख मार्ग पर स्थित है। इस प्रकार वर्तमान में देश में उपलब्ध आधुनिक व्यापारिक मार्गो, सड़क एवं रेल, से यह जिला समुचित रूप से जुड़ा हुआ है।

जिले में कई छोटे-बड़े व्यापारिक केंद्र कार्यरत हैं जो आयातित तथा जिले में उत्पादित एवं तैयार वस्तुओं की बिक्री हेतु स्थान उपलब्ध कराते हैं। सामान्यत: इन्हें थोक व्यापारिक केंद्रों तथा फुटकर व्यापारिक केंद्रों में विभाजित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वाले बाजारों को 'हाट' कहा जाता है। हाट सप्ताह में एक या अधिक निश्चित दिनों में लगते हैं, जिनसे ग्रामीण अपनी दैनंदिन आवश्यकताओं की वस्तुएं क्रय करते हैं। कृषकों को उनके उत्पादों की बिक्री हेतु समुचित सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से राज्य कृषि उत्पादन, मंडी

समिति द्वारा मंडियों की स्थापना की गई। इस क्रम में झांसी रोड ललितपुर में वर्ष 1970 में तथा महरौनी में वर्ष 1972 में दो मंडी समितियों की स्थापना की गई है। इन मंडी समितियों में कृषकों को सभी आवश्यक सुविधाएं जैसे बैंक, भंडारण आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध कराया गया है। जिला ललितपुर में बाज़ार ललितपुर नगर के अतिरिक्त बिरधा, नाराहट, महरौनी, मड़ावरा, मदनपुर, पाली, बार, बानपुर, तालबेहट, जखौरा, जाखलौन, बांसी रायपुर, बालाबेहट, देवगढ़ तथा राजघाट में भी स्थापित हैं। दैनंदिन उपभोग की खाद्य वस्तुएं गांवों में छोटी दुकानों में उपलब्ध हैं।

मेला—जिला ललितपुर में देश के अन्य जिलों की तरह विभिन्न अवसरों पर मेलों का आयोजन होता रहता है, किंतु इन मेलों का स्वरूप सामान्यत: धार्मिक ज्यादा व्यापारिक कम होता है। जिला ललितपुर की सभी तहसीलों में मकर संक्रांति एवं बसंत पंचमी के अवसर पर मेलों का आयोजन होता है। इसके अतिरिक्त अन्य बहुत से धार्मिक अवसरों पर छोटे-छोटे मेलों का आयोजन होता है। जिले के मेलों की तहसीलवार सूची अधोलिखितरूपेण है –

स्थान	*मेले का नाम*	*तिथि/अवधि*
	तहसील ललितपुर	
बमनौरा	बसंत पंचमी	माघ शुक्ल 5 – 8
धौजरी	रणछोर जी का मेला	जनवरी 14 – 15
पाली	नीलकंठेश्वर का मेला	आषाढ़ शुक्ल 5
पंचमपुर	रंग पंचमी का मेला	चैत्र कृष्ण 5
जाखलौन	गणेश जी का मेला	माघ कृष्ण 4
गोविंद सागर बांध	मकर संक्रांति मेला	14 जनवरी
राजघाट बांध	मकर संक्रांति मेला	14 जनवरी
ललितपुर नगर	सदन शाह बाबा का उर्स मेला	31 मार्च से 2 अप्रैल तक
	तहसील तालबेहट	
तालबेहट	पीरों का मेला	जन्माष्टमी से 15 दिन तक
पूरा कलां	छोटे बाबा का मेला	फाल्गुन कृष्ण 8
रजपुरा	झूमरनाथ का मेला	फाल्गुन कृष्ण 8
धमकना	देवा माता का मेला	चैत्र नवरात्र
पवा	पावा गिरि का जैन मेला	अगहन कृष्ण 1
कंधारी कलां	शंकर जी का मेला	बसंत पंचमी
टेटा	जमाल शाह पीर बाबा का उर्स	25-27 अप्रैल

तहसील महरौनी

उदयपुरा	शिवपूजा	चैत्र शुक्ल 15
कुम्हैड़ी	अंजनी माता	चैत्र शुक्ल 15
दैलवारा	मकर संक्रांति	14 जनवरी
कैलगुवां	मकर संक्रांति	14 जनवरी
नाराहट	अमझरा घाटी	14 जनवरी

मूल्य नियंत्रण एवं राशनिंग—कल्याणकारी राज्य अवधारणा के अंतर्गत बाज़ार मूल्य का नियंत्रण तथा उपभोक्ता को दैनिक उपयोग की आवश्यकता वस्तुओं को उचित मूल्य पर तथा समुचित मात्रा में उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जिला ललितपुर में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में 400 तथा नगरीय क्षेत्रों में 54 उचित दर की दुकानें खुली हैं। ग़रीबी रेखा से ऊपर तथा ग़रीबी रेखा से नीचे के लोगों की अलग-अलग श्रेणियां बनाई गई हैं। ग़रीबी रेखा से नीचे के लोगों कीं पृथक-पृथक श्रेणियां हैं अंत्योदय तथा ग़रीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोग। वर्ष 2002 तक ग़रीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों की संख्या ग्रामीण क्षेत्रों में 55,215 तथा नगरीय क्षेत्रों में 10,781 कुल 65,996 है। जबकि जिले में 2001 की जनगणना के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में कुल 1,42,101 परिवार तथा नगरीय क्षेत्र में 23,911 परिवार निवास करते हैं। जिले में कुल आवासीय मकानों की संख्या ग्रामीण क्षेत्र में 1,10,394 तथा नगरीय क्षेत्र में 15,959 हैं।

बांट एवं माप—अंग्रेजी शासनकाल के पूर्व विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के बांट एवं माप प्रचलित थे। जिला ललितपुर भी इसका अपवाद नहीं था। अंग्रेजी शासनकाल में वजन हेतु 'मन' 'सेर' तथा 'छटांक' नाम से बांट प्रचलन में आए। इस समय 80 तोला वजन का सेर 'कंपनी वजन' के नाम से प्रचलित था। एक मन 40 सेर के बराबर होता था तथा 16 छटांक का एक सेर होता था। स्थानीय रूप में खाद्यान्नों के वजन हेतु 'पैला' 'गोन' तथा 'मानी' का सामान्यत: प्रयोग होता था। सात-आठ पैला एक मन के बराबर तथा एक गोन में तीन मन होता था 3 से 6 मन की एक मानी होती थी। सोना चांदी आदि बहुमूल्य धातुओं हेतु 'तोला', 'माशा' एवं 'रत्ती' का प्रयोग होता था। आठ रत्ती का एक माशा, 12 माशा का एक तोला तथा 5 तोले का एक छटांक होता था। लंबाई तथा क्षेत्रफल मापने हेतु अंग्रेजी शासन काल में 'गज', 'फुट' तथा 'इंच' थे। एक गज तीन फुट का तथा एक फुट 12 इंच का था। स्थानीय स्तर पर 'हाथ' से भी लंबाई को नापा जाता था। भूमि तथा दूरी नापने के लिए कदम, कोस, बिस्वा तथा बीघा का प्रयोग होता था। बाद में एकड़

और डेसीमल आए। अब हेक्टेयर और एयर की नाप प्रचलित है। समय के लिए पहर घटी, घंटा तथा पल का प्रयोग होता था। साठ पलों की 'घटी', दो एवं आधी (ढाई) घरी का एक घंटा, तीन घंटे का एक पहर होता था तथा आठ पहरों का पूरा दिन होता था।

देश की स्वतंत्रता के उपरांत इन बांट एवं माप की सरलता एवं व्यापक एकरूपता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से देश में 1 अक्टूबर 1960 से मैट्रिक प्रणाली के बांट एवं माप लागू कर दिए गए। यह इस जिले में भी प्रचलित हैं। माप की पुरानी इकाइंया भी क्षेत्र में निरक्षरों तथा अल्प साक्षरों एवं व्यापारियों के बीच प्रचलित हैं।

यातायात एवं संचार–जनपद में रेलगाड़ी व सड़क दोनों माध्यमों से यातायात की सुविधा उपलब्ध है। दिल्ली से मुंबई तथा चेन्नई की मुख्य रेलवे लाइन से ललितपुर नगर जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 26 ललितपुर जनपद के बीच से गुजरा है जो झांसी से सागर के बीच में जिले की 99 कि.मी. की सीमा को संस्पर्श करता है। ललितपुर नगर में ऑटो-रिक्शा की सुविधा भी उपलब्ध है। गांवें के लिए ललितपुर से एक सड़क बानपुर होते हुए टीकमगढ़ तथा एक अन्य महरौनी होते हुए टीकमगढ़ जाती है। एक सड़क ललितपुर से देवगढ़ तथा एक अन्य सड़क राजघाट होते हुए चंदेरी की ओर जाती है। प्रधानमंत्री सड़क योजना में वंचित गांव भी सड़कों से जोड़े जा रहे हैं। जिले की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि निश्चय ही विभिन्न व्यापारी तथा यात्री इस जिले से होकर गुजरते रहे होंगे। उत्तरी एवं दक्षिणी भारत के बीच स्थित यह जिला प्राचीन काल से ही संचार मार्गों की एक महत्वपूर्ण कड़ी रहा है। विंध्य पर्वत श्रेणियों के बीच में स्थित यह जिला अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण दक्षिण भारत का प्रवेश द्वार माना जा सकता है। इसका महत्व गुप्त साम्राज्य, प्रतिहार तथा चंदेल राजाओं ने भलीभांति समझा था। 13वीं सदी के बाद से दिल्ली के तुर्की सुल्तानों की आक्रमणकारी सेना प्राय: इस भाग से होकर दक्षिण भारत की ओर जाया करती थी।

प्रसिद्ध यात्री तथा इतिहासविद् इब्नबतूता ने 1342 ई. में दिल्ली से दौलताबाद तक की अपनी यात्रा के वृतांत में जिस भाग का वर्णन किया है, वह इसी क्षेत्र का वर्णन प्रतीत होता है। उसने लिखा है मार्गों पर दोनों ओर वृक्ष लगे हुए थे तथा बीच-बीच में सरायं तथा धर्मशालाएं निर्मित थीं। एक अंग्रेज अधिकारी डब्ल्यू डब्ल्यू हंटर 1792 ई. में झांसी आए थे। इन्होंने लिखा है कि इस क्षेत्र से दक्षिण की ओर से आने वाले बहुत से यात्रियों के कारवां गुजरते थे जो गंगा यमुना के दोआब में बसे अन्य नगरों को जाते थे।

प्राचीन काल में ठेलागाड़ी, टट्टूघोड़ा इत्यादि ज़मीन यातायात के प्रमुख साधनों

में थे। बाद में बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी माल तथा सवारियां ढोने के काम में प्रयुक्त होने लगे। उत्तर भारत के अन्य भागों की भांति सुंदर ढंग से निर्मित गाड़ियों को यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए जाने के काम में प्रयुक्त किया जाता था। इन्हें 'बहाल' कहा जाता था। घोड़ों द्वारा खींची बहाल को 'घुड़बहाल' कहते थे। इसके अतिरिक्त धनाढ्य वर्ग द्वारा पालकी तथा डोली का प्रयोग किया जाता था। इन्हें ढोने वाले कुछ विशेष जाति के व्यक्ति अथवा मजदूर होते थे। रेलवे लाइन के आविर्भाव से पहले तक व्यापारी बैलों पर नमक, चीनी, गुड़, कपड़ा इत्यादि वस्तुएं एक स्थान से दूसरे के लिए विपणन हेतु ले जाते थे। इन बैलों के समूह को 'खाडू का टांड़ा' कहा जाता था।[33] कुछ व्यापारी अपनी पीठ पर ही रोजमर्रा की वस्तुओं को गांव-गांव ले जाकर बेचते थे। यह सिलसिला लगभग 25 वर्ष पूर्व तक दूरदराज के गांवों में चलता रहा।

ललितपुर के अतिरिक्त अन्य नगर क्षेत्रों में टेंपो तथा रिक्शा प्रचलित हैं। सामान ढुलाई के लिए हाथठेला नगर क्षेत्रों में तथा ट्रैक्टर व बैलगाड़ियां ग्रामीण क्षेत्रों के साधन हैं। भारी सामान ढुलाई के लिए ट्रक एवं लॉरी भी पर्याप्त संख्या में जनपद एवं ग्रामीण क्षेत्रों में चल रहे हैं।

जिले में वर्ष 2006-07 तक कुल पक्की सड़क की लंबाई 1362 कि.मी. है। इसमें 1270 कि.मी. लोक निर्माण विभाग की सड़कें हैं। 2006-07 तक 697 आबाद गावों में से 511 गांव सब ऋतु योग्य सड़कों से जुड़ चुके हैं।

जनसंख्या एवं उसकी वृद्धि—जनपद में वर्ष 2001 में जनगणना कराई गई, जिसके अनुसार ललितपुर जनपद की जनसंख्या 9,77,734 व्यक्ति है। यह जनसंख्या जिले के कुल 5039 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में निवास करती है। इस प्रकार यहां की जनसंख्या का घनत्व 194 प्रतिवर्ग किमी है, जो प्रदेश में सर्वाधिक है।[34] जिले की सांख्यिकीय पत्रिका के अनुसार कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल में वनों का क्षेत्रफल प्रतिशत वर्ष 2006-07 में 14.9 है जबकि दिनांक 23.9.2009 को देखी गई उत्तर प्रदेश के सिंचाई विभाग की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार ललितपुर जनपद का कुल वन क्षेत्रफल 11 प्रतिशत है और यह प्रदेश के लखीमपुर (17 प्रतिशत) तथा सहारनपुर (13 प्रतिशत) के बाद तीसरे स्थान पर है।[35]

ललितपुर जनपद की वर्ष 2001 की जनगणनानुसार कुल जनसंख्या में 5,19,413 पुरुष तथा 4,58,321 स्त्रियां हैं। इस प्रकार प्रति एक हजार पुरुषों के सापेक्ष जिले में 882 स्त्रियां होती हैं। जिले की नगरीय जनसंख्या 1,41,944 तथा ग्रामीण जनसंख्या 8,35,790 व्यक्ति है। यहां की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या 14.5 प्रतिशत है अर्थात् जिले की 85.5 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है।

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या 0.59 प्रतिशत है। वर्ष 1991 में यह 0.57 प्रतिशत थी। यह दोनों जनगणना वर्षों (1991 तथा 2001) में उत्तर प्रदेश की कुल जनसंख्या में 68वें पायदान पर है। ललितपुर जनपद का क्षेत्रफल प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 2.13 प्रतिशत है अर्थात् उत्तर प्रदेश की 0.59 प्रतिशत जनसंख्या 2.13 प्रतिशत भूभाग पर इस जिले में निवास करती है।

बुंदेलखंड यद्यपि अभी तक यहां कोई प्रशासनिक इकाई नहीं है, किंतु यहां की भूमि, भाषा एवं संस्कृति इसे एक इकाई का स्वरूप प्रदान करती है। वर्तमान में बुंदेलखंड मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के तेरह जनपदों में विखंडित है। सांस्कृतिक इकाई के रूप में बुंदेलखंड का हिस्सा उत्तर प्रदेश में चित्रकूट एवं झांसी मंडलों के सात जनपदों में हैं। इन सातों जनपदों का कुल क्षेत्रफल 29,418 वर्ग किमी है, जो प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 12.21 प्रतिशत है। इन जनपदों में 82.32 लाख जनसंख्या निवास करती है, जो प्रदेश की कुल जनसंख्या का 4.95 प्रतिशत है। बुंदेलखंड में ललितपुर जनपद का क्षेत्रफल 17.13 प्रतिशत है और जहां उत्तरप्रदेशीय बुंदेलखंड की 11.88 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।[36]

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या का तहसीलवार वितरण इस प्रकार बनता है–

तहसील	*कुल जनसंख्या*	*पुरुष*	*स्त्री*	*ग्रामीण*	*शहरी*
तालबेहट	2,46,864	1,32,362	1,14,502	2,34,199	12,665
ललितपुर	4,05,746	2,14,787	1,90,959	2,85,135	1,20,611
महरौनी	3,25,124	1,72,264	1,52,860	3,16,456	8,668
योग	9,77,734	5,19,413	4,58,321	8,35,790	1,41,944

जिले की जनसंख्या का ब्लॉकवार वितरण वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार निम्नवत् है[37]–

ब्लॉक	*कुल जनसंख्या*	*पुरुष*	*स्त्री*
तालबेहट	1,32,855	71,611	61,244
जखौरा	1,70,297	90,533	79,764
बार	1,30,406	69,505	60,901
बिरधा	1,56,121	82,744	73,377
महरौनी	1,27,764	67,471	60,293
मड़ावरा	1,18,347	62,801	55,546

विभिन्न महामारियों के प्रकोप के कारण जिले की जनसंख्या में वर्ष 1901 से

1921 के बीच 9.93 प्रतिशत की कमी आई। वर्ष 1918-19 का इंफ्लूएंजा सर्वाधिक संहारक था। इसी अवधि में प्रदेश की जनसंख्या में 3.08 प्रतिशत की कमी हुई थी। वर्ष 1991 से 2001 के जनगणना वर्षों में जिले में 30 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि हुई।

जनसंख्या की सघनता—जिले की प्रतिवर्ग किलोमीटर जनसंख्या सघनता वर्ष 1981 में 115 एवं 1991 में 149 थी। वहीं वर्ष 2001 में यह बढ़कर 194 प्रतिवर्ग किमी हो गया। फिर भी यह प्रदेश में सर्वाधिक है।

लिंग अनुपात—जिले का लिंग अनुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 882 महिलाओं का है। 6 वर्ष तक की आयु के बच्चों का लिंग अनुपात 930 है। 2001 की जनगणना के अनुसार जिले में 1,66,012 मकान हैं तथा ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों में परिवार का औसत आकार 5.9 व्यक्ति है।

जनसंख्या के अनुसार ग्रामों का वर्गीकरण—जनपद में जनसंख्या के अनुसार वर्गीकृत ग्राम नीचे दी गई तालिकानुसार हैं—[38]

वर्ष	*200 से कम*	*200 से 499*	*500 से 999*	*1000 से 1499*	*1500 से 1999*	*2000 से 4999*	*5000 से अधिक*	*योग*
1981	104	222	214	105	0	35	3	683
1991	84	168	227	102	45	54	9	689
2001	73	122	210	118	73	83	18	697

विकास खण्ड वार 2001	*200 से कम*	*200 से 499*	*500 से 999*	*1000 से 1499*	*1500 से 1999*	*2000 से 4999*	*5000 से अधिक*	*योग*
तालबेहट	11	23	30	17	6	13	4	104
जखौरा	15	21	40	24	13	24	2	139
बार	6	10	25	16	15	15	2	89
बिरधा	17	30	45	22	16	11	5	146
महरौनी	10	10	25	24	15	10	3	97
मड़ावरा	14	28	45	15	8	10	2	122
योग जनपद	73	122	210	118	73	83	18	697

भाषा—वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार जिले में हिंदी भाषी 7,40,825, उर्दू भाषी 8,774, पंजाबी भाषी 591, बंगाली भाषी 177 तथा अन्य भाषा-भाषी 1,538 व्यक्ति थे।

यह जिला हिंदी भाषी है। राजकाज में हिंदी का ही व्यवहार होता है। पर ललितपुर जनपद के जनजीवन में मुख्यतया बुंदेली या बुंदेलखंडी बोली का प्रयोग

किया जाता है। खड़ी बोली के रूप में हिंदी का प्रयोग करने वाले बाहर से आकर कार्य कर रहे सरकारी कर्मचारी-अधिकारी प्रमुख हैं। बुंदेलखंड में बुंदेली के विविध रूपों का प्रयोग होता है। सागर विश्वविद्यालय से जुड़े रहे डॉ. कृष्णलाल 'हंस' ने भाषाई भूगोल की दृष्टि से संपूर्ण बुंदेली प्रदेश को पांच भागों में विभाजित किया है- उत्तरी क्षेत्र, दक्षिणी क्षेत्र, पूर्वी क्षेत्र, पश्चिमी क्षेत्र तथा मध्यवर्ती क्षेत्र। ललितपुर जनपद बुंदेली के मध्यवर्ती क्षेत्र के अंतर्गत आता है। इस क्षेत्र की बोली बुंदेलखंड के मध्य में स्थित होने के कारण बुंदेली से इतर बोलियों से अप्रभावित रही। किसी बोली क्षेत्र के सीमावर्ती भूभाग में ही अन्य बोलियों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इस दृष्टि से ललितपुर जनपद और इससे सटे भूभाग में शुद्ध बुंदेली का प्रयोग किया जाता है। किसी भाषा अथवा बोली को जब शुद्ध कहा जाता है, तब इसका तात्पर्य उसका अपने मूल स्वरूप से है। सभ्यता और संस्कृति का जैसे-जैसे विकास होता जाता है उससे कोई बोली अथवा भाषा सर्वथा शुद्ध नहीं रह सकती, किंतु शुद्ध बुंदेली के क्षेत्र में अन्य भाषा अथवा बोलियों के शब्दों अथवा प्रवृत्तियों का प्रवेश नाममात्र के लिए ही हो पाया है।[39]

बुंदेली बोली हिंदी के विशाल भाषा परिवार में से एक पश्चिमी हिंदी की एक बोली है, जो शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है। बुंदेली बोली बुंदेलखंड में बोली जाने वाली भाषा के कारण रखा गया। ललितपुर जनपद गजेटियर के अनुसार बुंदेलखंड में बुंदेला राजपूतों का इस क्षेत्र पर शताब्दियों तक आधिपत्य होने के कारण यहां बोली जाने वाली भाषा का नाम बुंदेली या बुंदेलखंडी पड़ा। अत: यहां यह जान लेना अनुपयुक्त न होगा कि इस क्षेत्र का बुंदेलखंड नाम क्यों पड़ा?

किसी क्षेत्र के नामकरण में अनेक तथ्य सहायक होते हैं। कभी शासकों के नाम और कभी वहां के निवासियों के नाम से संबंधित क्षेत्र का नामकरण किया जाता है। कभी-कभी उस क्षेत्र की प्राकृतिक दशा भी उसके नामकरण का आधार बनती है। बुंदेलखंड इस तथ्य का अपवाद नहीं है। यदि एक समय धसान या दशार्ण नदी के कारण यह अंचल धसान या दशार्ण प्रदेश कहलाया तो जुझौतिया ब्राह्मणों की बहुलता अथवा उनके युद्ध-कौशल के कारण यह जुझौति अथवा यजुर्होत्र कहा गया, किंतु चंदेल शासक जैजा अथवा जयशक्ति के नाम पर जुझौति की उत्पत्ति भाषाई परिवर्तनों के आधार पर संगत प्रतीत होती है। इसी शासक के नाम पर इस क्षेत्र को जैजाभुक्ति अथवा जैजाकभुक्ति पुकारा गया। कदाचित् जयशक्ति नाम के चंदेल शासक से जुझौतिया नाम का संबंध रहा होगा। ओरछा नरेश जुझार सिंह को अपने अनुज कुंवर हरदौल को कथित रूप से मरवा दिए जाने पर अघमर्षण यज्ञ करवाना पड़ा था। कुछ लोगों की मान्यता है कि इस यज्ञ में जिन ब्राह्मणों ने भोज

किया उन ब्राह्मणों को जुझौतिया कहा गया, किंतु यह किसी अन्य जाति के वर्ग अथवा ब्राह्मण जाति के समूह विशेष द्वारा जुझौतिया कहे गए ब्राह्मणों को हीन उत्पत्ति देने हेतु या अज्ञानतावश इस व्युत्पत्ति कथा को गढ़ा गया प्रतीत होता है। जुझारसिंह 16वीं शताब्दी में हुए थे जबकि जैजाकभुक्ति तथा जुझौति चंदेल काल से चले आ रहे नाम हैं।

पुराणों में इस अंचल को मध्यदेश कहा गया है। स्कंदपुराण में यजुर्होत्र के नाम से एक राज्य का उल्लेख मिलता है। इसका संबंध वर्तमान बुंदेलखंड से जोड़ा जाता है। इसकी भौगोलिक स्थिति के कारण ही ब्रिटिश शासन काल में इसे 'सेंट्रल इंडिया' के नाम से जाना गया। गोंड़ जाति की प्रधानता के कारण जो प्रदेश गोंडवाना नाम से जाना गया उसका विस्तार वर्तमान बुंदेलखंड तक समझा गया। वनाच्छादित होने के कारण इस प्रान्तर को 'आरण्यक' या वन्य देश के नाम से जाना गया।

महाभारत में चेदि नरेशों की बड़ी प्रसिद्धि हुई, उस समय यह चेदि देश कहलाया। इसकी राजधानी वर्तमान चंदेरी नगर रही है। प्रसिद्ध इतिहास/भूगोलविद् टालमी ने संद्रावतीज नामक देश का उल्लेख करते हुए इसकी सीमाएं दी हैं, जिसके अनुसार यह क्षेत्र बुंदेलखंड ही है। पुरातत्वविद् जनरल कनिंघम के अनुसार संद्रावतीज (चंद्रावती) देश का नामकरण चर्मण्यवती अथवा चंबल नदी के नाम पर हुआ। कनिंघम के मत से चंबल और टोंस (तमसा) नदियों के मध्य का समस्त भूभाग चंद्रावती प्रदेश में सम्मिलित था। ह्वेनसांग ने इस देश को चि-चि-टो नाम से संबोधित किया। चि-चि-टो जुझौति का चीनी रूपांतर ही था। जुझौति प्रदेश की राजधानी वर्तमान खजुराहो थी। इतिहासकार इब्नबतूता ने खजुराहो की यात्रा की थी।

बुंदेलखंड इस प्रदेश का प्रसिद्ध नाम है परंतु इसके नामकरण के आधार के संबंध में मतभेद हैं। छत्रप्रकाश (गोरेलाल तिवारी) तथा वीरसिंहदेवचरित के आधार पर यह कथा है कि एक राजा ने विंध्यवासिनी देवी को प्रसन्न करने के लिए अपनी गर्दन पर प्रहार किया। तब देवी ने प्रकट होकर कहा कि उसके रक्त बिंदुओं से उत्पन्न उसका पुत्र महान शक्तिशाली और विजेता होगा तथा प्रसिद्ध बुंदेला वंश का प्रादुर्भाव करेगा। 'इतिहासे-बुंदेलखंड' नामक पुस्तक में महाराजसिंह ने भी इसी कथा का उल्लेख किया है।[40] 'हक़ीक़त-उल-आलिमा' में बुंदेलों की उत्पत्ति की अलग ही कथा है, जिसका इलियट तथा स्मिथ ने भी समर्थन किया है। इस कथा के अनुसार गहरवार वंश के राजा हरदेव एक बांदी (सेविका) के साथ खैरागढ़ से आकर ओरछा के निकट बस गए। राजा हरदेव ने वहां के खंगार नरेश का बध कर दिया और स्वयं बेतवा तथा धसान के बीच के देश का स्वामी बन गया। बांदी से

उत्पन्न हुए उसके उत्तराधिकारी बंदेला अथवा बुंदेला कहलाए और उसी के नाम पर यह प्रदेश बुंदेलखंड कहलाया। पर बांदी शब्द मुसलमानों के आने के बाद यहां प्रचलित हुआ तब तक मध्यभारत के जंगली प्रदेशों तक फारसी शब्दों का प्रचार न हो पाया था। इससे यह नामकरण समीचीन प्रतीत नहीं होता है। यह उत्पत्ति बुंदेलों को हीन बताने के लिए गढ़ी गई प्रतीत होती है।[41] ऐसी ही हीनताद्योतक व्युत्पत्ति इसी अध्याय में हम जुझौतिया ब्राह्मणों के संदर्भ में देख आए हैं। बूंद से बुंदेला शब्द की उत्पत्ति भी भाषावैज्ञानिक कारणों से सुसंगत नहीं है। हां राजा को विंध्यवासिनी देवी का परमभक्त होने का वर्णन ऐतिहासिक ग्रंथों में प्राप्त होता ही है।

सब मिलाकर देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस प्रदेश को बुंदेलखंड कहे जाने का कारण यहां की भौगोलिक स्थिति है। इस अंचल में विंध्य पर्वत की विशाल उपत्यकाएं बिखरी हुई हैं। इसी कारण यह विंध्यखंड कहलाया। विंध्य शब्द में भूमिवाची प्राकृत प्रत्यय 'इलच' के योग से बना शब्द विंध्येलखण्ड विकसित हुआ। कालांतर में विंध्येलखण्ड का बुंदेलखंड हो गया।

इस क्षेत्र की बोली बुंदेली है, जो ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों में व्यापक रूप से अशिक्षित एवं अर्धशिक्षित वर्गों में बोली जाती है। इस बोली में शाब्दिक संग्रह मुख्यतया संस्कृत भाषा के शब्दों का है। अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी के कुछ शब्द भी इसमें समाहित हो गए हैं। पुर्तगाली, जापानी तथा अन्य विदेशी भाषाओं के जो शब्द बुंदेली में आए हैं वे अंग्रेजी भाषा के माध्यम से होकर यहां आए हैं। जिले के विभिन्न क्षेत्रों की बोली में स्थानीय शब्दों के ध्वनिगत अंतर के अतिरिक्त विशेष विषमता नहीं है। मोटे तौर पर एक तहसील से दूसरी तहसील में केवल क्रिया, क्रिया विशेषण, कुछ संज्ञाओं एवं सर्वनामों में लिंग एवं कारक से संबंधित अंतर होता है।

बुंदेली के भाषाशास्त्रीय स्वरूप को समझने के लिए ध्वनिग्रामिक स्वरूप, ध्वनिग्रामिक संगठन, स्वराघात, बलाघात, सुर-लहर, वाक्य-विन्यास तथा शब्द संपदा पर विचार करना आवश्यक है। ललितपुर जिले की बोली में दस स्वर यथावत् प्रयुक्त होते हैं। शब्द के अंत में आने वाले 'अ' का उच्चारण सुनाई नहीं देता। 'इ' और 'उ' का लोप भी देखने को मिलता है। ललितपुर जनपद में बुंदेली के अन्य रूपों की ही तरह ऐ, औ का उच्चारण मूल स्वर तथा संयुक्त स्वर दोनों रूपों में होता है। ब्रजभाषा की तरह स्वरों के अनुनासिक रूप भी मिल जाते हैं। यहां की बोली के उच्चारण में अल्पप्राणीकरण मिलता है जैसे गधा को गदा, दूध को दूद कहा जाता है। अनुस्वार आगम इस बोली की प्रमुख विशेषता है जैसे भूख का भूंक, हाथ का हांत। ड, ढ की जगह र बोला जाता है जैसे करोड़ का करोर, दौड़ का दौर।

कभी-कभी र लुप्त हो जाता है जैसे गालियां का गाईं। अवधी बोली की तरह इया तथा वा प्रत्यय संज्ञा के साथ जुड़ते हैं जैसे लठिया, बैलवा, लड्डुवा, चकिया इत्यादि।

जनपद ललितपुर की बोली का शब्द निर्माण उपसर्गों और प्रत्ययों से हुआ है। विदेशी शब्दों के साथ संकर शब्द भी यहां की बोली में आ गए हैं जैसे लाठी चार्ज, धन-दौलत।

इस बोली में दो वचन हैं एकवचन और बहुवचन। बहुवचन बनाने के लिए शब्दांत में 'अन्' जोड़ दिया जाता है जैसे लोग का लोगन, कुतिया का कुतियन। जिले की बोली में आठ कारक भेद हैं। कारक शब्द संज्ञा तथा सर्वनाम का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से स्थापित करते हैं। कर्मकारक का चिन्ह 'को' बोली में शब्द के साथ संयुक्त होकर 'औ' और 'ए' हो जाता है जैसे गऔ, तुमें।

संज्ञा–यहां की बोली में व्यक्तिवाचक, जातिवाचक तथा भाववाचक तीन प्रकार की संज्ञाएं प्रचलित हैं -

व्यक्तिवाचक–खिल्लू, कल्लू, कोंसा

जातिवाचक–मोंड़ी (लड़की), नाज (अनाज), सार(पालतू जानवर बांधने का घर के अन्दर का स्थान)

भाववाचक–बुलौवा, हुमक (जोर लगाना)

सर्वनाम–मैं, मो, मोरो, तैं, तोय, तोरा, जौ, बौ, अपुन, तुमन, सबन

विशेषण–सुपेत, कारो, भटाभूंदरौ, थोरौ-भौत, मुठियक, हातक, दूने, सवाए।

क्रिया–आवौ, जावौ, पर रए, पड़ रए।

क्रिया विशेषण–अवांर, सौकारे, हांपर-दूपर, अतफर।

समुच्चय-बोधक-पद, वाक्य या उपवाक्य को जोड़ने वाले यह शब्द होते हैं, जैसे जीसे, काए से, नईं तौ

विस्मयादिबोधक–यह मनोभावों को प्रकट करने वाले शब्द होते हैं जैसे - हओ, ऊंहूं, बाबा, अरे, राम-राम।

संबंधसूचक–किन्हीं दो वस्तुओं का आपसी संबंध इन शब्दों द्वारा स्थापित होता है जैसे जौ खारौ है, बौ मीठौ है।

स्लांग शब्द– छोलन - त्याज्य
चमचा - चापलूस
गाजर मूरा - अति साधारण
लट्ठ - गंवार

दुर्वचन–आक्रोश, कुंठा तथा चौधराहट दिखाने के लिए ऐसे शब्दों का प्रयोग स्त्रियों एवं पुरुषों द्वारा पृथक-पृथक किया जाता है जैसे

पुरुष - दारी

स्त्रियां- नासमिटे, ठटरी लगे, मूंछें बरें

दुर्वचनों के अलावा अनेक गालियों का प्रयोग भी यहां की बोली में होता है।

उपेक्षा—लुहार - लुहरा - लुहट्टा - लोपीटा

चमार - चमरा - चमट्टा

श्याम (पुरुष अभिधान)- स्सियाम-हियाम

सौगंधपरक शब्द—रामइ सों, तुमाऔ कौल, गंगई सों, रामइध्वाई, रामधई, तेरौ कौल, आप कसम आदि।

जिले में शब्द स्तर पर बलाघात तथा वाक्य स्तर पर सुर-लहर यहां की बोली की अभिव्यंजना में अभिवृद्धि करते है। किसी गांव में चलिएं तो किसी में चलौ का प्रयोग होता है। कहीं-कहीं एक ही अर्थ-प्रतीति के लिए अलग-अलग शब्द प्रचलित हैं—जैसे ब्लॉक मड़ावरा क्षेत्र में 'बहुत' के लिए 'मुतकौ' तथा ब्लॉक बार क्षेत्र में 'भौत' शब्द प्रचलित है।

ललितपुर की कहावतें और लोककथाएं बुंदेली की कहावतों और लोककथाओं से इतर नहीं हैं। कहावतों के प्रयोग से कथन की संक्षिप्तता, प्रभावान्विति तथा प्रासंगिकता की अभिवृद्धि होती है।

बुंदेली की लिपि देवनागरी है, किंतु व्यापारी अपना लेखा-जोखा एवं पत्र-व्यवहार सामान्यत: मुड़िया लिपि में करते हैं।

साहित्यकार—अग्रदास स्वामी (सन् 1594-1650) का जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम खजुरिया में हुआ था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के हिंदी साहित्य का इतिहास में स्वामी अग्रदास का वर्णन प्राप्त होता है। इतिहास के अनुसार रामानंद जी के शिष्य अनंतानंद और अनंतानंद के शिष्य कृष्णदास पयहारी थे। अग्रदास जी इन्हीं कृष्णदास पयहारी के शिष्य थे। अग्रदास जी के शिष्य भक्त माल के रचयिता प्रसिद्ध नाभादास जी थे। गलता (अजमेर राज्य, राजपुताना) में कृष्णदास पयहारी ने रामानंद संप्रदाय की गद्दी स्थापित की थी। यही पहली और सबसे प्रधान गद्दी हुई। रामानुज संप्रदाय के लिये दक्षिण में जो महत्व तोताद्रि का था, वही महत्व रामानंदी संप्रदाय के लिये उत्तर भारत में गलता को प्राप्त हुआ। यह उत्तर तोताद्रि कहलाया। गलता में स्वामी अग्रदास भी रहे। आप सम्वत् 1575 के लगभग वर्तमान थे, इनकी बनाई चार पुस्तकों का पता है।

1. हितोपदेश उपखाणां बावनी
2. ध्यान मंजरी
3. राम ध्यान मंजरी
4. कुंडलियां

इनकी कविता कृष्ण उपासक नंददास जी की भांति है। उदाहरण के लिये यह पद देखें -

कुंडल ललित कपोल जुगल अस परम सुदेसा।
तिनको निरखि प्रकास लजत राकेस दिनेसा।
मेचक कुटिल विसाल सरोरूह नैन सुहाए।
मुख पंकज के निकट मनो अलि छौना आए।।

इनका एक पद और दृष्टव्य है, जो इन्हें भक्तिकाल की रामकाव्य धारा का कवि सिद्ध करता है-

पहरे राम तुम्हारे सोवत। मैं मति मंद अंध नहिं जोबत।।
अपमारग मारग महि जान्यो। इंद्री पोषि पुरुषारथ मान्यो।।
औरनि के बल अनत प्रकार। अगरदास के राम अधार।।[42]

ललितपुर निवासी साहित्यकार स्व. कृष्णानंद हुंडैत के अनुसार इन्होंने 71 कुंडलियों की रचना की थी। स्वामी जी ने 'चांदसखी' के नाम से कविताओं की रचना की थी। शेख कारे खां (1700-1770 ई.) उर्फ कारे कवि का जन्म ललितपुर में हुआ था। इन्होंने फारसी मिश्रित ब्रज-बुंदेली में अपने भक्ति-परक छंद लिखे हैं। इनके पिता और भाई दोनों कवि थे। कारे कवि को बनारस के राजा का राज्याश्रय प्राप्त था। इन्होंने 11 पुस्तकों की रचना की थी। श्री नारायण कवि (1834-1882 ई.) का जन्म भी ललितपुर में हुआ था। इनकी कुल तीन पुस्तकें हैं, जिनमें 'शत्रु दर्शन' और 'नायिका भेद' प्रमुख है। अड़कूलाल वैद्य (1852-1935 ई.) का जन्म ललितपुर जनपद के ग्राम ननौरा में हुआ था। इन्होंने 'परिजात रामायण' की रचना की थी। वनमाली व्यास का जन्म वर्ष 1855 में तालबेहट में हुआ था। इन्होंने 'चौरासी' और 'बनमाली बहार' की रचना की थी। इनके पिता और पुत्र दोनों कवि थे। इनकी मृत्यु 1955 ई. में हुई थी। परमानंद जी का जन्म वर्ष 1855 में ललितपुर में हुआ, इन्होंने लगभग 35 पुस्तकें लिखीं और ओरछा के राजा का राज्याश्रय प्राप्त किया। इनकी कुछ पुस्तकें हैं—प्रमोद रामायण, विक्रम विलास, मंजू रामायण, प्रतिपाल प्रभाकर सामंत रत्न, माधव विकास और रत्न परीक्षा। इनकी मृत्यु वर्ष 1924 में हुई। राजधरलाल कायस्थ (1867-1930 ई.) ने आठ पुस्तकें लिखी, किंतु भगवत् गीता पर लिखी पुस्तक ही प्रकाशित है। तालबेहट के भवानी दास कायस्थ उर्फ सुशील कवि (वर्ष 1874-1950) कवि थे। इन्होंने संस्कृत में लिखित 'सुख सागर' की हिंदी श्लोकों में रचना की। गोविंददास व्यास (विनीत) वर्ष 1898-1950 का जन्म तालबेहट में हुआ था। इनकी सभी 25 लिखीं पुस्तकें प्रकाशित हुईं। औलाद हुसैन क़मर बीसवीं शताब्दी के प्रथम अर्धशतक

में ललितपुर में हुए थे। यह प्रसिद्ध उर्दू कवि थे।[43] इनके अतिरिक्त वर्तमान में अनेक विद्वान अपनी-अपनी तरह से ललितपुर जनपद और उसके बाहर साहित्य सृजन सेवा में संल्लीन रहे/हैं, जिनमें ललितपुर निवासी स्व. कृष्णानंद हुंडैत, स्व. शुकदेव तिवारी, भगवत नारायण शर्मा, बिहारी लाल बबेले, तालबेहट के डॉ. परशुराम शुक्ल विरही, श्रवण कुमार त्रिपाठी, बानपुर के डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी, कैलाश मड़बैया, छिल्ला (बानपुर) के पं. बाबूलाल द्विवेदी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' तालबेहट में हुए हैं, इन्होंने 'बुंदेल वैभव' में बुंदेलखंड के कवियों की खोज की है। प्रसिद्ध पत्रकार एवं कोशकार कृष्णानंद गुप्त का जन्म ललितपुर नगर में हुआ, जिन्होंने प्रसिद्ध 'लोकवार्ता' त्रैमासिक निकाला। इसमें देश-विदेश के लेखकों की रचनाएं प्रकाशित हुईं।

धर्म और जाति–वर्ष 1981 की जनगणना के अनुसार हिंदुओं की संख्या इस जनपद में 94.94 प्रतिशत थी जबकि वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार जिला ललितपुर में कुल हिंदुओं की संख्या 9,26,441 व्यक्ति थी, जो कुल जनसंख्या का 94.75 प्रतिशत है। हिंदुओं के बाद सर्वाधिक यहां मुसलमानों की संख्या 28,796 (कुल जनसंख्या का 2.95 प्रतिशत) है। इसके बाद क्रमश: जैन 19,797, सिख 1093, ईसाई 1078 बौद्ध 167 अन्य धर्म एवं विश्वासावलंबी 66 तथा अपना धर्म न बताने वाले व्यक्ति 296 हैं।

प्रमुख समुदाय–जिले में हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई चार प्रमुख समुदायों के अतिरिक्त जैन एवं बौद्ध भी निवास करते हैं।

हिंदू समुदाय का ढांचा चौहरी जाति प्रथा पर आधारित है। चार प्रमुख जातियां ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र हैं। यह सभी जातियां अनेक उपजातियों में विभक्त हैं। वर्ष 1901 की जनगणना तक इस क्षेत्र में लगभग 74 जातियां थीं, किंतु सभी जातियों एवं उपजातियों के पृथक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। अत: वर्तमान में जिले में जातिगत जनसंख्या का अनुमान लगा पाना संभव नहीं है। जातिगत आधारित उपजातियों की जनगणना सरकार नहीं कराती है।

जिले के ब्राह्मणों में दक्षिणी पंडित तथा मारवाड़ी पंडित भी हैं जो मराठों के समय में जिले में बसे थे। अधिकांश ब्राह्मण जुझौतिया, कान्यकुब्ज तथा सनाढ्य उपजातियों के हैं। इनमें जुझौतियां ब्राह्मणों की संख्या सर्वाधिक है। इसके अतिरिक्त भार्गव, गौड़ एवं सरवरिया उपजाति के ब्राह्मण भी यहां निवास करते हैं। बुंदेलखंड का प्राचीन एवं प्रथम राज्य नाम जुझौति क्षेत्र में रहने वाले ब्राह्मण जुझौतिया कहलाये। इन ब्राह्मणों के नाम पर ही इस क्षेत्र का नाम 'जुझौति' पड़ा। कुछ स्थानीय लोगों के मतानुसार कान्यकुब्जों को जुझार सिंह ने आमंत्रित करके बसाया।

तब से यही ब्राह्मण जुझौतिया हो गये। जिले में ब्राह्मणों की आजीविका खेती के साथ-साथ विद्वत् व्यवसाय है। कुछ ब्राह्मण पुरोहित कर्म में भी संलग्न हैं। जोशी (ज्योतिषी) भी अपने को ब्राह्मण कहते हैं, पर ब्राह्मणों में इनकी सामाजिक स्थिति निम्न स्तर की मानी जाती है। जोशी घर-घर जाकर भिक्षावृत्ति तथा ग्रह दोष निवारण के कार्य करते हैं। यहां के भट्ट भी ब्राह्मणों की उपजाति तिवारी से अपना संबंध जोड़ते हैं, किंतु इसकी सामाजिक मान्यता उन्हें प्राप्त नहीं है।

जिले में यद्यपि ठाकुरों की संख्या अधिक नहीं है, किंतु जिले के इतिहास में इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जिले की प्रमुख राजपूत उपजातियां बुंदेला, परमार, परिहार, सेंगर, गहरवार, गौर, चंदेला आदि हैं। जिले में विशेषत: ललितपुर तहसील में बुंदेला राजपूत अधिक हैं। मुख्य रूप से यह भूस्वामी हैं। जिले में इनका आगमन 13वीं शताब्दी से माना जाता है। धंधेरे तथा परमार राजपूतों के बुंदेलों से रोटी-बेटी के संबंध हैं। कहा जाता है कि ढुंडेरा पृथ्वीराज चौहान की सेवा के अधिकारी के रूप में आए थे, जो ढाड़ के वंशज कहलाते हैं। परमार मुख्यत: ललितपुर तहसील में हैं यह भी जिले में बुंदेल राजपूतों के समय में हुए। इन तीन राजपूत उपजातियों के अतिरिक्त राजपूत छत्तीस में से कहे जाते हैं। जिले में कुछ बनाफर राजपूत भी हैं। यह वंश चंदेल राजा परमाल के सेनापति आल्हा और ऊदल के महत्कार्यों से प्रसिद्ध हुआ। सरकारी तौर पर पिछड़ी जाति में गिने जाने वाले लोधी समुदाय के बहुत से लोग भी जिले में राजपूत लिखते हैं। जनश्रुति है कि यह राजपूत क्षत्रिय परशुराम के भय से भागे जा रहे थे तो रास्ते में एक शिवमंदिर में आर्त हो प्रार्थना करने लगे। उनसे मंदिर के पुजारी ने कहा लोध बीनने लगो। वे लोग लोध बीनने लगे। जब परशुराम ने उस स्थान पर आकर पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि हम लोग क्षत्रिय नहीं हैं हम तो लोध बीनने वाले हैं। परशुराम जी चले गए और तभी से यह लोधी (पश्चिमी उत्तर प्रदेश में लोध या लोधा) कहलाए।[44]

वैश्य जिले की सभी तहसीलों में हैं। यहां इनकी प्रमुख उप जातियां गहोई, दृढ़ोमर, अग्रवाल, पुरवार, बरनवाल इत्यादि हैं। यह मुख्यत: व्यापारी, व्यवसायी, उद्योगपति तथा साहूकार हैं।

जिले के कायस्थ अपने को चित्रगुप्त का वंशज मानते हैं। इनकी 12 उपजातियां हैं। यहां श्रीवास्तव उपजाति के कायस्थों की संख्या अधिक है। इनमें कुछ भूस्वामी हैं तथा अधिकांश विद्वत् व्यवसायों में हैं।

जिले की अन्य पिछड़ी जातियों में काछी (कुशवाहा लिखते हैं) महरौनी तहसील में अधिक संख्या में हैं। यह साग-सब्जी उगाते है तथा कृषि-कार्य करते हैं। गांव में इनके मुहल्ले 'कछियाना' अभिधान से अभिहित होते हैं। यह अपने को नरवर के

कछवाहा राजपूत पुरुष और किसी नीची जाति की स्त्री की संतान कहते हैं। यादव ललितपुर तहसील में अधिक संख्या में हैं। इनका परंपरागत व्यवसाय पशुपालन तथा अच्छी खेती करना है। खेती करने वाली अन्य पिछड़ी जातियों में लोधी सर्व प्रमुख हैं जो महरौनी तहसील में अपेक्षाकृत अधिक हैं। यह अपने नाम में राजपूत जोड़ते हैं। गड़रिया (पाल) लोगों का व्यवसाय भेड़ों का पालन करना हैं। कुर्मी और दांगी जाति के लोग भी यहां खेती पर निर्भर है। खंगार (परिहार) बरई (चौरसिया), कोरी (बुनकर), लुहार तथा बढ़ई (विश्वकर्मा), दर्जी (नामदेव), मनिहार (पाटकार), नाई (नापित), कुम्हार (प्रजापति), ढीमर इत्यादि उपजातियां भी यहां पिछड़ी जाति के रूप में निवास कर रही हैं। ढीमर लोग राजा बैन के यज्ञ से अपनी उत्पत्ति मानते हैं। मान्यता है कि राजा बैन (अधम न बेन समान-श्री रामचरितमानस) की जांघ से कछुआ निकला था। इस कछुए से प्रारंभ में दो वर्ग निकले पहले कहार हुए और दूसरे केवट। इन दोनों में रोटी-बेटी का व्यवहार नहीं होता। ढीमर शब्द की उत्पत्ति संस्कृत 'धीवर' से हुई है। हिंदी शब्द सागर में इसे जाति विशेष माना गया है, जो मछली पकड़ने का काम करती है, किंतु इस जाति का छुआ हुआ जल द्विज लोग ग्रहण करते हैं।

जिले की अनुसूचित जातियों में वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार 1,38,167 व्यक्तियों के साथ चमार (अहिरवार) सर्वाधिक संख्या में थे। इसके बाद क्रमश: सहरिया 44,587 तथा धोबी 20,857 व्यक्ति आते हैं।[45] जिले के सहरिया सन् 2003 से अनुसूचित जनजाति में सम्मिलित हो गए हैं। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति का प्रतिशत 24.9 है। चमारों की संख्या सबसे अधिक महरौनी तहसील में है। इनमें से अधिकांश व्यक्ति मजदूर एवं खेतिहर मजदूर का कार्य करते हैं; कुछ कृषक भी हैं।

सामाजिक स्तर पर गांव-गांव इनके मुहल्ले अलग बसे हुए हैं। जाति सूचक यह शब्द आज भी गाली जैसी इयत्ता को समेटे हुए हैं। व्युत्पत्ति की दृष्टि से डॉ. चंद्रभान रावत चमार शब्द को चर्मकार-चम्मार-चमार क्रम में विकसित मानते हैं[46] परंतु श्री कुबेरनाथ राय की मान्यता इससे भिन्न है। वे इस शब्द को शंबर-शंभर-शमार-चमार रूप में व्युत्पन्न स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार किरात उच्चारण में 'श' वर्ण का 'च' उच्चारण हो जाता है।[47] संस्कृत शंबर का अर्थ है जल, बादल, धन, युद्ध, यह एक राक्षस का नाम भी था। श्री राय चमारों की हीन उत्पत्ति के पक्ष में नहीं हैं।

चमारों की उत्पत्ति निषाद पुरुष एवं वैदेह स्त्री से मानी जाती है, किंतु इनका सामाजिक स्तर इससे भी निम्न रहा है। जिले में अहिरवारों की संख्या अधिकांश है। संत रैदास से अपना जातिगत संबंध इन्हें विश्वास प्रदान करता है। डॉ. भीमराव अंबेडकर अब इनके लिए प्रेरक महापुरुष हो गए हैं। इसीलिए अब यह नमस्कार भी

'जय भीम' कहकर करने लगे हैं। इस जाति में अंबेडकर की भांति नव बौद्ध होने की प्रवृत्ति बढ़ रही है और पढ़े-लिखे लोग इसकी अगुवाई कर रहे हैं। इस जाति का एक वर्ग गृह निर्माण कार्य में मजदूरी करता है। यह वर्ग बेलदार कहलाता है। 'कारीगर' संबोधन इस वर्ग को प्रतिष्ठा सूचक प्रतीत होता है। बसोर डलियां बनाने तथा सुअरपालन का काम करते हैं। वंश (बांस) कारी इनका परंपरागत काम था, जिससे ये बसोर कहलाए। भंगी (बाल्मीकि) परंपरागत कार्य के साथ-साथ मुर्गी पालन भी करते रहे हैं। शिक्षा के प्रसार के साथ उपर्युक्त सभी जातियों के लोग अब अन्य व्यवसायों तथा नौकरियों में भी आ गए हैं।

जिले में सहरिया, भील एवं अगेरिया जैसे जनजातीय समूह हैं। अनुसूचित जनजातियों में सहरिया (सौंर) आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सबसे अधिक पिछड़े हुए हैं। इनकी स्थिति अनुसूचित जाति से भी अधिक चिंताजनक है। परमशिव आदिवासी समाज विज्ञान शोध संस्थान पाली के आंकड़ों के अनुसार जिले की 236 ग्राम पंचायतों के 529 राजस्व ग्रामों में सहरिया जाति के लोग निवास करते हैं। यह महरौनी एवं ललितपुर तहसीलों में अधिक संख्या में हैं। यह मुख्यतया जंगलों में लकड़ी काटने एवं खेतिहार मजदूरों का कार्य करते हैं। इन्हें 2001 की जनगणना में जिले में अनुसूचित जाति के अंतर्गत रखा गया है। इससे पूर्व द कांस्टिट्यूशन (शिड्यूल्ड ट्राइब्स) (उत्तर प्रदेश) ऑर्डर 1967 (सी ओ 78) में उत्तर प्रदेश में भोटिया, बुक्सा, जानसारी, राजी तथा थारू जनजातियों को अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत रखा गया था। इनमें से सन् 2001 में उत्तराखंड के गठन के बाद प्रदेश में थारू और भुक्सा जनजातियां ही शेष रह गई थीं, किंतु 2003 के एक्ट 10, दूसरी अनुसूची के सेक्शन 4 के अंतर्गत हुए संशोधन के बाद ललितपुर जनपद की सहरिया जनजाति भी अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत सम्मिलित कर ली गई है।[48] ललितपुर जनपद के सहरियों के अलावा इस संशोधन के बाद प्रदेश के पूर्वी जनपदों में रह रहीं जनजातियां- गोंड़, राजगोंड़, खरवार, खैरवार, धुरिया, नायक, ओझा, पठारी, बैंगा, पंखा, पनिका, अगरिया, पतारी, चेरो, भुइयां, भुइया तथा परहिया-अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत सम्मिलित हो गई हैं। वेदों में उल्लिखित सावर को सहरिया जनजाति समझा जाता है। बाद में महाभारत के वर्णन में है कि पांडवों ने इन्हें हराया था। नग्न सावर तथा पर्ण सावर इन्हीं में हुए हैं। वराहमिहिर ने इनकी भाषा को सावरी कहा है। इतिहासकार टालमी और प्लिनी ने अपने वर्णनों में स्वारी एवं सबराई को कहा है कि ये पत्ते खाते थे। सहरिया के बाद ही ललितपुर जनपद में गोड़ों का आधिपत्य स्थापित हुआ था। जिसके राजा सुम्मेर सिंह के नाम पर ललितपुर नगर बसाया गया था।

वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार देश में सर्वाधिक 1,39,124 व्यक्तियों के साथ सहरिया जनजाति मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले में हैं। इसके बाद मध्य प्रदेश के ही शेवपुर जिले में 1,07,935 तथा अविभाजित गुना जिले में 1,02,601 व्यक्तियों के साथ क्रमश: द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर है। राजस्थान के बारां जिले में सहरिया जनजाति के लोगों की संख्या 74,246 है जो देश में चतुर्थ स्थान पर है। इसके बाद ललितपुर जनपद के सहरिया 44,587 व्यक्तियों के साथ पंचम स्थान पर आते हैं। उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक सहरिया ललितपुर जनपद में ही हैं। प्रदेश की कुल जनजातियों की संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो इस जनपद के सहरिया सोनभद्र जिले की गोंड़ तथा खरवार जनजातियों को मिलाकर तथा देवरिया जिले की गोंड़ जनजाति के बाद तीसरे स्थान पर हैं। ललितपुर जनपद के बाद बलिया और मऊ जनपदों की गोंड़ जनजाति का स्थान क्रमश: चौथा और पांचवां आता है। सहरिया जनजाति के लोगों को ललितपुर जिले में 'बर्रखा' के नाम से जाना जाता है, जो वनरक्षक का विकसित बोली रूप है। इन्हें 'राउत' भी कहा जाता है जो जंगल के राजा की पदवी के अर्थ में ज्ञात प्रतीत होती है। सहरिया का एक अन्य ध्वनि परिवर्तन सौंर बाबा के रूप में भी यहां सुना जाता है। सह का अर्थ साथी तथा हरिया चीता को कहा गया है अत: सहरिया का अर्थ चीता का साथी (companion of the tiger) भी होता है। राजस्थान के बारां जिले की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार सहरिया जंगलवाची अरबी शब्द सहरा से निकला है। मुस्लिम शासकों ने इन्हें जंगलों में बसाया और 'शह्र' नाम दिया, जिससे ये सहरिया कहलाए। सहरियों की बस्ती को सहराना कहा जाता है। रामायण की शबरी को भी सहरियों से जोड़कर देखा जाता है। वस्तुत: यह जाति जंगल से जुड़ी रही है। समाज और सभ्यता के वर्तमान स्वरूप से इसका कोई सरोकार नहीं रहा है। इसलिए इसका लिखित अथवा पुरातात्विक इतिहास प्राप्त नहीं होता है। यत्र-तत्र बिखरे संकेत-सूत्रों के सहारे ही इनके मूल उद्गम को जानने-समझने की चेष्टा की जाती है।[49] यह जनजातीय समूह द्रविण मूल के होने के कारण उनसे कुछ समानताएं रखते हैं। यह अधिकांशत: गहरे श्याम वर्ण के होते हैं, जबकि भील अधिकांशत: लंबे एवं हृष्ट-पुष्ट होते हैं। सहरिया कुछ छोटे कद के एवं चपटे नाक-नक्श के तथा अगेरिया कुछ दुबले होते हैं। इनकी भाषा तथा बोलने का लहजा अन्य बुन्देली भाषियों से भिन्न एवं विशिष्ट होता है। इनकी वेश-भूषा पारंपरिक होती है। यह सभी हिंदू धर्म को मानते हैं तथा अनेक उपजातियों में विभाजित है। सहरिया एवं भील अपने को राजपूत वंश का मानते हैं।

भील लोग अपनी कुल देवी के अतिरिक्त महादेव जी और हनुमान जी की भक्ति करते हैं। यह अंधविश्वासी होते हैं शकुन-अपशकुन, जादू-टोना एवं भूत-

प्रेत में विश्वास रखते हैं। भील जनजाति की पहचान जिस प्रकार धनुष-वाण है, उसी प्रकार सहरिया जनजाति की पहचान उसका हथियार कुल्हाड़ी है।

सहरिया हिंदू देवी-देवताओं जैसे राम, कृष्ण, हनुमान एवं भवानी आदि की भक्ति करते हैं। यह सूर्य, चंद्र एवं गाय की भी पूजा करते हैं। स्थानीय हिंदुओं की भांति अधिकांशत: हिंदू त्योहार मनाते हैं। स्वभाव से यह सीधे, सरल तथा निष्कपट होते हैं। अतिनिर्धन होने के बावजूद चोरी नहीं करते। इनके प्रमुख गोत्रों में सनोरया, बबुलया, नकटेले, रजौरया, सुरबइया आदि हैं। सहरियों में जिन देवी-देवताओं को पूजा जाता है, उनमें ठाकुरबाबा, घटौरिया बाबा, नारसिंह बाबा और गाड़ीवान बाबा प्रमुख हैं। यह मांसाहारी होते हैं तथा विशेष अवसरों पर मदिरा पान भी करते हैं। अत्यधिक परिश्रमी एवं दरिद्र होने के बाद भी यह आमोद-प्रमोद में रुचि लेते हैं। सहरिया पुरुष नृत्य भी जानते हैं। सैरा नृत्य इन्हीं का ईजाद किया हुआ बताया जाता है। वाद्यों की धुनों पर स्त्रियों के वस्त्र धारण करके यह बहुत अच्छा पारंपरिक नृत्य करते हैं। इनकी स्त्रियां अच्छी गायिकाएं होती हैं किंतु उनको नृत्य करने का निषेध है। इनका परंपरागत धंधा लकड़ी काटना एवं जंगल से शहद आदि इकट्ठा करके बेचना है। रात में खेतों की रखवाली का काम ढबुआ (छप्पर का गुंबदनुमा घर) अथवा टपरिया (लकड़ियों तथा पत्तों/पुयाल से बना घर) डालकर करते है। 'मध्य भारत के इतिहास' के लेखक हरिहरनिवास द्विवेदी ने इन्हें 'प्राचीनतम पृथ्वीपुत्र' कहा है। कहा जाता है इस क्षेत्र में सहरियों को पांडवों ने हराकर अपना आधिपत्य अज्ञातवास के समय स्थापित किया था।

जिले के लोगड़िया भी हिंदू धर्म में विश्वास करते हैं। परंपरागत रूप से लौह गढ़ने अर्थात् लोहे के औजार तराशने के कारण इन्हें लोगड़िया कहा जाने लगा। यह अगहन माह में डीह (ग्राम देवता) तथा पौष माह में लोहासुर देवी की उपासना करते हैं। इनके प्रमुख त्योहार होली एवं वैसाखी हैं। यह साखू एवं साल के पेड़ों में आस्था रखते हुए उनका आदर करते हैं। पुरुष कान में पीतल या सोने के छल्ले तथा स्त्रियां कान में तरकी और कांच की चूड़ियां पहनती हैं। यह मांसाहारी होते हैं। यह अपने को महाराणा प्रताप का वंशज बताते हैं। अकबर से चले युद्ध के बाद महाराणा प्रताप भटकते रहने के लिए जिस प्रकार विवश हुए थे उसी प्रकार यह भी अपना कहीं स्थाई ठिकाना नहीं बनाते। एक सुंदर सुसज्जित बैलगाड़ी ही इनका सचल घर होता है। जहां काम मिला वहीं ठहर गए फिर अगले पड़ाव की ओर बढ़ते रहते हैं।

मोगिया जनजाति जिले के गांव सिंगैपुर (महरौनी) में निवास करती है। अपनी उत्पत्ति के संबंध में इनका विश्वास है कि ये राजपूत पिता और कुचबंदनी माता की संतान हैं। किसी ठाकुर की ठकुराइन की मौत हो जाने के बाद उसने किसी

कुचबंदनी को रखैल के रूप में रख लिया था और इससे जो संतान हुई वे मोगिया कहलाए। हिंदुओं की अन्य जातियों की तरह इनमें भी शादियों में स्वयं का, मामा का और फूफा का गोत्र बचाया जाता है। ये हिंदू त्योहार मनाते हैं। इनकी अधिकांश रिश्तेदारियां सागर जिले में हैं। विवाह और मृतक संस्कार यह हिंदुओं की ही भांति संपन्न करते हैं।

इनकी व्यावहारिक शब्दावली इस जिले की बोली से कुछ भिन्नता लिए हुए है। शब्दों की सुर-लहरी भी इनकी अलग है-

झड़िया - पानी पीने का बर्तन
चिरकी - मिर्च
ढुलिया - चना
रेसू - गेहूं
रोल्टा - रोटी
दांतल्लो - हंसिया
कूतड़ो - कुत्ता
ठांडा - बैल
खाल्टा - खाट
धुआ - कुआ
चोल्टा - सिर[50]

जिले के सिंगैपुर गांव में मोगियों की खेती भी है, किंतु जिनकी खेती या अन्य आजीविका के स्रोत नहीं हैं, वे और उनकी स्त्रियां जंगल से तीतर बटेर पकड़कर बेचती हैं। सिंदूर, बिंदी, हींग इत्यादि वस्तुएं मोगिया स्त्रियां गांव-गांव जाकर आवाज़ लगाकर बेचती हैं। अपने शिशुओं को यह अपनी पीठ पर कपड़े में बांध लेती हैं। प्रमुखत: घूम-फिरकर यह अपनी आजीविका चलाते रहे हैं।

जिले में अनुसूचित जनजाति के लोगों की संख्या जनगणना वर्ष 1991 में ग्रामीण क्षेत्र में 190 पुरुष, 139 स्त्री कुल 339 व्यक्ति थी। शहरी क्षेत्र में 5 पुरुष, 5 स्त्री कुल 10 व्यक्ति थी। इस समय मोगिया अनुसूचित जनजाति में शामिल थी। इसके बाद पता नहीं किस कारण सिंगैपुर को मोगियों को अनुसूचित जनजाति के दर्जे से हटाकर सामान्य जाति के अंतर्गत सम्मिलित कर लिया गया। सिंगैपुर गांव के पास सिंदवाहा निवासी प्रबुद्ध अधिवक्ता श्री अरविंद नायक ने बताया है कि इन्हें सन् 1995 के पंचायत चुनावों में गांव के सवर्ण जाति के लोगों और जिला प्रशासन की दुरभिसंधि के फलस्वरूप सामान्य वर्ग में सम्मिलित कर दिया गया। श्री नायक के अनुसार यदि मोगिया अनुसूचित जनजाति में रहते तो यह पंचायत इनके बहुमत

को देखते हुए अनुसूचित जनजाति हेतु आरक्षित हो जाती और गांव के सवर्ण चुनाव लड़ने से वंचित रह जाते। अनुसूचित जनजाति में जातियों को सम्मिलित अथवा हटाने का अधिकार केंद्रीय शासन को होता है, अत: जिला प्रशासन की आख्या के आधार पर ही यह संभव हुआ होगा। उत्तर प्रदेश में पांच जनजातियां - भोटिया, बुक्सा, जानसारी, राजी तथा थारू- 1967 ई. के संविधान आदेश के अनुसार अनुसूचित जनजाति में शामिल थीं। 2001 ई. में उत्तराखंड अलग प्रदेश के गठन के बाद प्रदेश में थारू एवं भुक्सा जनजाति ही शेष रह गई हैं। बाद में सन् 2003 में संविधान आदेश में संशोधन हुआ और जनपद ललितपुर की सहरिया जनजाति भी अनुसूचित हो गई, किंतु इस जनपद की मोगिया, लोगड़िया एवं अन्य घुमंतू जनजातियां अभी भी अनुसूचित जनजाति की परिधि से बाहर हैं।

भांड़–बधाइयां गा-बजाकर याचना-वृत्ति से यह अपनी आजीविका चलाते हैं। अन्य लोगों के बोलने-चलने की नकल तथा मिमिक्री करना इनकी आदत है। 'भौंड़ा' शब्द की रिश्तेदारी 'भांड़' से है। शब्द के रूप में 'भांड़' का विकास भट्ट से हुआ है किंतु इनके मांगने के तौर तरीकों को देखते हुए स्पष्ट है कि भौंड़ेपन शब्द का निर्माण इसी से हुआ है। इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, क्योंकि एक दिन कमाकर चार दिन बैठकर खाना चाहते हैं। मांगने के लिए बार-बार जाना भी कदाचित् इन्हें नहीं सुहाता। इन परिवारों को कभी राज्याश्रय प्राप्त था। इसलिए आलस्य और निकम्मेपन के कारण इनके परिवारों में विपन्नता है। किसी पुराने सूत्र के आधार पर ये अपने को तिवारी कहते हैं, किंतु ब्राह्मणों में इनकी स्वीकार्यता नहीं है।

बेड़िया/बेड़नी–लोकजीवन में लोकगीतों की महत्ता सर्वोपरि है। बुंदेलखंड के लोकगीतों में 'फाग' और 'राई' अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। फाग और राई के साथ बेड़िया जाति जुड़ी है। नाचने वाली इनकी औरतों को बेड़नी कहा जाता है। जिले की लोकरुचि में राई तरंगें पैदा कर देती है। नाचने के अवसर पर बेड़नी घेरदार गहरे रंग का लहंगा और उसके नीचे चूड़ीदार पाजामा भी पहनती हैं, इस पाजामा को सरई कहा जाता है। बेड़नी साड़ी या लुंगरा ओढ़ती हैं। पांवों में खूब आवाज़ करने वाले घुंघरू बांध लेती हैं और तेज आलाप के साथ गीत गाती हैं। यह मिश्रित जातियों के लोग हैं। इनमें विभिन्न जातियों से सामाजिक रूप से बहिष्कृत किए गए व्यक्ति भी सम्मिलित हैं। इनकी स्त्रियां गोरे रंग की होती हैं। बेड़िया लोगों की कुलदेवी कालीजी एवं ज्वालामुखी हैं। यह मांसाहारी होते हैं तथा जंगली जानवरों का मांस खाते हैं। ओझा-नावते का काम भी इनके बुजुर्ग किया करते हैं। जिले के रनगांव (महरौनी) तथा समोगर (महरौनी) गांवों में इनके परिवार निवास करते हैं।

बेड़नी के संबंध में एक कहावत यहां चली आई है –

नरवर चड़ै न बेड़नी, एरच पकै न ईंट।
गुदनौटा भोजन नहीं, बूंदी छपै न छींट।।

कभी राजा नल की राजधानी के रूप में ख्यात नरवर वर्तमान में मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले की करैरा तहसील में स्थित है। यहां पर एक विशाल दुर्ग बना हुआ है। इस कहावत के संबंध में जनश्रुति प्रचलित है कि यहां पर एक बेड़नी कच्चे सूत पर नाचने आई। उसने सभी धारदार शस्त्र मंत्र से बांध दिए, किंतु चमार की रांपी को बांधना भूल गई। नृत्य के समय चमार ने रांपी से कच्चे सूत को काट दिया, जिससे बेड़नी नीचे गिरकर मर गई। तभी से बेड़नियों ने नरवर में नृत्य न करने की प्रतिज्ञा की। उसी समय से यह कहावत प्रचलित हो गई। यहां 'न चढ़ै' का तात्पर्य नृत्य के लिए अभिमंत्रित धागे पर न चढ़ने से है।[51] झांसी जिले का एरच कस्बे में प्रचुर मात्रा में जमीन से ईंटें निकलती रहती हैं। गुदनौटा गांव में गरीबी के कारण लोग भोजन कराने में असमर्थ थे। बूंदी राजस्थान में छींट नहीं छपती है। ललितपुर जनपद के लोधी राजपूतों का एक गोत्र नरवरिया का संबंध शिवपुरी के नरवर अथवा राजा नल से है।

कंजड़/नट—नट अच्छे कलाबाज होते हैं। यह रस्सियों पर चलकर एवं उन पर कलाबाजी करके अपना जीविकोपार्जन करते हैं। यह दो लंबे बांसों पर चलने के अभ्यस्त होते हैं। कंजड़ इन्हीं का उपजाति समूह है। कंजड़ों की भाषा का स्वरूप भी इस जिले की बोली से अलग है। यह लगभग 15 प्रतिशत टूटी-फूटी उर्दू के, 10 प्रतिशत शब्द खड़ी बोली के, 60 प्रतिशत शब्द जिले की बुंदेली बोली के एवं 15 प्रतिशत पेशे से संबंधित शब्द अपनी बातचीत में प्रयुक्त करते हैं। क्रियाएं बुंदेली मिश्रित खड़ी बोली की होती हैं। कंजड़ अपने को हिंदू धर्म का मानते हैं। यह मुख्यतया मारी (मृत्यु की देवी), प्रभा (स्वास्थ्य की देवी) तथा भुइयां (पृथ्वी की देवी) की भक्ति करते हैं। इन जनजातियों में बहुत से चोरी, उठाइगीरी एवं डकैती भी करते हैं।

गोसाईं—गोसाईं भी नट और कंजड़ों की भांति घुमंतू प्रकृति के होते हैं। यह प्राय: संन्यासी या बैरागी वेशभूषा में होते हैं तथा अपने को ब्राह्मणों के वंश का मानते हैं। यह विशेषत: नारायण की भक्ति करते हैं। इनके मुख्य तीर्थस्थल वाराणसी, अयोध्या एवं मथुरा हैं। तीर्थस्थलों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर यह एक रात्रि से अधिक व्यतीत नहीं करते हैं। यह शरीर पर गेरुए रंग के वस्त्र धारण करते हैं तथा सिले हुए वस्त्र पहनना वर्जित मानते हैं। यह शाकाहारी होते हैं तथा अपना भोजन स्वयं पकाते हैं। गोसाईं धातु के वर्तनों के प्रयोग को वर्जित मानते हैं। यह मदिरा एवं

तंबाकू आदि का सेवन भी निषिद्ध मानते हैं। गले में रुद्राक्ष की माला पहनकर, गेरुए वस्त्र लपेटकर, मुंह पर भभूति मलकर तथा एक भिक्षा पात्र लेकर यह जिले में इधर-उधर घूमते फिरते दिखाई पड़ते हैं।

नाथ—जिले के बूटी (महरौनी) तथा पचौड़ा (महरौनी) गांवों में इनकी बस्तियां हैं। नाममात्र की खेती इनके पास है। जंगल तथा खेतों से सांपों को पकड़कर उनका प्रदर्शन और बीन बजाना इनका पारंपरिक व्यवसाय है। मांगलिक अवसरों पर इनका बीन-बैंड भी चला करता है। नाथों और सिद्धों की बानियां कबीर के एकेश्वरवाद का आधार बनी थी। नौ नाथों की परंपरा में ही जिले के नाथ अपने को संबद्ध करते हैं। नौ नाथों में गोरखनाथ का सर्वोपरि स्थान है। इन्हीं के नाम पर वर्तमान गोरखपुर नगर बसा है। नाथों के समकालीन सिद्ध बौद्ध परंपरा के संत हुए, किंतु नाथ हिंदू योगियों की शाखा थी। गोरखनाथ ने पतंजलि के उच्च लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति को लेकर हठयोग का प्रवर्तन किया। यद्यपि गोरखनाथ के समकालीन कौल कापालिक आदि वज्रयानियों के कारण इनकी साधना पद्धतियों में विकृतियां आ गईं, जिससे गोरखधंधा शब्द आज अपने नकारात्मक अर्थ के कारण जाना जाता है। जिले के कुछ नाथ जड़ी-बूटी से बनी औषधियों के बारे में भी ज्ञान रखते हैं।

मुसलमान—सन् 1981 में जिले में उसकी कुल जनसंख्या के कुल 2.10 प्रतिशत मुसलमान थे। वहीं सन् 2001 में 28796 व्यक्तियों के साथ इनकी संख्या 2.95 प्रतिशत हो गई। प्रदेश के अन्य जिलों की भांति इस जिले में भी मुसलमान दो मुख्य वर्गों में विभाजित है- शिया तथा सुन्नी। इनमें सुन्नी बहुसंख्यक हैं।

जिले के मुसलमान समुदाय में शेखों का प्रमुख स्थान है। इसके पश्चात् क्रमश: पठान तथा सैयिद हैं। इनके अतिरिक्त जिले में बेहना, लालबेंगी, कुंजरा, नट, भिश्ती तथा जुलाहा भी हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांशत: मुसलमान अपने परंपरागत धंधे में संलग्न हैं, किंतु नगरीय क्षेत्रों एवं शिक्षित वर्ग के लोग कई अन्य व्यवसायों में भी संलग्न है। जिले के कुछ मुसलमानों के पूर्वजों के नाम हिंदू हैं।

जैन—सन् 2001 की जनगणना के अनुसार जनपद ललितपुर में हिंदू और मुसलमान के बाद जैन तीसरा बड़ा समुदाय है। वर्ष 1981 में यह समुदाय कुल जनसंख्या में हिंदुओं के बाद सबसे बड़ा था। मुसलमानों का स्थान तीसरा था। वर्ष 1981 में जैन आबादी 2.81 प्रतिशत से घटकर 2001 की जनगणना में 2.02 प्रतिशत रह गई। जैन समुदाय के लोग यहां आर्थिक रूप से संपन्न स्थिति हैं। ललितपुर एवं महरौनी तहसील में जैनियों की संख्या अधिक है। यह मुख्यतया वाणिज्य एवं व्यापार में लगे हुए हैं।

सिख—सन् 2001 में इनकी संख्या मात्र 1093 थी। इनमें बहुत से 1947 में देश

विभाजन के समय पाकिस्तान के विभिन्न स्थानों से आकर यहां बसे हैं। मुख्य रूप से यह व्यापारिक कार्यों में लगे हुए हैं। वर्ष 1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए दंगों एवं लूटपाट में इस जिले के सिख भी लपेट में आ गए थे। इसके अतिरिक्त ललितपुर जनपद में कभी कोई सांप्रदायिक दंगा अथवा उन्माद नहीं हुआ है।

ईसाई—सन् 2001 में इनकी संख्या 1078 थी। ईसाई मिशनरियों ने ललितपुर में शिक्षा एवं चिकित्सा में महत्वपूर्ण योगदान किया है। यह सिखों की भांति अधिकांशत: नगरीय क्षेत्रों विशेषत: जिला मुख्यालय में निवास करते हैं। इनके दो संप्रदाय हैं—रोमन कैथोलिक एवं प्रोटेस्टेंट। कैथोलिक रूढ़िवादी तथा प्रोटेस्टेंट उदारवादी माने जाते हैं।

बौद्ध—सन् 1981 की जनगणना में जिले में केवल एक बौद्ध पुरुष था, किंतु 2001 ई. की जनगणना की अनुसार इनकी संख्या बढ़कर 167 हो गई। यहां मुख्यत: दलित जातियों द्वारा बौद्ध संप्रदाय को अंगीकृत किया गया है।

धार्मिक विश्वास एवं प्रथाएं—हिंदुओं के परंपरागत विश्वासों एवं प्रथाओं को सामूहिक रूप में 'सनातन धर्म' कहा जाता है। हिंदू एकेश्वरवादी होते हैं तथा अवतारों में विश्वास करते हैं। इनके अनुसार ईश्वर का पृथ्वी पर आविर्भाव होता है। हिंदू धर्म विविध विश्वासों, धार्मिक सिद्धांतों एवं बहुदेववाद से असीम अद्वैतवाद का समुच्चय है। इसमें सभी देवी-देवताओं की उनके विभिन्न स्वरूपों में पूजा की जाती है। पर्वतों, वृक्षों, नदियों एवं देवी-देवताओं की विभिन्न अवसरों पर पूजा-अर्चना, अग्नि में आहुति, सूर्य को अर्घ्य, सत्यनारायण की कथा, कीर्तन, संध्या तथा विशेष पर्वों पर व्रत-उपवास आदि हिंदू धर्म की सामान्य विशेषताएं हैं। इनके प्रमुख ग्रंथ रामायण, भगवत्गीता तथा भागवत पुराण हैं। जनपद में श्रीरामचरितमानस को ही प्राय: रामायण समझा जाता है।

अन्य स्थानों के हिंदुओं की भांति इस जिले के अधिकांश हिंदू शिव, विष्णु एवं हनुमान के उपासक हैं। जिले में साधारणतया हिंदू अपने घरों में मूर्तियां, प्रतिमाएं अथवा धर्म पुस्तकें रखकर पूजा का स्थान बना लेते हैं तथा प्रतिदिन स्थान के बाद पूजा करते हैं। हिंदुओं में भी कुछ ऐसे लोग हैं जो विष्णु, शिव तथा हनुमान की उपासना नहीं करते हैं। ऐसे लोग आर्यसमाजी होते हैं जो वेद को भगवान मानकर पूजा-उपासना करते हैं। मूर्तिपूजा आर्यसमाजियों के यहां निषिद्ध है। गायत्री परिवार के व्यक्ति भी जाति भेद से ऊपर उठकर अपनी पूजा-उपासना किया करते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे भी हैं जो हिंदू धर्म की किसी पद्धति को वास्तव में नहीं अपनाते फिर भी हिंदू हैं। हिंदू धर्म की ऐसी विशेषताओं को देखकर सर्वोच्च न्यायालय ने टिप्पणी

की थी कि हिंदू वस्तुत: किसी धर्म का नाम नहीं अपितु यह एक जीवन-दर्शन है।

जिले में शिव, विष्णु एवं देवी-देवताओं के गांव-गांव में मंदिर एवं धार्मिक स्थल हैं। पूर्व में विष्णु एवं हनुमान की उपासना इस रूप में नहीं होती रही होगी। बुंदेली शब्दकोशकार डॉ. कैलाशबिहारी द्विवेदी के अनुसार विष्णु भगवान के वराह अवतार की पूजा और उसकी मूर्तियों तथा मंदिरों के निर्माण के ऐतिहासिक साक्ष्य गुप्तकाल से गुर्जर प्रतिहार और चंदेलों के काल तक मिलते हैं। अत: यह स्पष्ट है कि विष्णु और हनुमान की उपासना से पूर्व इस क्षेत्र में वराह पूजा होती रही। जनपद ललितपुर के कई ऐतिहासिक स्थानों से नृसिंह मूर्तियां खुदाई में प्राप्त होती रहती हैं, विष्णु पूजा के भी कई संदर्भ जिले से प्राप्त हुए हैं। ललितपुर तहसील में देवगढ़ का गुप्तकालीन गजोधर मंदिर एक महत्वपूर्ण धर्मिक स्थल है, जिसे सागरमठ भी कहते हैं। इसमें विष्णु तथा लक्ष्मी की प्रतिमाएं स्थापित हैं। चांदपुर (ललितपुर) में 12वीं शताब्दी के विष्णु मंदिरों के अवशेष हैं। धौर्रा (ललितपुर) तथा दूधई (ललितपुर) में हनुमानजी तथा ब्रह्मा की अति प्राचीन प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं। जिले के प्रत्येक गांव में छोटे-बड़े धार्मिक स्थल हैं, जिन पर त्योहारों तथा विशेष अवसरों पर धार्मिक आयोजन होते रहते हैं।

जनपद में मनाए जाने वाले हिंदुओं के प्रमुख पर्व रामनवमी, नागपंचमी, रक्षाबंधन, कृष्णजन्माष्टमी, महाशिवरात्रि, दशहरा, दीपावली, कार्तिक पूर्णिमा, बसंत पंचमी, होली तथा मकर संक्रांति हैं। हिन्दुओं के यहां इन बारह माहों - चैत्र, बैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, क्वांर, कार्तिक, अगहन, पौष, माघ तथा फाल्गुन - का वर्ष होता है। मकर संक्रांति का पर्व प्रतिवर्ष 14 जनवरी को होता है। मकर संक्रांति तथा बसंत पंचमी के दिन जिले के कई स्थानों पर मेलों का आयोजन होता है। स्थानीय ग्राम देवताओं में कुंवर साहब, हरदौल बाबा, कारसदेव, घटौरिया, मसान बाबा, कालका माई आदि पूजे जाते हैं। दूधई के पास बान बाबा की मूर्ति है जो विष्णु के वामन अवतार का स्मरण कराती है। पशुदेवता कारसदेव को प्रसन्न करने के लिए गोटें हर माह की चतुर्थी को गाई जाती हैं। ढांक बजती है। घुल्लों पर देवता खेलते हैं और पशुओं पर जब कोई विपत्ति पड़ती है तो कारसदेव को पूजा देते हैं।

हिंदुओं में विवाह एक संस्कार माना जाता है। यह पारंपरिक ढंग से रीति-रिवाजों के साथ संपन्न किया जाता है। साधारणतया सगोत्रीय परिवारों में विवाह नहीं होता है। सामान्य रूप से वैवाहिक संबंध एक ही उपजाति के भीतर ऋषिगोत्र बचाकर किया जाता है। प्रतिलोम (ऊंची जाति की लड़की तथा छोटी जाति का लड़का) तथा अनुलोम (छोटी जाति की लड़की तथा ऊंची जाति का लड़का)

विवाहों में अनुलोम विवाहों का प्रचलन अधिक है। पितृ प्रधान समाज होने के कारण इनकी संतान को पिता के वंश का माना जाता है। ग्रामीण तथा अशिक्षित वर्ग में अभी भी बाल-विवाह प्रचलित हैं। विधवा विवाह ऊंची जाति के हिंदुओं में निषिद्ध है। विवाह माता-पिता अधिकांशत: पिता या अभिभावकों द्वारा तय किए जाते हैं। साधारणतया हिंदुओं में विवाह के संबंध को तोड़ना बहुत बुरा माना जाता है। इसी कारण यहां तलाक़ या अलगाव की संख्या बहुत कम है। हिंदुओं में वंश चलाने एवं मरणोपरांत के क्रिया-कर्म हेतु पुत्र का जन्म आवश्यक समझा जाता है। इसके लिए चाहे सात-आठ संतानें तक ही क्यों न पैदा करनी पड़े। इसके अतिरिक्त शिशु मृत्यु दर की अधिकता भी यहां अधिक संतति उत्पादन का कारण रही है। पुत्रहीनता की दशा में उसे समाज के लांछन सुनने-सहने पड़ते हैं। जिले में कहीं-कहीं पुत्र न होने के कारण स्त्रियों द्वारा आत्महत्या की ख़बरें आती रहती हैं तथा कुछ पुरुषों द्वारा इसी कारण एकाधिक विवाह किए जाते हैं। हिंदू विवाह अधिनियम 1955 के अधीन हिंदुओं के अंतर्गत सिख, जैन एवं बौद्ध भी आते हैं। यह अधिनियम बहुपति, बहुपत्नीत्व तथा सजातीय विवाहों का निषेध करता है।

बुंदेलखंड की भांति ललितपुर जनपद में भी जवारे, आस - माई, चैती पूनों, अक्ती, हरायतें, असाढ़ी देवता, हरियाली अमाउस, गड़ा लैनी आठें, भुजरियां या कजलियां, मामुलिया, नौरता आदि अनेक लोक-पर्व मनाए जाते हैं।

इस्लाम—जैसा कहा गया है जिले में सुन्नी संप्रदाय के मुसलमानों की संख्या अधिक है। जिले में धार्मिक प्रवृत्ति के मुसलमान अपने क़ायदों के पाबंद हैं। वे सर्वदा कलमा (नमाज़ अता करना) पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं और ज़कात (धर्मार्थ अंशदान करना) तथा हज करते हैं। धार्मिक प्रवृत्ति के मुसलमान सूफी-फ़क़ीरों की मज़ारों और मक़बरों पर जाने जैसे अपने ज़रूरी धार्मिक आचरण करते हैं। ललितपुर में सदनशाह बाबा के मक़बरे पर प्रतिवर्ष 31 मार्च से 2 अप्रैल तक उर्स (मुसलमान ऋषि का वार्षिक उत्सव) लगता है। इसमें हिंदू और मुसलमानों के साथ सिख भी सम्मिलित होते हैं। बाबा सदनशाह की बानियां गुरुग्रंथ साहब में भी अनुस्यूत हैं। जनपद में यह मान्यता है कि इस पवित्र आत्मा के निवास से यहां हिंदू मुस्लिम झगड़ा कभी नहीं होता है। दोनों संप्रदायों के लोग यहां सौहार्द रखते हैं।

मुसलमानों के प्रमुख त्योहार बारावफ़ात, शव-ए-बारात, ईद-उल-फितर, ईद-मीलाद-उन्नवी तथा ईद-उज्जुहा हैं। रमज़ान पवित्र महीना है। मोहर्रम इनके यहां धूम-धाम से मनाया जाने वाला शोकपर्व है।

बारावफ़ात पैगंबर मोहम्मद की मृत्यु का दिन है। शब-ए-बारात में मृतकों की आत्माओं के लिए प्रार्थना की जाती हैं। ईद-उल-फितर रमज़ान माह के अंतिम दिन

मनाई जाती है। रमज़ान के पूरे 30 रोज़ रोज़ा (उपवास) रखा जाता है। ईद-मीलाद-उन्नवी पैगंबर मोहम्मद का जन्म दिन होता है। ईद-उज-जुहा पैगंबर इब्राहिम द्वारा अपने पुत्र इस्माइल की बलि देने की स्मृति में मनाया जाता है। मोहर्रम हुसैन की कर्बला पर हुई वीरगति की स्मृति में मोहर्रम माह की दसवी तारीख़ को मनाया जाता है। शिया मुसलमान 30 से 40 दिनों का शोक मनाते हैं। काले वस्त्र पहनते हैं, स्त्रियां शृंगार नहीं करतीं। अशरा के दिन (जब हुसैन मारे गए थे) रो-रोकर ताजियों का जुलूस निकालते हैं तथा बाद में उनको दफना देते हैं। इसी समय मरसिया (शोकगीत) पढ़ा जाता है। शिया लोग हुसैन की वीरगति के लिए जिम्मेदार सुन्नी संप्रदाय के पुरखों को मानते हैं। इसी से संबंधित ताजिया निकालते समय शिया और सुन्नियों के बीच झगड़ा देश के कई भागों में होता रहता है, किंतु ललितपुर जनपद में ऐसा कोई वाकया सामने नहीं आया है। सिंध प्रांत में कुरैशी परिवार में जन्मे जलालुद्दीन उर्फ जलाली ने अपना पुश्तैनी मांस बेचने का काम अपना लिया था, किंतु यह धार्मिक और सादगी पसंद व्यक्ति थे। इन्हें आखुद सिंधी ने गुरु मानकर 'सदन' की उपाधि दी। यहां से यह सदनशाह बाबा और कसाई का काम करने के कारण सदन कसाई हो गये। शालिगराम की बटैया से सदन बाबा मांस तौला करते थे। यह बाबा ललितपुर आकर अपना मुकाम बनाकर रहने लगे थे।

ललितपुर शहर में इनकी शानदार दरगाह बनी है, जिसमें सालाना उर्स लगता है। यह दरगाह यहां के हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई के भेदभाव को भुला भाईचारे से रहने का जीवंत निदर्शन प्रस्तुत करती है।

ललितपुर जनपद में सदनशाह बाबा के उर्स के अतिरिक्त तालबेहट तहसील के पूराकलां तथा टेटा में क्रमश: पीरों का मेला तथा जमालशाह पीर बाबा का उर्स प्रसिद्ध है।

मुसलमानों में विवाह (निकाह) एक अनुबंध (संविदा अथवा इक़रारनामा) है। इस्लाम में बहुपत्नीत्व को मान्यता दी हुई है किंतु यहां साधारणत: आर्थिक मजबूरी तथा अन्य संस्कृतियों के प्रभावस्वरूप बहुपत्नीत्व की प्रथा न के बराबर है। मुसलमानों में चचेरे एवं ममेरे भाई बहनों के परस्पर निकाह होने में कोई सामाजिक निषेध नहीं है।

सिख—ललितपुर जनपद के सिख भी अन्य जगहों के सिखों की भांति अपने गुरुद्वारा जाकर कार-सेवा (स्वेच्छा से सामूहिक सेवा कार्य) करके लंगर (सामूहिक प्रीतिभोज) छकते हैं। सिखों में सामूहिक सेवा एवं सामूहिक भोज की परंपरा तथा धार्मिक शिक्षाओं के कारण ऊंचनीच का भेदभाव नहीं है।

गुरुनानक एवं गुरुगोविंद सिंह के जन्मदिवसों को जिले के सिख धूमधाम से मनाते हैं। इसके अतिरिक्त वैसाखी एवं लोहड़ी भी इनके प्रमुख त्योहार हैं।

जैन—जैन समुदाय के दो प्रमुख वर्गों – दिगंबर एवं श्वेतांबर – में से ललितपुर जनपद में मुख्यत: दिगंबर मत के अनुयाई हैं। यहां कई स्थानों पर दिगंबर जैन धर्मावलंबियों के प्रसिद्ध मंदिर हैं। जैन धर्मावलंबी व्यक्ति मंदिरों में अपने तीर्थंकरों की प्रतिमाओं की आराधना करते हैं। यह पूर्णत: शाकाहारी होते हैं। ललितपुर जनपद में इनके प्रमुख धार्मिक स्थल हैं – तालबेहट तहसील में पावागिरि, ललितपुर तहसील में देवगढ़, सीरोनजी, ललितपुर नगर में क्षेत्रपाल मंदिर तथा महरौनी तहसील के बानपुर में सहस्त्रकूट चैत्यालय। इस जनपद के बहुत से स्थानों पर वर्तमान से पूर्व चंदेल काल तक के प्राचीन जैन मंदिर स्थित हैं।

ललितपुर में गजरथ महोत्सव जैन समुदाय द्वारा बड़े धूमधाम से आयोजित होता है। जैन समुदाय के किसी व्यक्ति द्वारा जब किसी मंदिर या धार्मिक स्थल पर तीर्थंकर की प्रतिमा प्रतिष्ठापित की जाती है, तब इस विशाल समारोह का आयोजन होता है। यह धार्मिक अनुष्ठान एक मेले का रूप ले लेता है। इसका चरमोत्कर्ष दो हाथियों द्वारा खींचा जाने वाला सात मंजिला रथ है, जिसकी ऊपरी मंजिल में तीर्थंकर की प्रतिमा होती है। इस अनुष्ठान को संपन्न कराने वाले व्यक्ति को 'सिंघई' की उपाधि मिलती है। उसी व्यक्ति अथवा उसके वंशजों द्वारा दूसरी बार यह अनुष्ठान संपन्न कराया जाता है तो 'सवाई सिंघई' और तीसरी बार पर उसे 'श्रीमंत' की उपाधि मिलती है। यह इच्छित प्रतिष्ठा जैनियों के लिए विशेष सम्मान की बात है।

देवगढ़ में लगभग 1400 वर्ष पुरानी जैन मूर्तियां एवं मंदिर हैं। देवगढ़ में ही गुप्तकालीन दशावतार मंदिर भी है। ललितपुर जनपद में वैष्णव मूर्तियों के स्थानों पर ही जैन मंदिरों एवं मूर्तियों का होना यह प्रमाणित करता है कि यहां के तत्कालीन शासक उदार, सहिष्णु एवं प्रजाप्रिय रहे हैं। इस जनपद का इतिहास विशेषत: चंदेल राजाओं का वह दौर अत्यंत स्वर्णिम रहा, जिसमें उन्होंने जनता के लिए सूखी भूमि में सुंदर एवं विशाल तालाबों का निर्माण कराया एवं वैष्णव मंदिरों के साथ जैन मंदिरों को भी समान स्थान एवं महत्व दिया। इससे इस जनपद के स्थापत्य कला एवं सौंदर्य में गुणात्मक एवं मात्रात्मक अभिवृद्धि हुई।

जैन धर्म के अनुयाई अपने 24वें तीर्थंकर महावीरजी की जयंती मार्च–अप्रैल में (चैत्र माह में) मनाते हैं। इनका महत्वपूर्ण पर्व पर्यूषण भाद्रपद माह के आखिरी दस दिनों में होता है। इस पर्व से ही उनका नया लेखा वर्ष प्रारंभ होता है। अष्टानिका पर्व जैन लोग कार्तिक माह के आखिरी आठ दिनों में मनाते हैं।

ईसाई—ईसाइयों के प्रमुख त्योहार क्रिसमस एवं ईस्टर हैं। इनके यहां गुड-फ्राइडे शोक पर्व है। इस दिन प्रभु यीशु मसीह को सूली (क्रूस) पर चढ़ाया गया था। मान्यता है कि ईस्टर के दिन यीशु पुन: इस धरती पर आए, इस उपलक्ष्य में इस पर्व को मनाते हैं। क्रिसमस डे को ललितपुर जनपद के लोग बहुधा 'बड़ा दिन' के रूप में समझते हैं। ईसाई इस पर्व को प्रभु के जन्मदिन के तौर पर मनाते हैं।

सामाजिक जीवन—अन्य स्थानों की भांति इस जिले के परिवार भी पितृवांशिक हैं। सामान्यत: पुरुष अपनी पत्नी, बच्चों तथा अपने वंश के एक या अधिक आश्रितों के साथ एक ही घर में रहता है। तनावपूर्ण आर्थिक परिस्थितियों के दबाव के कारण भारतीय समाज की प्राचीन संयुक्त परिवार प्रणाली विखंडित हो गई है। विवाह के बाद बच्चे हो जाने पर प्राय: लोग अपनी गृहस्थी अलग बसा लेते हैं। जिले के परिवारों की आजीविका मुख्यत: कृषि है। परिवार से अलग होने पर ग्रामीण कृषकों द्वारा भूमि का विभाजन कर लिया जाता है। ग्रामीणों में विवाह एवं भोजन से संबंधित प्रतिबंधों की कठोरता में अभी कमी नहीं आ पाई है।

हिंदू विधवा विवाह अधिनियम 1956 (अधिनियम संख्या 15) द्वारा यद्यपि विधवा विवाह को हिंदुओं के लिए वैध बना दिया गया है, किंतु समाज में अभी भी यह सर्वमान्य नहीं है। मुसलमानों एवं ईसाइयों में विधवा विवाह पर कोई प्रतिबंध नहीं है।

दहेज लेना एवं देना क़ानूनी अपराध है, किंतु दहेज लेना और देना दोनों ही सामाजिक स्तर के मापक हैं। जो जितना अधिक दहेज देगा एवं लेगा वह उतना अधिक संपन्न एवं संभ्रांत समझा जाता है। विवाह पूर्व तिलकोत्सव के समय नक़दी दिए जाने की प्रथा है, जिसमें कुछ नक़दी लड़के वाले अपनी ओर से भी मिलाकर प्रतिष्ठा बढ़ी हुई महसूस करते हैं। इसके पीछे दिखावा प्रमुख कारण है। दहेज में ज़िन्दगी की ज़रूरतों का सारा सामान तथा गहने इत्यादि देने की भी प्रथा है।

देह व्यापार के मामले जिले में न के बराबर ही सुनाई पड़ते हैं, किंतु अनैतिक एवं वर्जनायुक्त शारीरिक संबंधों की घटनाओं की ख़बरें यदा-कदा आती रहती हैं।

दीपावली के समय जुआ खेलना शुभ माना जाता है। कुछ लोग इसे आने वाले वर्ष की समृद्धि के रूप में मानकर खेलते हैं। अन्य दिनों में भी लोग जुआ खेलते हैं। गांव-गांव ताश, चौपड़ के एकाधिक अड्डे जमे रहते हैं। बच्चे घोड़ा-घोड़ी, कबड्डी, गिल्ली डंडा, कंचा, आंख-मिचौली, गड़ा-गेंद, खो-खो इत्यादि खेल खेलते हैं। चांई-मांई, दुका-दुकौवल, मगरतला, छुवा-छवौवल और पुतरियां जैसे बच्चों के खेल लोकरुचि बढ़ाने वाले खेल हैं। क्वांर के महीने में मामुलिया और सुअटा-नौरता तथा झिंझिया के खेल जिले की बालिकाओं द्वारा खेले जाते हैं। बालक 'टेसू' खेलते

हैं। कार्तिक माह में छोटी बालिकाएं भी प्रात: काल तालाब या पोखर में स्नान कर तुलसी को जल चढ़ाकर पूजा करती हैं। बच्चियों के लिए यह भी खेल के ही समान अभिरुचि पैदा करने वाला अवसर होता है। शिशुओं के खिलाने के तरीक़े भी जिले के जनजीवन में व्याप्त हैं। किस्से-कहानी सुनना-सुनाना ग्रामीणों द्वारा समय बिताने के लिए एक लोकप्रिय साधन रहा है। टेलीविजन तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक साधनों के आने से मनोरंजन के पारंपरिक साधनों की ओर जिले के जनजीवन में उदासीनता व्याप्त हो गई है। आधुनिक खेलों में टेनिस, बैडमिंटन, शतरंज, जूडो कराटे इत्यादि विशेषत: नगर क्षेत्रों में अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं। क्रिकेट नगर क्षेत्र के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी बड़े उत्साह एवं प्रतिस्पर्धा के साथ खेला जाने लगा है।

ललितपुर जनपद पूर्णत: मैदानी क्षेत्र नहीं है। अनेक टीले, खड्डु, तंग घाटियां तथा लहरदार रास्ते इसकी स्थलाकृति की विशेषता है। नगरीय क्षेत्रों में मकान मुख्यत: ईंट एवं पत्थर के होते हैं। इनको बनाने में मौरंग-बालू, कंक्रीट, लोहा एवं सीमेंट का भी प्रयोग होता है। संपन्न व्यक्तियों के मकान कोठी या हवेली कहे जाते हैं।

गांवों में मकान बनाने के लिए खंडा पत्थर, कच्चे ईंट, लकड़ी, खपरैल एवं मिट्टी आदि का प्रयोग किया जाता है। संपन्न कृषकों के मकान साधारण कृषकों एवं खेतिहर मजदूरों के मकानों की अपेक्षा अधिक अच्छे हैं। जिले के अधिकांश गांव ऊंचे स्थलों पर बसे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश व्यक्ति समृद्ध नहीं हैं। इन क्षेत्रों में रहन-सहन का स्तर अत्यंत साधारण है। योजना आयोग के एक आंकड़े के अनुसार देश में प्रति 100 में से 77 व्यक्ति 20 रुपए प्रतिदिन की आमदनी पर गुजारा कर रहे हैं। ललितपुर जनपद में इस आंकड़े से भी अधिक विपन्नता दिखाई देती है।

जिले में मुख्यत: गेहूं तथा मोटे अनाज जैसे ज्वार, मक्का आदि खाया जाता है। चावल की पैदावार कम होने के कारण बहुसंख्यक जनता का यह खाद्य पदार्थ यहां नहीं है। त्योहारों तथा अन्य मांगलिक अवसरों पर चावल बनाए जाते हैं। यदि सार्वजनिक वितरण प्रणाली न रहे तो यह कुछ गिने-चुने परिवारों का ही खाद्य पदार्थ बनकर रह जाएगा। दालों में मुख्यत: उड़द, मसूर, मूंग, चना तथा मटर का प्रयोग होता है। अरहर की दाल नगरीय क्षेत्रों में ही अधिकांशत: प्रयुक्त होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में बिना शाक एवं सब्जी के अधिकांश व्यक्ति भोजन करते हैं। मट्ठा/छाछ, आम, नींबू, करौंदा, मिर्च या किसी मौसमी फल का अचार तथा प्याज के साथ लोग अपना भोजन करते हैं। सभी प्रकार की सब्जियां व्यक्तिगत पसंद तथा उपलब्धता के अनुसार खाई जाती हैं। कुछ ग्रामीणों के यहां महुआ के फूलों को उबालकर बनाई जाने वाली 'डुबरी' का सेवन बड़े चाव के साथ अभी भी किया जाता है। खाद्य तेल के रूप में भी महुआ के फल (गुली) का तेल भी प्रयुक्त किया जाता है। सरसों यहां पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न

होता है, जिससे यहां यह शरीर और सिर पर अभ्यंग करने के अलावा खाद्य तेल के रूप में भी प्रयुक्त होता है। अलसी तथा मूंगफली का तेल भी स्वल्प मात्रा में लोगों के यहां प्रयुक्त होता है। रिफाइंड तेल तथा वनस्पति तेलों का प्रयोग यहां दावतों एवं त्योहारों पर ही किया जाता है। सेब, मौसमी, अंगूर जैसे फलों का प्रयोग बीमार होने की दशा में यहां के लोग करते हैं। खान-पान लोगों की आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्तर तथा उनके व्यवसाय पर निर्भर होता है। जिले में शाकाहारी एवं मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन का सेवन होता है, किंतु अधिकांश लोगों के भोजन में प्रोटीनयुक्त आहार जैसे दूध, दही, मछली एवं हरी सब्जियों का अभाव रहता है। दूध के लिए यहां के ग्रामीण पशुपालन करते हैं पर अपने लिए उसका प्रयोग बहुत कम करते हैं, उससे घी बनाकर बेचने से उनके घर का आवश्यक खर्च जो चलता है। मुर्गी-पालन गांवों में होता नहीं, ग्रामीण क्षेत्रों में इनका विपणन भी नहीं है।

डॉ. वीरेंद्रसिंह यादव के संपादन में सन् 2010 में ओमेगा पब्लिकेशन दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'आपदा विश्लेषण' के पृ. 304 एवं 305 पर इन पंक्तियों के लेखक के दिए गए विवरण के अनुसार सन् 1989 में जनपद ललितपुर में भयानक सूखा पड़ा था, तब कुल 429 मिमी बारिश हुई। इसके बाद 1990, 1991, 1992 में कम बारिश के चलते सूखे जैसे हालात रहे। सन् 1997 में फिर सूखा पड़ गया। सन् 2000 में कुल 562 मिमी, 2002 में 579 मिमी, 2006 में 697 मिमी एवं 2007 में 591 मिमी वर्षा हुयी। वर्ष 2009 में अगस्त माह के अंत तक कुल 461 मिमी वर्षा हुई है। इतनी अल्पवृष्टि (500 मिमी से कम) जनपद में दो दशक बाद हुई है। वर्षा की कमी से रबी की फसलों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सन् 2009 में जून के तीसरे सप्ताह में यहां ठीक-ठाक वर्षा हुई। इससे किसानों ने अपने खेत तैयार करके उनमें खरीफ की मूंगफली, उड़द, मूंग, मक्का तथा सोयाबीन बो दिया। इस बीच प्रगतिशील किसानों ने खेतों में खरपतवार अधिक होने पर परसूट व टरगा सुपर जैसे महंगे खरपतवारनाशी दवाओं का छिड़काव कर दिया किंतु वर्षा के अभाव में फसलें सूखना शुरू हो गईं। विकासखंड जखौरा, बार एवं तालबेहट के किसानों द्वारा अधिकांश रूप में बोईं गईं मूंगफली, उड़द एवं मक्का की फसलें 90 प्रतिशत तक सूख गईं। विकासखंड मड़ावरा व महरौनी के किसानों की उड़द व सोयाबीन की फसलें 60 प्रतिशत से अधिक नष्ट हो गईं।

वेश-भूषा—नगरीय क्षेत्रों के पुरुष तथा ग्रामीण क्षेत्रों के नवयुवक पैंट, कमीज एवं बुशशर्ट आदि पहनते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के पुरुष धोती, पाज़ामा, कमीज़ या सलूका पहनते हैं। वे प्राय: पगड़ी बांधते हैं। सर्दी, गर्मी में खेती का काम करने के कारण कदाचित् यह उनकी मजबूरी भी है। विवाहित स्त्रियां साड़ी पहनती हैं। कृषक

एवं मजदूर स्त्रियां मुख्यत: पुरुषों की धोती की तरह साड़ी बांधती हैं। पुरुषों के साथ खेती के काम में यहां की स्त्रियां हाथ बंटाती हैं। अत: इस प्रकार इनको साड़ी पहनने से सुविधा होती होगी। ग्रामीण क्षेत्रों की स्त्रियां प्राय: गहरे रंग के वस्त्र धारण करती हैं, जिससे कपड़ों पर मैल न दिखे। साबुन का प्रयोग कम किया जाता है। नगरीय क्षेत्रों की लड़कियां सलवार कमीज़ के अतिरिक्त टॉप-स्कर्ट तथा जींस भी पहनने लगी हैं। वेश-भूषा का चयन वस्तुत: आर्थिक स्थिति एवं सामाजिक स्तर के आधार पर ही होता है।

स्थापत्य कला—ललितपुर जिले में वैष्णव, शैव एवं जैनियों के मंदिर तथा उनके अवशेष यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। इनका सर्वेक्षण कार्य उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग ने करा लिया है। जनपद के मंदिर एवं मूर्तियों में से कुछ गुप्तकाल के, कुछ उत्तर गुप्तकाल के और अधिकांश मंदिर चंदेलों के समय के हैं। मध्यकाल में बुंदेलों ने भी बहुत से मंदिर और क़िले बनवाए। ललितपुर जनपद के कुछ भूभाग पर बुंदेल केसरी महाराज छत्रसाल द्वारा मुग़लों से संघर्ष करने के लिए बुलाए गए मराठों का अधिकार रहा, तब इन्होंने भी ललितपुर जनपद की स्थापत्य कला में अपना अप्रतिम योगदान किया। ललितपुर जनपद सहित समूचे बुंदेलखंड का जल-प्रबंधन अत्यंत उच्चकोटि का रहा, जो यहां की स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। विभिन्न धर्मों के देवी-देवताओं, यक्ष-यक्षिणियों एवं अन्य मूर्तियां, स्तंभ, पूजा तथा सजावट हेतु की गई नक्काशियां कलाकारों की उत्कृष्टता का स्तर प्रदर्शित करते हैं।

लगभग 8वीं शताब्दी ईसवी के गोंडवानी देवालय ललितपुर जनपद के भदौना, शाहपुर, बुदावनी, पिपरई, तेरई, धनगोल आदि ग्रामों में मिले हैं।[52] धनगोल (तालबेहट) का नाम 'गोंड़ों के धन' के कारण रखा गया है। जिले के सोंरई इत्यादि गांवों में गोंडवानी एकांडक मंदिर पाए गए हैं। इन गोंडवानी मंदिरों पर वर्गाकार गर्भगृह के उपर समतल छत का प्रावधान है।

परंपरानुसार ललितपुर क्षेत्र में छोटी बस्तियां बसाने का श्रेय गोंड़ों को जाता है। गोंड़ काल में इनके दो छोटे-छोटे राज्यों के अलग-अलग मुखिया थे। उत्तरी क्षेत्र के मुखिया का केंद्र हर्षपुर (परगना बांसी तहसील तालबेहट) तथा दक्षिणी क्षेत्र के मुखिया का केंद्र दूधई (परगना बालाबेहट तहसील ललितपुर) था। इन दो सत्ताओं को पत्थर के स्तंभों से पृथक् करने वाली विभाजन रेखा जनपद के मध्य से गुजरती थी।[53] गोंड़ राज्य के अस्तित्व की जानकारी प्रस्तर निर्मित मंदिरों और विंध्य श्रेणियों से सटे हुए भाग में इस जनजाति के रहने वाले व्यक्तियों के रूप में होती है। सिंचाई के उद्देश्य से इन्होंने जलाशयों के जल को रोकने के लिए बांध बनाए जिससे यह

विदित होता है कि गोंड न केवल कृषि करने वाले लोग थे बल्कि वे अत्यंत सभ्य भी थे।[54] ऐसा प्रतीत होता है कि गोंड़ों का आधिपत्य आठवीं शती ई. में प्रतिहारों तथा नवीं शदी ई. में चंदेलों द्वारा इन्हें छलपूर्वक पराभूत किए जाने तक इस क्षेत्र में रहा है। ऐसे गांव जिनके नाम बेहट या बीहट से समाप्त होते हैं, वे गोंड़ों से संबंधित हैं। गोंड़ों की लोकभाषा में 'बेहट' या 'बीहट' गांव को कहा जाता है।[55]

स्थापत्य कला के रूप में ललितपुर जनपद के अनेक गांवों में बनी बावलियां अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। गोंड़ काल की यह बावलियां जलस्रोत का कार्य करती रहीं। वर्तमान में इनका अस्तित्व खतरे में है। जिले के शाहपुर, तालबेहट, थाना गांव, डोंगरा खुर्द, महरौनी, सिलावन, गिरार, थनवारा, ठगारी, सतगता, सीरोन कलां, सीरोन खुर्द, जखौरा इत्यादि स्थानों में निर्मित हैं। मिट्टी से दबी हुई यह क्षतिग्रस्त बावलियां जिले की स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

ललितपुर जिले के क़िलों एवं गढ़ियों की परंपरा में तालबेहट का दुर्ग उत्कृष्ट है। यह ऊंची पहाड़ी के ऊपर कमल पुष्पों से आच्छादित विशाल सरोवर के तट पर निर्मित गिरि दुर्ग है। अग्नि पुराण में गिरि दुर्ग को सर्वोत्तम माना गया है। (सर्वोत्तमं शैलदुर्गमभेद्यं चान्यभेदनम् - अग्नि पुराण 222/5)। 1618 ई. में भरतशाह द्वारा निर्मित होने के कारण इसका नाम भारतगढ़ पड़ा।[56] ललितपुर जनपद के अन्य क़िलों एवं गढ़ियों में तालबेहट के अतिरिक्त बानपुर, मड़ावरा, महरौनी, कैलगुवां, कुम्हैड़ी, सोंरई, मसौरा खुर्द, देवगढ़ स्थान प्रमुख हैं। इनमें मड़ावरा का किला मराठा सरदार द्वारा तथा देवगढ़ किला कन्नौज के प्रतिहारों ने बनवाए थे। ललितपुर जनपद के शेष क़िले या गढ़ी बुंदेला राजाओं द्वारा बनवाए गए। ओरछा स्टेट गजेटियर के अनुसार राजा वीरसिंह जू देव बुंदेला ने अपने शासन काल में 52 भवनों (क़िलों आदि) की आधारशिला रखी।

बानपुर का सहस्त्रकूट जिनालय लगभग 10वीं शती ई. की स्थापत्य कला की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। बानपुर में ही जैनियों का एक बड़ा मंदिर भी है। ललितपुर तथा देवगढ़ में विशाल जैन मंदिर बने हैं। इसके अतिरिक्त जनपद के अनेक ग्रामों - पावागिरि, टेटा, रजपुरा, खैरा डांग, कंधारी कलां, सेरवास कलां, कड़ेसरा कलां, सीरौन खुर्द, सीरौन कलां, सोंरई, भदौरा, मदनपुर, बांसी, कुम्हैड़ी, सैदपुर, सोजना, डोंगरा खुर्द इत्यादि - में जैन मंदिर स्थापित हैं। इन मंदिरों में एक से लेकर पांच देवकुलिकाओं (छोटे देवायतनों) के निर्माण की परंपरा मिलती है। इनके मध्य में अलंकृत वेदिकाओं पर संगमरमर, अष्टधातु या पीतल निर्मित जिन् (तीर्थंकर) प्रतिमाएं कायोत्सर्ग एवं ध्यानमुद्राओं में स्थापित की गई हैं। मंदिर के ऊपर बुंदेला शैली के उन्नत शिखर है। गर्भगृह में छोटा प्रवेश द्वार है।

जिले की हिंदू देवी-देवताओं की प्रतिमाएं 10वीं से 12वीं शदी ई. के मध्य निर्मित हुईं। इनमें प्रतिहार तथा चंदेलकालीन प्रतिमाएं अधिक देखने को मिलती हैं। मूर्तियां बनाने के लिए इस क्षेत्र के कलाकारों ने सामान्यत: ग्रेनाइट एवं लाल बलुए पत्थर का उपयोग किया है। प्रतिहारकालीन मूर्तियां सुडौल हैं तथा इनके मुख पर मंदस्मित भाव है। अलंकरणों का प्रयोग चंदेलकालीन मूर्तियों की तुलना में इनमें कम है। गर्भगृह में स्थापित होने वाली मुख्य मूर्ति को छोड़कर चंदेलकालीन मूर्तियों को प्रस्तर पटिया पर उभारकर बनाया जाता था। आंखें आधी खुली हुईं और नीचे की ओर झुकी हुईं हैं। भौंहों को लंबी वक्राकार रेखा के रूप में दिखाया गया है। ओंठ मोटे तथा गले में तीन-चार रेखाएं हैं।[57]

ब्राह्मण धर्म की प्रतिमाओं में यहां शैव संप्रदाय की प्रतिमाएं अधिक पाई गई हैं। इनमें उमा-महेश एवं रावणानुग्रह की प्रतिमाएं प्रमुख हैं। नृत्य करते हुए यहां की गणपति प्रतिमाएं विशिष्ट हैं, जिनमें बानपुर के गणेश खेरा में 22 भुजाओं की नृत्य गणेश प्रतिमा विरल है। बानपुर के अतिरिक्त नृत्य गणेश की मूर्तियां उल्दना कलां, छपरट, क्योलारी, डोंगरा खुर्द, महरौनी, सिंदवाहा, सैदपुर, सिलावन, निवारी, बैजनाथ, पाली, बम्हौरी बहादुरसिंह, इत्यादि गांवों से प्राप्त हुई हैं।[58]

जिले से सूर्य की प्रतिमाएं ग्राम गुगरवारा, सिलावन, सैदपुर, जरया, बनयाना, म्यांव, बिजरौठा, टेटा, छापछौल आदि गांवों से प्राप्त हुई हैं। बुदनी में सूर्य मंदिर और उसके गर्भगृह में द्विभुज सूर्य की भव्य स्थानक प्रतिमा विराजमान है।

इनके अतिरिक्त जिले से वराह, हनुमान, चामुंडा, महिषासुरमर्दिनी की मूर्तियां कई गांवों से मिली हैं। नाग प्रतिमाएं सैदपुर एवं सिलावन गांवों से प्राप्त हुई हैं । सीरौन कलां एवं सिलावन से लोकभाषा में हाला देवी के नाम से प्रसिद्ध विशिष्ट प्रतिमाएं भी प्राप्त हुई हैं। जिले के अधिकांश गांवों में सती के चीरा चबूतरों पर गड़े हुए हैं। 10वीं-12वीं शदी ई. की हनुमान की मूर्तियां जिले के अधिसंख्य गांवों में प्रतिष्ठापित हैं। इस प्रकार की प्रतिमाओं का दाहिना हाथ शीर्ष पर और ऊपर उठी तर्जनी वाला बायां हाथ वक्ष पर अवलंबित है। सिर पर मुकुट, गले में कौस्तुभमणि, स्कंध पर यज्ञोपवीत तथा कटि-पार्श्व में कृपाण है। इन्हें वीर-वेश में दर्शाया गया है। अपने बाएं पैर से स्त्री (राक्षसी ?) का दमन करते हुए हनुमान की इस प्रकार की मूर्तियों से आभासित होता है कि मानो वे अपने लंका अभियान के समय लंकिनी राक्षसी का दमन करते हुए अग्रसर हो रहे हों। चंदेल राजाओं के कुछ सिक्कों पर भी हनुमान का इस शैली में निरूपण देखने को मिलता है।[59] कुछ स्थानीय बुद्धिजीवी इन मूर्तियों को हनुमान जी द्वारा सूर्य को निगल लेने की चेतावनी के रूप में व्याख्यायित करते हैं। जिले में इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा करते समय पुरोहित आपस में

– इनका मुख दक्षिण में करें अथवा पूर्व में – इस पर वाद-विवाद तक कर लेते हैं।

जिले की प्रतिमाओं के चित्र सहित विवरण के लिए उत्तर प्रदेश राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा अलग-अलग विकास खंडों की विभिन्न वर्षों में प्रकाशित पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्टों के अंक अवलोकनीय हैं।

जिले में विभिन्न शासकों द्वारा बनवाए गए प्रमुख मंदिरों/मूर्तियों आदि को उनके कालखंड के अनुसार निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है –

कालखंड	**मंदिर / मूर्तियां/क़िले**
प्रागैतिहासिक युग	पांडुवन एवं चांदी की मूर्तियां
गुप्त युग	गुफाएं और देवगढ़ का दशावतार मंदिर
गोंडवानी युग	कतिपय गांवों में ग्रेनाइट पत्थरों से बने छोटे मंदिर, नृसिंह मंदिर
गुप्तोत्तर अथवा प्राक् चंदेल युग	देवगढ़ के मंदिर
चंदेल युग	राजघाटी, देवगढ़, दूधई, मदनपुर तथा चांदपुर के मंदिर
मोहम्मदन युग	जामा मस्जिद, ईदगाह
बुंदेला युग	बानपुर, कैलगुवां, तालबेहट
ब्रिटिश युग	ललितपुर का तुवन श्री हनुमान मंदिर, अंग्रेजों की तोपें रखने के कारण 'तुवन' नाम पड़ा।

राज्य विधानसभा एवं लोकसभा में जिले का प्रतिनिधित्व – सन् 1977 में विधान सभा के सामान्य निर्वाचन के लिए जिले को दो विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों – ललितपुर एवं महरौनी – में विभाजित किया गया। जिले की यह दोनों सीटें अनारक्षित वर्ग में थीं। तब से अब तक के निर्वाचित विधान सभा सदस्यों का विवरण इस प्रकार है –

ललितपुर विधान सभा

चुनाव सन्	*निर्वाचित सदस्य एवं दल*	*प्रतिद्वंद्वी*
1952	पं. कृष्णचंद्र शर्मा – भारतीय रा. कांग्रेस	--
1957 में महरौनी क्षेत्र को ललितपुर विधानसभा से जोड़ दिया गया था तथा मिलाकर दो विधायकों को चुना गया था। ललितपुर से गज्जूराम चौधरी निर्वाचित हुए थे।		
1962	अयोध्या प्रसाद – भा. राष्ट्रीय कांग्रेस	मर्दन चौधरी
1967	अयोध्या प्रसाद – भा. राष्ट्रीय कांग्रेस	डॉ. भगवत दयाल
1969	कामरेड चंदनसिंह-कांग्रेस-कम्युनिस्ट गठ.	डॉ. शादीलाल दुबे
1974	सुदामा प्रसाद गोस्वामी – जनता पार्टी	का. चंदनसिंह

1980	ओमप्रकाश रिछारिया – कांग्रेस इंदिरा	डॉ. शादीलाल दुबे
1985	राजेश खैरा – कांग्रेस इ.	मा. रणवीरसिंह
1989	डॉ. अरविंद जैन – भारतीय जनता पार्टी	राजेश खैरा
1991	डॉ. अरविंद जैन – भारतीय जनता पार्टी	तिलक यादव
1993	डॉ. अरविंद जैन – भारतीय जनता पार्टी	तिलक यादव
1996	डॉ. अरविंद जैन – भारतीय जनता पार्टी	तिलक यादव
2002	वीरेंद्रसिंह बुंदेला 'भगतराजा' – कांग्रेस इ	अरविंद जैन
2007	नाथूराम कुशवाहा – बहुजन समाज पार्टी	भगत राजा
2009 (उपचुनाव)	सुमन कुशवाहा – बहुजन समाज पार्टी	चंद्रभूषणसिंह बुंदेला

ललितपुर विधान सभा में 1 जनवरी 2009 की अर्हता तिथि को दिनांक 22 जनवरी 2009 की प्रकाशित मतदाता सूची के अनुसार कुल निर्वाचक व्यक्ति 3,19,964 हैं, जिसमें 1,69,502 पुरुष तथा 1,50,462 महिला हैं।

महरौनी विधान सभा

चुनाव सन्	*निर्वाचित सदस्य एवं दल*	*प्रतिद्वंद्वी*
1952	रमानाथ खैरा	

1957 में इस क्षेत्र को ललितपुर से जोड़ दिया था, जिसमें रमानाथ खैरा विजयी रहे।

1962	पं. कृष्णचंद्र शर्मा – भा.रा.कां.	रघुनाथसिंह
1967	रघुनाथसिंह – जनसंघ	पं. कृष्णचंद्र शर्मा
1969	पं. कृष्णचंद्र शर्मा – भा.रा.कां.	रघुनाथसिंह
1974	रघुनाथसिंह – जनसंघ	पं. कृष्णचंद्र शर्मा
1977	मा. रणवीरसिंह – जनता पार्टी	पं. कृष्णचंद्र शर्मा
1980	सुजानसिंह बुंदेला – कांग्रेस इ.	रघुवीरसिंह
1985	देवेंद्रकुमार सिंह – भा.ज.पा.	हुकुमचंद्र खजुरिया
1989	देवेंद्रकुमार सिंह – भा.ज.पा.	पं. कृष्णचंद्र शर्मा
1991	पूरनसिंह बुंदेला – कां. इ.	देवेंद्रकुमार सिंह
1993	देवेंद्रकुमार सिंह – भा.ज.पा.	पूरनसिंह बुंदेला
1996	पूरनसिंह बुंदेला – कां. इ.	देवेंद्रकुमार सिंह
2002	पूरनसिंह बुंदेला – भा.ज.पा.	विक्रमसिंह
2007	रामकुमार तिवारी – ब.स.पा.	विक्रमसिंह

आगामी विधानसभा चुनावों के लिए महरौनी क्षेत्र को अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित कर दिया गया है। महरौनी विधान सभा में 1 जनवरी 2009 की आयु अर्हता तिथि को 3,03,112 निर्वाचक हैं, जिनमें 1,59,089 पुरुष तथा 1,44,023 महिला हैं।

लोकसभा

ललितपुर जनपद झांसी-ललितपुर लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत सम्मिलित है।

चुनाव सन्	*निर्वाचित - दल*	*प्रतिद्वंद्वी - दल*
1952	रघुनाथ विनायक धुलेकर-भा.रा.कां.	बेनीप्रसाद-कम्युनिस्ट
1957	डॉ. सुशीला नैयर - भा.रा.कां.	मनीराम कंचन-जनसंघ
1962	डॉ. सुशीला नैयर - भा.रा.कां.	मनीराम कंचन-जनसंघ
1967	डॉ. सुशीला नैयर - भा.रा.कां.	मनीराम कंचन-जनसंघ
1971	डॉ. गोविंददास रिछारिया -भा.रा.कां.	डॉ. सुशीला नैयर-कां.एस.
1977	डॉ. सुशीला नैयर - जनता पार्टी	डॉ. गोविंददास रिछारिया-कां.इ.
1980	पं. विश्वनाथ शर्मा - कां. इ.	का.रमेश सिन्हा-कम्युनिस्ट
1984	सुजानसिंह बुंदेला - कां.इ.	राजेंद्र अग्निहोत्री-भा.ज.पा.
1989	राजेंद्र अग्निहोत्री - भा.ज.पा.	सुजानसिंह बुंदेला-कां.इ.
1991	राजेंद्र अग्निहोत्री - भा.ज.पा.	ओमप्रकाश रिछारिया-कां.इ.
1994	राजेंद्र अग्निहोत्री - भा.ज.पा.	हरगोविंद कुशवाहा-स.पा.
1996	राजेंद्र अग्निहोत्री - भा.ज.पा.	हरगोविंद कुशवाहा-स.पा.
1999	सुजानसिंह बुंदेला - कां.इ.	राजेंद्र अग्निहोत्री-भा.ज.पा.
2004	चंद्रपालसिंह यादव - स.पा.	राजेंद्र अग्निहोत्री-भा.ज.पा.
2009	प्रदीप जैन 'आदित्य' - कांग्रेस	पं. रमेश शर्मा - ब.स.पा.

समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं–जिले से प्रकाशित होने वाले पत्र-पत्रिकाओं का विवरण अधोप्रस्तुत है[60]-

क्र. सं.	*शीर्षक*	*पंजीकरण तिथि*	*नयी पंजीकरण संख्या*	*समयावधि*	*प्रकाशक*
1	अमर कृषक	4.12.1996	.	साप्ताहिक	डॉ.प्रयाग सिंह राजपूत
2	अपना प्रदेश	4.3.2005	UPHIN/2004/14074	मासिक	मनोज पुरोहित
3	आवाज-ए-बुंदेलखंड	27.11.2003	UPHIN/2003/11333	साप्ताहिक	धर्मेंद्र कृष्ण
4	आयुर्वेदिक हेल्थ डाइजेस्ट	28.8.2000	UPBL/2000/04203	मासिक	डॉ. भूपेंद्र जैन
5	भ्रष्टाचार ललितपुर	1.7.2009	UPHIN/2009/28167	मासिक	भगवान सिंह
6	बुंदेली धरा	29.7.1978	.	साप्ताहिक	प्रताप सिंह
7	चारु चंचला	9.5.2003	UPHIN/2003/09793	पाक्षिक	डॉ. रामनाथ सेन राणा
8	दर्पण	29.7.1978	.	साप्ताहिक	केशवदास भट्ट
9	गोपेश्वर संदेश	14.3.1996	.	मासिक	प्रेमलता

10	गुप्तगोह पंचांग	.	.	साप्ताहिक	
11	इंसाफ का बाण	17.10.2008	UPHIN/2008/25896	साप्ताहिक	ज़ाकिर खां
12	जनप्रिय	15.6.1993	.	दैनिक	डॉ. भूपेंद्र जैन
13	जनप्रिय	6.4.2002	.	साप्ताहिक	डॉ. भूपेंद्र जैन
14	किशोर क्रांति	25.4.1979	.	अर्धवार्षिक	संतोष कुमार शर्मा
15	लेडीज पावर	4.1.1996	.	पाक्षिक	रामेश्वर पटैरिया
16	ललित अंचल	9.1.1997	.	साप्ताहिक	महेंद्र जैन
17	ललित आवाज़	27.11.2003	UPHIN/2003/11332	साप्ताहिक	गोपीकृष्ण तिवारी
18	ललित बोध	2.6.2004	UPHIN/2004/12615	साप्ताहिक	राजेश साहू
19	ललित चेतावनी	8.2.1980	.	साप्ताहिक	सरदार मंजीत सिंह
20	ललित दर्पण	8.5.2009	UPHIN/2008/27684	साप्ताहिक	राकेश कुमार सैन
21	ललित ज्योति	16.3.2001	UPHIN/2000/03058	साप्ताहिक	
22	ललित क्रांति	23.1.2003	UPHIN/2002/08861	साप्ताहिक	राकेश शुक्ला
23	ललित संदेश	19.2.1979	.	साप्ताहिक	श्याम सुंदर जड़िया
24	ललितपुर न्यूज	14.5.2001	UPHIN/2001/04715	साप्ताहिक	रवींद्र कुमार जैन
25	मौलिक चेतना	28.11.2002	UPHIN/2002/08374	साप्ताहिक	गणपत एस. कुशवाहा
26	प्रतिमा दर्शन	28.11.1994	.	साप्ताहिक	संजय द्विवेदी
27	प्रतिमा दर्शन	.	.	साप्ताहिक	
28	राष्ट्रीय अनुस्मरण	18.1.2008	UPHIN/2007/22619	मासिक	डी.के. चतुर्वेदी
29	साधक संदेश	7.7.2000	UPHIN/1999/01336	मासिक	मनोज कौशल
30	सत्ता सुधार	9.2.2007	UPHIN/2006/18447	दैनिक	गोपाल श्रीवास्तव
31	सेन संगम	22.3.2002	UPHIN/2002/08250	मासिक	घनश्याम दास सेन
32	शतरंग टाइम	26.5.2008	UPHIN/2006/24060	साप्ताहिक	राजेंद्र अग्निहोत्री
33	सिद्धी	9.11.1996	.	मासिक	डॉ. भूपेंद्र जैन
34	स्टूडेंट पॉलिटिक्स	11.5.2004	UPHIN/2004/12432	मासिक	दिनेश कुमार चतुर्वेदी
35	सुर्ख सूरज	25.3.1985	.	साप्ताहिक	त्रिलोक चंद्र जैन
36	तंजीम-ए-हिंद (उर्दू)	14.12.1995	.	साप्ताहिक	एम.ए.सैफी
37	विंध्यदेशना	4.12.2000	UPHIN/2001/03951	मासिक	रवि जैन चुनगी
38	विंध्याचल वेदना	2.12.1999	.	साप्ताहिक	प्रभुदयाल सूर्यवंशी

चिकित्सा–ललितपुर जनपद में प्राचीन युग में वैद्य, पुजारी, झाड़फूंक करने वाले तथा जादूगर चिकित्सा का कार्य करते थें, जो आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में यह कार्य करते हुए पाए जाते हैं। बीमारियों का कारण अधिकतर पाप, अपराध तथा प्राकृतिक और धार्मिक नियमों का उल्लंघन माना जाता था तथा इनका उपचार जड़ी-बूटियों जैसी औषधियों के अतिरिक्त पूजा, व्रत रखकर, जानवरों

की बलि चढ़ाकर एवं अलौकिक शक्तियों तथा देवी-देवताओं की पूजा द्वारा किया जाता था।

जिले में चिकित्सा की आयुर्वेद पद्धति का प्रचलन सबसे पहले हुआ। 13वीं शताब्दी में बुंदेलखंड में मुसलमानों का बसना प्रारंभ हुआ, जिन्होंने चिकित्सा की यूनानी पद्धति को प्रारंभ किया। मध्यकाल में अपरिष्कृत रूप में शल्य चिकित्सा 'जराह' द्वारा की जाती थी। जराह अधिकतर नाई जाति के होते थे। इसी प्रकार का चलन अब भी दूसरे रूपों में यदा-कदा देखा जाता है। फोड़ों का उपचार करने के लिए उसे कुछ औषधीय पत्तियों द्वारा पकाकर लाल गर्म सूजे से फोड़कर एक दशाब्दी पहले तक किया जाता रहा। अंग्रेजों ने यहां एलोपैथिक औषधालय खोले। सन् 1866 में ललितपुर में तथा 1890 ई. में महरौनी में एलोपैथिक औषधालय खोले गए। ग्रामीण क्षेत्रों में किसी भी प्रकार की बीमारी से ग्रसित रोगी को प्राथमिक उपचार दिलाने के लिए 5000 की आबादी वाले गांव पर एक चिकित्सा केंद्र की स्थापना की गई।

जिले में वर्ष 2007-08 तक 7 एलोपैथिक, 32 आयुर्वेदिक, 23 होम्योपैथिक तथा 2 यूनानी पद्धति के चिकित्सालय थे। इसके अतिरिक्त 30 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, 2 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, 13 परिवार एवं मातृ-शिशु कल्याण केंद्र तथा 185 परिवार एवं मातृ-शिशु कल्याण उपकेंद्र भी यहां हैं। जिले में एक-एक क्षय रोग तथा कुष्ठ रोग चिकित्सालय भी है।[61] जिले में आंगनबाड़ी एवं आशा कार्यकत्रियों के माध्यम से प्राथमिक चिकित्सा सहायता को उपलब्ध कराया जा रहा है।

शिक्षा—पुरातन भारतीय शिक्षा एवं संस्कृति की जड़ें नैतिकता एवं आध्यात्मिकता में निहित है। अंग्रेजों के आगमन तक जिले का अधिकांश भाग मराठों के अधीन था। राजा गंगाधरराव अपने साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यकलापों के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं। इस समय विद्यार्थी पाठशाला, मक़तब एवं मदरसा में शिक्षा ग्रहण करते थे। पाठशालाओं में संस्कृत पर विशेष बल दिया जाता था, जिससे विद्यार्थी धर्मशास्त्र, न्याय, चिकित्सा, ज्योतिष एवं खगोलशास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर सकें। इन संस्थाओं में संस्कृत की शिक्षा निशुल्क दी जाती थी। शिक्षा तथा चिकित्सा को चलाने के लिए महाजनों द्वारा सहायता दी जाती थी। शिक्षकों को विशेष अवसरों व पर्वों पर उपहार प्रदान किए जाते थे। सर्राफ, महाजनी संस्थाएं, व्यापारियों के बच्चों हेतु चलाई जाती थीं। इन संस्थाओं में मौखिक एवं व्यावहारिक गणित की शिक्षा मुड़िया एवं कैथी लिपि में दी जाती थी। जिले के अनेक घरों में हस्तलिखित पांडुलिपियां मिलती हैं। इनमें अज्ञानतावश कई पांडुलिपियों को लोगों ने नष्ट कर दिया। इनमें ज्योतिष, गणित एवं धार्मिक विषयों पर अज्ञात अथवा नई जानकारी मिल सकती है। इनके संकलन एवं संरक्षण की अपरिहार्य आवश्यकता है।

वर्णमाला, सवाया, ड्योढ़ा, आना-पाई को तुकबंदी करके सिखाया जाता था। पेन, पेंसिल, स्लेट इत्यादि स्टेशनरी उस समय नहीं थी। लोग बरूं जैसे पुयाल से लिखने के लिए होल्डर तैयार करते थे। स्याही में डुबोकर लिखा जाता था।

अंग्रेजों के शासन के समय जिले में कोई नई शिक्षा संस्था नहीं खोली गई। पहले से विद्यमान संस्थाओं को अंग्रेजों ने अपने प्रबंध में ले लिया। सन् 1846 में तहसीली विद्यालय खोले गए। 1851 ई. में कुछ गांवों के समूह में किसी केंद्रीय ग्राम में हलका पाठशालाएं मथुरा के तत्कालीन जिलाधिकारी अलेक्जेंडर ने चलवाईं।[61]

सन् 1857 के नवजागरण के बाद तीन तहसीली विद्यालय जिले में स्थापित किए गए। यहां जिले से तात्पर्य ललितपुर जनपद के वर्तमान भूभाग से है। ललितपुर में निजी विद्यालयों के अलावा इंगलिश प्राइवेट स्कूल तथा मिडिल वर्नाक्युलर स्कूल प्रारंभ किए गए। 1863 ई. में तालबेहट में तहसील विद्यालय स्थापित किया गया।[63]

सन् 2007-08 तक के प्राप्त आंकड़ों के अनुसार जिले में 1204 प्राथमिक विद्यालय हैं। यहां 507 उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं, जिनमें 47 बालिका विद्यालय हैं। राजकीय इंटर कालेजों की संख्या 33 है, जिनमें 8 बालिका राजकीय इंटर कालेज हैं।[64] जिले की प्रत्येक तहसील में एक-एक राजकीय महाविद्यालय है। ललितपुर स्थित राजकीय महाविद्यालय में वाणिज्य एवं विज्ञान स्नातक की पढ़ाई होती है। शेष दो राजकीय महाविद्यालयों में स्नातक स्तर के कला संकाय के विषयों का अध्ययन किया जाता हैं। सन् 1968 में स्थापित हुआ नेहरू महाविद्यालय ललितपुर नगर में है। इसमें कला संकाय के साथ-साथ कृषि विषयों का अध्ययन किया जाता है। ललितपुर जनपद के महाविद्यालय बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी से संबद्ध हैं, जिनमें कहीं-कहीं विश्वविद्यालय के प्राइवेट परीक्षा केंद्र भी हैं। जिले में एक पॉलीटेक्निक कालेज तथा एक औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आई टी आई) है।

माध्यमिक कक्षाओं तक के शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु जिले में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) है। अनौपचारिक एवं प्रौढ़ शिक्षा भी जिले में चलाई गईं, किंतु इनका कोई ठोस परिणाम अब तक देखने को नहीं मिला।

जिले में दुर्लभ एवं बहुमूल्य पुस्तकें जनसाधारण को स्वाध्याय हेतु उपलब्ध कराने के लिए पांच पुस्तकालय स्थापित हैं। ललितपुर नगर में राज्य सरकार का राजकीय पुस्तकालय, नगर पालिका परिषद का राजर्षि टंडन पुस्तकालय एवं निजी समिति का उर्दू पुस्तकालय हैं। नगर पंचायतों के महरौनी तथा तालबेहट में पुस्तकालय स्थापित हैं।

संदर्भ

1. website http://lalitpur.nic.in/geographic information.Searched on 15.12.2008.
2. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका '98, आलेख जनपद ललितपुर-नितिन रमेश गोकर्ण आई.ए.एस. तत्कालीन जिलाधिकारी, ललितपुर, पृ. 8
3. बानपुर विविधा, संपादक डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी, 2008 पृ. 68
4. तदैव, पं. हरिविष्णु अवस्थी का आलेख 'भगवान कुंडेश्वर का जलाभिषेक करती जमड़ार', पृ. 151
5. तदैव, पं. बाबूलाल द्विवेदी का आलेख 'इतिहास और पुराणों का नगर: बानपुर', पृ. 68-69
6. मानचित्र - जनपद ललितपुर पर दिये गये संक्षिप्त विवरण से, प्रकाशक - अमित सेल्स कारपोरेशन, झांसी।
7. http://lalitpur.nic.in searched on 18.12.2009.
8. ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका 98, डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही' का आलेख ललितपुर की संस्कृति, पृ. 24
9. तदैव, डॉ. कृष्णानंद हुंडैत का आलेख 'साहित्य इतिहास की रूपरेखा जनपद - ललितपुर', पृ. 25
10. http://lalitpur.nic.in searched on 15.12.2008.
11. Report on the Antiquities in the District of Lalitput, North-West Provinces India, Poorno Chandra Mukherjee, page 1
12. दि वैदिक एज, पृ. 298, उद्धृत, ललितपुर स्मारिका 98, श्री बिहारी लाल बबेले का आलेख ललितपुर जनपद का प्राचीन इतिहास, पृ. 21
13. श्री अरविंद नायक, एड0 महरौनी से दिनांक 28.12.2008 को हुई बातचीत पर आधारित।
14. ललितपुर स्मारिका, श्री बिहारीलाल बबेले का शोध आलेख प्राचीन भारत का इतिहास, पृ. 22
15. गजेटियर ऑफ इंडिया उ.प्र. झांसी (1965), पृ. 22 उद्धृत, बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास, गोरेलाल तिवारी।
16. Report on the Antiquities in the District of Lalitpur, North-West Provinces India, Poorna Chandra Mukherjee, page 1
17. do, pp. 2&3
18. दि हिस्ट्री ऑफ चंदेलाज, नि.सा.बोस, पृ. 15 उद्धृत, ललितपुर स्मारिका, पृ. 22
19. बानपुर विविधा, पं. बाबूलाल द्विवेदी का आलेख नगर - ललितपुर, पृ. 175
20. झांसी गजेटियर, ड्रेक ब्राकमैन डी.एल.ए. पृ. 317
21. प्राचीन भारत, डॉ. राजबली पांडेय, पृ. 305 उद्धृत, ललितपुर स्मारिका, पृ. 22
22. दैनिक जागरण कानपुर 26 अप्रैल 2008, पृ. 8
23. बानपुर विविधा, डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी का आलेख 'राजा मर्दन सिंह बानपुर और चंदेरी का मुद्दा' पृ. 99-100

24. तदैव, पृ. 101
25. ललितपुर स्मारिका, पृ. 9
26. तदैव, पृ. 37
27. http://bhuvan2.nrsc.gov.in searched on 14.8.09
28. http://sec.up.nic.in search on 19.7.09
29. do, searched on 19.7.09
30. सभी आंकड़े http://lalitpur.nic.in तथा http://sec.up.nic.in/keystatistics searched on 7.7.09
31. बानपुर विविधा, पृ. 173-174
32. उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर्स ललितपुर, 1997, पृ. 105
33. बानपुर विविधा, पं. बाबूलाल द्विवेदी का लंबा आलेख '1857 की क्रांति में बानपुर का योगदान', पृ. 62
34. http://www.upgov.nic.in searched on 25.8.09
35. http://irrigation.up.nic.in/area_under_forest_cover.htm searched on 23.9.09
36. http://planning.up.nic.in searched on 23.9.09
37. http://lalitpur.nic.in/introduction searched on 7.7.09
38. http://lalitpur.nic.in पर सांख्यिकीय पत्रिका की तालिका 16 searched on 7.7.09
39. बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ. कृष्णलाल 'हंस', पृ. 304
40. चंदेलकालीन बुंदेलखंड का इतिहास, डॉ. अयोध्या प्रसाद पांडेय, पृ. 6
41. तदैव, पृ. 6-7
42. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. - 65, 79 तथा 80
43. उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर - ललितपुर, संपा. डॉ. वीरेंद्र सिंह, पृ. 197-198
44. लोधी राजपूत एक संक्षिप्त परिचय, पं. बाबूलाल द्विवेदी, पृ. 8
45. http://www.cersusindia.gov.in/census_data_2001/districtataglance searched on 6.07.09
46. मथुरा जिले की बोली, डॉ. चंद्रभान रावत, पृ. 82
47. निषाद बांसुरी, श्री कुबेरनाथ राय, पृ. 159-160
48. http://lawmin.nic.in searched on 18.07.09,
49. शोधपत्र 'ललितपुर जनपद की सहरिया जनजाति', डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी प्रकाशित 'बुंदेली बसंत' 2010, संपादक डॉ. बहादुरसिंह परमार,
50. आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन, डॉ. कामिनी, पृ. 34
51. बुंदेलखंड की काव्यात्मक कहावतें, संकलन श्री अयोध्या प्रसाद 'कुमुद', पृ. 136
52. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (वर्ष 1995-96), विकास खण्ड तालबेहट जिला ललितपुर, संपा. डॉ. राकेश तिवारी पृ. 31
53. झांसी गजेटियर, संपादिका श्रीमती ई बी जोशी, पृ. 25
54. तदैव, पृ. 25

55. तदैव, पृ. 25 उद्धृत, पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (वर्ष 1989-90), विकास खंड बार जिला ललितपुर, संपा. डॉ. राकेश तिवारी पृ. 36-37
56. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (वर्ष 1995-96), विकास खंड तालबेहट जिला ललितपुर, संपा. डॉ. राकेश तिवारी पृ. 7
57. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (वर्ष 1988-89), विकास खंड जखौरा जिला ललितपुर, संपा. डॉ. राकेश तिवारी पृ. 51
58. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (वर्ष 1990-91), विकास खंड महरौनी जिला ललितपुर, संपा. डॉ. राकेश तिवारी पृ. 47
59. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (वर्ष 1995-96), विकास खंड तालबेहट जिला ललितपुर, संपा. डॉ. राकेश तिवारी पृ. 35
60. http://rni.nic.in/display_place.asp searched on 19.7.09
61. http://lalitpur.nic.in searched on 7.7.09
62. उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर्स ललितपुर, 1997, संपादक डॉ. वीरेंद्र सिंह, पृ. 188
63. तदैव, पृ. 189
64. http://lalitpur.nic.in searched on 7.7.09

अध्याय - 2

रूप रचना की दृष्टि से स्थान-नामों का विवेचन

हमारे देश में स्थान-नामों की रूप-रचना स्वाभाविक रूप से अनेक विविधताओं को धारण करती है। उत्तर प्रदेश का ललितपुर जनपद भी इसका अपवाद नहीं है। विभिन्न समाजों और उनके रहन-सहन की विविधता को हम शब्द या पद की रचना-प्रक्रिया देखकर समझ सकते हैं। स्थान-नाम व्यक्ति वाचक संज्ञाएं हैं, जो उस स्थान का सामान्यत: बोध कराती हैं, किंतु स्थान-नामों से उस स्थान का बोध भर नहीं होता, अपितु तत्संबंधी इतिहास और संस्कृति का दिग्दर्शन भी उसके माध्यम से हो जाता है। इसी कारण स्थान-नाम व्यक्ति नामों से भिन्न हैं, क्योंकि व्यक्ति-नामों में मात्र उस व्यक्ति के अस्तित्व का बोध होता है, जिस व्यक्ति का वह अभिधान है। यह बोध भी नाम के शाब्दिक अर्थ में नहीं, बल्कि उसकी अनन्य परिचिति अर्थात पहचान के रूप में ही होता है। गोस्वामी तुलसीदास ने ईश-नाम-महिमा में रूप को नाम के अधीन कहा है। हथेली पर भी रखा रूप बिना नाम के नहीं पहचाना जा सकता है -

देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ज्ञान नहिं नाम बिहीना।
रूप बिसेस नाम बिन जाने। करतलगत न परहिं पहचाने।।[1]

व्यक्ति-नामों के अर्थगत विरोधाभास को हास्यकवि काका 'हाथरसी' ने कई उदाहरणों से पद्यबद्ध किया है -

नाम रूप के भेद पर कभी किया है गौर
नाम मिला कुछ और तो शक्ल अक्ल कुछ और।
शक्ल अक्ल कुछ और नैनसुख देखे काने
बाबू सुंदरलाल बने हैं ऐंचकताने।
कहं काकाकवि दयाराम जी मारें मच्छर
विद्याधर को भैंस बराबर काला अक्षर।
मुंशी चंदालाल का तारकोल सा रूप

श्यामलाल का रंग है जैसे खिलती धूप।
जैसे खिलती धूप सजे बुशशर्ट पेंट में
ज्ञानचंद्र छः बार फे ल हो गये टेंथ में।
सेठ अशर्फीलाल के घर में टूटी खाट
सेठ छदामीलाल के मील चल रहे आठ।
मील चल रहे आठ मिटे न करम के लेखे
धनीराम जी प्रायः हमने निर्धन देखे।
कहं काकाकवि दूल्हेराम मर गए कुंवारे
बिन प्रीतम तड़पें हमारे प्रीतम सिंह बिचारे।[2]

किंतु व्यक्ति नामों से स्थान-नामों की प्रकृति भिन्न है। व्यक्ति-नाम व्यक्ति के निधन के साथ समाप्त हो जाते हैं, स्थान-नाम ऐसे समाप्त नहीं होते। स्थान-नामों के नामकरण में पूरे निवसित समूह की भागीदारी रहती है और उसमें संबंधित क्षेत्र की धार्मिक, नैतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, दार्शनिक, जैविक परिस्थितियों और प्रवृत्तियों का द्योतन होता है। इसीलिये 'प्रत्येक नाम अपनी सामाजिक संस्कृति का मूक आख्यान होता है।'[3] विश्व इतिहास बताता है कि कई सभ्यताएं काल के महोदर में समाहित हो गयीं, परंतु उन प्राचीन समुदायों की भाषाएं आज भी स्थान-नामों में किसी न किसी रूप में सुरक्षित हैं।[4]

स्थान-नामों की रूप रचना में पदों, अर्थों और ध्वनियों का योगदान होता है। स्थान-नाम देश-काल के अनुसार परिवर्तित होते हुए भाषा के अत्यंत संवेदनशील शब्द हैं। 'नाम' और 'शब्द' भिन्न-भिन्न संज्ञाएं हैं। 'नाम' संकेतार्थक होते हैं तो 'शब्द' अपने गुणों को धारण किए रहते हैं। 'नाम' के अर्थ को हम 'नामवैज्ञानिक' तथा 'शब्द' के अर्थ को 'शाब्दिक' कह सकते हैं। 'नाम' का स्थानांतरण किसी अन्य भाषा में यथावत् (स्वनिमों के कारण उच्चारणगत भिन्नता लिए हुए) होता है तो 'शब्द' का स्थानांतरण किसी दूसरी भाषा में अनुवाद द्वारा किया जाता है।

स्थान-नामों को रूप-रचना के आधार पर प्रमुखतः तीन वर्गो में विभक्त किया जा सकता है - (1) एकपदीय स्थान-नाम
(2) द्विपदीय स्थान-नाम तथा
(3) बहुपदीय स्थान-नाम।

ललितपुर जनपद में एकपदीय स्थान-नाम 274 तथा द्विपदीय स्थान-नाम 404 हैं। यहां बहुपदीय स्थान-नामों की संख्या 66 ही है।

ललितपुर जिले के स्थान-नामों में प्रयुक्त शाब्दिक संरचना को सर्वप्रथम उद्घाटित करना आवश्यक है। शब्द में ध्वनि और अर्थ का संबंध सन्निहित होता है।

शब्द का मूल तत्व अर्थ को स्पष्ट करता है और परिवर्तित होने के बाद भी अपनी सत्ता को स्थित रखता है। प्रयत्नलाघव तथा अन्य कारणों से शब्दों में प्रत्ययों का योग हो जाता है। किसी शब्द के मूल तत्व के साथ कई प्रत्यय जुड़ते-बदलते रहते हैं। स्थान-नामों के साथ भी यह देखा गया है -

महिष (भैंस) - मूलतत्व

ग्राम- भैंसाई (ललितपुर) - यौगिक शब्द, आई प्रत्यय युक्त

नामों की व्यापकता ने नाम अध्ययन को इतना बहुआयामी बना दिया है कि उसका एकांतिक अध्ययन संभव नहीं है (या त्रुटिपूर्ण है)। व्याकरण की दृष्टि से भाषागत शब्दों का स्थाननामिक अर्थ सुलझाने के लिए उपसर्ग, प्रत्यय तथा विभेदक शब्दों का अध्ययन आवश्यक होता है, किंतु इस अध्ययन को अधिक त्रुटि रहित करने के लिए भूगोल, इतिहास, राजनीति, नृतत्वशास्त्र इत्यादि विषयों का सहारा लेना पड़ता है।

ललितपुर जनपद के स्थान-नामों को अतिभाषिक एवं भाषेतर क्षेत्रों में जाकर देखते हैं तो पता लगता है कि यहां के स्थान-नाम मातृदेवियों के आधार पर अधिक रखे गए हैं।

लोकमाताओं पर आधारित स्थान-नाम—ललितपुर जनपद के बहुत से स्थान आदिवासियों द्वारा बसाए गए थे। इनके नाम लोकमाताओं के नाम पर रखे गए। प्रथम अध्याय में ललितपुर जनपद के परिचय से हमने जाना कि यह क्षेत्र कभी गोंड़ तथा सहरिया आदिवासियों के अधीन रहा है। आदिवासियों का अपने जीवन-संघर्ष में जिन बीमारियों से सामना हुआ, उन बीमारियों को मानवीकृत करके उनकी उपासना से तत्संबंधी बीमारी दूर करने की पद्धति अपनाई गई। प्रकृति के जिस उपादान को आदिवासियों ने देखा-भाला, प्राय: उसी पर देवी-देवता का भी नामकरण कर दिया। लोकदेवताओं के नाम किसी अनजानी अनदेखी बीमारी के निवारण के लिए, किसी विष-व्याधि के शमन के लिए, पारिवारिक उपद्रवों के निवारण के लिए, किसी अचानक उपजी व्याधि के निराकरण के लिए तथा किसी स्थान, काल या दिशादि के महत्व को स्वीकार करने के कारण रखे गए। इन देवी-देवताओं को स्मरण करने का तरीक़ा उनके नाम पर ही स्थान का नामकरण करने से अच्छा और क्या हो सकता था, अस्तु। सभ्यता-विकास के क्रम में प्रकृति-आदिवासी-जीवन संघर्ष-देवी देवता- स्थान नाम, कुछ इस क्रम में स्थानों का नामकरण ललितपुर जनपद में किया गया। जिले में 'डग डग देवी पग पग देव' की कहावत है। अत: इसमें संदेह का कोई कारण नहीं है कि लोकदेवताओं और प्रकृति के ऊपर स्थानों के नाम इस जनपद में रखे गये। मातृदेवियों के नाम पर स्थानों का नाम रखने के

पीछे यह धारणा थी कि ऐसा करने से देवी खुश हो जाएगी, रोग-शोक कम होगा, फसलें बेहतर होंगी और आमतौर पर कल्याण की वृद्धि होगी, किंतु अब ऐसी लोकमान्यताओं के धरातलीय साक्ष्य विद्यमान नहीं रहे।

ललितपुर जनपद के पठारी क्षेत्र और उसकी तलहटी में सहरियों, भीलों, गोंड़ों, राजगोंड़ों जैसे आदिवासी समूह कथित रूप से पांडवों के पूर्व से निवास करते आए हैं। सहरिया आदिवासी उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक ललितपुर जिले में हैं। इस जनजाति के अनेक देवी-देवता हैं। ठाकुरदेव बच्चों और बूढ़ों की रक्षा करने वाले ग्राम देवता है। इनकी स्थापना गांव से बाहर किसी पेड़ के नीचे की जाती है। जिले के 'दा' प्रत्ययांत स्थान-नाम देववाची हैं। भैरोंदेव स्त्री को संतति देने वाले देवता हैं। महरौनी तहसील का '**भैरा**' गांव इसी लोकदेवता का स्मरण कराता प्रतीत होता है। सहरियों के नाहरदेव पालतू पशुओं की रक्षा करते हैं। मूलत: यह बाघ या शेर की पूजा है[5] यथा **नाराहट** (महरौनी)। नाराहट नाम श्री भगवत नारायण शर्मा पूर्व प्राचार्य नेहरू महाविद्यालय ललितपुर के अनुसार जंगल से शेर एवं अन्य वन्य पशुओं की आहट सुनने के कारण रखा गया किंतु यह स्थान-नाम की भाषा वैज्ञानिक व्याख्या ही है।

कैलामाता कार्यसिद्धि की देवी हैं। जिले के **कैलगुवां** तथा **कैलोनी** (महरौनी) जैसे स्थान-नामों में इसी लोकमाता का पुण्य स्मरण झांकता है। अगरिया जनजाति के नाम पर जिले की महरौनी तहसील में **अगौड़ी, अगौरी, अगर**ा इत्यादि ग्राम प्राप्त हैं। भुरतिया जनजाति के नाम पर रहा होगा गांव **भरतिया** (महरौनी) है। पठारी जनजाति पुजारी वर्ग की है। यह लोग मुख्य रूप से तुर्किन की पूजा करते हैं। ललितपुर तहसील के गांव **पठारी, पठरा, पठागोरी** महरौनी तहसील का **पथराई** पठारी जनजाति से संबद्ध प्रतीत हैं। पथराई जैसे नाम पथ की देवी से भी संबंधित हो सकते हैं। पनिका जनजाति के बारे में कहावत है -

पानी से पनिका भए, बूंदन रचे शरीर। आगे-आगे पनिका भए पाछे दास कबीर।।

ललितपुर से सटा हुआ गांव **पनारी** इनकी याद कराता है।

जैसा कहा गया है आदिवासी अपने जीवन में भय, बीमारियों से डर और दैवी आपदाओं से बचने के लिए कई मनगढ़ंत देवी-देवताओं की उपासना करते हैं। जरा सा भय हुआ नहीं कि आदिवासी उसकी देव की तरह पूजा करने लगता है। इन लोगों **को** जब चेचक की व्याधि का पता नहीं था तो इन्होंने इसे शरीर में उठी गर्मी के बुलबुले माना और देह में शीतलता के संचार के लिए शीतला माता जैसी देवी की कल्पना और प्रतिष्ठा कर दी। बीमारियों का यह देहीकरण 7वीं-8वीं शताब्दी में शुरू हुआ।[6]

शीतला को रोढ़ि भी कहा गया है। जिले का **रोड़ा** (ललितपुर) गांव रोढ़ि माता का पुण्य स्मरण है। रोड़ी माता (घूरे की माता) से भी यह संबंधित हो सकता है। मान्यता है कि इसकी पूजा से कृषिवृद्धि एवं खुशहाली आती है। भाटी राजपूतों की देवी रुंडी माता हैं। रोंड़ा रुंडी के अधिक निकट हैं। इस गांव में ठाकुर परिवारों का निवास भी अच्छी संख्या में है।

गांव के बाहर किसी स्थान को यक्ष-यक्षिणी की पूजा का प्रतीक बनाया गया। जिले का **जाखलौन** (ललितपुर) तथा **जखौरा** (तालबेहट) यक्ष तथा यक्षिणी पूजा पर आधारित स्थान-नाम हैं। जाखमाता यक्षिणी से संबंधित है। यक्ष-यक्षिणियों की पूजा-परंपरा के विषय में डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल का कहना है कि भारतीय कला और धर्म में संभवत: यक्षों के समान प्राचीन लोकव्यापी और लोकप्रिय कोई दूसरी परंपरा नहीं है। यक्ष आज भी समाज में बीरों या यकसों के नाम से पूजित हो रहे हैं। जिले के प्रत्येक गांव में भी बीर नाम से यक्ष के चौरा विद्यमान हैं। कहावत है गांव-गांव कौ ठाकुर गांव-गांव को बीर।[7] कहीं-कहीं ऐसी मान्यता है कि जो औरतें बच्चा जनते समय अथवा डूबकर मर जाती हैं, वे ऐसी प्रेतात्मा (यक्षी और डाकिनी) या पिशाची बन जाती हैं और उन्हें इस नाम से पूजा जाता है।[8] 'प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास' (डॉ. रांगेय राघव) के अनुसार दक्षपुत्री सखा के दो पुत्र थे- यक्ष और रक्ष। यक्षों को काला शरीर और लाल नेत्र वाला कहा गया है। इन्हें कुबेर का रक्षक माना जाता है। वनस्पति के स्वामी यक्ष देवों से नीचे तथा भूतों से ऊंचे हैं। इन्हें महायोधा, व्यापारियों के रक्षक तथा इच्छा रूपधर माना जाता है।

साढूमल (महरौनी) गांव बगड़ावतों में से प्रमुख भोज की गूजर स्त्री साडूमाता के नाम पर अनुकृत प्रतीत होता है। साडूमाता से ही देवनारायण नामक लोकदेवता का जन्म हुआ। बुंदेलखंड की रिछावर देवी के नाम पर ललितपुर तहसील के गांव **रीछपुरा** और **रिछा** बसे हैं। यह देवी मनोकामना पूर्ण करने वाली मानी गई हैं। जिले के प्रत्येक गांव में खेड़ापति हनुमानजी के मंदिर होते हैं। खेड़ा अर्थात् गांव का उन्हें स्वामी बनाया गया है। गांव मनुष्यों द्वारा समूह में बसाई गई बस्तियों की प्राचीनतम इकाई है। इस प्रकार हनुमान को खेड़ापति की पदवी देकर सार्वभौमिक लोकदेवता बना दिया है। वे गांव की सीमा के रक्षक समझे गए हैं। हनुमान के नाम पर जिले में स्वतंत्र स्थान-नाम भी मिलते हैं यथा - **हनूपुरा** (तालबेहट)।

धर्म-दर्शन के ग्रंथों में सात तन्मात्राएं विहित हैं, जो प्रवृत्तियों को निर्धारित एवं नियंत्रित करती हैं। लोक में सात माता इन्हीं को कहा गया है। जिले का **सतवांसा** (महरौनी) गांव में सात माता की ध्वनि झांकती दिखाई पड़ती है। यह संत निवास तथा सात लोगों के आवाससूचक अर्थ से भी झंकृत है। ममतामयी मातृदेवी पार्वती

को गणगौर भी कहा गया है। इनका प्रतीक स्थान-नाम जिले में **गनगौरा** (ललितपुर) है। वर्षा की देवी काजल माता (इंद्र की पुत्री) की पूजा काकड़ (गांव की सीमा) की पूजा करने के बाद की जाती है। जिले के **ककड़ारी** (तालबेहट एवं महरौनी) गांव काकड़ से अनुमित किए जा सकते हैं। काकड़ को ध्रुवदेवी भी कहते हैं। वर्षा देवी वराई माता भी कही गयी। भील समुदाय बलि और दारू धार से वराई माता की पूजा करता है। **बिरारी** (ललितपुर) गांव इस माता का स्मरण कराता है। इस देवी के थानक के निकट मामादेव का थानक भी होता है। **मामदा** (ललितपुर) मामादेव का गांव है। मामादेव और वराई माता की एक साथ तथा एक समान पूजा होती है।

भैंसासरी माता की पूजा वस्तुत: दुर्गा के महिषासुरमर्दिनी रूप की पूजा है। यह तंत्र-मंत्र की देवी भी कही गयी हैं। जिले के गांव **भैंसाई** (ललितपुर) तथा **भैंसनवारा कलां** तथा **भैंसनवारा खुर्द** (तालबेहट) के नाम इसी लोकमाता के नाम पर रखे गए हैं। मोतीझिरा बुखार के बिगड़े रूप, जिसे आजकल टायफायड कहा जाता है, के देवता हैं। **मोतीखेरा** (तालबेहट) गांव इसी लोकदेवता का स्मरण कराता है। नागदेव (सर्प) पूजा के लिए वर्ष में एक दिन नागपंचमी विहित है। इस पूजा को याद करते हुए जिले में **नगदा** (तालबेहट), **नगवांस** (तालबेहट) तथा **नगारा** (महरौनी) गांव बसे हैं।

पशुओं और गांव की रक्षा के लिए बैमाता की प्रतिष्ठा है। इसी के प्रतीक स्थान-नाम **विहामहावत** (ललितपुर) इत्यादि हैं। 'बै' गीत में विधाता की शक्ति एक कुम्हारिन के रूप में दिखायी देती है। गांवों में 'परजापत' कहे गए कुम्हारों के यहां इसकी पूजा होती है। खों-खों मइया (खांसी माता), बराई माता (खाज-खुजली माता)[9] के सूचक स्थान नाम क्रमश: **खोंखरा** (ललितपुर) तथा **बिरारी** (ललितपुर) हैं, जिनकी सीमाएं परस्पर सटी हुई हैं।

विवाह के रतजगे का लोकगीत सतगठा है, जिसमें पितर-पूर्वज देवी-देवताओं का उल्लेख है। जिले का **सतगता** (ललितपुर) गांव इस लोकगीत का मधुर स्मरण है। सतगता शक्तावतों की सतियों का स्थल भी संभव हो सकता है। भील आदिवासियों में प्रचलित झूमर नृत्य जिले के **झूमरनाथ** (तालबेहट) स्थान से साम्य रखता है। यह करमा नृत्य का एक भेद है। सात अप्सराओं को सती आसरा कहा गया। इसके नाम पर जिले के **असउपुरा** (तालबेहट) तथा गैर आबाद ग्राम **असौरा** (महरौनी) हैं।

प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं समाज विज्ञानी डॉ. डी डी कोसंबी ने अपनी पुस्तक 'मिथक और यथार्थ' में भारत की सांस्कृतिक संरचना का अध्ययन किया है। इस पुस्तक में एक स्वतंत्र अध्याय मातृदेवी पूजास्थलों के अध्ययन पर है, जिसके

अनुसार मातृदेवियां असंख्य हैं। इनमें से बहुतों का उल्लेख वर्गबद्ध या समूहबद्ध रूप से हुआ है, खास नाम से नहीं। उनमें प्रमुखतम हैं- मावलाया, जो अप्सराएं (जलदेवियां) हैं और जिनका उल्लेख सदैव बहुवचन में ही होता है। सातवाहन अधिकार क्षेत्र में मामालहार और मामले का उल्लेख है। मातृदेवी पूजा प्रचलन के कारण क्षेत्र का नाम मावल पड़ गया। यह नाम दो हजार वर्ष से भी पहले से ज्ञात है। गढ़ी हुई मूर्तियों जैसी उनकी कोई प्रतिमाएं नहीं हैं। उनके प्रतीक हैं सिंदूर लगे बहुतेरे अनगढ़ छोटे-छोटे पत्थर, या तालाब के किनारों पर, या चट्टान पर, या पानी के समीप किसी पेड़ पर लगे लाल निशान।[10] ललितपुर जनपद का गांव **मावलैन** (तालबेहट) इन्हीं मातृदेवियों का प्रतीक अभिधान है।

डॉ. कोसंबी ने लिखा है ये देवियां हैं तो माताएं (मातृदेवियां) किंतु अविवाहित हैं। जिस समाज में इनका उद्भव था, उसकी दृष्टि में किसी पिता का होना आवश्यक नहीं था। अत: यह स्पष्ट है कि उस समय का समाज मातृसत्तात्मक था। आगे चलकर इनका विवाह किसी पुरुष देवता से होने लगा। विशेष बात यह है कि इन मातृदेवियों की पूजा आज भी महिलाओं द्वारा ही की जाती है, भले ही पुरोहितगण पुरुष हों। गांवों में रक्तबलियां देने का रिवाज रहा किंतु जहां-कहीं ऐसी पूजा ब्राह्मणीकृत हो गयी अर्थात् तत्संबद्ध देवी का एकात्म्य किसी पौराणिक देवी से कर दिया गया, वहां बलि पशु को देवी के सामने नहीं काटा जाता, देवी को उसका दर्शन भर करा देते हैं और तब उसे कुछ दूर ले जाकर काटते हैं। यद्यपि अब इस पद्धति का भी अधिकांश जगहों पर ब्राह्मणीकरण हो गया है।[11]

इल-इला पौराणिक उपाख्यान से पता चलता है कि नवरात्र के दौरान महाराष्ट्र के आदियुगीन वननिकुंजों में मूलत: पुरुषों का प्रवेश बिल्कुल निषिद्ध था, क्योंकि जो पुरुष प्रवेश करता उसे स्त्री में बदल दिया जाता। अब स्थिति उलट गई है। पुरोहिताई के प्रवेश से अब नवरात्रों में महिलाओं का प्रवेश निषिद्ध हो गया है।[12] जनपद के **चोंरसिल** (ललितपुर) तथा **भोंरसिल** (ललितपुर) स्थान-नाम इल-इला नामक उपाख्यान का स्मरण हैं।

मातृदेवियों की पूजा प्रारंभ में पूजा के पाषाण के उपर कोई छाया या छत न रखकर तथा खुला आसमान रखकर की जाती थी। मान्यता थी कि उसके उपर छत डाल देने से पथभ्रष्ट पुजारी पर भारी विपत्ति आ पड़ती है, लेकिन गांववाले जब पर्याप्त धनी हो जाते तब प्राय: देवी को मनाकर इसके लिए राजी कर लेते। अत: डॉ. कोसंबी के अनुसार यह पूजा पद्धतियां उस ज़माने की हैं जब घर बनाने का चलन नहीं था और जब गांव चलते-फिरते हुआ करते थे।[13] इससे एक प्रबल संभावना बनती है कि इन पूजा प्रतीकों के नाम पर ही स्थानों के नाम रखे गए।

बस्तियां बसने के समय गांव के लोग भूस्वामित्व नहीं रखते थे। गांव बनने के समय भरपूर लौह उपकरण ईजाद नहीं हुए थे। ज़मीन हल से जोती नहीं जाती थी। अत: कितों (नियत प्लाट) में ज़मीन नहीं बंटी थी। वैसे भी जंगली लोगों के लिए ज़मीन अमलदार(अस्थाई अधिकार) होती है, संपत्ति नहीं। गांवों में स्थानीय देवताओं, आत्माओं तथा भूत-प्रेतों को तुष्ट करने की प्रथा थी। हर आदमी को सात या नौ दिन के लिए गांव की आवासीय सीमा से बाहर जाकर रहना पड़ता था और इस अरसे में बस्ती बिल्कुल वीरान हो जाती थी। इस प्रकार तब गांव चलती-फिरती बस्तियां हुआ करती थीं।

यमाई देवी यदि प्रसन्न नहीं है तो दु:स्वप्न देकर सोना हराम कर देती है। अत: गांव वाले उसे मुर्गा या आम तौर पर नारियल चढ़ाते हैं। इसके बावजूद गांवों मे इस देवी का कोई मंदिर नहीं मिलता। ललितपुर जनपद का **जमौरा** (महरौनी) तथा **जमौरामाफी** (तालबेहट) इस मातृदेवी का स्मरण है।

आदिवासी लोकमाताओं की एक कहानी है कि बाघा भील की कन्या बुधली अपने समय की सबसे सुंदर और साहसी कन्या थी। उसकी सुंदरता और वीरता का बखान पूरे अरावली पठार पर होता था। उसका मुख्य हथियार 'दाव' या 'डाव' था।[14] जिले के **दावनी** (ललितपुर) तथा **दांवर** (ललितपुर) गांव इस हथियार से अनुकृत प्रतीत होते हैं। महिषासुरमर्दिनी का मुख्य हथियार भी यही खड्ग (दाव) है। बुंदेलखंड का वर्तमान हंसिया या दांती दाव ही है। पाणिनिकालीन भारतवर्ष के अनुसार उदीच्य देश में दाव को दात्र तथा प्राच्य देश में दाति कहा जाता था।[15]

लोकमाताओं से संबंधित एक कथा के अनुसार भीलनायक संभा एक वीर योद्धा था। किसी युद्ध में मर जाने पर वह आकरा भैरव बन गया। उसकी स्थापना माता के स्थान से नीचे तल में की गई। संभा अपने जीवन काल में खोह माता का दर्शन करता। रविवार को बकरे की बलि करता। दारू की धार रोज लगाता। **दारुतला** (महरौनी) गांव इसी का प्रतीक स्मरण कराता है। देवदारू, पीतदारू नाम के वृक्ष भी होते हैं, किंतु ललितपुर के पठारी भूभाग तथा शुष्क जलवायु में यह वृक्ष नहीं पाए जाते हैं। संभा को जब भाव आता तो वह उत्पात मचाता हुआ माता के देवरे की तरफ भागता। महरौनी तहसील के ही **देवरा** तथा **देवरी** नामक स्थानों पर वह माथा टेकता। वह बड़ी-बड़ी सांकलें लेकर अपने बदन पर मारता, जिससे उसे सांकलिया भैरव कहा गया। स्वयं माता ने बाद में उसे सांकरिया अर्थात् शांत भैरव बनाया, तब से उसने अपना स्थान क़ायम किया। शांत भैरव के नाम से ललितपुर तहसील के **सांकरवार कलां** एवं **सांकरवार खुर्द** गांव अनुकृत प्रतीत होते हैं। भैंसाई (महिषासुरमर्दिनी) माता का स्थान स्वयं संभा ने बनवाया। माता का देवरा

उसके पूर्वजों का बनाया हुआ था। पहले यह मूर्ति पठार की शिला पर रखी थी। संभा नायक ने उसे पक्का चबूतरा बनवाकर स्थापित करवाया।[16] ललितपुर तहसील का **चौंतराघाट** गांव इसी माता के चबूतरे की याद में बसाया गया। माता के खप्परों (छप्पर) को जहां झुलाया जाता, वे स्थान वर्तमान में महरौनी तहसील के **छपरट, छपरौनी, छापछौल** कहे गये।

महरौनी तहसील के **अमौदा, अमौरा** गांव माता अंबा की याद में बसाए गए स्थान हैं। इन स्थान-नामों में मुख्य शब्द अंब है जो आम की अनुकृति प्रतीत होने लगा। महरौनी तहसील के स्थान **बारई, बारयो, बारचौन, बारौन** इत्यादि वराह पूजा के कारण बसे। विष्णु के वर्तमान पूजित रूपों से पूर्व जिले में वराह की पूजा की जाती रही। जिले के अनेक स्थानों से वराह के कई रूपों की मूर्तियां प्राप्त हुई हैं।

तालबेहट तहसील का **भंवरकली** स्थान भ्रामरी (भंवर) माता के नाम पर बसा है। भ्रामरी माता पुराण देवी के रूप में लोकमान्य हैं। दुर्गासप्तशती के 11वें अध्याय में भ्रामरी देवी को असुरमर्दिनी और लोकहितकारिणी माता के अवतार रूप में उल्लिखित किया गया है। जनजातियों की गेय गाथाओं में भी भ्रामरी या भँवर माता का उल्लेख मिलता है। जिले के **भोंरसिल** (ललितपुर), **भोंरट** (महरौनी) इत्यादि स्थान-नाम भी भंवरमाता की आस्था को जीवित रखे हुए हैं।

गोरा (ललितपुर) गांव लोकजीवन में गौरी माता को लाड़-दुलारवश पूजने की याद में बसा स्थान है। आदिवासी समुदाय की यह आस्था देवी है। जिस प्रकार पुराण देवी महिषासुरमर्दिनी लोक में भैंसासरी या भैंसाई माता है, उसी प्रकार हमारी जगमाता पुराणों में पार्वती, गौरी या गिरिजा हैं और लोकमाता के रूप में वह गौरी।

भैंसाई माता के जगह-जगह स्थान हुआ करते थे। घाटा नामक स्थान पर इस माता का निवास होने के कारण जिले का **घटवार** (ललितपुर) गांव बसा है। **सड़कोरा** (महरौनी) स्थान साड़ा माता के आधार पर बसा है। साड़ा माता का मंदिर हाड़ा जागीरदारों द्वारा बनवाया गया। हाड़ा राजपूतों को महिषासुरमर्दिनी का इष्ट था। इस प्रकार साड़ा माता भी भैंसाई माता का अन्य स्वरूप है। यों भी लोकमाताएं अतिनिकट का संबंध रखती हैं। इनमें कोई छोटी या बड़ी नहीं हैं। अपने मूल रूप में यह लोककल्याणकारी समझी गईं। पीपरी माता के नाम पर ललितपुर तहसील के **पिपरई, पिपरौनियां, पिपरिया;** तालबेहट तहसील के **पिपरा, पिपरई** तथा महरौनी तहसील के पिपरट, पिपरिया इत्यादि गांव बसे हैं। पीपल का वृक्ष पवित्र माना गया है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह महत्वपूर्ण वृक्ष है क्योंकि इससे मनुष्यों हेतु आवश्यक ऑक्सीजन गैस सर्वाधिक नि:सृत होती है। लोकमाता पीपरी सुहाग-पूत की रखवाली करती हैं। रोग-शोक सभी दूर करती हैं। पीपरी माता व नौ वीरांगनाओं ने अपने प्राण देकर

शरणागतों तथा अपने राजपरिवार की प्राणरक्षा में प्राण न्यौछावर कर दिये थे।[17]

तालबेहट तहसील का **हिंगौरा** गांव हिंगलाज माता के स्मरण में बसा है। हिंगलाज माता का मूल स्थान अफगानिस्तान के कोटड़ी में है। वहां आज भी इसकी पूजा एक अफगान परिवार करता है। यह मुसलमान परिवार चोगला-चारणों का मूल बताया जाता है, जिसने अपना धर्म-परिवर्तन कर लिया था। वहीं से किसी समय 'जोत' (ज्योति) लाकर भारत के अन्य भागों में हिंगलाज माता के देवरे और मंदिर स्थापित किए गए। एक विरद के अनुसार हिंगलाज माता को आदिशक्ति का प्रथम अवतार माना गया है। अफगान में हिंगलाज माता की पूजा कन्या ही कर सकती है। पूजा करने वाले परिवार का मुखिया कोटड़ी का पीर कहलाता है।[18] ऊमर (गूलर) की माता के नाम पर **ऊमरी** (महरौनी) तथा भादवा माता के कारण **भदौरा** (महरौनी), **भदौना** (तालबेहट) स्थान बसे हैं। भादवा की माता बीजासन माता का रूप मानी गई हैं। लोकमान्यता में 'बीजासन' को दुर्गा का बीसवां रूप माना गया है।

तारवली माता या खेतरमाता को ओकड़ी या होकड़ी माता के नाम से भी जाना जाता है। यह माता शंखोद्धार तीर्थ पर स्थित देवी थी। भील समुदाय इस माता को विशेष रूप से पूजता रहा है। **तरावली** (महरौनी) गांव इसी माता का स्मरण है। मोड़ शिखर निर्माण की एक अभियांत्रिक युक्ति है। मोड़ शिल्प के कारण जिले के स्थान **मुड़ारी** (ललितपुर) तथा **मुड़िया** (महरौनी) स्थापित हुए। **मनगुवां** (ललितपुर) गांव आदिवासी समूह मीणा के नाम पर बसा संभव है। महरौनी तहसील के **पड़वां** एवं **धवारी** ग्राम एक-दूसरे के निकट बसे हैं। धवारी ग्राम निवासी श्री श्रीराम मिश्रा के अनुसार पड़वां कृष्ण की सेना का पड़ाव था तो धवारी में ध्वजा गाड़कर युद्धस्थल बनाया गया, जिससे यह ध्वजाई अब धवारी हो गया। ध्वजाई में पुतली माता की पुतरिया है जो एक शिला पर बनी है। इस पुतरिया के सिर पर पांच नाग फन फुलाए खड़े हैं। पुतरिया के सिर पर कलगी या साफा लगा है। इसके मध्य भाग में एक अन्य मूर्ति है जो अपनी जंघा पर किसी को बिठाए हुए है। नीचे एक खड़ी हुई मूर्ति आगे को पैर बढ़ाती हुई धनुष लिए है। अब यहां एक मड़िया बना दी गई है। मान्यता है कि इस मूर्ति के दर्शन से बालकों का सूखा रोग ठीक हो जाता है। इसके पास बसे ग्राम का नाम बीर पशु चरागाह रहने के कारण पड़ा। इसके निकट के ग्राम **सुनवाहा** बाणासुर-पुत्री उषा का महल शोणितपुर था। बाणासुर के नाम पर बसा गांव **बानपुर** यहां से तीन किमी दूरी पर स्थित है।

स्थान-नामिक प्राचीनता—प्राचीन युग में चरागाह में पशु स्वच्छंद चरते थे। उनके लिए चारे की उपलब्धि के अनुसार नई-नई गोष्ठ बना दी जाती थीं। छोड़ी हुई पहली भूमि को गोष्ठीन कहा जाता था। ललितपुर जनपद का **गोठरा** (महरौनी) इसी

कारण बसा है। वर्तमान में गोष्ठी का अर्थपरिवर्तित होकर विचार-विमर्श करने के लिए आयोजित सभा के अर्थ में किया जा रहा है। पशुओं को खाने के लिए भुस और कडंकर या कुट्टी दी जाती थी, उसे खाने वाले कडंकरीय (हिंदी में डंगर) कहे जाते थे।[19] जिले के **डोंगरा** नामक स्थान इसी डंगर के आधार पर बसे प्रतीत हैं। डॉ. कामिनी ने इन्हें जंगलवाची डांग से संबंधित बताया है।

कंथा जिसके आधार पर **कैथोरा** (ललितपुर) गांव स्थापित होना संभव है। मूलत: शक भाषा के इस शब्द का अर्थ नगर होता है। देश में कुछ स्थानों पर यह शब्द परपद के रूप में स्थान नामों से संयुक्त है। **इकौना** (महरौनी) इक्षुवण (गन्ने का वन) का भाषा परिवर्तन है। **सिरसी** (तालबेहट) शिरीषवन के कारण बसा। सिंधु प्रांत या सिंध नद के निचले कांठे का पुराना नाम सौवीर जनपद था। इसकी राजधानी रोरुव थी। ललितपुर जनपद का **रारा** (तालबेहट) गांव इससे अनुकृत प्रतीत है। सौवीर जनपद का सीधा संबंध इस जनपद से विदित नहीं है किंतु रारा से मिलते-जुलते अभिधान प्रदेश के अन्य जिलों रूरा (महोबा), रूरा (कानपुर), रूरा-अड्डू (जालौन) में भी मिलते हैं। **भोंड़ी** (महरौनी) गांव का संबंध भृगुकच्छ से संभव है। ब्राह्मणक जनपद की तरह शौद्रायण लोग भी सिकंदर से लड़े थे। शौद्रायण का यूनानी रूप सोडराई होता है। ललितपुर तहसील का **सूडर** गांव का संबंध इसी से प्रतीत है। भौगोलिक स्थिति के अनुसार ललितपुर जनपद भारत के मध्य में है। पूर्वोत्तर के राज्यों को छोड़कर देश के चारों कोनों के रास्तों का यदि मध्य बिंदु तलाशना हो तो ललितपुर जनपद का भूभाग इसमें आएगा। भारत का वर्तमान राष्ट्रीय राजमार्गों का चतुर्भुज भी इसी के आसपास बनता है। अत: यहां संस्कृति में हुए चतुर्दिक परिवर्तनों का प्रभाव दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक है।

सक्तू (महरौनी) का संबंध सत्तू खाद्य से है। पाणिनि ने साल्व जनपद की नस्ल के बैलों को साल्वक कहा है। उत्तरी राजस्थान के बीकानेर से अलवर तक फै ले हुए बड़े भूभाग का नाम साल्व था। मेड़ता और जोधपुर इलाक़ा भी इसी के अंतर्गत था। इस प्रदेश के नागौरी बैल आज तक प्रसिद्ध हैं।[20] राजस्थान से बैलों को लाकर लोग विपणन करते रहे हैं। महरौनी तहसील के **सौल्दा** स्थान इसी कारण बस गया संभव है। **तोर** (ललितपुर) नयी जोत वाली ज़मीन के लिए कहा जाता है। **खिरिया उवारी** (महरौनी) निस्तार के योग्य भूमि का बोध कराने वाला स्थान-नाम है।

खैरा (तालबेहट) शब्द उक्षतर शब्द से निष्पन्न हुआ है। वर्तमान में खदिर से इसका अर्थ जोड़ा जाता है, किंतु 'पाणिनिकालीन भारतवर्ष' में जिस बछड़े को शकट (बैलगाड़ी) आदि में जोतने के लिए बधिया करते थे, वह पूरा जवान होने पर

उक्षा और अधेड़ अवस्था का होने पर उक्षतर कहा जाता था। उक्षतर से हिंदी का खैरा शब्द बना है (उक्षतर-उक्खयर-उखइर-खइरअ-खैरा)[21]

जिस बछड़े के दूध के दांत न टूटे हों उसे उदंत कहा जाता था। तालबेहट तहसील का **उदगुवां** स्थान इससे संबंधित संभव है, किंतु 'पाणिनिकालीन भारतवर्ष' में कुओं की सफाई करने वाले लोग उदगाह या उदकगाह कहलाते थे। उदगुवां का भाषा-परिवर्तन इसके निकट भी है।

खेड़ा शब्द खेट से निष्पन्न हुआ है। 'पाणिनिकालीन भारतवर्ष' के अनुसार मध्य देश से लेकर पश्चिम में गुजरात तक यह परपद प्रयुक्त होता है। पाणिनि के अनुसार कुत्सित नगर खेट कहलाते थे। **खाईखेरा** (ललितपुर) तथा पूर्वपद तथा परपद के रूप में खिरिया स्थान-नाम जिले में दो दर्जन से अधिक हैं। **पाह** (महरौनी) गांव का नाम कृषि-कार्य की एक विधि के कारण पड़ा। 'पाय' खेती की वह विधि है, जिसमें ज़मीन किसी दूसरे गांव में हो और जोतने वाला समीप के ही गांव में रहता हो। इसका तत्सम रूप 'पाही' है। ऐसी खेती करने वाले किसान को 'पाहिया' कहा जाता है। **चीमना** (ललितपुर) गांव बौद्ध पृष्ठभूमि के चीवर का संकेत करता है। यह वस्त्र बौद्ध भिक्षुओं को पहनाते हैं। गृहस्थ या ब्रह्मचारी के वस्त्रों के लिए चीवर नहीं चलता था।

जिजरवारा (तालबेहट) स्थान-नाम का संबंध गालव ऋषि से प्रतीत होता है। शैशिरि शाखा में गालव को शौनक का और शाकटायन को शौशिरि का शिष्य कहा गया है। **कठवर** (तालबेहट) जिजरवारा के निकटस्थ बसा ग्राम है। पाणिनि ने कठों का स्वतंत्र उल्लेख किया है। कठ लोग गांव-गांव में फै ल गए थे (ग्रामे-ग्रामे च काठकं कालापकं न प्रेच्यते, भाष्य 4/3/101)। मेगस्थनीज ने पंजाब में कंबिस्थोलोइ लोगों का उल्लेख किया है, जिनके देश में इरावती नदी बहती थी। ज्ञात होता है कि कपिष्ठलों का प्रदेश इरावती के आसपास के भूभाग में कठों के समीप ही था। कठों ने वहीं पर अपने प्रदेश में जाते हुए सिकंदर का मार्ग रोका था।[22] इन कठों के नाम पर संपूर्ण बुंदेलखंड में अनेक स्थान-नाम प्राप्त होते हैं।

कठों के अतिरिक्त जनपद ललितपुर सहित भारतवर्ष के अनेक भागों में मर, भर, जर संस्कृति का उल्लेख मिलता है, किंतु 'पाणिनिकालीन भारतवर्ष' में इनका उल्लेख नहीं है। भर हिंदुओं की एक अस्पृश्य जाति मानी जाती थी। यह जाति उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में रहती थी।[23] भारशिव नाग राजा थे। यह शिव की उपासना करते थे। जिले के **भारौनी** (महरौनी) इत्यादि स्थान-नाम इस जाति का संकेत करते हैं। 'बुंदेली-भाषी क्षेत्र के स्थान-अभिधानों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन'(डॉ. कामिनी)के अनुसार पुराण प्रसिद्ध मुर दैत्य एवं गहोई वैश्य जाति का एक आंकना

'मर' है। मर जाति का संकेत करते स्थान-नाम **मरौली** (महरौनी) तथा जर जाति से संबंधित **जरया** (महरौनी) तथा **जरावली** (महरौनी) इत्यादि हैं। जर जाति से संबंधित ललितपुर जनपद के इन गांवों में तीन-चौथाई से अधिक लोधी जाति के व्यक्ति निवास करते हैं। डॉ. कामिनी ने बुंदेलखंड के स्थान-अभिधानों के रूप में मौजूद ऐतिहासिक जर जाति के अवशेषों को लोधियों के जरिया वर्ग से संबंधित बताया है। मग ईरान निवासी सूर्यपूजक थे, जो कृष्ण के पुत्र शांब द्वारा चंद्रभागा तट पर सूर्य मंदिर की प्रतिष्ठा के लिए बुलाए गए थे। बुद्ध इन शकद्वीपी ब्राह्मणों को अच्छा नहीं मानते। बुंदेलखंड से होते हुए मग दक्षिण की ओर गए हैं। ललितपुर तहसील का **मगरवारा** इस जाति का संकेत करता है। कुरु चंद्रवंश में उत्पन्न परम धार्मिक तथा महाप्रतापी थे। 'प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास' (डॉ. रांगेय राघव) के अनुसार कुरु के पिता ने जिस प्रदेश में तप किया उसका नाम कुरुजांगल और कुरुक्षेत्र होने का उल्लेख है। कुरुक्षेत्र के अंतर्गत दृषद्वती, सरस्वती और आपया नदियों के उल्लेख हैं। कुरुओं के शैव होने के प्रमाण भी मिलते हैं। जिले की महरौनी तहसील के **कुरौरा, कुर्रट** इत्यादि गांव कुरु नामकरण के आधार हैं। राजपूताने की ओर बसने वाली मेवजाति का संबंध भी इस भूभाग से रहा है। **महोली** (ललितपुर) उच्चरित रूप मेवली मेव जाति पर आधारित है। तुगलक काल में इन्हें आतंककारी और लुटेरा बताया गया है। इन्हें पहली बार शिवाजी ने संगठित कर औरंगज़ेब के विरुद्ध उतारा था। यह अंग्रेजों की रसद लूट लेते थे और दुस्साहस तथा चतुराई के लिए प्रसिद्ध थे। लार्ड वेलेजली ने इन्हें समाप्त करने का बीड़ा उठाया था।

स्थान-नामों का उद्गम एवं विकास—समाजशास्त्र के एक सिद्धांत के अनुसार व्यवसायी बनिया और पुरोहित ब्राह्मण कभी पृथक से गांव नहीं बसाते। वे पूर्व से बसे हुए गांव में बसना उचित तथा सुरक्षित मानते हैं। अत: जिले में ब्राह्मण तथा बनियों के नाम पर जो गांव विद्यमान हैं, वे भी प्राचीन युग में किसी अन्य द्वारा बसाए गए होंगे। प्राचीन काल में व्यक्ति इधर से उधर खाने की खोज में चलता-फिरता रहता था। खेती करने की कला सीखने के बाद व्यक्ति ने अपने काम की जगह के पास रहना प्रारंभ किया। कभी-कभी वह खेतों में रहकर ही अपना यापन करता। देश के अनेक प्रदेशों के स्थान-नामों का अध्ययन करने वाली विदुषी डॉ. मालती महाजन के अनुसार स्थान-नामों में लगने वाले वट, वाटक, वाड़ा इत्यादि प्रत्यय खेतों में रहने वाले लोगों के अर्थ को द्योतित करते हैं।[24] ललितपुर जनपद के स्थान-नामों के प्रत्यय वा, वाहा, वाह तथा बेहट इत्यादि प्रत्यय इसी सादृश्य के हैं। यह प्रत्यय संस्कृत के वत् से विकसित हैं, जिसका अर्थ है सदृश या समान। डॉ. मालती महाजन के अनुसार देश के सभी अंचलों में जब व्यक्ति अपनी बस्तियां बसाने लगे तब इन्हें 'पाल' कहा

गया। पाल शब्द गांववाची है, जो संस्कृत 'पद्र' से विकसित हुआ है। पाल से पाली, पालिका इत्यादि प्रत्यय अथवा स्वतंत्र अभिधान विकसित हुए। वहीं, भाषा विज्ञानी डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया के मत से संस्कृत पद्र से हिन्दी के 'ओंद', 'औंदा', 'औंधा' इत्यादि प्रत्यय निष्पन्न हुए। इसका प्राकृत रूप 'पद्द' मिलता है। डॉ. महाजन के अनुसार पाल के बाद लोगों की बस्तियों को वट, वाटक, वाड़ा कहा गया। इसके बाद खेट, खेटक फिर ग्राम या पुर तथा नगर कहे गए।

पुर या नगर बसने तक व्यक्ति अधिक स्थिर और सुरक्षित हो गया था। अब वह अपने गांव की आकृति, दूसरे गांव से उसकी दूरी, वातावरण, परिवेश इत्यादि के प्रति जागरूक हो गया था। इसीलिए वह अपने निवसित स्थान के समीप पानी की स्थिति को आवश्यक मानकर चलने लगा था।

ग्राम पहले समूह में बसते थे। ग्राम का व्युत्पत्तिपरक अर्थ ही समूह है। पहले ग्राम अकृत्रिम रूप से अथवा बिना नियोजना के अस्तित्व में आए। कौटिल्य के समय तक ग्राम सप्रयोजन निविष्ट होने लगे। सूत्रकृतांगदीपिका में ग्राम की निरुक्तिपरक व्याख्या देते हुए उसके लक्षण दिए गए हैं, जिसके अनुसार –

1. साधुओं द्वारा भिक्षार्थ भ्रमण करते हुए गुणों का ग्रसन करना अथवा
2. अट्ठारह प्रकार के करों को सहन करना अथवा
3. कंटकों अथवा वाटकों से आवृत्त जनों का निवास होना।

कृषि के उत्तरोत्तर विकास के कारण कौटिल्य ने राष्ट्र विकास के लिए ग्राम-निवेश कर की संस्तुति की है। नगर शब्द का उल्लेख बाद में मिलता है। संपूर्ण रूप से वैदिक काल में नगर का जीवन बहुत विकसित रहा होना कदाचित् ही संभव है। हॉपकिंस के अनुसार 'महाकाव्य' में नगर, ग्राम और घोष का उल्लेख मिलता है। वैदिक साहित्य ग्राम से कदाचित् ही आगे जाता है, यद्यपि इसमें संदेह नहीं कि इसके बाद के काल में कुछ परिवर्तन हुए होंगे।[25]

नाम: स्वरूप निर्वचन—नामों की प्रकृति बड़ी विचित्र होती है। यों चिर परिचित शब्दों द्वारा ही नामों की निर्मिति होती है। इसी से पूर्व में नाम और शब्द को एक ही माना गया और नामों के पृथक् अध्ययन की ओर विद्वानों का ध्यान नहीं गया। विलियम शेक्सपियर की उक्ति 'नाम में क्या रखा है' कदाचित् नाम और शब्द का भेद न समझने के कारण अथवा विनोद में कही गई। नाम स्वगुणार्थक कम और संकेतार्थक अधिक होते हैं। इसका तात्पर्य है नाम-शब्द का भाषिक व्यवस्था से बाहर व्यक्तियों, वस्तुओं, स्थानों, गुणों, प्रक्रियाओं एवं क्रियाकलापों के मध्य संबंध। इसके संपादन के लिए नामों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है, जो कुछ अंशों में वस्तु और व्यवहार में अतिभाषिक वास्तविकता से प्रारंभ होता है।[26] यह

अतिभाषिकीय अध्ययन अर्थतात्विक अध्ययन से भिन्न है क्योंकि अर्थविज्ञान शब्द से प्रारंभ होकर वस्तु का अन्वेषण करता है, किंतु नाम विज्ञान और अर्थविज्ञान क्रमशः वक्ता एवं श्रोता की भांति अंतर्संबंधित हैं। वक्ता के विभिन्न अर्थ वाले शब्द भंडार को सुनकर श्रोता उसमें से उपयुक्त अर्थ का चयन करता है।

स्थान-नामों की उत्पत्ति में अनेक राजनीतिक, सामाजिक एवं वैयक्तिक कारण होते हैं। उदाहरण के लिए पंचाल क्षत्रिय जिस भूप्रदेश में पहले-पहल बसे, उस प्रदेश का नाम पांचाल पड़ गया। इनके कारण यहां की भूमि का भी नाम पंचाल हुआ। इस प्रकार जन और भूमि को सूचित करने वाला शब्द मनुष्य की भाषा का अंग बन गया। व्याकरण शास्त्र को बस इसमें रुचि है कि 'पंचाल जन का निवास स्थान' इस नए अर्थ को किस प्रत्यय की शक्ति से स्थानवाची पंचाल शब्द प्रकट करता है। बिहार निवासी बिहारी कहलाता है। इस 'ई' प्रत्यय में उस निवासी की भूमि, रहन-सहन बल्कि उसकी पूरी नागरिकता पर प्रकाश पड़ता है।[27]

स्थान नामों में प्रत्यय – स्थान-नामों के प्रत्यय जातिबोधक पदों का काम करते हैं। इसलिए इनकी महत्ता असंदिग्ध है क्योंकि स्थान को व्यक्त करने वाला वास्तविक पद परपद ही होता है। पूर्वपद तो मात्र एक वर्णनात्मक पद होता है, जिसका मुख्य कार्य एक स्थान से दूसरे स्थान को पृथक द्योतित करना है।

स्थान-नामों में प्रत्यय एवं परपदों की आवश्यकता विकास के प्रथम चरण में आज जैसी नहीं रही होगी। एकपदीय स्थान-नामों से यह स्पष्ट है कि उस समय मानव जाति को अपने लिए गांव बसाने की आवश्यकता उतनी नहीं थी, जितनी आज हो गई। संस्कृति का वैविध्य विकासमान मानव सभ्यता के साथ विस्तार पाता गया। स्थान-नामों के परपद प्रारंभ में मूल नामों की तरह प्रयुक्त होते रहे होंगे। कालांतर में जनाधिक्य एवं सांस्कृतिक विविधता के कारण गांव बसते गए और यह स्थान-नाम अपर्याप्त सिद्ध हुए। अतः नए पूर्वपदों, परपदों तथा प्रत्ययों को पृथकता बोध एवं विशिष्ट पहचान के लिए स्थान-नामों के साथ जोड़ा जाने लगा।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार प्रत्यय शब्द 'इ'(-जाना) धातु में 'प्रति' उपसर्ग लगकर बना है, जिसका अर्थ है 'की ओर जाना' या 'पास जाना' अर्थात् प्रत्यय शब्द अथवा धातु के पास जाता है या इनसे जुड़ता है। प्रत्यय ध्वनि या ध्वनि समूह की वह इकाई है जो व्याकरणिक रूप या अर्थ की दृष्टि से परिवर्तन लाने के लिए किसी शब्द या धातु (या अपवादतः उपसर्ग- जैसे, विज्ञ) के अंत में जोड़ी जाती है, किंतु जिसका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता। प्रत्यय मूलतः सार्थक शब्द रहे होंगे किंतु धीरे-धीरे इनकी स्वतंत्र अर्थवत्ता समाप्त होती गई और यह मात्र प्रत्यय रह गए।[28]

संस्कृत में धातुओं के साथ जोड़े जाने वाले प्रत्यय कृदंत (कृत्+अंत) कहलाते हैं। यह संज्ञा, विशेषण तथा क्रियाविशेषण होते हैं। दूसरे प्रकार के तद्धित प्रत्यय होते हैं जो संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा कृदंत आदि में जोड़े जाते हैं किंतु डॉ. भोलानाथ तिवारी के विचार से हिंदी में संस्कृत के इन दोनों प्रत्ययों को अलग-अलग रखना अनावश्यक है।

ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में प्रयुक्त प्रमुख प्रत्यय इस प्रकार हैं–

1. अ–हिन्दी उच्चारण में पदांत 'अ' का लोप हो जाता है। अत: इस प्रत्यय का बोलचाल में बोध नहीं होता, परंतु लिखने में ये पद अकारांत ही लिखे जाते हैं। यह संस्कृत के 'अ:' से विकसित हुआ है[29] जैसे गूगर (तालबेहट) छपरट (महरौनी)।

2. अइया/अइ–इस प्रत्यय के योग से भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञाएं भी बनती हैं। जिले के ऐसे कुछ स्थान-नाम हैं- बछरई (महरौनी), बारई (महरौनी) सलैया (ललितपुर)।

3. अऊ/अउवा–इन प्रत्ययों से स्थान-नामों में लघुता की अभिव्यंजना होती है, यथा चढ़रऊ (ललितपुर), चमरउवा (ललितपुर)।

4. अगा–यह प्रत्यय अंग से विकसित हुआ होगा। अंग का अर्थ है वाला, करने वाला। इसका संबंध संस्कृत अंगक (प्राकृत अंगअ हिंदी अंग) से ज्ञात होता है[30] जैसे टेनगा (ललितपुर)।

5. अका–डॉ. उदयनारायण तिवारी के अनुसार अक की उत्पत्ति कृत तथा कृ के अन्य रूपों से हुयी है। इस पर संस्कृत के अक प्रत्यय का भी प्रभाव प्रतीत होता है। स्वर संगति के कारण अक का इक एवं उक में परिवर्तन अका एवं उका के रूप में मिलता है[31] महरौनी तहसील का यह गैर आबाद ग्राम इस प्रत्ययांत के साथ मिला है- मछरका।

6. अट/अटा–संज्ञा तथा अनुकरणात्मक या अन्य प्रकार के शब्दों के आधार पर ये संज्ञा बनाने में प्रयुक्त होते हैं। इनका संबंध संस्कृत वत् से ज्ञात होता है[32] यथा छपरट (ललितपुर), कोकटा (ललितपुर)।

7. अन/अना–यह संस्कृत 'आणि' का विकसित रूप है, जिसका अर्थ है किनारा, सीमा या हद[33] ललितपुर जनपद की बोली में यह प्रत्यय बहुवचन का भी द्योतक है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने इसका संबंध संस्कृत अन् तथा प्राकृत अण से बताया है[34] यथा छायन (महरौनी) धमकना (तालबेहट)।

8. अर/अरा/अरी/अर्रा–अर प्रत्यय संस्कृत अवलि से विकसित है और पंक्ति अथवा 'सतर' का अर्थबोध कराता है। प्रत्यय के अंत में 'आ' तथा 'ई' का योग अर्थ को तीव्रता तथा मूल शब्द को दीर्घ के स्थान पर लघु बना देता है यथा

गोठरा (महरौनी), दांवर (ललितपुर)। डॉ. सरयू प्रसाद अग्रवाल 'देवरा' को 'रा' प्रत्ययांत स्थान-नामों में वर्गीकृत करते हैं और इसे अवधी का प्रचुर प्रयोग मानते हैं। वहीं डॉ. कामिनी के अनुसार 'देवरा' मूल शब्द देवतावाची 'देवल' से विकसित हुआ है और इसमें अरा प्रत्यय का ही योग है[35] किंतु ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में देवरी, देवगढ़, देवरान जैसे अन्य देवतावाची अभिधान भी हैं। अत: इनमें मूल पद 'देव' ही है। 'अरा' प्रत्यय स्थानीय बोली की विशिष्टता के कारण आया है जो उपेक्षा तथा अर्थ की तीव्रता व्यक्त करता है, यथा लुहर्रा (महरौनी), धौर्रा (ललितपुर)।

9. अवनी—यह प्रत्यय भूमिवाची संस्कृत शब्द 'अवनि' से विकसित है, यथा 'बछरावनी' (महरौनी तथा तालबेहट), चुरावनी (तालबेहट)।

10. अवली—संस्कृत 'आवलि' से इसका विकास हुआ है, जिसका अर्थ है पंक्ति या समूह, यथा चंदावली (महरौनी), जरावली (महरौनी)। कुछ विद्वानों ने इसे संस्कृत 'पल्ली' का अपभ्रंश मानने की संभावना व्यक्त की है किंतु इसकी ध्वनि इसे 'आवलि' के अधिक समीप बनाती है।

11. आ—यह संस्कृत 'आकाय' का संक्षिप्त रूप है।[36] यह संस्कृत आक् से प्राकृत आअ में रूपांतरित होते हुए हिंदी में 'आ' रह गया। यह प्रत्यय निश्चय (बक्रा-संस्कृत बर्कर), गुरुत्व (ऊंचा-संस्कृत उच्चैस्), लघुत्व (नीचा-संस्कृत नीचैस्), संबंध (तीता-संस्कृत तिक्त) के अतिरिक्त स्वार्थिक (कौआ-काऊआ-काओ-काको-काक:) का अर्थ प्रकट करता है।[37] ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में इसका प्रयोग गुरुत्ववाची अर्थ में किया गया है—चीमना (ललितपुर), तुरका (तालबेहट), उदया (महरौनी)।

12. आई—इस प्रत्यय के योग से संज्ञा एवं विशेषण पदों से भाववाचक संज्ञा पद तथा क्रियाजात विशेष्य पद निष्पन्न होते हैं।[38] डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने इस प्रत्यय की उत्पत्ति णिजंत-आपइका-आविआ-आविअ-आवी-आई-आइ प्रकार से मानी है। हार्नले इसका संबंध संस्कृत तिका, प्राकृत दिगा-इआ-आई (विपर्यय से) मानते हैं। तीसरा मत डॉ. बानीकांत काकती का है, जो धातु से संज्ञा बनाने के उपर्युक्त मत को तो मानते हैं किंतु एक अन्य स्रोत के अनुसार 'आई' का संबंध वैदिक प्रत्यय 'ताति' से जोड़ते हैं।[39] डॉ. भोलानाथ तिवारी धातु से संज्ञा बनने वाले शब्दों में 'आई' का संबंध संस्कृत 'आपिका' से ही मानते हैं। जिले में आरी प्रत्यय का उच्चारण भी आई करके किया जाता है। ललितपुर जनपद के 'आई' प्रत्ययांत कुछ स्थान-नाम हैं- नटराई (तालबेहट), निवारी का उच्चरित रूप निवाई (महरौनी)।

13. आउ—इससे धातु से विशेषण (उपजाऊ, बिकाऊ), संज्ञा से विशेषण

(पंडिताऊ) एवं धातु से संज्ञा (प्याऊ-पीआऊ) आदि बनते हैं। इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत 'णिच'-आपउक (क्रियामूलक विशेषण प्रत्यय) से हुई है[40] किंतु डॉ. भोलानाथ तिवारी इसका संबंध 'उक' से नहीं 'ऊक' से मानते हैं। डॉ. चटर्जी संस्कृत में ऊक प्रत्यय को अल्पप्रयुक्त किंतु डॉ. भोलानाथ तिवारी इसे बहुप्रयुक्त मानते हैं (बंधूक-एक फूल, जंबूक-गीदड़, वलूक-नीला कमल, मरूक-मृग आदि)। ललितपुर जनपद में इस प्रत्यय से संयुक्त एक गैर आबाद स्थान-नाम प्राप्त है - प्याऊ (ललितपुर)।

14. आटा—इसमें ध्वन्यात्मक शब्दों के भाववाचक रूप बनते हैं (सन्नाटा), किंतु महरौनी तहसील के स्थान-नामों में स्पर्श, बिल्ला एवं कबरा शब्दों के साथ यह प्रत्यय जुड़कर क्रमश: परसाटा, बिलाटा एवं कवराटा प्राप्त हैं।

15. आड़/आड़ी—आड़ी प्रत्यय संस्कृत 'आरी' से संबंधित बताया गया है[41] जो 'कारी' का ही अन्य रूप है। र ड़ के कारण बना है[42] यथा कुसमाड़ (महरौनी), सुकाड़ी (महरौनी)।

16. आन/रान—इस प्रत्यय की उत्पत्ति आपनक या आपन-आवणअ-आणव-आण-आन क्रम में हुई है। विशेषण से संज्ञा रूप इससे बनते हैं। यह अकारांत शब्दों के साथ आता है।[43] यह प्रत्यय संस्कृत स्थान-थाण-आन रूप में भी विकसित बताया जाता है यथा अजान (महरौनी)। 'मिथक और यथार्थ' पृ. 121 के अनुसार प्राचीनतम मातृदेवियों की अनगढ़ मूर्तियों के आसपास रान अर्थात् जंगल हुआ करता है। ललितपुर जनपद में 'रान' प्रत्यय देवता वाची स्थान-नामों के साथ ही प्रयुक्त हुआ है—देवरान (तालबेहट)

17. आना—यह स्थानवाचक प्रत्यय है। इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत स्थानक़ (थानअ-आना) से हुई है।[44] यह प्रत्यय फारसी भाषा में भी है, जो आन का विकसित रूप है, किंतु ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में इस प्रत्यय का प्रयोग महरौनी तहसील में स्थानवाची अर्थ में ही हुआ है- बमराना, बनयाना तथा डगराना।

18. आर/आरा/आरी—यह संस्कृत 'अवार' के विभिन्न विकसित रूप हैं। अर्थ है नदी के इस ओर का किनारा[45] जबकि डॉ. उदय नारायण तिवारी इसकी उत्पत्ति संस्कृत कार-आर (आ) क्रम में मानते हैं।[46] आगार से भी इस प्रत्यय का संबंध जोड़ा गया है। ललितपुर जनपद के ऐसे कुछ स्थान-नाम हैं- बुड़वार (ललितपुर), हंसारी (तालबेहट), जगारा (महरौनी)।

19. आंव/आव/आवा—डॉ. उदय नारायण तिवारी तथा डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार आव प्रत्यय की उत्पत्ति णिच् (प्रेरणार्थक) आपअक़ से हुई है। आवा तथा वा भी इसी से संबद्ध हैं। वा को वत् से भी विकसित माना गया है। बीम्स इसे

संस्कृत अतु, आतु से संबंधित करते हैं ललितपुर में ऐसे स्थान नाम हैं- म्यांव (महरौनी तथा तालबेहट), गहराव (महरौनी)। आवा प्रत्ययांत स्थान-नाम इस जनपद में नहीं हैं, पर भोजपुरी तथा अवधी क्षेत्र के स्थान-नामों में यह प्रत्यय मिलता है।

20. आवटा—यह आवट का गुरु रूप है। आवट का संबंध डॉ. चटर्जी आदि ने प्रेरणार्थक आपवृत्ति-आवट्ट-आवट क्रम में माना है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के विचार से यह संस्कृत तव्यकत्वं-प्राकृत अव्वट्ट-आवट रूप में विकसित हुआ है। ललितपुर जनपद में ऐसा एक स्थान-नाम प्राप्त हुआ है- झरावटा (महरौनी)।

21. आवन—डॉ. उदयनारायण तिवारी इसकी उत्पत्ति संस्कृत आपन से बताते हैं। जिले में ऐसे स्थान-नाम हैं- डुलावन (तालबेहट), वस्त्रावन (तालबेहट)।

22. आहट—डॉ. भोलानाथ तिवारी इस प्रत्यय की उत्पत्ति संदिग्ध बताते हैं। हर्नले इसका संबंध संस्कृत वृत्ति, वृश्र, वार्ता (प्राकृत रूप वट्टी, वट्ट, वत्ता) संज्ञाओं से मानते हैं तो बीम्स इसे संस्कृत अतु, आतु से जोड़ते हैं। टर्नर आहा- आहट से संबद्ध होने का अनुमान लगाते हैं यथा नाराहट (महरौनी)।

23. आवास—डॉ. भोलानाथ तिवारी ने इसे आस प्रत्यय में वर्गीकृत किया है जो वांछक से विकसित हुआ है किंतु यह गृहवाची शब्द आवास के निकट जान पड़ता है। महरौनी तहसील का कोरवास- कुरू+आवास है।

24. इया/इयां—डॉ. उदय नारायण तिवारी 'ईय' प्रत्यय की उत्पत्ति संस्कृत इक, प्राकृत इअआ से मानते हैं। डॉ. तिवारी दूसरे अर्थ में इसका संबंध संस्कृत इत तथा इका से भी मानते हैं, किंतु डॉ. भोलानाथ तिवारी के विचार में यह मूल प्रत्यय न होकर संयुक्त प्रत्यय ईयक (ईय+क- ईअअ-इआ-इय) का विकास है। इसका बहुवचन रूप तथा ललितपुर की स्थानिक बोली की अनुनासिकता के कारण यह इयां हो जाता है। बोली-माधुर्य के लिए ललितपुर जनपद की बोली में कहीं-कहीं अनुनासिकता का आगम हो गया है।

इया- टौरिया (महरौनी तथा ललितपुर), खिरिया (सभी तहसीलों में)

इयां- गगनियां (महरौनी)

25. इल—यह संस्कृत प्रत्यय है जो अपने मूल रूप में ललितपुर तहसील के कुछ स्थान-नामों में प्रयुक्त हुई है- भोंरसिल तथा चोंरसिल।

26. ई—इस प्रत्यय का व्यवहार अनेक अर्थों में होता है। डॉ. उदयनारायण तिवारी के अनुसार इससे क्रियाओं से भाववाचक तथा करणवाचक संज्ञाएं, संज्ञापदों से विशेषण, लघुतावाचक, व्यापारवाचक तथा भाववाचक संज्ञाएं एवं संख्यावाचक विशेषणों से समुदायवाचक तथा भाववाचक संज्ञाएं बनती हैं। डॉ. सरयूप्रसाद

अग्रवाल ने 'अवध के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' में इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत इन, ईय और इक से मानी है। बाद में फारसी के विशेषणीय तथा संबंधवाची 'ई' प्रत्यय ने भी इसे संपुष्ट किया। ललितपुर जनपद में इस प्रत्यय का प्रयोग स्त्रीलिंग (चौकी-महरौनी), विशेषण (बूढ़ी-महरौनी), लघुतावाची (गैर आबाद ग्राम खैरी-महरौनी) अर्थों में हुआ है।

27. ईसा—संस्कृत 'इका' से इसका संबंध जान पड़ता है, यथा कारीसा (ललितपुर)।

28. उवा—डॉ. उदय नारायण तिवारी के मत से संज्ञा एवं विशेषण-पद सिद्ध करने वाला यह प्रत्यय संस्कृत उक से प्राकृत 'उअ' का दीर्घरूप है, यथा संसुवा (तालबेहट)

29. ऊ—इसकी उत्पत्ति डॉ. उदय नारायण तिवारी ने संस्कृत उक-उअ क्रम में मानी है यथा चौमहू (महरौनी)।

30. एट/एटा/एठा/एठी/एती—डॉ. उषा चौधरी ने 'मुरादाबाद जिले के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' में इन प्रत्ययों का विकास संस्कृत आवेष्ठन से माना है, जिसका अर्थ है तनाव अथवा आवृत्त करना, किंतु डॉ. कामिनी ने दतिया जिले के ग्राम-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन करते हुए डॉ. चौधरी की इस मान्यता को दतिया जिले के ग्राम-नामों के संदर्भ में उपयुक्त नहीं माना है। डॉ. कामिनी ने इन ध्वनियों में बाज़ारवाची 'हाट' की उपस्थिति बताई है।[47] उनकी मान्यता का आधार डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया की यह स्थापना है कि ट/टा प्रत्ययांत ध्वनियां संस्कृत 'कर्वट' का विकसित रूप हो सकती हैं, जिसका अर्थ है गांव, गांव में लगने वाला बाज़ार (पैठ), मंडी। कर्वट जनपद का मुख्य नगर होता था, जिसमें लगभग 200 गांव होते थे।[48] वहीं डॉ. उदय नारायण तिवारी ने इन ध्वनियों को वर्त-वृत-वट्ट से विकसित माना है। ललितपुर जिले के स्थान-नामों में यह ध्वनियां इस प्रकार प्रयुक्त हुई हैं-

ट- पिपरट (महरौनी) कुर्रट (महरौनी) टा- कोकटा (ललितपुर) बिलाटा (महरौनी)

ठी- बरेठी (ललितपुर) ती- सहसूती (तालबेहट) तुलनीय सासूती (दतिया)

ठा- पठा बिजयपुरा (महरौनी)

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार संस्कृत 'प्रस्था' से प्राकृत 'पट्ठा' होते हुए 'पठा' ध्वनि का विकास हुआ है।[49] पठा अभिधान ललितपुर जनपद में आधा दर्जन से अधिक प्राप्त हुए हैं।

31. एंड़/एंड़ी—डॉ. भोलानाथ तिवारी ने एंड़ी का संबंध भाववाचक संज्ञा के

रूप में भांडिका (भांडिआ-हंडिया-अंडिअ-एंड़ी) से माना है। वहीं डॉ. उदयनारायण तिवारी को ड़ की उत्पत्ति संस्कृत वृत् से प्रतीत होती है। ऋग्वेद में उल्लिखित वृता शब्द कार्य, परिश्रम तथा गति का बोधक है। प्राकृत में इससे वट्-वड्ड-वड शब्द बनते हैं। इसमें संस्कृत इक-ई के विस्तार से ड़ी (ड़ई) प्रत्यय बनेगा। डॉ. धीरेंद्र वर्मा इसकी व्युत्पत्ति एर के सदृश मानते हैं। वहीं डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया ने इन ध्वनियों को अरण्य से विकसित माना है। उनके अनुसार चिंतन के लिए अरण्य उपयुक्त एवं प्रयुक्त स्थान रहे हैं। अत: इन अरण्यों का अपना वातावरण था जो कालांतर में ग्रामों और पुरवों में विकसित हुआ होगा[50] किंतु अरण्य ध्वनि ललितपुर जनपद के इन स्थान नामों में सुरक्षित मिलती है—अंडेला (ललितपुर) अरण्यभूमि, अड़वाहा (ललितपुर) अरण्यवाह किन्तु बंडवा (महरौनी) पांडववन के अधिक समीप प्रतीत होती है। ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में 'ड़' ध्वनि इस प्रकार प्रयुक्त हुई है-

कुम्हैड़ी (महरौनी) कुंभज ऋषि + अरण्य
सारसेंड़ (तालबेहट) सारस + अरण्य
सुकाड़ी (महरौनी) शुक + अरण्य
बुधेड़ी (तालबेहट) बुध + अरण्य। यहां 'बुध' शब्द बुद्ध से संबंधित है, जिन्हें 'बोध' प्राप्त हुआ था। बुद्धि की नातेदारी भी बोध से है। बुद्ध की बोधिमुद्रा जब कालांतर में जड़ व्यक्तियों के लिए संबोधित होने लगी कि क्या बुद्ध की तरह बैठे हो तब यह उक्ति मूर्ख व्यक्ति के लिए रूढ़ हो गई।[51]

32. एर/एरा—हार्नले एर् का संबंध संस्कृत दृश (सदृश) से तो टर्नर इसे अकर (ठट्ठकर-प्राकृत ठटार-ठठेरा) से मानते हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी के मत से विशेषण के प्रत्यय के रूप में इसका संबंध संस्कृत कृत (प्राकृत केर-एर) से है, व्यवसाय बोधक प्रत्यय के रूप में इसका संबंध संस्कृत के एक कारक (कर्मकारक-केर) से तथा अन्य में यह तरक़ से प्रभूततर-बहुतेर रूप में है। वहीं डॉ. उदयनारायण तिवारी इसका संबंध संज्ञा एवं संबंधसूचक के रूप में संस्कृत कार्यक-केरअ-केर-एर से मानते हैं। डॉ. भाटिया इसे पृथ्वीवाची शब्द इला-एला-एरा रूप में विकसित मानते हैं, किंतु एला ध्वनि ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में पृथक रूप में सुरक्षित है जैसे बंदरेला (तालबेहट)। इस जिले के स्थान-नामों में एर/एरा प्रत्यय इस प्रकार प्रयुक्त हुए हैं—अंधेर (ललितपुर) खड़ेरा (ललितपुर)।

33. ऐंदा—यह प्रत्यय 'आयात' के समीप प्रतीत होता है यथा करेंगा (तालबेहट)।

34. ऐन—यह संस्कृत 'अयन' से विकसित ज्ञात होता है यथा लहरैन (तालबेहट)।

35. ओं/ओ—किसी 'आ'कारांत शब्द को 'ओ'कारांत बोलने के पीछे बुंदेली बोली का माधुर्य बढ़ाने की भावना है यथा करमरो (ललितपुर), कुचदों (ललितपुर)।

36. ओई— डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार यह संस्कृत पति+क से विकसित हुआ है (भगिनी+पतिक़-बहनोई) यथा रसोई (ललितपुर)।

37. ओंदा/ओद/ओदा/ओदी—डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया के मत से ओदा संस्कृत 'पद्र' का विकसित रूप है, जिसका अर्थ है गांव। इसका प्राकृत रूप 'पद्द' है। ललितपुर जिले में ऐसे प्रत्ययांत स्थान-नाम हैं-

ओंदा- कचनोंदा कलां (ललितपुर) ओदा- किरोंदा (ललितपुर)
ओदी- बरोदी नक़ीब (ललितपुर) ओद- बारोद (ललितपुर)

कुछ विद्वान इन प्रत्ययों को इनकी ध्वनिगत साम्यता के कारण फारसी 'आबाद' का विकसित रूप मानते हैं, किंतु इस जनपद के स्थान-नामों की दृष्टि से यह संगत प्रतीत नहीं होता है।

38. ओनी/औनी—यह गृहवाची 'अयन' से विकसित प्रत्यय प्रतीत होते हैं यथा कैलोनी (महरौनी) महरौनी (महरौनी)। औन में इयां प्रत्यय जोड़कर औनियां हो गया यथा पिपरौनियां (ललितपुर)

39. ओरा/औरा/औरी/औड़ा/औड़ी—इन प्रत्ययों का तात्पर्य भरा हुआ, डाला हुआ है। यह संयुक्त प्रत्यय हैं। मूल प्रत्यय 'और' का संबंध संस्कृत पूर से तथा औरा, औरी का क्रमश: पूरक, पूरिका से है यथा कंदुक-गेंद+पूरक़ -गेंदउरा-गेंदौरा (तालबेहट)। ललितपुर जनपद में इन प्रत्ययों का प्रयोग आवलि-अवली-औली-औरी क्रम में प्रतीत होता है, जैसे-

औरा- पंचौरा (ललितपुर) औरी- बम्हौरी (सभी तहसीलों में)
ओरा- सड़कोरा (महरौनी) औड़ा- पचौड़ा (महरौनी)
औड़ी- अगौड़ी (महरौनी)

40. औता—संस्कृत 'आवर्त' का परिवर्तित रूप 'औती' है, जिसका अर्थ है बस्ती, घनी आबादी। वस्तुत: आवर्त वह बस्ती थी जहां बहुत से लोग समीप रहते हैं।[52] औती का पुल्लिंग रूप औता है यथा हनौता (तालबेहट)। डॉ. भोलानाथ तिवारी के मत से औता संज्ञा से अपत्यवाचक संज्ञा (भगिनीपुत्र- बहिनौत) बनाने में भी प्रयुक्त होता है। इसका विकास संस्कृत पुत्र से हुआ। इस तरह हनुपुत्र - हनौता हो गया। इसी में लघुतावाची इया प्रत्यय जोड़कर हनौतिया (ललितपुर) बन गया।

41. औल/औला/औली—यह प्रत्यय 'अवलि' के विकसित रूप हैं, जिसका अर्थ है पंक्ति या समूह यथा-

औल- धनगौल (तालबेहट) औली- बानौली (ललितपुर)
औला- कुमरौला (ललितपुर)

42. थरा—संस्कृत 'स्थल' से विकसित ज्ञात इस प्रत्यय का स्थान-नाम है- कलौथरा (तालबेहट)।

43. खरा/खड़ी—डॉ. भाटिया के अनुसार यह संस्कृत खेट से विकसित हैं, जिसका अर्थ है नदी और पर्वतों से घिरा नगर। इसका प्राकृत रूप 'खेड' तथा दूसरा रूप खेड्य (खेटक) है।[53] इस जनपद के स्थान-नामों में इसके अन्य रूप हैं खेड़ा, खेरा, खिरिया, खरा, करा, खड़ा, खड़ी आदि यथा-

खरा- बड़ोखरा (महरौनी) खड़ी- सरखड़ी (तालबेहट)

44. दा—यह प्रत्यय 'देव' के अर्थ में विकसित है, जिसका अर्थ 'देना' भी है यथा मामा + देव - मामदा (ललितपुर) कृष्ण + देव - किसरदा (महरौनी)

दा एक फारसी प्रत्यय भी है, जो ज्ञाता होने के अर्थ में विदित है किंतु जिले के स्थान नामों में इस अर्थ में इस प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है। 'दा' प्रत्यय सौल्दा (महरौनी) स्थान-नाम में स्थलवाची प्रतीत होता है।

45. न/ना—डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार संस्कृत अनीय (ल्युट्) से प्राकृत अणीय-णअ-ण-न रूप में इसका विकास हुआ है। इस व्युत्पत्ति से यह निल्लिंगी क्रियार्थक संज्ञा है। स्त्रीलिंग प्रत्यय के रूप में भी 'न' प्रत्यय जोड़ा जाता है (नाइन)। ललितपुर जनपद की बोली में 'न' बहुवचन बनाने के लिए भी प्रयुक्त होता है। न/ना प्रत्ययांत कुछ स्थान-नाम हैं- छाय + न - छायन (महरौनी)

बनिया + ना - बनयाना (महरौनी)

46. नौरा—संस्कृत 'नगरी' से यह प्रत्यय विकसित हुआ है जैसे अजनौरा (महरौनी)। इसके तुलनीय रूप हैं- अजनारी (जालौन) अजनर (महोबा)।

47. वां/वा—वा का संबंध डॉ. उदयनारायण तिवारी के अनुसार संस्कृत वत्-व(न)त से है। वत् का अर्थ सदृश या समान है। 'हिंदी भाषा का विकास' के लेखक प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी डॉ. धीरेंद्र वर्मा ने इसकी व्युत्पत्ति संस्कृत वान् से मानी है, जिसका संबंध 'मतुप' से है और जिसके मान्, वान् रूप होते हैं।[54] डॉ. यामिनी श्रीवास्तव के शोध प्रबंध 'स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलनः जालौन जनपद' आधार पर डॉ. कामिनी ने इसे संस्कृत 'ग्राम' का परिवर्तित रूप माना है, किंतु वां का संबंध 'वन' के निकट प्रतीत होता है, ललितपुर जनपद में इस प्रत्यय के एकपदीय स्थान-नाम मिलते हैं- बसवां (ललितपुर), पड़वां (महरौनी), बण्डवा (महरौनी)।

48. वाना—संस्कृत 'वानिक' से विकसित रूप प्रतीत होता है, जिसका अर्थ है जंगल में निवास करने वाला। जिले में वाना प्रत्ययांत यह स्थान-नाम दृष्टव्य है- नकवाना (ललितपुर)। वान एक फारसी प्रत्यय भी है, जिससे कर्तृवाचक संज्ञाएं (गाड़ीवान) बनती हैं।

49. वाल/वाला/वाली—डॉ. भोलानाथ तिवारी वाल का संबंध संस्कृत 'पाल' से, वाला का पालक़ से तथा वाली का पालइका से मानते हैं। पाल का अर्थ रक्षक (कोट्टपाल - कोतवाल) है। 'वाल' का एक स्थानिक रूप 'मल' ललितपुर जनपद के इस स्थान-नाम में दृष्टव्य है- साढ़ूमल (महरौनी)।

50. वाहा—यह 'वाह' का दीर्घरूप है। वाह ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में हल खींचने के लिए बैल के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।[55] व्याकरण गठन के बाद यह 'वह' धातु में 'घं' प्रत्यय जोड़कर बना, जिसका विशेषणपरक अर्थ है वहन करने वाला, पुल्लिंग में यह वाहन या सवारी है।[56] 'वाह' फारसी भाषा का एक प्रशंसासूचक अव्यय भी है। यह कभी-कभी आश्चर्य और व्यंग्य में निंदा का भाव भी प्रकट करता है।[57]

पंजाब का नाम पाणिनि के समय वाहीक था। सार्थ या समूह में व्यापार करने वाले लोगों को पाणिनिकाल में सार्थवाह कहा जाता था। यह कई प्रकार के द्रव्यक अर्थात् माल लादकर सारे देश में व्यापार करते थे।[58] फारसी अव्यय को छोड़कर उपर्युक्त शेष अर्थ वहन करने के आशय को व्यक्त करते हैं किंतु ललितपुर जनपद के कुछ बुद्धिजीवी छावनी के अर्थ में 'वाड़ा' शब्द से इसका विकास मानते हैं यथा सिंधिया का वाड़ा - सिंदवाहा (महरौनी) किंतु यह 'पथ' या व्यापारिक 'कारवां' वहनीयता के अर्थ में ही प्रयुक्त हुआ है। जिले में इस प्रत्यय के कुछ अन्य स्थान-नाम हैं- रुकवाहा (महरौनी), अड़वाहा (ललितपुर), गिदवाहा (महरौनी), मिदरवाहा (महरौनी)।

51. सौरा—डॉ. भाटिया के अनुसार यह संस्कृत 'शाला' से विकसित है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के मत से सर प्रत्यय से इसका विकास हुआ है तो डॉ. चटर्जी के अनुसार सृ-रेंगना से इसकी उत्पत्ति हुई है। हार्नले इसका संबंध सृत: (सृ) से मानते हैं किंतु ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में यह शाला-सराय के अर्थ से ही विकसित प्रतीत होता है यथा गुरसौरा (ललितपुर) - गुरु + सराय। तुलनीय- गुरसरांय (झांसी)।

52. हरी—इससे संबंधित प्रत्यय हर, हरा तथा हारा हैं, जो डॉ. उदयनारायण तिवारी के अनुसार क्रमश: संस्कृत 'र', 'हार' तथा 'हारक' से विकसित हुए हैं, किंतु इनका संबंध इस प्रकार उचित प्रतीत नहीं होता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के

अनुसार यह गृहवाची प्रत्यय हैं। संस्कृत गृह-घर-हर रूप में इनका विकास हुआ है। हारा का संबंध धारक या भारक (हारअ-हारा) से उचित प्रतीत होता है। जबकि डॉ. भाटिया 'ह-हा' प्रत्ययों को संस्कृत 'स्थ' से विकसित मानते हैं। 'हरी' प्रत्ययांत एक स्थान-नाम ललितपुर तहसील में प्राप्त हुआ है–तिलहरी।

स्थान-नामों में विभेदक पद-

स्थान-नामों में पृथकता बोध एवं स्थानीय विशिष्टता दर्शाने के लिए विभेदक पदों का प्रयोग किया गया। ललितपुर जिले में यह पूर्वपद, परपद तथा स्वतंत्र विभेदक पदों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। अर्थ की दृष्टि से प्रत्ययों की अपेक्षा यह अधिक स्पष्ट हैं। डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया के अनुसार स्थान-नामों के अधिकांश रचनात्मक तत्व पूर्वपद एवं परपद भौगोलिक तत्वों से ही संबद्ध हैं। इनमें स्थानीय प्राकृतिक विशिष्टताओं का होना स्वाभाविक है।[59] ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में प्रयुक्त प्रमुख विभेदक पदों का परिचय इस प्रकार है-

1. पुर/पुरा/पूरा–जिले के इन स्थान-नामों में 'पूरा' तथा 'पुरा' पूर्वपदों के रूप में प्रयुक्त हुए हैं–

पूरा- पूरा कलां तथा पूरा खुर्द (तालबेहट)

पुरा- पुरा पाचौनी (तालबेहट) पुरा धंधकुवां (महरौनी)

परपदों के रूप में 'पुर' तथा 'पुरा' जिले के सर्वाधिक स्थान-नामों के साथ प्रयुक्त हुए हैं जैसे मदनपुर (महरौनी) श्यामपुरा (महरौनी)।

2. गुवां–परपद के रूप में यह जिले के 17 स्थान-नामों में संयुक्त हुआ है, यथा- उदगुवां (तालबेहट), कैलगुवां (महरौनी)।

3. खिरिया–खेट से विकसित यह पद 13 बार पूर्वपद के रूप में 3 बार परपदों के रूप में प्रयुक्त हुआ है यथा

पूर्वपद- खिरिया मिश्र (महरौनी तथा ललितपुर)

परपद- अर्जुन खिरिया (महरौनी)

4. खेत/खेड़ा/खेरा/खेरी–यह पद भी खेट से विकसित हुए हैं। हलायुध कोश के अनुसार कृषि द्वारा शस्यादि भक्ष्योपयोगी वस्तुओं के उपार्जन अर्थात् जीविका निर्वाह करने वाले ग्राम को खेट कहते हैं। मोनियर विलियम्स ने खेट का अर्थ 'ग्राम कृषकों का निवास, छोटा नगर अथवा पुर का अर्ध भाग' किया है। कल्पसूत्र टीका के अनुसार मिट्टी की दीवारों से आवेष्टित नगर को खेट कहा जाता है। कौटिल्य खेट को नदी अथवा पर्वत से घिरा हुआ बताते हैं। यह नगर से छोटा तथा ग्राम से बड़ा होता है। खेट को शाखानगर भी कहा जाता है।[60]

खेत- कारोखेत (तालबेहट) खेड़ा- नीमखेड़ा (महरौनी)
खेरा- नीमखेरा (ललितपुर) खेरी- धोवनखेरी (ललितपुर)

5. वांस/वांसा/वांसी/वास/वंशा–संस्कृत 'आवास' के परिवर्तित इन रूपों का अर्थ है किसी स्थान पर टिक कर रहना। घर भी इसका अर्थ होता है किंतु संस्कृत वंश से इनका निकट संबंध बैठता है। 'शब्दों का सफर' के सुप्रसिद्ध ब्लॉगकार अजित वडनेरकर के अनुसार भी बांस संस्कृत के 'वंश' से बना है। आमतौर पर कुटुंब, कुल और खानदान के अर्थ में वंश शब्द इस्तेमाल में लाया जाता है। यह तमाम अर्थ जुड़ते हैं घनत्व, संग्रह या समुच्चय से।[61] यों भी बांस सैकड़ों गुणा अधिक तक इकट्ठा होकर बहुत तेजी से बढ़ते हैं-

वांस- नगवांस (तालबेहट) वांसा- सतवांसा (महरौनी)
स्वतंत्र पद 'बांसी'- बांसी (तालबेहट) वास- कोरवास (महरौनी)
वंशा- पिपरिया वंशा (ललितपुर)

6. वार/वारा/वारी–इनकी उत्पत्ति संस्कृत के क्रमशः वाट, वाटक तथा वाटिका से हुयी है, जिसका तात्पर्य है घेरा, अहाता, घिरा हुआ भूमिखंड। संस्कृत, अर्धमागधी प्राकृत एवं पालि साहित्य में 'वाटिका' एक अस्थायी आवेष्टित स्थान यथा उद्यान, वृक्षारोपण अथवा सीमावर्ती वृक्षों युक्त ग्राम का आवेष्टन' अर्थों में प्रयुक्त मिलता है।

वार- दिगवार (महरौनी) वारा- दैलवारा (ललितपुर तथा महरौनी)
वारी- मड़वारी (ललितपुर)

7. गांव–'गांव' ग्राम का तद्भव रूप है। प्राचीनकाल में ग्राम का तात्पर्य ऐसी बस्ती से था, जहां विप्रादिवर्ण वास करते हों, जो राजमहल तथा परिखादि से रहित हो, हट्टादि से शून्य हो, जहां की जनसंख्या अधिक हो, जहां शूद्रजन तथा किसान वास करते हों तथा जहां की भूमि कृषियोग्य हो। ग्राम का मूल व्युत्पत्यर्थ समूह है। घरों के समूह को ग्राम कहा जाता है। प्रारंभ में ग्राम अकृत्रिम रूप से अस्तित्व में आए होंगे। ललितपुर में 5 स्थान-नाम गांव विभेदक हैं, जिनमें से कुछ हैं-

कुआगांव (महरौनी) बुरौगांव (महरौनी)

8. धाना/ठाना–यह स्थानवाची पद हैं यथा

धाना- जामुनधाना कलां एवं खुर्द (ललितपुर)
ठाना- मऊठाना- ललितपुर का एक मोहल्ला

9. सागर–जलाशयबोधक इस परपद के जिले की महरौनी तहसील में दो स्थान-नाम प्राप्त हैं- धौरीसागर तथा गंगासागर। इनमें धौरीसागर का जलाशय विशाल है।

10. बेहट—बेहट का अर्थ गोंड़ों की भाषा में गांव या बस्ती होता है। यह बीहड़ शब्द के निकट प्रतीत होता है जिसका अर्थ जंगल आदि विकट स्थान है। ललितपुर जनपद में गोंड़ों का आधिपत्य रहा, अत: यहां ऐसे स्थान-नाम प्राप्त होना स्वाभाविक हैं यथा-

तालबेहट (तालबेहट) बालाबेहट (ललितपुर)

स्वतंत्र पद- बेहटा (तालबेहट)

11. तला/ताल—जलाशयबोधक यह पद स्थान-नामों में पूर्व तथा पश्चात दोनों रूपों में प्रयुक्त हुए हैं यथा-

पूर्वपद- तालगांव (ललितपुर) परपद- कुआंतला (ललितपुर)

स्वतंत्र पद- तलऊ (महरौनी)

12. मजरा—अरबी भाषा के इस शब्द का अर्थ है खेती, खेत, छोटा गांव। लिखित रूप में इस पद का प्रयोग इस जिले में नहीं है, किंतु बोली के रूप में इसका व्यवहार चार-पांच परिवारों के छोटे-छोटे 'खेरों' के लिए किया जाता है। महरौनी तहसील के मजरा खिरिया गांव को 'खिरिया' पद से पृथक करने के लिए पूर्वपद मजरा जोड़ दिया गया है।

13. पहाड़/पहाड़ी—पूर्वपद तथा परपद दोनों रूपों में इसका यहां प्रयोग मिलता है-

पूर्वपद- पहाड़ी कलां तथा खुर्द (महरौनी)

परपद- कारी पहाड़ी (तालबेहट), कालापहाड़ (ललितपुर)

14. कारी/कारो/काला—यह पद ललितपुर जनपद के स्थान-नामों के पूर्व में प्रयुक्त हुए हैं-

कारोखेत (महरौनी) कारी पहाड़ी (तालबेहट) काला पहाड़ (ललितपुर)

15. माफ/माफी—ऐसे गांव अंग्रेजों ने करमुक्त कर दिए थे। जनपद में ऐसे कुछ स्थान-नाम हैं-

गर्रोली माफ (महरौनी) जमौरा माफी (ललितपुर) मउ माफी ललितपुर)

16. बम्हौरी—जिले में 13 बार पूर्वपदों के रूप में यह पद प्रयुक्त हुआ है, किंतु उच्चारण में यह परपदों के रूप में भी प्रयुक्त किए जाते हैं-

बम्हौरी शहना (तालबेहट) बम्हौरी बहादुरसिंह (महरौनी)

17. नगर—ललितपुर शहर के मोहल्ला-नामों में इस पद का व्यवहार मिलता है यथा- रामनगर, नेहरू नगर। नगर पालिका तथा नगर पंचायत के रूप में भी इसका प्रयोग होता है, किंतु ग्रामीण क्षेत्र में इस विभेदक का आश्चर्यजनक प्रयोग इस प्रकार मिलता है-

भागनगर (महरौनी) समोगर (महरौनी)

नगर शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में विभिन्न मत हैं। आगम ग्रंथों में नगर का प्रारंभिक रूप 'न-कर' था अर्थात् करविहीन, परंतु भाष्यकार पतंजलि के अनुसार यह नग (वृक्ष)र (वाला) के रूप में गठित है। नगर ऐसे स्थानों पर बसाए जाते थे, जहां जल की पूरी सुविधा हो, हरी-भरी उपजाऊ भूमि हो और जहां वनस्पति बाहुल्य हो। अभिलेखीय स्थान-नामों में नगर के विभिन्न परिवर्त्य (यथा- नाड, नाडु, नांडु, णाडु, नार, नाल, नालक, ईर, यर आदि) मिलते हैं, जिनमें से अधिकांश द्रविड़ उत्पत्ति का भ्रम उत्पन्न करते हैं।[63] अथर्ववेद तथा सूत्रों में 'नग' पर्वत के अर्थ में प्रयुक्त है। जिले में नगर के स्थानीय परिवर्त्य रूपों में अजनौरा (महरौनी) तथा तालबेहट तहसील के सुनौरी एवं सुनौरा गांव उल्लेखनीय हैं।

18. टोरन—टोरन स्थानीय भाषा में एक छोटी ऊंची पहाड़ी को कहा जाता है। इसके अन्य पर्याय रूप हैं- टौरी, टौरिया। टोरन पद परपद के रूप में यहां सभी तहसीलों के एक-एक गांव के साथ प्रयुक्त हुआ है—

कारीटोरन (महरौनी तथा तालबेहट) बिनेकाटोरन (ललितपुर)

19. डांग—जंगलवाची यह पद जिले की बोली का है, जो जिले की तालबेहट तहसील में 6 स्थान नामों के साथ संयुक्त है। यह छहों जंगल में एक दूसरे से सटे हुए गांव हैं- बरौदा डांग, मथरा डांग, खैरा डांग, खैरी डांग, सेमरा डांग तथा खिरिया डांग। इनका उच्चारण पूर्वपद के रूप में भी किया जाता है।

20. कलां—फारसी से ग्रहीत यह परपद बड़ा या ज्येष्ठ के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता रहा, किंतु अब ऐसा अनिवार्यत: नहीं रहा। पुस्तक के परिशिष्टांतर्गत दी गई स्थान-नामों की सूची में गांवों की जनसंख्या के अंतर को देखा जा सकता है, यथा-

मैलवारा कलां (ललितपुर)- 777 व्यक्ति

मैलवारा खुर्द (ललितपुर)- 1178 व्यक्ति

मसौरा कलां (ललितपुर)- 2539 व्यक्ति

मसौरा खुर्द (ललितपुर)- 2608 व्यक्ति

जिले में कलां विभेदक स्थान नामों की संख्या 28 है।

21. खुर्द—अरबी भाषा से ग्रहीत इस विभेदक युक्त स्थान-नामों की संख्या जिले में 32 है। इसका अर्थ कनिष्ठ या छोटा होता है।

22. बुजुर्ग—फारसी भाषा के इस शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ, प्रतिष्ठित, बूढ़ा, पूर्वज, महात्मा इत्यादि। जिले के स्थान-नामों में इस परपद का व्यवहार मात्र दो बार महरौनी में हुआ है- सेमरा बुजुर्ग तथा गुढ़ा बुजुर्ग।

23. घाट- जिले में इस विभेदक से संयुक्त तीन स्थान हैं, जो किसी न किसी नदी के किनारे बसे हुए हैं-

बम्हौरी घाट (महरौनी) कचनोंदा घाट (ललितपुर) चौंतराघाट (ललितपुर)

कचनोंदा घाट तथा चौंतराघाट बेतवा नदी के किनारे बसे ग्राम हैं तथा बम्हौरी घाट जामनी नदी के किनारे बसा है।

24. गिरंट—यह अंग्रेजी 'ग्रांट' का स्थानीय भाषा रूप है। अंग्रेजों ने कुछ जागीर-भूमि अनुदान के रूप में प्रदान की थी, जिससे यह संबंधित स्थान-नामों के साथ परपद के रूप में प्रयुक्त होने लगा। गिरंट विभेदक स्थानों पर सरकार द्वारा रक्षित वन भी मौजूद रहा है। जिले की महरौनी तहसील में ऐसे पांच स्थान-नाम मिलते हैं-

आबाद ग्राम- अगौड़ी गिरंट सुनवाहा गिरंट

गैर आबाद ग्राम- टीकरा गिरंट बीर गिरंट सिलावन गिरंट

25. अरबी-फारसी के अन्य विभेदक—जिले में अरबी भाषा के मुजुप्ता, नक़ीब तथा खालसा एवं फारसी भाषा के जागीर, वीरान, शाह तथा शहना (शहनाई) विभेदक या परपद के रूप में एक-एक स्थान-नाम इस जनपद में प्राप्त हुआ है। नगर क्षेत्रों में कटरा (छोटा चौकोर बाज़ार) पूर्वपद के रूप में एवं फारसी के बाज़ार तथा बाग़ भी परपद के रूप में प्रयुक्त हो रहे विभेदक हैं।

नक़ीब का अर्थ है वह व्यक्ति जो राजाओं आदि की सवारी के आगे-आगे उनके वंश का यश गाता चलता है अर्थात् बंदी, चारण यथा बरोदी नक़ीब (ललितपुर)।

खालसा वह सरकारी ज़मीन या इलाक़ा होता है, जिसका प्रबंध सरकार ख़ुद करे और जो किसी की जागीर, ज़मींदारी न हो। यह सिखों का एक प्रमुख संप्रदाय भी होता है किंतु जिले का खालसा विभेदक स्थान नाम सैपुरा खालसा (ललितपुर) सिखों से संबंधित नहीं है। ललितपुर जनपद में सिखों का निवास मात्र जिला मुख्यालय में है और यह देश की स्वाधीनता के समय से ही है।

जागीर वह ज़मीन होती है जो राज्य की ओर से किसी को किसी विशेष सेवा के पुरस्कार रूप में दी गई हो। वह ज़मीन जो गांव के नाई, कहार, कुम्हार आदि को उनकी सेवा के बदले में बिना लगान जोतने के लिए दी गयी हो[64] यथा- पिपरिया जागीर (ललितपुर)।

मुजुप्ता अरबी शब्द मुज़ाफ़ात का स्थानीय बोली रूप है। यह मुज़ाफ़ का बहुवचन है, जिसका अर्थ है निस्बतें; नगर आदि का-आसपास का- इलाक़ा[65] यथा सैपुरा मुजुप्ता (ललितपुर)। 'बुंदेली-भाषी क्षेत्र के स्थान-अभिधानों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' के अनुसार जब माफी जब्त करके उसका लगान सरकारी

खजाने में जमा होने लगता है, तब ऐसी राजस्व वसूली मुजप्ता और जब्ती के अंतर्गत आती है।

वीरान निर्जन स्थान को कहते हैं। जिले का उमरिया वीरान (ललितपुर) गांव भी गैर आबाद ही है।

फारसी का शाह और अरबी का सैयिद जिले के सैपुरा तथा सैदपुर नामक स्थान-नामों में घुले-मिले हैं कि नहीं, इसका पता इन स्थानों का इतिहास प्राप्त हुए बिना नहीं चल सकता है। वैसे इन गांवों की बसावट और जनसंख्या को देखकर लगता है कि विदेशी शब्दों के प्रचलन से पूर्व ही ये गांव बस चुके थे। हां, शाहपुर (तालबेहट) में स्पष्टत: शाह ध्वनि सुरक्षित है किंतु गोंड़ एवं बुंदेला राजाओं के नामों के साथ 'शाह' लगे होने से इनका संबंध भी गोंड़ तथा बुंदेला काल से ही बनता है।

26. स्थान-नाम ही विभेदक–जिले में डेढ़ दर्जन से अधिक ऐसे नाम हैं जो वर्तमान स्थान-नामों से संयुक्त हैं। इससे कई बार भ्रम हो जाता है कि ऐसे स्थान अपने मूल स्थान के समीप स्थित होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि एक स्थान के निवासियों ने जब दूसरे स्थान को बसाया होगा तो उन्होंने अपनी मूल पहचान रखते हुए पूर्व स्थान-नाम को अपने स्थान-नाम में विभेदक के रूप में संयुक्त कर दिया। यह विभेदक पूर्व तथा पश्चात दोनों जगह प्रयुक्त हुए हैं। चिन्हित करने के उद्देश्य से स्थान-नामों के आगे कोष्ठक में ब्लॉक तथा तहसील दोनों के नाम दिए गए हैं।

सेमरा (बिरधा - ललितपुर)	पटसेमरा (बिरधा - ललितपुर)
सेमरा भागनगर (बार - महरौनी)	सेमरा बुजुर्ग (बार - महरौनी)
पाचौनी (जखौरा - ललितपुर)	पुरा पाचौनी (बार - तालबेहट)
पुरा (बिरधा - ललितपुर)	पुराधंधकुवा (बार - महरौनी)
नाराहट (मड़ावरा - महरौनी)	बुदनी नाराहट (मड़ावरा - महरौनी)
	भोंती नाराहट (मड़ावरा - महरौनी)
गुढ़ा मड़ावरा (मड़ावरा - महरौनी)	भोंती मड़ावरा (मड़ावरा - महरौनी)
बुदनी मड़ावरा (मड़ावरा - महरौनी)	पटना मड़ावरा (मड़ावरा - महरौनी)
सिंदवाहा (महरौनी - महरौनी)	पटना सिंदवाहा (मड़ावरा - महरौनी)
	बम्हौरी सिंदवाहा (मड़ावरा - महरौनी)
डोंगरा खुर्द (महरौनी - महरौनी)	डोंगरा कलां (मड़ावरा - महरौनी)
डोंगरा कलां (बिरधा - ललितपुर)	उमरिया डोंगरा (बिरधा - ललितपुर)
	पिपरिया डोंगरा (बिरधा - ललितपुर)
पाली नगर पंचायत (बिरधा - ललितपुर)	पाली (महरौनी - महरौनी)

पिपरिया पाली (बिरधा - ललितपुर) खिरिया पाली (बिरधा - ललितपुर)
बिरधा (बिरधा - ललितपुर) बम्हौरी बिरधा (बिरधा - ललितपुर)
पचौड़ा (महरौनी - महरौनी) पठा पचौड़ा (बार - तालबेहट)
बिजयपुरा (तालबेहट - तालबेहट) पठा बिजयपुरा (महरौनी - महरौनी)

इनमें से बम्हौरी बिरधा तथा खिरिया पाली अपने परपद स्थान-नाम क्रमश: बिरधा तथा पाली से सटे हुए ग्राम हैं। उमरिया डोंगरा, डोंगरा कलां से सटा हुआ है। शेष स्थान अपने परपद स्थानों से कहीं दूर बसे ग्राम हैं। विभिन्न कारणों से अपने मूल स्थान से पलायन करके लोगों ने इन नए स्थानों को बसाया होगा।

उपर्युक्त के अतिरिक्त जिले में व्यक्ति एवं जातिबोधक विभेदक भी संयुक्त हैं, यथा-

बम्हौरी बहादुर सिंह (महरौनी)

स्थान-नामों में उपसर्ग-

स्थान-नामों में उपसर्गों का प्रयोग कम होता है। हिंदी भाषा में भी उपसर्गों का व्यवहार कम होता है। अत: स्थान-नामों में उपसर्गों का कम होना स्वाभाविक है। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार उपसर्ग उस वर्ण या वर्ण समूह को कहते हैं, जिसका स्वतंत्र प्रयोग न होता हो और कुछ आर्थिक विशेषता लाने के लिए जो किसी शब्द के पूर्व जोड़ा जाए। उपसर्ग का मूल अर्थ है (उप+सृज्+घञ्) समीप छोड़ा हुआ अर्थात् पास रखा हुआ अथवा समीप लाकर सृजन करने वाला।

प्रारंभ में भारतीय भाषाओं में उपसर्ग स्वतंत्र शब्द थे और इनका अपना अर्थ था। संस्कृत में आकर उपसर्गों की स्वतंत्रता समाप्त हो गई और वे केवल मूल शब्द से संबद्ध होकर ही आने लगे। ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में उपसर्गों का प्रयोग इस प्रकार मिलता है-

1. अ—डॉ. भोलानाथ तिवारी के मत से संस्कृत के 22 उपसर्गों में यह नहीं है। (नञ्) गति का इसे रूपांतर माना गया है। इसका अर्थ अभाव, हीनता, शून्यता आदि है। जिले की महरौनी तहसील के दो स्थान-नामों में यह उपसर्ग संयुक्त है-

अजान तथा अमरपुर।

2. दु—यह बुरा, कठिन आदि अर्थों में प्रयुक्त होने वाला संस्कृत उपसर्ग है। इस उपसर्ग से संयुक्त ललितपुर तहसील का दुर्जनपुरा नामक स्थान है।

3. वि—यह अभाव, दूसरा, अधिक, विशेष आदि अर्थों का द्योतक संस्कृत उपसर्ग है, यथा- बिजौरी (ललितपुर) बिजयपुरा (तालबेहट तथा ललितपुर)

4. सु—यह भी संस्कृत उपसर्ग है, जिसका अर्थ है अच्छा, सरल, ज़्यादा। यह

जिले की तालबेहट तहसील के स्थान-नामों में दो बार प्रयुक्त हुआ है-सुनौरा तथा सुनौरी। इन स्थान-नामों में सु उपसर्ग के साथ नगरवाची प्रत्यय नौरा व नौरी संयुक्त हैं। अन्यथा कुछ लोग इनमें सुन शब्द की उपस्थिति मान सकते हैं, जो यहां के अन्य स्थान नामों में भी दृष्टव्य है- सुनवाहा, सुनौनी, सुनपुरा।

5. दर—मूलत: यह फारसी 'दरवाज़ा' का समानार्थी है, जो संस्कृत 'द्वारा' से भी साम्य रखता है। फारसी दरवाज़े के अर्थ से विकसित होकर यह अधिकरण कारक 'में' में परिवर्तित हो गया। अरबी-फारसी में अज्ञानता के कारण दरअसल, दर हक़ीक़त जैसे प्रयोग दुहरे होने के कारण अशुद्ध हैं। इस जिले में 'दर' उपसर्ग से संयुक्त दो स्थान नाम महरौनी तहसील में प्रयुक्त होते हैं—

दरौनी तथा दरौना, यद्यपि यह शब्द 'दलन' अर्थ के अधिक समीप हैं।

6. बे—यह भी फारसी उपसर्ग है। इसका अर्थ है बिना, रहित। तुलनीय संस्कृत 'वि' यथा-

बिगारी (तालबेहट)।

स्थान-नामों में सामासिकता-

हिंदी भाषा की भांति ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में सामासिकता देखी जाती है। समास दो शब्दों से मिलकर बना है- सम (पास) + आस (रखना, बैठाना)। डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार समास उस प्रक्रिया को कहते हैं, जिसमें दो या अधिक शब्द मिलकर उनके बीच के संबंधसूचक आदि शब्दों का लोप करके नया शब्द बनाते हैं। समास को समस्तपद भी कहते हैं। समस्तपद में सम्मिलित शब्दों के विच्छेद को विग्रह कहा जाता हैं। समस्तपद में विभक्तियों का लोप हो जाता है, किंतु विग्रह में लुप्त विभक्तियों को प्रकट करना होता है।

समास भारोपीय भाषाओं की एक विशेषता है और यह हिंदी तथा उसकी बोलियों में भी विद्यमान है। समस्तपदों में सम्मिलित पूर्वपद एवं परपद के बीच में या तो योजक चिन्ह लगाना चाहिए (जैसे सुख-दु:ख) या उन्हें मिलाकर एक में लिखना चाहिए (जैसे घोड़ागाड़ी)। इन्हें अलग-अलग लिखना ग़लत है। समास संबंधी सभी स्थापनाएं समास को शब्दों का जोड़ मानती हैं। समास रचना से भाषा में संक्षिप्तता आती है, जो भाषा को सुविधाजनक बनाती है।

स्थान-नामों की पदरचना—समास को स्थान-नामों में नए भावों और नए अर्थों का समावेश करने वाला माना गया है यद्यपि स्थान नामों में समास रचना व्यावहारिक भाषा जैसा अर्थ नहीं दे पाती है। पदों की व्यवस्था की दृष्टि से ललितपुर जनपद के स्थान-नामों को निम्नलिखित चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

1. सरल पद + सरल पद- रामपुर (तालबेहट)
रायपुर (तालबेहट)
2. सरल पद + यौगिक पद- तिलहरी (ललितपुर)
पुरा धंधकुआ (महरौनी)
3. यौगिक पद + सरल पद- भैलोनी लोध (तालबेहट)
भीकमपुर (महरौनी)
4. यौगिक पद + यौगिक पद- खिरिया लटकनजू (महरौनी)
बम्हौरी खड़ैत (तालबेहट)

स्थान-नामों में संधि—जिले के स्थान-नामों की पद रचना में संधि व्यवस्था पर आधरित स्थान नाम मिलते हैं, जैसे-

परस + आटा - परसाटा (महरौनी) पार्श्व वाला स्थान
सारस + अरण्य - सारसेंड़ (तालबेहट)
बदरी + अयन - बादरायण-बादरौन (तालबेहट)
पांडव + वन - पड़वां (महरौनी)
वट + पद्र - बारोद (ललितपुर)

भेदक-भेद्य एवं विशेषक-विशेष्य क्रम पर आधारित ऐसे स्थान-नाम जिले में हैं, जिनमें दोनों दशाएं समाहित हैं यथा-

खिरिया मिश्र (महरौनी) पिपरिया डोंगरा (ललितपुर)
डोंगरा खुर्द (महरौनी) बर खिरिया (ललितपुर)

समासों में ध्वनि परिवर्तन—जिले के स्थान-नामों में यदि प्रथम शब्द का पहला स्वर दीर्घ हो तो वह प्राय: ह्रस्व (आ का अ, उ; ओ का उ तथा ई का ए, इ) हो जाता है, जैसे-

राम- रमपुरा (तालबेहट) चमार- चमरउवा (ललितपुर)

कभी-कभी बीच का दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है-

चढ़ार- चढ़रा (महरौनी) गुरू- गुरसौरा (ललितपुर)

इसी प्रकार पहले शब्द के अंतिम स्वर का कभी-कभी लोप हो जाता है-

झरना- झरर (तालबेहट) बाणासुर- बानपुर (महरौनी)

बहुपदीय रचना पर आधारित स्थान-नाम—जिले में तीन पदों तक के स्थान-नाम प्राप्त हुए हैं-

बम्हौरी बहादुर सिंह (महरौनी) खिरिया भारंजू (महरौनी)

ललितपुर जनपद के स्थान-नामों की रचना में हिंदीतर भाषाओं का भी प्रभाव है। इनमें दो अलग-अलग भाषाओं के रूप मिलकर एक हो गए हैं यथा-

1. फारसी + संस्कृत- चांद + पुर - चांदपुर (ललितपुर)
बदन + पुर - बदनपुर (तालबेहट)
2. अरबी + संस्कृत- जहाज +पुर - जहाजपुर (ललितपुर)

सैद + पुर - सैदपुर (महरौनी) अरबी सैद का तात्पर्य मृगया, आखेट, शिकार किया हुआ जानवर होता है। यदि यह अरबी सैयिद का भाषा परिवर्तन है तो इसका अर्थ है हज़रत इमाम हुसैन की औलाद का वंशज।[66]

3. तुर्की + संस्कृत- बहादुर + पुर - बहादुरपुर (महरौनी) मंगोलिया में बघातुर तथा तुर्की में बगातुर से होते हुए यह हिंदी में बहादुर हो गया।

4. हिंदी + संस्कृत- देव + गढ़ - देवगढ़ (ललितपुर)
मानिक + पुर - मानिकपुर (महरौनी)
5. संस्कृत + हिंदी- घट + वार - घटवार (ललितपुर)
उदय + पुरा - उदयपुरा (महरौनी)
6. फारसी + हिंदी- बाग़ + औनी - बगौनी (महरौनी) किंतु यह संस्कृत वल्गा, प्राकृत वग्ग तथा हिन्दी बाग (घोड़े की) के अधिक समीप ज्ञात है।
ख़ाक़ + रौन - खाकरौन (महरौनी)
शहज़ाद + बांध - शहजाद बांध (तालबेहट)।

फारसी के शहज़ाद का अर्थ राजकुमार है किन्तु यदि यह सह्याद्रि का भाषा परिवर्तन है तो यह महाराष्ट्र प्रांत की एक पर्वत श्रेणी है जो गोवा के समुद्र तट के समीप स्थित है।

फारसी शब्दों का हिंदी में दूध में चीनी की भांति विलय हो गया है। चंद्र संस्कृत का शब्द है, जबकि चांद के रूप में अरबी-फारसी में इसी अर्थ में स्वीकार्य है। चांद शब्द से आधा दर्जन से अधिक स्थान-अभिधान जिले में विद्यमान हैं।

7. अरबी + हिंदी- फ़ौज + पुरा - फौजपुरा (ललितपुर)
दौलत + पुरा - दौलतपुरा (महरौनी)
8. जापानी + बुंदेली ध्वनि रिक्शा- रक्सा (तालबेहट)
9. अंग्रेजी + संस्कृत बकस + पुर - बकसपुर (महरौनी) बकस अंग्रेजी बॉक्स का रूपांतर है, किंतु यह फारसी बख़्श के अधिक समीप जान पड़ता है, जिसका अर्थ है देने वाला, क्षमा करना।

नगर क्षेत्र ललितपुर में सिविल लाइंस, स्टेशन रोड जैसे अंग्रेजी स्थान-नाम भी अस्तित्व में हैं।

पूर्वपद एवं परपद की सापेक्षिक प्रधानता के आधार पर समस्तपदों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है-

1. पूर्वपद प्रधान- अव्ययी भाव
2. परपद प्रधान- तत्पुरुष (कर्मधारय एवं द्विगु समास इसी में हैं)
3. दोनों पद प्रधान- द्वंद्व
4. दोनों पद अप्रधान- बहुब्रीहि (इसमें कोई तीसरा पद प्रधान होता है)

इस प्रकार समास मूलत: चार प्रकार के होते हैं। तत्पुरुष के ही दो उपभेदों (कर्मधारय एवं द्विगु) को मिलाकर प्राय: छ: समास कहे जाते हैं। जिले के स्थान-नामों में समास-भेदों की उपलब्धता इस प्रकार है-

1. अव्ययी भाव—इसमें अव्यय क्रिया विशेषण का काम करता है- डगडगी (महरौनी)

2. तत्पुरुष—पहला शब्द प्राय: सज्ञा या विशेषण तथा दूसरा सर्वदा संज्ञा होता है यथा- बरखेरा (महरौनी), तिलहरी (ललितपुर)

3. कर्मधारय—इसमें विशेषण तथा विशेष्य क्रमश: उपमेय तथा उपमान होते हैं। भेदक पद विशेषण की तरह संज्ञा की विशेषता बताता है। स्थान-नामों में यह पूर्वपद तथा परपद दोनों भेदकों में मिलती है-

पूर्वपद- चंद्रापुर (तालबेहट) कारोखेत (तालबेहट)
परपद- सारसेंड़ (महरौनी) सेमराबुजुर्ग (महरौनी)

ज्ञातव्य है कि पूर्वपद के भेदक शब्द कर्मधारय तथा परपद के भेदक शब्द तत्पुरुष समास की रचना करते हैं।

4. द्विगु—पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है, जो समस्तपद समूह का बोध कराता है—

पंचमपुर (ललितपुर) चौमहू (महरौनी)

5. द्वंद्व—इसमें दो या तीन संज्ञाएं होती हैं, जो आपस में जुड़ी रहती हैं यथा-

कुआगांव (महरौनी) धौरीसागर (महरौनी)

6. बहुब्रीहि—बहुब्रीहि - बहुत धानों वाला अर्थात् जिसमें अर्थसंपन्नता हो, यथा-

रमेशरा (महरौनी तथा ललितपुर) रमा के जो ईश हैं वह विष्णु का पुर।

भैंसाई (ललितपुर) महिषासुर की संहारक माता हैं जो अर्थात् भैंसासरी माता।

स्थान-नामों के पूर्व रूप—जिले के कतिपय स्थान-नामों को पूर्व में अन्य नामों से जाना जाता रहा है जैसे-

वर्तमान नाम	**पूर्व नाम**
छापछौल (महरौनी)	नादैर
मानिकपुर (महरौनी)	मतवारा
बुरौगांव (महरौनी)	चिगलउवा

पूर्वपदों के विविध रूप–जिले के स्थान-नामों में पूर्वपद विविध रूपों में उपलब्ध हैं। यह प्रकृति, स्थान अथवा जाति का बोध कराते हैं। इनमें जिन प्रमुख तत्वों का सन्निवेश हुआ है, वह निम्नलिखित हैं–

1. व्यक्तिबोधक–बछरावनी (महरौनी एवं तालबेहट)- चंदेल नरेश के मंत्री वत्सराज के नाम पर इस स्थान का नाम पड़ा। देवगढ़ के शिलालेख में उल्लेख है कि मंत्री वत्सराज ने देवगढ़ में घाट का निर्माण किया।[67] वत्सराज प्रसिद्ध चंदेल नरेश कीर्तिवर्मन का योग्य मंत्री था। कीर्तिवर्मन ने चंदेरी नगर की स्थापना की थी।[68] महोबा का कीर्तिसागर भी उसकी यशगाथा का निदर्शन है। वत्सराज के नाम पर जिले के और भी स्थान-नाम हैं यथा

बसतगुवां (तालबेहट) बछरई (महरौनी)
वस्त्रावन (तालबेहट) बछलापुर (ललितपुर)

बालाबेहट (ललितपुर) को 18वी शताब्दी के मराठा सरदार बालाजी द्वारा बसाया गया था।[69]

सिंदवाहा (महरौनी) दौलतराव सिंधिया का रहा स्थान
मदनपुर (महरौनी) चंदेल शासक मदनवर्मन द्वारा स्थापित

धुरवारा (महरौनी तथा तालबेहट)- पलेरा (टीकमगढ़) के वीर स्वतंत्रता प्रेमी जागीरदार राव धुरमंगल[70] के नाम पर, जो महाराजा छत्रसाल के समकालीन थे।

2. जातिबोधक–कंधारी खुर्द (तालबेहट) कंधारी नाम संस्कृत के कर्णधार से कण्णहार-कनिहार-कंधार क्रम में विकसित हुआ है। यह शब्द केवट, मल्लाह और ढीमर के अर्थ में आता है। यह जाति पालकी को कंधा देने का काम करती रही है।

कुमरौल (ललितपुर) - कुम्हार
सोंरई (महरौनी तथा तालबेहट) - सहरिया जनजाति

3. पशुबोधक–मादौन (ललितपुर)- मांद (शेर का निवास स्थान)
चितरा (ललितपुर) - चीतल बघौरा (तालबेहट)- बाघ
तिंदरा (तालबेहट)- तेंदुआ बसवां (ललितपुर)- वृषभ[71]

4. उपाधिबोधक–शाहपुर (तालबेहट) गोंड़ राजाओं की उपाधि यथा सुम्मेरशाह पंचमपुर (ललितपुर) रुद्रसिंह पंचम बुंदेला, यह बुंदेल वंश के आदि पुरुष हैं।

5. शासकबोधक–रजपुरा (तालबेहट) रानीपुरा (ललितपुर)

6. महापुरुषों से संबंधित–जमालपुर (तालबेहट) - संत जमालशाह
कुंवरपुरा (महरौनी तथा तालबेहट)- कुंवर हरदौल
बुदावनी (तालबेहट)- गौतम बुद्ध गांधीनगर-ललितपुर - महात्मा गांधी

7. देवी-देवताओं से संबंधित–देवगढ़ (ललितपुर) देवरान (ललितपुर)
भैंसाई (महरौनी)-महिषासुरमर्दिनी माता भावनी (तालबेहट)- भवानी मां

8. स्थान बोधक–खिरिया मिश्र (महरौनी तथा ललितपुर) संस्कृत खेट से विकसित

पुराधंधकुवा (महरौनी) बेहटा (तालबेहट)
थाना (तालबेहट) मऊमाफी(ललितपुर)- मही से विकसित

9. प्रवृत्तियों से संबंधित–बहादुरपुर (महरौनी) बीर (महरौनी)

10. क्रियाबोधक–बाजनो (तालबेहट) नाचनी (ललितपुर)

11. आवासबोधक–मड़ना (ललितपुर) मड़ साधुओं के मठ (निवास) से विकसित

गढ़ौली (ललितपुर) - गढ़ अर्थात् दुर्ग या क़िला

12. भूमिदशा बोधक–डांग मथरा (तालबेहट) कछया गोरा (महरौनी)

बंगरुवा (महरौनी) बांगर वह ऊंची ज़मीन होती है, जो बाढ़ में न डूबे। यह एक बैल भी होता है।

गिरार (महरौनी) - गिरि ककरुवा (ललितपुर)-कंकड़ युक्त भूमि

13. जलाशयबोधक–झिलगुवां (ललितपुर) तलगुवां (महरौनी)

14. वनस्पतिबोधक–गूगर (तालबेहट) संस्कृत गुग्गुलु का भाषा परिवर्तन है। इस कंटीले पेड़ की गोंद गंध द्रव्य है, जो दवा के भी काम आती है।

धवा (महरौनी)- यह एक वन्य वृक्ष होता है, जिसकी जड़, पत्ती, फूल आदि दवा के काम आते हैं।

15. पदार्थबोधक–क्योलारी (ललितपुर)- कोयला, कठवर (तालबेहट)- काष्ठ

तुरका (तालबेहट) बुंदेली तोरका, संस्कृत से विकसित इस शब्द का अर्थ है रस्सी का टूटा हुआ टुकड़ा।[72]

चकौरा (महरौनी)–संस्कृत का चक्र प्राकृत चक्क से होते हुए हिंदी का चाक बनता है। यह संस्कृत साहित्य का चकोर पक्षी भी हो सकता है, जो चंद्रमा का प्रेमी माना जाता है। दूर का अनुमान इसे फारसी के 'चक' तक ले जाता है जो दस्तावेज़, लेख, बैनामा, सीमा, हद, क्षेत्र, रक़वा सहित अनेक अर्थ छबियां प्रदान करता है।

16. संख्याबोधक–चौबारी (ललितपुर) तेरई (तालबेहट)

17. संपन्नताबोधक–दावनी (ललितपुर)- यह माथे पर पहनने का एक झालदार लंबोतरा गहना होता है।[73]

बेसरा (ललितपुर)- नाक का गहना

18. विपन्नताबोधक-कंगीरपुरा (तालबेहट) - ग़रीब, भिखारी[74]
प्यासा (महरौनी)
गुंद्रापुर (महरौनी)- बुंदेलखंड में 'गुंदरा' मिट्टी से बने कच्चे घर होते हैं।

19. व्यवधानबोधक—पचौड़ा (महरौनी) - यह देशज पचड़ा शब्द है जो बखेड़ा या झंझट के अर्थ में आता है, किंतु यह एक लावनी की तरह का गीत भी होता है, जिसमें पांच-पांच चरणों के खंड होते हैं तथा इसे प्राय: ओझा देवी के गीत आदि की स्तुति में गाया जाता है।[75] इस गांव में नाथ जाति निवास करती है, जो सांपों को पकड़ तथा बीन बजाकर अपना गुज़ारा करती आई है।

20. शुभ/सद्गुणबोधक—सतगता (ललितपुर) - सद्गति
उत्तमधाना (ललितपुर) कल्यानपुरा (ललितपुर तथा तालबेहट)

21. नवजागरणबोधक—ऐसे स्थान-नाम यहां नगर क्षेत्रों में ही पाए जाते हैं
ललितपुर नगर में सुभाषपुरा, आज़ादपुरा, श्रद्धानंदपुरा
पाली में टिपुआ गांधी चौक- टिपुआ- यहां टोपी का द्योतक है।

22. अस्त्र-शस्त्र बोधक- फ़ौजपुरा (ललितपुर) बख्तर (ललितपुर)

23. हीनता बोधक—रनगांव (महरौनी)- रंडी वेश्या को कहा जाता है। इसीलिए स्त्रियों को एक गाली के रूप में भी इसका प्रयोग होता है। रंगरेलियों से भी इस स्थान-नाम का संबंध हो सकता है। इस गांव में वेश्या एवं नृत्य कर्म करने वाली बेड़नी जाति निवास करती है।

24. शारीरिक अंगबोधक- नैनपुर (महरौनी) बूचा (ललितपुर)

25. अवस्थाबोधक- बूढ़ी (ललितपुर) जरावली (महरौनी)

26. अन्य स्थान-नाम बोधक- भोपालपुरा (तालबेहट)
मथरा डांग (तालबेहट) बर्मा बिहार (तालबेहट)

27. फलबोधक—गुलेंदा (तालबेहट)- महुआ का फल
निवारी (महरौनी) नीम की बौरी (फल)।
सिंगरवारा (महरौनी)-सिंघाड़ा

28. शस्यबोधक—बजर्रा (ललितपुर)- बाजरा
बरेजा (महरौनी)- पान के छप्परदार तथा चारों ओर से बंद खेत
बलरगुवां (तालबेहट)- वल्लरी। गेंदौरा (तालबेहट)- गेंदा फूल

29. जीव-जंतुबोधक—गेवरा गुंदेरा (तालबेहट)- विषखोपरा को गेवरा कहा जाता है
मछरका (महरौनी)- मच्छर मिदरवाहा (महरौनी)- मेंढक

30. वैदिक युगबोधक—भैलोनी सूबा (तालबेहट)- भलानस् ऋग्वेद की उन

पांच जातियों में से एक हैं, जो दाशराज्ञ (दस राजाओं) के युद्ध में सुदास के साथ शत्रु पक्ष में थे। भलानस् को हॉपकिंस ने भलान माना है। त्सिमर के विचार से इस जाति का मूल आवास क्षेत्र पूर्वी कबूलिस्तान था। यह जाति संभवत: पूर्वी कबूलिस्तान से राजस्थान पहुंची होगी। इस गांव में बुजुर्ग व्यक्ति अपने पूर्वजों को राजस्थान से आया हुआ बताते हैं।

दशरारा (तालबेहट)- दस राजा (दाशराज्ञ)। यह गांव भैलोनी सूबा के निकट ही बसा है।

31. त्योहार बोधक—गनगौरा (ललितपुर)

32. रूढ़िबोधक—तेरई (तालबेहट)

परपदों के विविध रूप—जिले के स्थान-नामों में प्रयुक्त पुरा तथा पुर प्राचीनतम परपद हैं। पुर परपद जिले के 33 स्थान-नामों में तथा पुरा 46 स्थान-नामों में प्रयुक्त हुआ है, जो जिले में सर्वाधिक है। पुरा परपद एक बार स्वतंत्र रूप में ललितपुर तहसील में प्रयुक्त हुआ है तथा दो बार यह पूर्वपद के रूप में भी प्रयुक्त है-

पुरा पाचौनी (तालबेहट) पुरा धंधकुआ (महरौनी)

अन्यत्र यह परपद के रूप में प्रयुक्त हुआ है। 'पूरा' पुरा का दीर्घरूप है। तालबेहट तहसील में यह दो बार इस रूप में प्रयुक्त है- पूरा कलां तथा पूरा खुर्द।

संख्या की दृष्टि से पुरा तथा पुर के बाद फारसी विभेदक खुर्द (32बार), कलां (28 बार), गुवां (17 बार) तथा गांव (5 बार) प्रयुक्त हुए हैं।

स्थानीय बोली की विशेषता के अनुसार जिले के स्थान-नामों में परपद के अंतिम दो अक्षर जहां भी 'आ'कारांत हैं, वहां उच्चारण के स्तर पर 'आ-आ' रूप 'आ-औ' हो जाता है यथा-

दशरारा (तालबेहट)- दशराऔ/-रौ
थनवारा (ललितपुर)- थनवाऔ/-रौ

आसपास के प्रभाव के कारण कहीं-कहीं स्थान-नामों का उच्चारण बदल गया है यथा पूरा कलां तथा पूरा खुर्द के निकटस्थ ग्राम बिजयपुरा (तालबेहट) को लोग बिजयपूरा उच्चरित करते हैं। स्थानीय व्यक्तियों के अनुसार पूरा कलां से कुछ लोगों द्वारा इसे अलग करते हुए इस गांव को बसाया गया था।

स्थान-नामों का वर्गीकरण—पूर्व एवं परपदों के विविध रूप जिले के स्थान-नामों में विद्यमान हैं। स्थान-नामों के समस्त पदों (एकपद, द्विपद तथा बहुपद) में लक्षित विविध प्रवृत्तियों के आधार पर स्थान-नाम विज्ञानियों (Toponymysts) ने इन्हें अनेक कोटियों में वर्गीकृत किया है, किंतु निम्नलिखित सात कोटियों में ललितपुर जनपद के स्थान-नामों की अधिकांश प्रवृत्तियां समाहित हो गई हैं। ध्यातव्य है कि

स्थान-नामों में वर्णित प्रवृत्तियां जिले की बोली, समाज, रहन-सहन, इतिहास, भूगोल एवं पर्यावरण से सर्वथा संगति रखती हैं। जिले का कोई-कोई स्थान-नाम वर्तमान में बहुअर्थी है, जिससे उसे तत्संबंधी अन्य वर्ग में भी रखा गया है-

1. ऐतिहासिक

क- व्यक्तिबोधक- बानपुर (महरौनी)- बाणासुर
कनपुरा (महरौनी)- कृष्ण
ख- स्थानबोधक- गढ़िया (तालबेहट)- किला
रजवारा (ललितपुर)- रजवार- राजद्वार, राजा का दरबार

2. सामाजिक

क- जातिबोधक- बरेठी (ललितपुर)- धोबी के लिए आदरसूचक संबोधन
सुकलगुवां (ललितपुर)- शुक्ल ब्राह्मण।

जिले में जातिबोधक स्थान-नामों में सर्वाधिक 6 स्थान नाम ब्राह्मणों की विभिन्न उपजातियों पर मिलते हैं। इसके अलावा सहरिया, बनिया, कुम्हार, धोबी, चढ़ार, चमार, मोगिया, कोरी (कुर्रट-महरौनी) जातियों के स्थान -नाम भी यहां मिलते हैं। नगर क्षेत्रों में सराफ, कसाई, पंडित, रावत, चौबे, तिवारी, चमार, कायस्थ, मलैया (जैन), पंडा, लुहार, काछी, शेख, नट, कोरी इत्यादि जातियों एवं उपजातियों के नाम पर स्थानों के अभिधान पाए गए हैं।

ख- उपाधिबोधक- बरौदिया राइन (ललितपुर)- राय उपाधि का स्त्रीलिंग

ग- स्थानबोधक- टौरिया (महरौनी तथा ललितपुर)- छोटी पहाड़ी
टीला (महरौनी तथा ललितपुर)- ऊंचा स्थान। जिले के 16 स्थान-नाम पहाड़ियों तथा टौरियों से संबंधित हैं।

घ- आवासबोधक- मड़वारी (ललितपुर)- मड़वा, घास-पूस की छत

ङ- सामंतीबोधक- महर्रा (ललितपुर)- संस्कृत 'महत्' से विकसित है। यह ज़मींदारों और वैश्यों के लिए ब्रज में प्रयुक्त होता है। महर्रा एक प्रकार का पक्षी भी होता है।[77]

च- पूजा-पाठबोधक- अजान (महरौनी)- अरबी शब्द अज़ान का अर्थ है नमाज़ का बुलावा।

छ- प्रवृत्तिबोधक- बख्तर (ललितपुर)- यह फारसी 'बख्त' में 'वर' परपद जुड़कर निर्मित अभिधान है। बख्त का अर्थ सौभाग्य और बख्तवर का अर्थ सौभाग्यशाली, खुशनसीब होता है किंतु बखूतर का स्थानीय बोली में उच्चारण

'बकतर' किया जाता है। यह भी फारसी का शब्द है, जो लोहे के जाल का बना हुआ कवच होता है। बुंदेली शब्दकोशकार डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी ने बख्तर का अर्थ वर्म, कवच किया है।

रारा (तालबेहट)- रूरा से विकसित प्रतीत होता है, जिसका अर्थ है उत्तम, अच्छा। रारा संस्कृत रूरू से भी संबद्ध हो सकता है, जो ज्ञान शब्दकोश के अनुसार एक काला हिरन, एक ऋषि, एक वृक्ष होता है।

3. आर्थिक

क- भूमिबोधक- दारुतला (महरौनी)- संस्कृत 'दारु' लकड़ी है। फारसी 'दारू' के अर्थ दवा, बारूद, शराब होते हैं, किंतु यह संस्कृत अर्थ को ही अनुस्यूत किए हुए है।

कारोखेत (तालबेहट)- काली मिट्टी वाला खेत

ख- वनस्पतिबोधक- करोंदा (महरौनी)- एक कांटेदार झाड़ या उसका फल

खैरी (महरौनी)- खदिर, इसकी लकड़ी उबालकर कत्था बनाया जाता है।

ग- वृक्षबोधक-जिले में वट वृक्षवाची सर्वाधिक स्थान-नाम हैं। इसके उपरांत क्रमशः पीपल, सेमर, आम, इमली, नीम, बेर, महुआ, जामुन, बांस, कचनार, गूलर, कैंथ, खजूर, तेंदू, अनार, चिरोल, महोली इत्यादि वृक्षों के नाम पर स्थान-नाम मिलते हैं।

घ-जलाशयबोधक-यहां तालाबबोधक सर्वाधिक 6 स्थान-नाम हैं। इसके बाद कुआ, झरना, झील, सागर तथा सर संबंधी स्थान-नाम मिलते हैं।

ङ- पशुबोधक-जिले के पशुबोधक स्थान-नाम भैंस, शेर, बाघ, तेंदुआ, नाहर, रीछ, चीतल, बिल्ला, गधा, बंदर आदि पशुओं पर मिलते हैं। नदनवारा (ललितपुर) पौराणिक नंदिनी गाय का अनुकृत नाम संभव है। गायों के नर एवं मादा बच्चों के नाम पर क्रमशः बछलापुर (ललितपुर), बछरई (महरौनी) जैसे कुछ स्थान-नाम भी यहां मिलते हैं किंतु वस्तुतः यह चंदेल काल के मंत्री वत्सराज के नाम पर रखे गए हैं।

च- पक्षीबोधक-सर्वाधिक हंस के नाम पर इस जिले में स्थान-नाम मिलते हैं। इसके बाद कोक, चकोर, शुक, गिद्ध, सारस, टेंटा, बगुला, घुवरा (उल्लू) पक्षियों के नाम पर स्थान-नाम मौजूद हैं।

छ- जीव-जंतुबोधक- सांप (धमना, नाग), मकड़ी, मगरमच्छ, भ्रमर, विषखोपरा, मेंढक, मच्छर, केंचुआ जैसे जीव-जंतुओं पर रखे गए स्थान-नाम जिले में हैं। इनमें नाग पर 3 तथा भ्रमर पर 4 स्थान नाम प्राप्त हैं।

ज- संख्याबोधक—जिले में एक, चार, पांच, सात, दस, तेरह संख्याओं के बोधक स्थान-नाम प्राप्त हुए हैं।

झ- पेशाबोधक—रनगांव (महरौनी)- नृत्य कर्मरत रंडियों/बेड़नियों का गांव

ञ- संपन्नताबोधक-ठाठखेरा (तालबेहट) सुखपुरा (ललितपुर)

छिल्ला (महरौनी)- संस्कृत 'उच्छलक' से विकसित प्रतीत होता है, जिसका अर्थ है उछलना, तरंगित होना।

ट- विपन्नताबोधक— प्यासा (ललितपुर) पीड़ार (महरौनी)

ठ- शस्य संबंधी—जिले में ज्वार (जैरवारा-ललितपुर), बाजरा (बजर्रा-ललितपुर), पान (बरेजा-महरौनी), समा, कोदों, फिकार जैसे अन्न को बिजरा कहा जाता है जैसे (बिजरौठा-तालबेहट), उड़द (उल्दना कलां-महरौनी), तिल (तिलहरी-ललितपुर) आदि अनाज तथा दलहन-तिलहन पर आधारित स्थान-नाम हैं।

4. धार्मिक

क- देवी-देवताबोधक—देवतावाची स्थान-नामों की संख्या यहां 7 है। इसके अतिरिक्त अनेक देवी-देवताओं, यथा- ब्रह्महरि- बम्हौरी, रघुनाथ, हनुमान, वराह तथा धार्मिक तीर्थों- बैजनाथ (महरौनी), मथरा (तालबेहट) आदि के नाम पर भी यहां स्थान-नाम मिलते हैं।

ख- रीति-रिवाज—जैरवारा (ललितपुर)- इस स्थान-नाम का जौहर प्रथा से संबंध संभव है।

ग- पूजा-पाठ—अजान (महरौनी)- नमाज़ की घोषणा

5. सांस्कृतिक

भारशिवों की अंतरजातियों का बोध कराने वाले स्थान-नाम जैसे भारौनी (महरौनी), मरौली (महरौनी), कठवर (तालबेहट), जरया (महरौनी) आदि जिले में प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त संस्कृति के विविध पक्षों को उद्घाटित करते हुए अन्य स्थान-नाम भी यहां हैं, जैसे-

नटराई (तालबेहट) - राई नृत्य जमौरा (महरौनी) - यम
जखौरा (तालबेहट) - यक्ष जाखलौन (ललितपुर) - जाखमाता

6. सामान्य

जिले में विभिन्न जंगलवाची स्थान-अभिधानों की कुल संख्या दो दर्जन से अधिक है। गोंड़ों द्वारा बसाए गांव बेहट शब्द का अर्थ भी बीहड़ के अर्थ के समीप

है। यहां के जंगलवाची अन्य स्थान-नाम वन, डांग, झाड़-झुरमुट के नाम पर भी हैं।

7. विशिष्ट

चौकी (महरौनी)- निगरानी का स्थान बगसपुर (महरौनी)- बक्सा

सांकरवार कलां (ललितपुर) - सांकल (ज़ंजीर) जिजयावन (ललितपुर)- जीजी

स्थान-नामों में अक्षर संगठन—बोली की उच्चारणगत विभिन्नताओं के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि लिपि बोली की अभिव्यक्ति को अपने सर्वांगीण स्वरूप में अभिव्यक्त करने में अक्षम है क्योंकि बोली के रूप में जो परिवर्तन होता है, वह व्याकरणिक कम; ध्वनिगत अधिक होता है।[78] अत: ध्वनि परिवर्तन भाषा के वाक्य, रूप एवं अर्थगत जैसे अन्य परिवर्तनों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्तिगत है और सबमें व्याप्त है।

ध्वनि को स्वन कहा गया है। इसके अध्ययन से संबद्ध शास्त्र या विज्ञान के लिए अंग्रेजी में फोनेटिक्स (Phonetics) अथवा फोनेलॉजी (Phonology) कहा गया है। उच्चारण (Articulation), संवहन या प्रसरण (Acoustication) तथा श्रवण (Auditorisation) इन तीन तरह से ध्वनियों का अध्ययन ध्वनि विज्ञानी करते हैं।[79]

ध्वनन या स्फोट (Release) होने पर वह ध्वनि वर्णबद्ध की जाती है। वर्ण को ही अक्षर कहा गया है। उच्चारण का परिणाम अक्षर है और लिपि का परिणाम वर्ण। अक्षर का प्रयोग हिंदी तथा संस्कृत में कई अर्थों में होता है किंतु भाषा विज्ञान में अक्षर अंग्रेजी सिलेबल (Syllable) के पर्याय-अर्थ में प्रयुक्त होता है, जिसका अर्थ है 'अक्ष' या शीर्षवाला। डॉ. भोलानाथ तिवारी के शब्दों में अक्षर 'एक ध्वनि' अथवा 'एकाधिक' ध्वनियों' की वह इकाई है, जिसका उच्चारण एक झटके अर्थात् हृत्स्पंद (One chestpulse) से होता है तथा जिसमें एक स्वर अवश्य होता है। उसके पहले या बाद में एक या अधिक व्यंजन आ भी सकते हैं और नहीं भी आ सकते हैं।[80]

व्यक्ति के वाग्यंत्र की विविधता, श्रवणेंद्रिय की विभिन्नता तथा भौगोलिक प्रभाव जैसे ध्वनि परिवर्तन के कारण भाषा विज्ञानियों द्वारा अब अस्वीकृत हो चुके हैं। ध्वनि परिवर्तन के दो कारण भाषा विज्ञानियों में सर्वमान्य हैं- आंतरिक एवं बाह्य। आंतरिक कारण भाषिक इकाई (ध्वनि, शब्द) में विद्यमान होते हैं। बाह्य कारणों में सर्वप्रमुख है प्रयत्नलाघव (Economy of Effort)। इसे मुख-सुख भी कहा जाता है। आगम, लोप, विपर्यय और विकार नामक चार प्रकार के ध्वनि परिवर्तन प्रयत्नलाघव के कारण भाषा में होते रहते हैं।[81] इसके अतिरिक्त भाषा में

होने वाले ध्वनि परिवर्तन के बाह्य कारण भ्रामक या लौकिक व्युत्पत्ति (Popular Etymology), सादृश्य (Analogy), लिखने के कारण, बलाघात, अज्ञान, अनुकरण की अपूर्णता, किसी विदेशी ध्वनि का अपनी भाषा में अभाव, भावुकता इत्यादि हैं।

स्थान-नामों की रूप रचना में अक्षर संगठन भाषाई अक्षर संगठन के ही समान होता है, क्योंकि अंतत: स्थान-नामों में शब्दों का ही प्रयोग होता है। ललितपुर जिले के स्थान-नामों में परिलक्षित कुछ प्रमुख ध्वनिगत परिवर्तन इस प्रकार हैं-

1. लोप (Elision)

क- स्वर-लोप - कर्ण- कनपुरा (महरौनी तथा ललितपुर)
मामादेव - मामदा (ललितपुर), सहस्त्र- हजारिया (तालबेहट)

ख- व्यंजन-लोप स्थानक- थाना (तालबेहट) मथुरा - मथरा (तालबेहट)
प्रस्थ+आ - पठा (महरौनी), स्थगआरी-ठगारी(ललितपुर)

2. आगम

क- स्वरागम (स्वरभक्ति)- ताल- तलऊ (महरौनी)
दूध- दुधवा (तालबेहट)

यहां के स्थान-नामों में अंत्य स्वरागम अधिक मिलता है।

ख- व्यंजनागम- वननरगुढ़ा - बंदरगुढ़ा (ललितपुर)

ग- अनुनासिकता का आगम (Spontaneous Nasalization)—यह जिले के स्थान-नामों की प्रमुख विशेषता है यथा-

त्रयोदशाह- तेरई (तालबेहट) शावर या सहरिया- सोंरई (तालबेहट तथा महरौनी)

3. विपर्यय (Metathesis)

इसमें किसी शब्द के स्वर, व्यंजन अथवा दोनों; एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते हैं या दूसरे स्थान से पहले के स्थान पर आ जाते हैं जैसे-

पाण्डववन - पड़वां (महरौनी) सहस्त्रइया- हजारिया (तालबेहट)
कोयलाआरी - क्योलारी (महरौनी) कंदुकऔरा- गेंदौरा (तालबेहट)

4. समीकरण (Assimilation)

सावर्ण्य, सारूप्य तथा अनुरूपता भी इसके नाम हैं। इसमें एक ध्वनि दूसरी को प्रभावित कर अपना रूप दे देती है यथा

व्याघ्र- बघौरा (तालबेहट)　　क्षेत्र + वास- खितवांस (ललितपुर)

5. विषमीकरण (Dissimilation)

यह समीकरण का उल्टा है। इसमें एक-सी दो ध्वनियों में, एक ध्वनि किसी समान ध्वनि के प्रभाव से अपना स्वरूप छोड़ देती है। इसका प्रमुख कारण सुनने वाले की सुविधा कहा जाता है। र का ल या ल का र तथा न का ल या ल का न में परिवर्तन इसके उदाहरण हैं यथा-

ब्राह्मण- बमरौला (ललितपुर)

6. मात्राभेद—क्षतिपूरकता तथा स्वराघात आदि के परिणामस्वरूप यह परिवर्तन होते हैं। इसमें स्वर कभी ह्रस्व से दीर्घ और कभी दीर्घ से ह्रस्व हो जाते हैं यथा-

दीर्घ से ह्रस्वः　　आम - अमौरा (महरौनी)

ह्रस्व से दीर्घः　　दुग्ध - दूधई (ललितपुर)

7. घोषीकरण (Vocalisation)—इसमें अघोष ध्वनियों क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ से घोष ध्वनियों ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ, ह, ड़, ढ़ में परिवर्तन होता है यथा-

गधा- गदयाना (तालबेहट)　　गिद्ध- गिदवाहा (महरौनी)

8. अघोषीकरण (Devocalisaton)—यह घोषीकरण का उल्टा है। इसमें घोष ध्वनियां अघोष हो जाती हैं। यहां के स्थान-नामों के उच्चारण में यह परिवर्तन देखे जाते हैं-

दिगवार (महरौनी) - उच्चरित रूप दिक्कार

9. महाप्राणीकरण (Aspiration)–अल्पप्राण ध्वनियां क, ग, च, ज, ट, ड, त, द, प, ब, ड़, श, स जब महाप्राण ध्वनियों ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, ह, ढ़ में परिवर्तित हो जाती हैं, तब इसे महाप्राणीकरण कहा जाता है। जिले के स्थान-नामों में यह प्रवृत्ति कम ही है यथा -

स्कंध- खांदी (तालबेहट)　　किष्किंधा- खोंखरा (ललितपुर)

10. अल्पप्राणीकरण (Deaspiration)—कुछ शब्दों में महाप्राण का अल्पप्राण हो जाता है। ग्रेसमैन के ध्वनि नियम में भी यही कहा गया है। जिले के स्थान-नामों में महाप्राणीकरण की तुलना में यह प्रवृत्ति अधिक है-

आभीर- ऐरा (ललितपुर)　　दर्भ- दांवर (ललितपुर)

स्थान-नामों के उच्चारण में यह परिवर्तन अधिक देखा जाता है-

ठाटखेरा- ठाठखेरा (तालबेहट)　रगनातपुरा- रघुनाथपुरा (ललितपुर)

पद-रचना—पद शब्द पर ही आधारित होते हैं। शब्द को वाक्य में प्रयुक्त होने

के योग्य बना लेने पर उसे पद की संज्ञा दी जाती है। रूप-रचना या बनावट की दृष्टि से शब्द या पद तीन प्रकार के होते हैं-

क- मौलिक या अयौगिक—डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया के अनुसार यह ऐसे सार्थक शब्द हैं, जिनका विभाजन न किया जा सके। ऐसे शब्दों को 'हिंदी शब्दानुशासन' के लेखक पं. किशोरीदास वाजपेई ने रूढ़ कहा है। इनमें सामासिकता की संभावना नहीं होती है। संभव है इनमें सरल रचना की दृष्टि से कुछ पद यौगिक स्थिति में कभी रहे हों, पर अब वे प्रयोग में रूढ़ हो गए हैं यथा-

पाह (महरौनी) भैरा (महरौनी)
टेटा (तालबेहट) रारा (तालबेहट)

ख- यौगिक—डॉ भाटिया के अनुसार यह वे सार्थक शब्द हैं, जिनको मौलिक या रूढ़ शब्दों में प्रत्यय (पूर्व, मध्य या पर) जोड़कर बनाया जाए यथा-

यक्षऔरा - जखौरा (तालबेहट) मरअवली - मर्रोली (महरौनी)
दंतइया - दतया (ललितपुर) बनियाआना - बनयाना (महरौनी)

ग- योगरूढ़—यौगिक शब्द जब विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त होता है तो प्रयोग के आधार पर वह रूढ़ बन जाता है। इस आधार पर स्थान-नामों को योगरूढ़ कहा जा सकता है क्योंकि स्थान-नामों का अर्थ कुछ और होता है किंतु वह संबंधित स्थान के लिए रूढ़ हो जाता है, जैसे-

खटौरा (महरौनी)- चारपाई से संबंधित नटराई (तालबेहट)- राई नृत्य

गंगासागर (महरौनी)- एक तीर्थ, योगरूढ़ होकर यह तांबे का टोंटीदार लोटा भी कहलाता है।

जलंधर (महरौनी)- नौ नाथों में से एक, पंजाब का एक शहर

थनवारा (ललितपुर)- स्थानेश्वर बुधेड़ी (तालबेहट)- बुद्ध अरण्य

स्थान-नामों की रूप रचनात्मक कोटियां—जिले में स्थान-नामों की तीन प्रकार की रूप रचनाएं प्राप्त होती हैं-

1. एकपदीय स्थान-नाम—इनमें एक ही पद होता है। स्वरों और व्यंजनों का संयोग इनमें विभिन्न प्रकार से हुआ है। अक्षरों की संख्या एक से लेकर चार अक्षरों तक अलग-अलग प्राप्त होती है-

क- ऐकाक्षरिक- मौ (तालबेहट) ख- द्वायक्षरिक- भोंता (ललितपुर)
ग- त्रायक्षरिक- भदौरा (महरौनी) घ- चातुरक्षरिक- महरौनी

2. द्विपदीय स्थान-नाम—ऐसे स्थान-नामों में दो पद होते हैं। समास-रचना की दृष्टि से दोनों पद सरल, यौगिक अथवा दोनों के मिले-जुले रूप भी हो सकते हैं। अर्थ और प्रभाव की दृष्टि से इन पदों का अलग-अलग महत्व होता है। द्विपदीय

स्थान-नामों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया गया है-

क- द्वंद्व समासयुक्त—बरतला (महरौनी)

ख- परपदयुक्त—जिले की ललितपुर तहसील में परपद युक्त स्थान-नाम सर्वाधिक हैं। परपदों में विभेदक भी सर्वाधिक इसी तहसील में प्रयुक्त हैं। उच्चारण के स्तर पर परपद भी पूर्वपद के स्थान पर आ जाते हैं। यह सामासिक रूप अरबी-फारसी के प्रभाव से हिंदी में आया है यथा-

पूर्वपद पुरा पाचौनी (तालबेहट) डांग बरोदा (तालबेहट)

परपद (विभेदकयुक्त) जामुनधाना कलां एवं खुर्द (ललितपुर)

ग-पूर्वपदयुक्त-स्थान—नामों का पूर्वपद प्रकृति, स्थान अथवा जाति का बोध करता है जैसे- कारीटोरन (तालबेहट तथा महरौनी) बम्हौरी घाट (महरौनी)

घ- उभयपद यौगिक—सेमरा भागनगर (महरौनी) बरौदा बिजलौन (ललितपुर)

ङ- यौगिक + सरल तथा सरल + यौगिक-

यौगिक + सरल भीकमपुर (महरौनी) सरल + यौगिक पठा पचौड़ा (तालबेहट)

च- उभयपद सरल- कलरव (ललितपुर) देवगढ़ (ललितपुर)

3. बहुपदीय स्थान-नाम—दो से अधिक पदों के स्थान-नामों को बहुपदीय स्थान-नाम कहा जाता है। एकपदीय स्थान-नामों में भी ये झांकते हुए दिख जाते हैं यथा-

कुम्हैड़ी (महरौनी) अर्थात् कुंभ, उससे उत्पन्न होने वाले ऋषि तथा उनका अरण्य।

अंडेला (ललितपुर) - अरण्य + डबरा + एला (स्थल) अर्थात् जल एवं वनयुक्त भूमि।

जिले के बहुपदीय स्थान-नामों का वर्गीकरण इस प्रकार है

क- जनसंख्या वृद्धि के कारण दो निकटवर्ती गांवों के आपस में मिलने पर दोनों गांव साथ पुकारे जाने लगते हैं यथा-

रमपुरा कठवर (तालबेहट)

ख- पुरानी बस्ती के पास जब नई बस्ती बस जाती है, तब प्राचीन को सुरक्षित रखने के कारण नए स्थान के नाम में उसे (प्राचीन स्थान को) संयुक्त कर दिया जाता है। जिले की महरौनी तहसील में ऐसे स्थान नाम सर्वाधिक हैं-

पटना मड़ावरा (महरौनी) बुदनी नाराहट (महरौनी)

ग- अधिकार प्रदर्शन के कारण स्थान-नामों में नवीन पूर्वपदों, परपदों, विभेदकों तथा विशेषकों का योग होता रहता है यथा-

सेमरा बुजुर्ग (महरौनी) खिरिया मिश्र (महरौनी तथा ललितपुर)

घ- सामासिकता के कारण, यथा- खिरिया डांग (तालबेहट)।

4. वाक्यांशमूलक स्थान-नाम—इन स्थान-नामों को किसी समास के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं किया जा सकता क्योंकि इनमें संयुक्त संबंध कारक (का, की, के एवं को) अथवा अव्यय (वाला, वाली, उर्फ) व्यक्तियों एवं वस्तुओं के संबंध को प्रकट करते हैं। जिले में उच्चारण के स्तर पर कुछ स्थान नाम वाक्यांशमूलक हो जाते हैं जैसे

बहादुरसिंह वाली/की बम्हौरी- बम्हौरी बहादुर सिंह (महरौनी)

जिले के विभेदक युक्त कुछ स्थान-नामों को बोलने के समय प्राय: वाक्यांशमूलक कर दिया जाता है। नगर क्षेत्र महरौनी में अधोलिखित स्थान-नाम लिखित रूप में भी वाक्यांशमूलक हैं-

पंडों का पुरा, खरवांचो का पुरा तथा शेख का कुआंपुरा[82]

उच्चारण के स्तर पर कुछ स्थान-नामों में अव्यय पद 'उर्फ' का प्रयोग भी पाया जाता है-

मानिकपुर उर्फ मतवारा (महरौनी) बुरौगांव उर्फ चिगलउवा (महरौनी)

घिसे पूर्वपद—जिले के कुछ स्थान नामों के पूर्वपद प्रयोगाधिक्य के कारण इतने घिस गए हैं कि उनके कुछ अक्षर एवं ध्वनियां ही अवशिष्ट रह गई हैं यथा-

नैगुवां (महरौनी) सैपुरा (ललितपुर)

घिसे परपद- कुछ स्थान-नामों के परपद भी यहां इतने अधिक घिस चुके हैं कि उनका मूल स्वरूप पहचान पाना दुष्कर हो गया है-

छापछौल (महरौनी) सतलींगा (महरौनी)

उभयपद घिसे—जिले के पूर्वपद एवं परपद दोनों इतने अधिक घिस गए हैं कि दोनों पदों की व्युत्पत्ति का कोई पता नहीं चल पाता है, यथा

लरगन (महरौनी) समोंगर (महरौनी)

संदर्भ

1. श्री रामचरितमानस, बालकांड - 20/4 - 5
2. श्री ..... शर्मा, बैजनाथ विला, उरई से ..... मार्च 2007 में एक रेलयात्रा में सुना गया।
3. नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 195
4. वही, पृ. 62
5. चौमासा, जुलाई-अक्टूबर 2008 संपा. डॉ. कपिल तिवारी, श्री बसंत निरगुने का आलेख 'लोक देवी-देवता', पृ. 34-35
6. चौमासा, जुलाई-अक्टूबर 2008 संपा. डॉ. कपिल तिवारी, डॉ. महेंद्र भानावत का आलेख 'भारतीय देववाद: उद्भव और विकास, पृ. 21-22

7. चौमासा, जुलाई-अक्टूबर 2008 संपा. डॉ. कपिल तिवारी, डॉ. सरला चोपड़ा का आलेख 'लोकदेवता बाबा की उपासना', पृ. 124
8. मिथक और यथार्थ, डॉ. डी. डी. कोसंबी, अनुवादक डॉ. नंदकिशोर नवल, पृ. 114
9. चौमासा, जुलाई-अक्टूबर 2008 संपा. डॉ. कपिल तिवारी, डॉ. मालती शर्मा का आलेख 'ब्रज के देवी-देवता', पृ. 147
10. मिथक और यथार्थ, डॉ. डी. डी. कोसंबी, अनुवादक डॉ. नंदकिशोर नवल, पृ. 113
11. तदैव, पृ. 118
12. तदैव, पृ. 121
13. तदैव, पृ. 122
14. भीली लोकमाताएं, डॉ. पूरन सहगल, संपादक डॉ. कपिल तिवारी, पृ. 38
15. पाणिनिकालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 199
16. भीली लोकमाताएं, डॉ. पूरन सहगल, संपादक डॉ. कपिल तिवारी, पृ. 53-54
17. तदैव, पृ. 105
18. तदैव, पृ. 119-120
19. पाणिनिकालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 213
20. तदैव, पृ. 217
21. तदैव, पृ. 215-216
22. तदैव, पृ. 314-315
23. http://www.pustak.org/bs/home.php?mean=59431 searched on 18.8.09
24. Orissa: From Place names in Inscriptions (260 BC-1200 AD), Dr Malti Mahajan, page 71
25. वैदिक इंडैक्स, भाग 1, ए.ए. मैक्डोनेल एवं ए.बी. कीथ, अनुवादक श्री रामकुमार राय,पृ. 614
26. नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 52
27. पाणिनिकालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, पृ. 37
28. हिंदी भाषा का इतिहास, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 203
29. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, डॉ. उदय नारायण तिवारी, पृ. 307
30. हिंदी भाषा का इतिहास, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 208
31. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, डॉ. उदय नारायण तिवारी, पृ. 321
32. हिंदी भाषा का इतिहास, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 208
33. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 144
34. हिंदी भाषा का इतिहास, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 208
35. आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन, डॉ. कामिनी, पृ. 93
36. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 144
37. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, डॉ. उदय नारायण तिवारी, पृ. 310
38. तदैव, पृ. 311
39. हिंदी भाषा का इतिहास, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 209

40. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, डॉ. उदय नारायण तिवारी, पृ. 312
41. हिंदी भाषा का इतिहास, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 210
42. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, डॉ. उदय नारायण तिवारी, पृ. 313
43. हिंदी भाषा का इतिहास, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 210
44. तदैव, पृ. 210
45. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 144
46. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, डॉ. उदय नारायण तिवारी, पृ. 314
47. आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन, डॉ. कामिनी, पृ. 97
48. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 144-145
49. हिंदी भाषा, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 110
50. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 146-147
51. लेखक को दिनांक 8 अक्टूबर 2009 को 'शब्दों का सफर' के सुप्रसिद्ध ब्लॉगकार/पत्रकार अजित वडनेरकर द्वारा ई मेल से भेजी गई टिप्पणी के आधार पर
52. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 144
53. तदैव, पृ. 145
54. उद्धृत 'जनपद कानपुर के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन' (अप्रकाशित शोध प्रबंध), डॉ. सुशील कुमार पांडेय, पृ. 88
55. वैदिक इंडैक्स भाग 2, ए.ए. मैक्डोनेल एवं ए.बी. कीथ, अनुवादक श्री रामकुमार राय, पृ 328
56. शब्द परिवार कोश, डॉ. बदरीनाथ कपूर, पृ. 212
57. ज्ञान शब्द कोश, संपादक मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, पृ. 728
58. पाणिनिकालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, पृ. 230
59. भाषा-भूगोल, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 342
60. उद्धृत 'नाम विज्ञान', डॉ. चितरंजन कर, पृ. 103
61. http://shabdavali.blogspot.com/2009/07/blog-post_17.html searched on 28.9.2009
62. उर्दू हिंदी शब्दकोश, संकलनकर्ता मुहम्मद मुस्तफा खां 'मद्दाह', पृ. 468
63. नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 100-101
64. ज्ञान शब्दकोश, संपादक मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, पृ. 389
65. उर्दू हिंदी शब्दकोश, संकलनकर्ता मुहम्मद मुस्तफा खां 'मद्दाह', पृ. 513
66. तदैव, पृ. 710
67. चंदेलकालीन बुंदेलखंड का इतिहास, डॉ. अयोध्या प्रसाद पांडेय, पृ. 76
68. तदैव, पृ. 75
69. उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर्स- ललितपुर 1997, संपादक डॉ. वीरेंद्र सिंह, पृ. 234
70. 'बुंदेली बसंत' 2009, संपादक डॉ. बहादुर सिंह परमार, पृ. 37
71. प्राकृत विमर्श, डॉ. सरयू प्रसाद अग्रवाल, उद्धृत 'आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन' डॉ. कामिनी, पृ. 107

72. बुंदेली शब्दकोश, डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी, पृ. 140
73. http://www/pustak.org/bs/home.php?mean=42898 searched on 1.9.2009
74. बुंदेली शब्दकोश, डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी, पृ. 40
75. ज्ञान शब्दकोश, संपादक मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, पृ. 437
76. वैदिक इंडैक्स भाग 2, उद्धृत 'बुंदेली बसंत' 2009 में डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी का आलेख 'ललितपुर जिले के कतिपय स्थान-नामों का अनुशीलन', पृ. 65
77. http://www/pustak.org/bs/home.php?mean=60560 searched on 1.9.2009
78. हिंदी: उद्भव, विकास और रूप, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 92-93
79. भाषा विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 295-296
80. तदैव, पृ. 335
81. अभिधान अनुशीलन, डॉ. विद्याभूषण 'विभु', पृ. 48
82. http://ceouttarpradesh.nic.in/pdf2009/A226 and A227 searched on 9.9.2009

अध्याय - 3

स्थान-नामों में प्रयुक्त शब्दावली

वैदिक युग से लेकर ब्रिटिश राज और स्वातंत्र्योत्तर काल तक की शब्दावली ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में प्रयुक्त हुई है। धवा (धव)[1], दशरारा (दाशराज्ञ)[2], पड़वां (पांडव), जखौरा (यक्ष) जैसे पुराने अभिधान इस जनपद में हैं तो सुनवाहा, गिरंट, अगौड़ी गिरंट जैसे अंग्रेजी नाम भी यहां मिलते हैं। उल्लेखनीय है कि कुछ जिलों में अंग्रेजों ने जागीर-भूमि 'ग्रांट' के रूप में प्रदान की थी, जिसके कारण स्थानों के नाम के साथ परपद के रूप में इसका प्रयोग किया जाने लगा।[3] वर्तमान में गिरंट का उपयोग रक्षित वन के रूप में हो रहा है। सुभाषपुरा, आज़ादपुरा, गांधीनगर, नेहरू नगर, इंदिरा कालोनी जैसे स्वातंत्र्य संघर्ष कालीन सेनानियों एवं राजनेताओं के नामों पर ललितपुर जनपद के कस्बों और शहरों के स्थान-नाम प्रचलित हैं।

स्थान-नाम किसी भी भाषा की जीवंत शब्दावली होते हैं। स्थान-नामों में जिस शब्दावली का प्रयोग होता है, उसमें देशी संस्कृति, क्षेत्रीय भाषिक विशेषताएं, भाषाओं के मध्य सीमा-निर्धारण, भाषा अथवा बोली के भौगोलिक वितरण, भाषा के विकास की दिशाएं तथा भाषा के कालक्रम का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होने के साथ ही जन विश्वासों और स्थानीय प्रथाओं का बोध होता है।[4]

स्थान-नाम के अंतर्गत गांव, कस्बा, नगर आदि के नाम आते हैं। व्यक्ति-नामों में यादृच्छिकता होती है। यह नाम व्यक्ति के साथ (महापुरुषों के नामों को छोड़कर) समाप्त हो जाते हैं, किंतु स्थान-नामों के नामकरण में संपूर्ण आवासित समुदाय का योगदान होता है, यह दीर्घजीवी होते हैं। एक बार स्थान का नामकरण हो जाने के बाद वह कई युगों तक चलता रहता है, यद्यपि उसमें भाषिक परिवर्तन होते रहते हैं।[5]

भाषिक-परिवर्तन के कारण विभिन्न कालखंडों में बसे स्थानों के अभिधानों में अनेक विविधताएं पाई जाती हैं। तत्सम, तद्भव, देशज, ध्वन्यात्मक, विदेशी तथा स्थानीय शब्द समूह इस वैविध्य के वैयुत्पत्तिक रूप हैं।

ललितपुर जनपद की बोली बुंदेली है। यह जनपद मार्च 1974 से पूर्व झांसी

जिले का अंग रहा। 1976 ई. में हिंदी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित 'बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप' में ललितपुर को अलग जिला प्रतिदर्शित नहीं किया गया है। इसमें झांसी जनपद की बोली को 'शुद्ध बुंदेली' कहा गया है।[6] इस प्रकार ललितपुर जनपद की बोली 'शुद्ध बुंदेली' है। यह बोली शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है और यह पश्चिमी हिंदी की 5 बोलियों के समूह में से एक है।

वैदिक युग से विकसित हिंदी भाषा के अनेक पड़ाव रहे हैं। वैदिक युग में साहित्य की भाषा अलग थी और बोलचाल की अलग। बोलचाल की भाषा से ही प्राकृतों का विकास हुआ। यह प्राकृत अपभ्रंश कहे गये। पश्चिमी हिंदी समूह शौरसैनी अपभ्रंश से नि:सृत है। इसमें बुंदेली के अतिरिक्त खड़ी बोली, ब्रज, कन्नौजी तथा बांगरू (हरियाणवी) बोलियां आती हैं। हिंदी की तत्सम शब्दावली संस्कृत से ग्रहीत है। तत्सम (संस्कृत के समान) तथा तद्भव (संस्कृत से उत्पन्न) शब्दों का विशाल भंडार हिंदी की श्रीवृद्धि करता है। हिंदी में कुछ शब्द न तो प्राचीन आर्यभाषा से आए हैं और न विदेशी हैं। ऐसे शब्दों को देशी शब्द कहा गया। इन्हें देशज शब्द भी कहा गया, क्योंकि यह शब्द देश में/से उत्पन्न हैं। बाबू श्याम सुंदरदास के शब्दों में 'जिनकी व्युत्पत्ति का कोई पता नहीं चलता' देशी शब्द हैं।[7] विदेशी शब्दों के संपर्क से हिंदी की शब्दावली प्रभावित हुई है। ऐसी शब्दावली को संकर शब्दावली, विदेशी शब्द, आगत शब्द इत्यादि कहा गया है। ऐसे शब्दों में फारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी, चीनी, जापानी इत्यादि भाषाओं के शब्दों को हिंदी में मिलाकर अथवा स्वतंत्र रूप में व्यवहृत किया जाता है।

ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में स्त्रोत की दृष्टि से तत्सम, तद्भव, देशी एवं विदेशी शब्दावली का प्रयोग हुआ है। यही नहीं, यहां के कतिपय स्थान-अभिधान ध्वन्यात्मकता भी लिए हुए हैं। डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया के अनुसार 'साधारणत: जब कभी किसी नवीन शब्द का निर्माण करना होता है तो सुलभ प्रवृत्ति यही है कि उस शब्द के ध्वनि-स्फोट के अनुकूल शब्द निर्माण कर लिया जाय।'[8] संस्कृत में इस प्रवृत्ति को द्विरुक्ति कहते हैं।

ललितपुर जनपद के स्थान-नामों के बहुत से शब्द -तत्सम, तद्भव, देशी, विदेशी तथा ध्वन्यात्मक - में वर्गीकृत नहीं होते। ऐसे नाम स्थानीय शब्दावली पर आधारित हैं। इन्हें स्थानीय शब्द कहा गया है।

जैसा स्वाभाविक है यहां के स्थान-नामों में स्थानीय शब्दावली सर्वाधिक है। मोटे तौर पर स्थान-नामों में प्रयुक्त शब्दावली का प्रतिशत अधोलिखित प्रकार से है-

	शब्द	प्रतिशत
1.	तत्सम	5
2.	अर्ध तत्सम	9
3.	तद्भव	35
4.	देशी/देशज	5
5.	ध्वन्यात्मक	1
6.	विदेशी	5
7.	स्थानीय	40

किसी भी नाम-शब्द के मूल तक पहुंचने के लिए हमें उसकी व्युत्पत्ति देखनी होती है। इस प्रक्रिया द्वारा हम शब्द की व्युत्पत्ति ही नहीं, उसके विकास को भी समझ सकते हैं। व्युत्पत्ति करने के दौरान शब्द के प्रथम रूप और उसके प्रयोग के बारे में भी जाना जाता है। व्युत्पत्ति के लिए यास्क का निरुक्त ऐसा कार्य है जो भारत में ही नहीं विश्व में भी अपनी सानी नहीं रखता।[9] व्युत्पत्ति शास्त्र को अंग्रेजी में एटिमोलोजी (Etymology) कहते हैं।

1. स्थान-नामों में तत्सम शब्द -

संस्कृत से ग्रहीत इस शब्दावली में ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में यहां की बोली के अनुरूप परिवर्तन हुए हैं जैसे -

कठवर (तालबेहट) सहसा (तालबेहट)

हर्षपुर (तालबेहट) कलरव (ललितपुर)

यहां 36 स्थान-नाम तत्सम हैं। उल्लेखनीय है कि इस संख्या में नगर के मोहल्लों के नाम सम्मिलित नहीं है।

जिले के स्थान-नामों में संस्कृत से रूपांतरित उपसर्ग एवं प्रत्यय भी पाए जाते हैं -

(क) तत्सम उपसर्ग + तत्सम शब्द

वि	+	जयपुरा	=	विजयपुरा (तालबेहट)
अ	+	मरपुर	=	अमरपुर (महरौनी)

(ख) तत्सम प्रत्यय + तत्सम शब्द

वस्त्र	+	आवन	=	वस्त्रावन (तालबेहट)
दर्भ	+	अवनी	=	दावनी (ललितपुर)
गंगा	+	आरी	=	गंगारी (ललितपुर)
सारस	+	अरण्य	=	सारसेंड़ (तालबेहट)

(ग) तद्भव उपसर्ग + तत्सम शब्द

दुर	+	जनपुरा	=	दुर्जनपुरा (ललितपुर)

(घ) तद्भव प्रत्यय + तत्सम शब्द

चिर	+	औला	=	चिरौला (महरौनी)
सुक	+	आड़ी	=	सुकाड़ी (महरौनी)
आम	+	औरा	=	अमौरा (महरौनी)
कोक	+	अटा	=	कोकटा (ललितपुर)

(ङ) तत्सम शब्द + तत्सम परपद

हर्ष	+	पुर	=	हर्षपुर (तालबेहट)
गंगा	+	सागर	=	गंगासागर (महरौनी)
उदय	+	पुरा	=	उदयपुरा (महरौनी)
हनू	+	पुरा	=	हनूपुरा (तालबेहट)
राज	+	पुर	=	राजपुर (तालबेहट)
देव	+	गढ़	=	देवगढ़ (ललितपुर)

(च) हिंदी पूर्वपद + तत्सम शब्द

मकरी	+	पुर	=	मकरीपुर (महरौनी)
गदन	+	पुर	=	गदनपुर (महरौनी)

(छ) पुरा—ललितपुर जनपद में यह विभेदक स्थान-नामों के पूर्व एवं पश्चात् दोनों जगह मिलता है संस्कृत शब्द 'पुरा' का अर्थ है प्राचीन काल में, पहले, अब तक।[10] यह शब्द अब बस्ती या गांव के अर्थ में रूढ़ हो गया है।

कनपुरा (महरौनी)
पुराधंधकुआं (महरौनी)

2. स्थान-नामों में अर्ध तत्सम शब्द -

जहां कुछ भाषा विज्ञानी इस वर्ग के शब्दों को तत्सम वर्ग में ही वर्गीकृत करते हैं, वहीं डॉ. उदय नारायण तिवारी के अनुसार यह शब्दावली तत्सम के अति निकट होती है, किंतु तद्भव नहीं होती है।[11] तद्भव और तत्सम के बीच की शब्दावली को इस प्रकार अर्ध तत्सम कह सकते हैं। यह शब्दावली ललितपुर जिले के स्थान-नामों में लगभग 9 प्रतिशत प्रयुक्त हुई है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं -

बैजनाथ (महरौनी)
नटराई (तालबेहट)
जामुनधाना (ललितपुर)

बानपुर (महरौनी)

उपर्युक्त उदाहरणों में प्रथम स्थान- नाम का पूर्वपद 'बैज', द्वितीय स्थान-नाम के दोनों पद 'नट' तथा 'राई', तृतीय स्थान-नाम का पूर्व पद 'जामुन' तथा परपद 'धाना' एवं चतुर्थ स्थान-नाम का पूर्व पद 'बान' अर्ध तत्सम हैं। संस्कृत 'वैद्य' से 'बैज', 'नृत्य' तथा 'राय' से 'नटराई', 'जम्ब' तथा 'स्थान' से 'जामुनधाना' तथा 'बाण' से 'बान' का उद्भव सहज बोधगम्य है।

3. स्थान-नामों में तद्भव शब्द -

ललितपुर जनपद के स्थान-अभिधानों में लगभग 35 प्रतिशत तद्भव शब्द व्यवहृत हुए हैं। पं. कामता प्रसाद गुरु के अनुसार तद्भव वे शब्द हैं जो शब्द सीधे प्राकृत से हिंदी भाषा में आ गए हैं या संस्कृत से प्राकृत द्वारा निकले हैं।[12] इस प्रकार ऐसे शब्दों का मूल संस्कृत अथवा प्राकृत है। हिंदी तक आते-आते यह शब्दावली पर्याप्त रूपांतरित हो गई है। डॉ. कैलाश चंद्र अग्रवाल के मत से हिंदी में तद्भव शब्दावली अपभ्रंश तथा प्राकृत द्वारा आई है।[13] वर्तमान में हिंदी के लगभग आधे शब्द तद्भव हैं। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं -

थाना (तालबेहट)
जखौरा (तालबेहट)
बड़ोखरा (महरौनी)
परसई (महरौनी)

(क) तत्सम उपसर्ग + तद्भव शब्द

वि	+	जौरी	=	विजौरी (ललितपुर)
अ	+	जान	=	अजान (महरौनी)

(ख) तद्भव शब्द + तत्सम प्रत्यय

बुद	+	आवनी	=	बुदावनी (तालबेहट)
बिर	+	आरी	=	बिरारी (ललितपुर)

(ग) तद्भव शब्द + तद्भव प्रत्यय

बर	+	खेरा	=	बरखेरा (ललितपुर)
पड़	+	ओरिया	=	पड़ोरिया (ललितपुर)
तिल	+	अहरी	=	तिलहरी (ललितपुर)
बर	+	तला	=	बरतला (महरौनी)
कुंभ	+	अरण्य	=	कुम्हैड़ी (महरौनी)

(घ) तद्भव पूर्वपद युक्त स्थान-नाम -

खैरा (तालबेहट)

खिरिया (तीनों तहसीलों में कुल बारह)

(ङ) तद्भव परपद युक्त स्थान-नाम –

खेड़ा / खेरा / खिरिया (परपद युक्त स्थान-नामों की संख्या ललितपुर जिले में- तालबेहट में तीन, महरौनी में तीन तथा ललितपुर में पांच- कुल ग्यारह हैं)

कुआतला (ललितपुर)

बनगुवां (महरौनी)

(च) तद्भव शब्द + तत्सम परपद

बाला	+	बेहट	=	बालाबेहट (ललितपुर)
कोर	+	वास	=	कोरवास (महरौनी)
लखन	+	पुरा	=	लखनपुरा (ललितपुर)
बैद	+	पुर	=	बैदपुर (महरौनी)

(छ) तत्सम पूर्वपद + तद्भव शब्द

वर्मा	+	बिहार	=	वर्मा बिहार (तालबेहट)

(ज) तद्भव पूर्वपद + तत्सम शब्द

कुआ	+	घोसी	=	कुआघोसी (महरौनी)

4. स्थान-नामों में देशज शब्द –

'अज्ञात वैयुत्पत्तिक' शब्द ही 'देशज' हैं। 'हिंदी व्याकरण' में पं. कामता प्रसाद गुरु ने कहा है 'देशज' वे शब्द हैं, जिनका मूल न तो संस्कृत में उपलब्ध होता है और न ही प्राकृत में मिलता है।[14] 'देशी नाम माला' के रचइता हेमचंद के अनुसार निम्नलिखित शब्द देशी नहीं है –

क –संस्कृत अभिधानों (कोश ग्रंथ) में प्राप्त

ख –संस्कृत व्याकरण से जो सिद्ध हो सकते हों और

ग – जिन शब्दों का अर्थ गौण लक्षणा-शक्ति द्वारा परिवर्तित हो गया हो।

उल्लेखनीय है कि एक विद्वान जिस शब्द को 'देशी' कहता है, दूसरा उसको तद्भव घोषित कर देता है। अत: डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया की मान्यता है कि 'अगर व्युत्पत्ति को ही आधार माना जाए तो जब तक कोई व्यक्ति किसी शब्द की उचित व्युत्पत्ति न ढूंढ़ ले तब तक वह देशी कहा जाएगा और व्युत्पत्ति ज्ञात होते ही वह अन्य कोटि में चला जाएगा'।[15] प्रकृति और व्युत्पत्तिक स्त्रोत ज्ञात न हो पाने के कारण इस वर्ग के शब्दों की संख्या कम होती है। इनकी संख्या अनुमानित ही कही जा सकती है। ललितपुर जिले के स्थान-नामों में देशज शब्दावली लगभग 5

प्रतिशत उपलब्ध है, यथा –

बारचौन (महरौनी)
भूषरा (महरौनी)
मामदा (ललितपुर)
रारा (तालबेहट)

(क) देशज प्रत्यय युक्त स्थान-नाम

महर्रा (ललितपुर)
बजर्रा (ललितपुर)
मैखुवां (ललितपुर)
नैगुवां (महरौनी)
मौगान (महरौनी)

(ख) देशज शब्द + तद्भव प्रत्यय

जिलौनी (महरौनी)
भुचेरा (तालबेहट)

(ग) देशज शब्द + तत्सम परपद

छितरापुर (महरौनी)
आकापुर (ललितपुर)

(घ) देशज शब्द + तद्भव पूर्वपद

खिरिया भारंजू (महरौनी)
खिरिया लटकनजू (महरौनी)

(ङ) देशज शब्द + तद्भव परपद

कारी पहाड़ी (तालबेहट)
नत्थीखेड़ा (तालबेहट)
कारोखेत (तालबेहट)
उगरपुर (तालबेहट)

(च) देशज विभेदक युक्त स्थान-नाम –

खैरा डांग (तालबेहट)
खैरी डांग (तालबेहट)

5. स्थान-नामों में ध्वन्यात्मक शब्द

ध्वन्यात्मक शब्द प्राचीन काल से ही चले आ रहे हैं। यह शब्द नवीन प्रत्ययों के साथ बदलते भी रहते हैं। साधारणत: जब कभी किसी नए शब्द का निर्माण

करना होता है तो सुलभ प्रवृत्ति यही है कि उस शब्द के ध्वनि-स्फोट के अनुकूल शब्द-निर्माण कर लिया जाय। इसीलिए बालक फटफट करती हुई मोटर साइकिल को स्वभावत: फटफटिया कहने लगता है।

ललितपुर जिले के स्थान-नामों में यह शब्दावली स्वल्प ही पाई गई है।

जैसे -

डगडगी (महरौनी)
सरखड़ी (महरौनी)
म्यांव (तालबेहट तथा ललितपुर)

उपर्युक्त प्रथम ध्वन्यात्मक अभिधान में 'डग' शब्द की द्विरुक्ति हुई है। अंत्य 'डग' में 'ई'कारांत किया गया है। यह ध्वन्यात्मकता अर्थ के साथ-साथ उच्चारण के स्तर पर भी अत्यंत प्रखर और प्रभावोत्पादक है। 'डगडगी' एक बुंदेली ध्वन्यात्मक शब्द प्रयोग है जिसका अर्थ है 'डर लगना'। द्वितीय स्थान नाम 'सरखड़ी' का उच्चरित रूप 'सड़खड़ी' है। 'सड़' संस्कृत 'सण' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ शब्द या आवाज़ है।[16] डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया ने सड़-सड़ का अर्थ 'कोड़े की ध्वनि' लिखा है।[17] खड़ी शब्द, क्षेत्र से व्युत्पन्न हुआ है। 'खड़-खड़' पश्रों की ध्वनि भी होती है।[18] तृतीय शब्द 'म्यांव' बिल्ली की ध्वनि है। ध्वनियों की प्रभावोत्पादकता के कारण म्याऊं शब्द यहां बिल्ली के पर्याय के रूप में प्रयुक्त हो रहा है। ध्वन्यात्मक शब्दावली में अधिकतर क्रियार्थक संज्ञा शब्द हैं। पं. कामता प्रसाद गुरु ने पदार्थ की यथार्थ अथवा कल्पित ध्वनि को ध्यान में रखकर बनाए गए शब्दों को अनुकरण वाचक शब्द कहा है।[19] उपर्युक्त 'म्यांव' शब्द इसी श्रेणी का है।

6. स्थान-नामों में विदेशी शब्द -

विदेशी शब्दों को हम आगत शब्द भी कहते हैं, क्योंकि ऐसे शब्द अन्य भाषाओं से आए होते हैं। प्रयत्नलाघव अर्थात् मुखसुख तथा विदेशीपन के कारण भाषाओं में आगत शब्दों का सम्मिश्रण हो जाता है। इन्हें जान-बूझकर कोई उधार नहीं लेता और लेता है तो फिर 'लोन' की भांति ब्याज सहित अथवा ब्याज-रहित लौटाता नहीं है। हिंदी में भी विभिन्न कुलों की भाषाओं और बोलियों से शब्द आकर सम्मिलित हो गए हैं। जीवन की बढ़ती हुई आवश्यकताओं, यातायात की सुविधाओं तथा संपर्क की अनिवार्यता ने संसार की किसी भी भाषा को शुद्ध नहीं रहने दिया है।[20] विदेशी शब्दावली जहां ध्वनि और रूप के धरातल पर परिवर्तित होकर आई है, वह स्वाभाविक हो गई है।[21] यह आवश्यक नहीं कि दिया गया शब्द विदेशी भाषा का हो ही। हां, वह शब्द विदेशी भाषा में प्रयुक्त अवश्य हो रहा है।

दुर्भाग्यवश, हमारे देश में अनेक विदेशी शासक रहे। ऐसे में इन शासकों और इनकी भाषाओं का प्रभाव यहां की बोलियों, तदनुक्रम स्थान नामों पर भी पड़ना ही था। नए बसाए जाने वाले स्थान-नामों को अपने शासक की भाषा के अनुकूल होना पड़ता है। ललितपुर जिले के स्थान-नामों में इस प्रकार की प्रवृत्तियां अधोलिखित रूपेण हैं -

(क) अरबी से ग्रहीत शब्द

जिले के विभेदक तथा मूल शब्दों को मिलाकर कुल 15 स्थान-नामों में अरबी शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

1. अजान (महरौनी) - नमाज के लिए की जाने वाली घोषणा
2. बरोदी नक़ीब (ललितपुर)
3. फौजपुरा (ललितपुर)
4. जमालपुर (तालबेहट)
5. जमौरा माफी (तालबेहट)
6. मऊ माफी (ललितपुर)
7. रुकवाहा (महरौनी)
8. बिनेका माफी (तालबेहट)
9. गर्रोली माफ (महरौनी)
10. कवराटा (महरौनी)- 'कबरा' कई रंगों का मिश्रण भी है।
11. दौलतपुर (महरौनी)
12. दौलता (तालबेहट)
13. नगदा (तालबेहट)
14. हदबाहर नगरपालिका-ललितपुर
15. ललितपुर अंदर हद -ललितपुर
16. आलापुर (ललितपुर)
17. हद्दा (महरौनी)

उपर्युक्त स्थान-नामों में अज़ान (नमाज़ के लिए की जाने वाली घोषणा)[22]; नक़ीब (वह व्यक्ति होता है, जो राजाओं आदि की सवारी के आगे-आगे उनके वंश का यश गाता चलता है);[23] फौज; जमाल (सुंदरता, शोभा, ईश्वर का माधुर्य)[24]; रुक; कब्र; दौलत; आला (सर्वश्रेष्ठ)[25]; हद तथा नक़द शब्द अरबी भाषा के हैं। 'अज़ान' अजान भी हो सकता है जो अज्ञान का विकसित रूप है। 'नगदा' नक़द का

अपभ्रंश रूप समझा जा सकता है, किंतु स्थान-नामों के संदर्भ में नागदेव से इसका विकास होना तर्कसंगत लगता है।

(ख) फारसी से ग्रहीत शब्द -

ललितपुर जिले के स्थान नामों में 17 बार फारसी के शब्द विभिन्न दशाओं में प्रयुक्त हुए हैं। यथा -

1.	सजा	(ललितपुर)
2.	शाहपुर	(तालबेहट) शाह- गोंड़ तथा बुंदेला राजाओं की उपाधि
3.	बख्तर	(ललितपुर)
4.	चांदपुर	(ललितपुर)
5.	चांदरो	(तालबेहट)
6.	बदनपुर	(तालबेहट)
7.	बार	(तालबेहट)
8.	खाकरौन	(महरौनी)
9.	हजारिया	(तालबेहट)
10.	शहजाद बांध	(तालबेहट)- सह्याद्रि का भाषा-परिवर्तन
11.	आज़ादपुरा	ललितपुर
12.	तालाबपुरा	ललितपुर
13.	कटरा बाजार	ललितपुर
14.	तुरका	(तालबेहट)-तोरका (टुकड़ा) से विकसित संभव
15.	जरया	(महरौनी)
16.	जरावली	(महरौनी) जर- भारशिवों से संबंधित हैं।
17.	बगौनी	(महरौनी)-बाग घोड़े की लगाम को भी कहते हैं।

उपर्युक्त स्थान-नामों में शाह, बख्तर, चांद, बदन, बहार खाक, हजार, शहज़ाद (राजकुमार), आज़ाद, तालाब, कटरा बाज़ार (छोटा चौकोर बाज़ार), तुर्क[26], ज़र (धन) तथा बाग शब्द फारसी भाषा में व्यवहृत होते हैं। इनमें से तुरका, शहजाद जैसे कुछ शब्द देशज हैं। इनके अतिरिक्त कुछ निम्नलिखित विभेदक शब्द भी ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में फारसी से ग्रहीत हुए हैं -

1. खुर्द–इसका अर्थ छोटा या लघु होता है।[27] यह विभेदक ललितपुर जिले में 32 बार प्रयुक्त हुआ है। यह विभेदक प्रत्यय युक्त स्थान-नामों के अतिरिक्त परपद युक्त स्थान-नामों में भी व्यवहृत हुआ है -

परपद युक्त फारसी विभेदक स्थान-नाम

भैसनवारा खुर्द (तालबेहट)

जामुनधाना खुर्द (ललितपुर)

प्रत्यय युक्त फारसी विभेदक स्थान-नाम

मसौरा खुर्द (ललितपुर)

2. कलां—इसका अर्थ बड़ा होता है।[28] ललितपुर जिले में 'खुर्द' की ही तरह दोनों प्रकार के स्थान-नामों के साथ यह विभेदक 28 बार प्रयुक्त हुआ है—

परपद युक्त फारसी विभेदक स्थान-नाम

कचनौंदा कलां (ललितपुर)

सांकरवार कलां (ललितपुर)

प्रत्यय युक्त फारसी विभेदक स्थान-नाम

नैगाय कलां (ललितपुर)

3. शहना—यह शहनाई का संक्षिप्त रूप है, जो यहां के एक स्थान-नाम में मिलता है-

बम्हौरी शहना (तालबेहट)

4. जागीर—यह विभेदक जिले में एक बार प्रयुक्त हुआ है -

पिपरिया जागीर (ललितपुर)

5. वीरान—विभेदक के रूप में एक बार ही यह शब्द प्रयुक्त है -

उमरिया वीरान (ललितपुर)

6. बुजुर्ग—यह विभेदक दो बार प्रयुक्त हुआ है -

सेमरा बुजुर्ग (महरौनी)

गुढ़ा बुजुर्ग (महरौनी)

7. खालसा—एक बार इस विभेदक का प्रयोग हुआ है -

सैपुरा खालसा (ललितपुर)

8. मुजुप्ता—एक बार इस शब्द का विभेदक रूप में प्रयोग हुआ है। इसका अर्थ किता या ज़मीन का टुकड़ा है।[29] यह अरबी मुज़ाफ़ात का बोलीरूप है।

सैपुरा मुजुप्ता (ललितपुर)

9. विघा—यह विभेदक जिले में पूर्वपद के रूप में प्रयुक्त हुआ है -

विघा महावत (ललितपुर)

10. बाग़—विभेदक के रूप में यह ललितपुर जनपद में एक बार प्रयुक्त हुआ है। यहां की बोली में यह शब्द बहुप्रचलित है-

पिसनारी बाग (ललितपुर)

11. आना—डॉ. उदयनारायण तिवारी के अनुसार इस प्रत्यय की उत्पत्ति फारसी 'आन' से हुई है।[30] इस प्रत्यय से निर्मित चार स्थान-नाम इस जनपद में हैं—

बनयाना (महरौनी)
गुरयाना (महरौनी)
डगराना (महरौनी)
बमराना (महरौनी)

(ग) तुर्की से ग्रहीत शब्द

जिले के स्थान-नामों में तुर्की का स्थान-नाम एक बार प्रयुक्त हुआ है।

बहादुरपुर (महरौनी)

(घ) अंग्रेजी से ग्रहीत शब्द

नगर क्षेत्रों के सिविल लांइस, पुलिस लाइन जैसे मोहल्ला-नामों को छोड़कर इस जिले के ग्राम-नामों में अंग्रेजी का कोई स्वतंत्र शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है। जिले की महरौनी तहसील में पांच ग्राम-नामों के साथ विभेदक के रूप में अंग्रेजी 'गिरंट' शब्द व्यवहृत हुआ है। 'गिरंट' का अर्थ 'रक्षित वन' किया गया है।[31] जिले के 'गिरंट' विभेदक प्रयुक्त ग्रामों में यह रक्षित वन अभी अस्तित्व में हैं। वस्तुत: कुछ जिलों में अंग्रेजों ने जागीर-भूमि 'ग्रांट' के रूप में प्रदान की थी। जिसके कारण स्थानों के नाम के साथ इसका परपद के रूप में प्रयोग किया जाने लगा।

1.	अगौड़ी	गिरंट
2.	टीकरा	गिरंट
3.	सिलावन	गिरंट
4.	सुनवाहा	गिरंट
5.	बीर	गिरंट

(ङ) जापानी से ग्रहीत शब्द -

जिले का एक ग्राम-नाम बरास्ता अंग्रेजी, जापानी भाषा से आगत हुआ है-

रक्सा (तालबेहट)

7. स्थान-नामों में स्थानीय शब्द

विस्तृत बुंदेली भाषी विस्तृत क्षेत्र का कोई ऐसा व्यवसाय नहीं, जिससे संबंधित क्रिया-कलाप एवं उन की अभिव्यक्ति के लिए बुंदेली के अपने शब्द न हों। डॉ. कृष्णलाल 'हंस' के अनुसार एक ही वस्तु की विभिन्न स्थितियों से संबंधित जितने

नाम रूप बुंदेली में उपलब्ध हैं, उतने कदाचित् ही हिंदी की किसी अन्य बोली में उपलब्ध हों। उदाहरणार्थ- प्रात: काल के विभिन्न क्षणों के लिए उपलब्ध शब्द देखिए - मरवारनौलें, तराऊंगे, भुनसरिया, भुनसारो, पीरे बादरें, भ्याने, सोकारूं, भोरभए। संध्याकाल के द्योतक शब्द-लोलइयन, संजा, डिंडूबे, अथएं आदि हैं।[32]

लोकजीवन के क्रिया-कलापों को व्यक्त करने वाली स्थानीय शब्दावली सूक्ष्मातिसूक्ष्म अर्थ बोध कराने में पूर्ण समर्थ होती है। ललितपुर जिले के स्थान-नामों में यह शब्दावली स्वतंत्र रूप से, प्रत्ययों सहित, पूर्वपद, परपद तथा समस्त पदों के रूप में प्रयुक्त हुई है। इन बदले हुए रूपों में कारण तत्सम, अर्धतत्सम, तद्भव, विदेशी शब्दों से ध्वनि और रूप-रचना के स्तर पर प्रत्येक शब्द जैसे स्थानीय हो जाता है। स्थानीय शब्दावली अर्थ-द्योतन में समर्थ होने के साथ-साथ प्रभावोत्पादक भी बन पड़ी है, यथा -

	टोड़ी	(तालबेहट)
	कुर्रट	(महरौनी)
	पटका	(महरौनी)
	भैरा	(महरौनी)
	बरेजा	(महरौनी)
	ककोरिया	(ललितपुर)

(क) स्थानीय पूर्वपद -

यथा-	गेवरा गुंदेरा	(तालबेहट)
	जमौरा माफी	(तालबेहट)
	बम्हौरी शहना	(तालबेहट)
	खिरिया मिश्र	(महरौनी तथा ललितपुर)
	खैरी डांग	(तालबेहट)
	बिनेका टोरन	(तालबेहट तथा ललितपुर)

उपर्युक्त स्थान-नामों में गेवरा - विषखोपड़ा, जमौरा - यम, बम्हौरी - ब्रह्मा और विष्णु, खिरिया - क्षेत्र, खैरी - खदिर, बिनेका - विनायक शब्द स्थानीय हैं।

(ख) स्थानीय परपद -

यथा-	बरौदा डांग	(तालबेहट)
	खिरिया उवारी	(महरौनी)
	बालाबेहट	(ललितपुर)
	दारूतला	(महरौनी)

उपर्युक्त स्थान-नामों में 'डांग' शब्द वन का स्थानीय रूप है तो 'उवारी'

निस्तार करने योग्य भूमि का, 'बेहट' गांव का और 'तला' तालाब का स्थानीय रूप है।

(ग) प्रत्यय युक्त स्थान-नाम -

यथा-	मावलैन	(तालबेहट)
	घुटारी	(ललितपुर)
	घिसौली	(ललितपुर)
	नुनावली	(ललितपुर)

उपर्युक्त स्थान-नामों में मावली माता (मातृ देवी)[33], घोंट, घिस तथा लवण मूल शब्द है और इनमें क्रमश: ऐन, आरी, औली तथा अवली प्रत्यय संयुक्त हुए हैं।

(घ) स्थानीय शब्द + तद्भव परपद -

यथा-	रमगढ़ा	(महरौनी)
	बकसपुर	(महरौनी)
	बलरगुवां	(तालबेहट)
	पुराधंधकुवां	(महरौनी)

(ड.) स्थानीय शब्द + तत्सम परपद -

यथा-	कनपुरा	(महरौनी)
	धौरी सागर	(महरौनी)
	तालबेहट	(तालबेहट)
	बर्मा बिहार	(तालबेहट)

(च) स्थानीय वनस्पति बोधक स्थान-नाम -

यथा-	कपासी	(ललितपुर)	कपास
	गुगरवारा	(ललितपुर)	गुग्गुलु
	धवारी	(महरौनी)	धव वृक्ष[34]
	गूगर	(तालबेहट)	गुग्गुलु
	बूटी	(महरौनी)	औषधीय पादप

(छ) स्थानीय जाति उपजाति बोधक स्थान-नाम -

यथा-	कुर्रट	(महरौनी)	कोरी
	कोरवास	(महरौनी)	कोरी
	बनयाना	(महरौनी)	बनिया
	सोंरई	(महरौनी)	सहरिया
	चमरउवा	(ललितपुर)	चमार
	बमनौरा	(ललितपुर)	ब्राह्मण

सुकलगुवां	(महरौनी)	शुक्ल ब्राह्मण
बमनगुवा	(तालबेहट)	ब्राह्मण
खिरिया मिश्र	(महरौनी तथा ललितपुर)	मिश्र ब्राह्मण
टीकरा तिवारी	(ललितपुर)	तिवारी ब्राह्मण
कुमरौला	(ललितपुर)	कुम्हार
धोवन खेरी	(ललितपुर)	धोबी
चढ़रा	(महरौनी)	चढ़ार
चढरऊ	(महरौनी)	चढ़ार

(ज) स्थानीय भूमिदशा बोधक स्थान-नाम -

यथा- ककरुवा (ललितपुर)
टौरिया (ललितपुर)
पठा (महरौनी)
पठराई (ललितपुर)

(झ) स्थानीय संख्या वाचक स्थान-नाम -

यथा- चौमहू (महरौनी)
पंचमपुर (ललितपुर)
तेरई (तालबेहट)

(ञ) स्थानीय संपन्नता बोधक स्थान-नाम -

यथा- दौलतपुर (महरौनी)
ठाठखेड़ा (तालबेहट)
सुखपुरा (ललितपुर)
हर्षपुर (तालबेहट)
दैनपुरा (महरौनी)

(ट) स्थानीय विपन्नता बोधक स्थान-नाम -

यथा- भैरा (महरौनी)
प्यासा (महरौनी)
कंगीरपुरा (महरौनी) ग़रीब[35]
गुंदरापुर (महरौनी) मिट्टी से बने कच्चे घर
अंधियारी (ललितपुर)
छपरा (महरौनी)
खाकरौन (महरौनी)
पीड़ार (महरौनी)

भड़रा (ललितपुर)

(ठ) स्थानीय शरीर संबंधी स्थान-नाम -

यथा- नैनपुर (महरौनी)

बूचा (ललितपुर) - कान कटा हुआ

(ड) स्थानीय फल संबंधी स्थान-नाम -

यथा- गुलेंदा (तालबेहट) - महुआ का फल

निवारी (महरौनी) - नीम का फल

(ढ) स्थानीय जीव-जंतु संबंधी स्थान-नाम -

यथा- भंवरकली (तालबेहट)

मगरपुर (महरौनी)

(ण) स्थानीय पशु संबंधी स्थान-नाम -

यथा- रिछा (ललितपुर)

बिल्ला (महरौनी)

(त) स्थानीय पक्षी संबंधी स्थान-नाम -

यथा- सुकाड़ी (महरौनी)

गिदवाहा (महरौनी)

(थ) स्थानीय वृक्ष संबंधी स्थान-नाम -

यथा- खजुरिया (ललितपुर)

महुआ खेड़ा (महरौनी)

(द) स्थानीय खेती संबंधी स्थान-नाम -

यथा- बरेजा (महरौनी) पान की खेती

ऐरावनी (ललितपुर) फसल की सिंचाई

(ध) स्थानीय जलाशय संबंधी स्थान-नाम -

यथा- बरतला (महरौनी)

झरर (तालबेहट)

(न) वाक्यांश मूलक स्थान-नाम -

यथा- हदबाहर नगर पालिका (ललितपुर)

बम्हौरी बहादुर सिंह की (महरौनी)

स्थानीय प्रकृति के अनेक शब्द ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में प्रयुक्त हुए हैं। जिले के समस्त स्थान-नामों में से लगभग 40 प्रतिशत स्थानीय शब्दावली पर आधारित हैं। अर्थ की दृष्टि से इनका विवेचन अध्याय-चार में प्रस्तुत किया गया है।

8. स्थान-नामों में संकर शब्द

डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया के अनुसार संकर शब्दावली के अंतर्गत उन सभी सामासिक शब्दों को रखा जा सकता है, जिनका निर्माण किन्हीं दो या दो से अधिक भाषा परिवारों से लिए गये शब्दों से किया गया है।[36] डॉ. रघुवीर ने इनको 'प्रसंकर' कहा था।

ललितपुर जिले के स्थान-नामों में हुए प्रयुक्त संकर शब्दों के आधार पर निम्नलिखित भेद किए जा सकते हैं –

(क) विदेशी पूर्वपद + देशी परपद – यथा–

1.	तुर्की	+	संस्कृत	–	बहादुरपुर (महरौनी)
2.	फारसी	+	संस्कृत	–	शाहपुर (तालबेहट)
					बदनपुर (तालबेहट)
					शहजाद बांध (तालबेहट)
3.	फारसी	+	हिंदी	–	चांदरो (तालबेहट) बगौनी (महरौनी)
4.	अरबी	+	संस्कृत	–	दौलतपुर (महरौनी)
	आला	+	पुर (ललितपुर)	–	हदबाहर नगर पालिका (ललितपुर)
5.	अरबी	+	हिंदी	–	नगदा (तालबेहट)
					फौजपुरा (ललितपुर)

(ख)देशी पूर्वपद + विदेशी परपद – यथा–

1.	तत्सम	+	फारसी	–	गढ़ौली कलां (महरौनी)
					पहाड़ी खुर्द (महरौनी)

ध्यातव्य है कि कुछ विद्वान ओद/औंदा/औंधा को फारसी प्रत्यय मानते हैं किंतु डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया के अनुसार यह पद्र का विकसित रूप है (यह गांववाची शब्द है, जिसका प्राकृत रूप 'पद्द' (पाइआसद्धमहण्णवो-659) मिलता है।[37]

जैसे – कचनौंदा (ललितपुर)
करौदा (महरौनी)

इसी तरह अन/आन/आना संस्कृत 'आणि' का विकसित रूप है, जिसका अर्थ है किनारा, हद या सीमा।[38] जबकि डॉ. उदयनारायण तिवारी 'आना' प्रत्यय को फारसी से ग्रहीत स्वीकार करते हैं।

2.	तद्भव	+	फारसी	–	जामुनधाना कलां (ललितपुर)
					पुरा खुर्द (तालबेहट)

3. हिंदी + अरबी – जमौरा माफी (तालबेहट)
बरोदी नकीब (ललितपुर)
बिनेका माफी (तालबेहट)
4. हिंदी + अंग्रेजी – बीर गिरंट (महरौनी)
सुनवाहा गिरंट (महरौनी)

विदेशी शब्दों को बुंदेली प्रकृति के अनुकूल भी यहां के स्थान-नामों में ढाल दिया गया है - जैसे जापानी शब्द रिक्शा को रक्सा (तालबेहट) कहा जाना।

(ग) वाक्यांश मूलक संकर स्थान-नाम - यथा-

स्थानीय + तुकी + संस्कृत
बम्हौरी बहादुर सिंह (महरौनी)
स्थानीय + तुकी + स्थानीय
बुरौगांव उर्फ चिगलउवा (महरौनी)

यह स्थान-नाम ललितपुर जिले में बहुधा उच्चारणगत ही है।

(घ) बहुपदीय संकर स्थान-नाम -

शेख का कुआंपुरा-महरौनी

अंत में ललितपुर जिले के स्थान-नामों की संख्यात्मक स्थिति उनमें प्रयुक्त शब्दावली के अनुसार इस प्रकार है-

(अ)	एकपदीय स्थान-नाम	–	274
(आ)	द्विपदीय स्थान-नाम	–	404
(इ)	बहुपदीय स्थान-नाम	–	66
(ई)	वाक्यांश मूलक स्थान-नाम	–	3
	योग	–	747

जिले के स्थान-नामों में प्रयुक्त उपसर्ग एवं प्रत्यय

(क)	उपसर्ग	–	4
(ख)	प्रत्यय	–	103

जिले के स्थान-नामों में प्रयुक्त विभेदक

(क)	देशी शब्द	–	27
(ख)	विदेश शब्द	–	12

जिले के द्विपदीय स्थान-नामों में प्रयुक्त पूर्वपद एवं परपद

(क)	पूर्वपद	–	56
(ख)	परपद	–	167

संदर्भ

1. वैदिक इंडैक्स भाग 1, ए.ए. मैक्डोनेल एवं ए.बी. कीथ, अनुवादक श्री रामकुमार राय, पृ. 446
2. तदैव, पृ. 397
3. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 141
4. भाषा-भूगोल, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 340
5. नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 133
6. बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ. कृष्णलाल 'हंस', पृ. 440
7. उद्धृत, शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 61
8. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 69
9. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 40
10. ज्ञान शब्दकोश, सं. मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, पृ. 488
11. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, डॉ. उदयनारायण तिवारी, पृ. 211
12. हिंदी व्याकरण, पं. कामता प्रसाद गुरु, पृ. 23
13. आधुनिक हिंदी व्याकरण तथा रचना, डॉ. कैलाश चंद्र अग्रवाल, पृ. 24
14. हिंदी व्याकरण पं. कामता प्रसाद गुरु, पृ. 23
15. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 61
16. अवध के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ. सरयू प्रसाद अग्रवाल, पृ. 244
17. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 75
18. तदैव, पृ. 71
19. हिंदी व्याकरण, पं. कामता प्रसाद गुरु, पृ. 25
20. आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन, डॉ. कामिनी, पृ. 137
21. हिंदी व्याकरण, पं. कामता प्रसाद गुरु, पृ. 25
22. ज्ञान शब्दकोश, सं. मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, पृ. 19
23. तदैव, पृ. 389
24. ज्ञान शब्दकोश, सं. मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, पृ. 273
25. उर्दू हिंदी शब्दकोश, मु. मुस्तफा खां 'मद्दाह', पृ. 44
26. हिंदी भाषा का इतिहास, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 303 के अनुसार यह तुर्की भाषा का शब्द है।
27. http://www.lrfca.org/docs/place-names.html, searched on 21.12.08
28. -do- searched on 21.12.08
29. 11.02.09 से 03.03.09 तक सी.पी.डी.एच.ई. दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में चले हिंदी विषय के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में दिनांक 26.02.09 के प्रथम सत्र के रिसोर्स पर्सन प्रो. चंद्रशेखर अरबी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय से हुई वार्ता के आधार पर।
30. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, डॉ. उदयनारायण तिवारी, पृ. 328
31. बुंदेली शब्दकोश, डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी, पृ. 74

32. बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ. कृष्णलाल 'हंस' पृ. 123
33. मिथक और यथार्थ, डॉ. दामोदर धर्मानंद कोसंबी, अनुवादक डॉ. नंदकिशोर नवल, पृ. 80
34. वैदिक इंडैक्स भाग 1, ए.ए. मैक्डोनेल एवं ए.बी. कीथ, अनुवादक श्री रामकुमार राय, पृ 328
35. बुंदेली शब्दकोश, डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी, पृ. 40
36. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 66
37. तदैव, पृ. 145
38. तदैव, पृ. 144

अध्याय - 4

स्थान-नामों का अर्थतात्विक आधार

अर्थ और परिभाषा—नाम की व्युत्पत्ति हलायुधकोश के अनुसार है- 'म्नायते अभ्यस्यते यत् तत्' अर्थात् जिसे बार-बार दुहराया जाय (म्ना = अभ्यास करना)[1]। डॉ. शिवनारायण खन्ना का उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ से प्रकाशित ग्रंथ 'उपनाम: एक अध्ययन' के पृ.-1 में यह परिभाषा 'शब्द कल्पद्रुम' द्वितीय कांड पृ. 861 से उद्धृत है। वामन शिवराम आप्टे के संस्कृत-हिंदी कोश में भी नाम की इसी प्रकार की परिभाषा दी गई है - 'म्नायते अभ्यस्यते नम्यते अभिधीयते अर्थोऽनेन वा' अर्थात जिससे किसी को पुकारा जाय या अर्थ ग्रहण किया जाय।[2]

नाम की परिभाषा एनसाईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार है कि नाम वह शब्द अथवा लघु शब्द समूह है, जो किसी समूह, एक विशेष और समूचे अस्तित्व अथवा सत्ता की ओर संकेत करता है। यह आवश्यक नहीं कि वह उसके गुण विशेष को भी इंगित करे।[3]

नाम कल्पित और यादृच्छिक होते हैं, फिर भी यह समाज के लिय अनिवार्य है। उसके बिना मानव समाज का न तो संगठन ही संभव है, न कोई अन्य कार्य ही चल सकता है।[4]

डॉ. विद्याभूषण विभु, डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा सहित पाश्चात्य भाषा शास्त्री ए. गार्डिनर जैसे विद्वानों के एक वर्ग का मानना है कि नाम और शब्द एक ही हैं। शब्द ही नाम हैं, किंतु विद्वानों के दूसरे वर्ग का मानना है कि यह ठीक है कि नामों की निर्मिति हमारे चिर परिचित शब्दों से होती है, परंतु यह भी ज्ञातव्य है कि शब्द जब एक बार नाम के रूप में प्रयुक्त होते हैं तब वे 'शब्द' नहीं रह जाते। इन विद्वानों की मान्यता है कि नाम संकेतार्थक होते हैं, जबकि शब्द स्वगुणार्थक माने जाते हैं। प्रत्येक शब्द का शाब्दिक अर्थ अनिवार्यत: होता है और तभी वह अपने 'स्वगुणार्थ' का निर्वाह कर पाता है। किसी शब्द के अर्थहीन होने पर वह अपनी भाषा से बहिष्कृत हो जाता है। जबकि नामों की प्रकृति इससे भिन्न होती है। नामकर्ता मनुष्य

एक विशाल परिमाण में शाब्दिक सामग्री का प्रयोग यथावत् अथवा कुछ भिन्न रूप में करता है। अत: सभी नाम शब्द-रूप में प्रारम्भ होते हैं। नामों का एक ध्वनि प्रक्रियात्मक रूप होता है। उनमें रूप प्रक्रियात्मक संश्लेषण के साथ-साथ शाब्दिक अर्थ भी संयुक्त रहता है। इस प्रकार नाम वैज्ञानिक अर्थ किसी नाम में संयुक्त हो जाता है।[5] उदाहरणार्थ 'ललितपुर' नाम की उत्पत्ति गोंड़ राजा सुम्मेर शाह की पत्नी ललिताकुंवर के नाम से हुई है, जबकि कुछ लोग सुम्मेर सिंह की पुत्री के नाम पर ललितपुर का नामकरण मानते हैं, किंतु शाब्दिक अर्थ में ललित का अर्थ सुंदर और पुर का अर्थ नगर या बस्ती होता है। इसके अतिरिक्त महाराज अशोक ने लगभग 250 वर्ष ईसा पूर्व नेपाल की तराई में एक ललितपाटन नामक नगर बसाया था। इस नगर को भी वर्तमान में ललितपुर कहा जाता है।[6] यहां स्पष्ट होता है कि दोनों 'ललितपुर' स्थानों का नाम वैज्ञानिक अर्थ अलग-अलग है, इन नामों के साथ वहां की भाषा, इतिहास, भूगोल और अन्य विषयों का बिंब श्रोता के मन में अंकित हो जाता है, जबकि 'ललितपुर' का शाब्दिक अर्थ (सुंदर नगर) एक ही है।

वस्तुत: कभी-कभी नाम अध्ययन में उसका शाब्दिक अर्थ अप्रासंगिक हो जाता है। नामों का अपना नाम वैज्ञानिक अर्थ होता है और वह उसकी शाब्दिक व्युत्पत्ति के साथ-साथ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा प्राकृतिक आधारों से निर्मित होता है। 'नाम' का अनुवाद दूसरी भाषाओं में स्वीकार्य नहीं है, जबकि शब्द के अनुवाद सर्वत्र प्रचलित है। 'नाम' और 'शब्द' को एक मानने का कारण यह रहा कि इन दोनों के मूल रूप का अध्ययन व्युत्पत्ति के माध्यम से किया जाता रहा है, किंतु 'नाम' का व्युत्पत्तिमूलक अध्ययन नाम विज्ञानी का प्रारंभिक सोपान है। जैसा कि डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने कहा है 'स्थान नामों' की उत्पत्ति में अनेक राजनैतिक, सामाजिक और वैयक्तिक कारण होते हैं।[7] 'स्थान नाम विज्ञान' में स्थान-नामों का अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है, जो एक साथ भाषा-भूगोल, व्युत्पत्ति शास्त्र तथा कोश विज्ञान को स्पर्श करता है, क्योंकि इसके द्वारा जहां एक ओर देशीय संस्कृति, क्षेत्रीय भाषिक विशेषताएं और बोली भूगोल के अनुसार विवरण स्पष्ट होता है वहां दूसरी ओर शब्दों की व्युत्पत्तियों के माध्यम से वस्तुत: उस भाषा का कालक्रमानुसार विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है।[8] पाणिनि के अनुसार नगरों और ग्रामों के नाम निम्नलिखित चार कारणों से बनते हैं। इन्हें चातुरर्थिक नाम कहा गया है।

1. तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि (4/2/67) अर्थात अमुक वस्तु जिस स्थान में होती है, उस वस्तु के नाम से उस स्थान का नाम पड़ जाता है, जैसे- औदुम्बर आदि।

2. तेन निवृत्तम् (4/2/68) अर्थात् उसने यह स्थान बसाया। बसाने वाले के नाम से शहर या गांव का नाम रखना एक स्वाभाविक और पुरानी प्रथा है, जैसे कौशांबी आदि।
3. तस्य निवास: (4/2/69) अर्थात् रहने वालों से स्थान का नाम, जैसे शिवि जाति के क्षत्रियों का निवास स्थान 'शैव' हुआ।
4. अदूरभवश्च (4/2/70) अर्थात् जो स्थान किसी दूसरे स्थान के निकट बसा होता है, वह भी उसके नाम से पुकारा जाता है। आम, पीपल, बरगद आदि वृक्षों के समीप बसे हुए हजारों स्थान-नाम इसी नियम के अनुसार बने हैं।[9]

व्युत्पत्ति—व्यक्ति नामों के विपरीत स्थान-नामों के नामकरण में यादृच्छिकता नहीं अपनाई जाती है। व्यक्ति-नाम भौतिक रूप में व्यक्ति की मृत्यु के साथ समाप्त हो जाते हैं, पर स्थान-नाम शताब्दियों तक, जब तक वह स्थान समाप्त न हो जाये, प्रचलित रहते हैं। स्थान-नामों के सूचक कुछ पदों का विवेचन अधोलिखितरूपेण है -

1. ग्राम—ग्राम का व्युत्पत्तिगत अर्थ 'समूह' है। घरों के समूह को ग्राम कहा गया। सर्वप्रथम ग्राम अकृत्रिम रूप से अस्तित्व में आए होंगे, परंतु कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में 'राष्ट्र' के विकास के लिए ग्राम-निवेश की संस्तुति की है। इसी समय से कृषि के उत्तरोत्तर विकास के कारण ग्रामों से 'कर' लिया जाने लगा होगा। 'सूत्रकृतांगदीपिका' में ग्राम के तीन प्रकार के लक्षण दिए गए हैं -

(क) साधुओं को भिक्षा प्राप्त होना और उनके गुणों को ग्राम वासियों द्वारा ग्रहण करना।
(ख) ग्रामों पर अठारह प्रकार के करों का लगाया जाना।
(ग) कांटो और बाड़ियों से घेरकर लोगों द्वारा निवास बनाना।[10]

2. नगर—नगर शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में अनेक मत मिलते हैं। आगम ग्रंथों की टीका के अनुसार 'नगर' का प्रारंभिक रूप 'नकर' (करविहीन) था। 'नाम करा संति' अथवा 'नैतेषु करोऽस्तीति नकराणि'[11] परंतु भाष्यकार पतंजलि के मत से 'नगर' शब्द 'नग' में 'र' प्रत्यय जोड़कर बना है, जिसका अर्थ 'नग (वृक्ष) वाला' होता है। इस व्युत्पत्ति के अतिरिक्त अपने भाष्य में अन्यत्र उन्होंने 'नगर' को वनस्पति युक्त कहा है।[12]

3. पुर—द्विजेंद्रनाथ शुक्ल (भारतीय वास्तुकला) के अनुसार 'पुर' नगर का पर्यायवाची है। अत: नगर की सभी विशेषताएं 'पुर' के लिए भी लागू होती है, जैसे बानपुर (महरौनी)

4. पद्र—डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया के अनुसार ओद/ओंदा/औंधा इत्यादि प्रत्ययुक्त स्थान-नाम संस्कृत 'पद्र' के विकसित रूप हैं, जैसे- ललितपुर जिले का कचनोंदा (कचनार+पद्र) - विरोंदा (बेर + पद्र)। 'पद्र' पद (चलना) धातु से निष्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है गांव, किसी गांव का प्रवेश मार्ग, एक जनपद विशेष[13] डॉ. व्यूलर के अनुसार यह आधुनिक 'पाद्र' अर्थात् 'पशुओं के चरने का स्थान' है तो एच.ए. विल्सन ने इसे 'पादर' मानते हुए इसका अर्थ 'सार्वजनिक भूमि, गांव के पास सटी बिना जोती हुई भूमि' किया है। इसीलिए पद्रांत स्थान-नामों की व्युत्पत्ति प्राय: वनस्पति नाम अथवा जीवजंतु नाम से हुई है। अत: इस प्रत्यय का अर्थ गतिशील गांवों से ही है।

5. वाटिका (-वाटक, -वाट, -वाहा, -वारा इत्यादि)—'वाटिका' 'वट' धातु से व्युत्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है घेरा, अहाता, घिरा हुआ भूमिखंड। संस्कृत से लेकर पालि साहित्य तक 'वाटिका' का अर्थ था एक अस्थाई आवेष्टित 'स्थान' यथा उद्यान, वृक्षारोपण अथवा सीमावर्ती वृक्षों से युक्त ग्राम का आवेष्टन। ललितपुर जनपद का 'हंसनवारा' (हंस+वाटिका) आदि इसी प्रकार के स्थान-नाम है।

6. पाटक (-पट्टिका,-पट्ट, -वाड़ा, -परा)—पाटक तथा उससे विकसित पद 'पद' (विभक्त करना) धातु से विकसित हुए हैं। अत: पाटक का अर्थ हुआ 'ग्राम का अर्ध भाग या ग्राम का एक भाग।' ललितपुर जिले में यह पद पूर्वपद के रूप में प्रयुक्त हुआ मिलता है - पटसेमरा, पटौवा, पटौरा (ललितपुर)।

7. खेट—हिंदी आदि भाषाओं का 'खेड़ा' इसी से निकला है। मध्य देश से लेकर पश्चिम में गुजरात तक यह शब्द परपद के रूप में प्रयुक्त होता है। पाणिनि के अनुसार कुत्सित नगर खेट कहे जाते थे।[14] हलायुध कोश 792 में कहा गया है कि कृषि द्वारा शस्यादि भक्ष्योपयोगी वस्तुओं के उपार्जन से जीविका निर्वाह करने वाले ग्राम 'खेट' कहलाते हैं। मोनियर विलियम्स ने 'खेट' का अर्थ 'ग्राम' (कृषकों का निवास), छोटा नगर अथवा पुर का अर्ध भाग किया है। कल्पसूत्र टीका के अनुसार मिट्टी की दीवारों से आवेष्टित नगर को 'खेट' कहा जाता है। अर्थशास्त्रकार ने भी 'खेट' की यही परिभाषा की है।[15] ललितपुर जनपद के खिरिया, खेरा, खेड़ा इत्यादि पदांत स्थान नाम इसी श्रेणी के हैं। डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया ने करा/खरा (खरी) इत्यादि पदों को भी खेट > खेड़ा > खेरा > खरा > करा क्रम में विकसित माना है।[16] वस्तुत: यह शब्द संस्कृत के 'क्षेत्र' से विकसित होकर गांव के अर्थ में रूढ़ हो गए हैं।

भाषा विज्ञान (Linguistics) की शाखा शब्दविज्ञान (Etymology) है, जिसकी उपशाखा नाम- विज्ञान (onomastics अथवा onomatology) कही गई है। इसी

नामविज्ञान की एक शाखा स्थान-नामविज्ञान (Toponymy अथवा Toponomastics) कही जाती है तो एक अन्य शाखा व्यक्ति-नामविज्ञान कहलाती (Anthroponomastics) है।

यहां हमारे विवेचन का विषय स्थान-नाम हैं, जिसके अध्ययन को स्थान-नामविज्ञान (Toponymy) कहा गया है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने 'पाणिनि कालीन भारतवर्ष' में स्थान-नामों की रचना के जिन उपर्युक्त हेतुओं को विवेचित किया है, वे आज भी संपूर्ण देश में विद्यमान हैं। स्थान-नामों का अर्थतात्विक विवेचन करने के लिए अर्थ परिवर्तन के आधारों का विश्लेषण किया जाना आवश्यक होगा। इसके लिए पहले हमें स्थान-नामों के अर्थतात्विक विकास को समझना उपयुक्त होगा। ललितपुर जिले के स्थान-नाम अर्थतत्व के धरातल पर समग्रता से एकता की ओर उन्मुख हुए हैं, जैसे-

1. **समग्र** -

खिरिया	(महरौनी)
बम्हौरी	(तालबेहट)
पुरा	(तालबेहट)
खैरा	(तालबेहट)
पठा	(महरौनी)

2. **एक या विशिष्ट** -

खिरिया मिश्र	(महरौनी तथा ललितपुर)
बम्हौरी सर	(तालबेहट)
पुराधंधकुवा	(महरौनी)
खैरा डांग	(तालबेहट)
पठा गोरी	(ललितपुर)

प्रथम वर्ग में अंकित स्थान-नामों में अर्थगत समग्रता है। इनमें क्रमश: खिरिया का अर्थ क्षेत्र, बम्हौरी का बह्मा और विष्णु, पुरा का अर्थ एक प्राचीन बस्ती, खैरा का अर्थ खदिर, किंतु एक अन्य अर्थ के अनुसार जिस बछड़े को शकट (बैलगाड़ी) आदि में जोतने के लिये बधिया करते थे, वह पूरा जवान होने पर उक्षा और अधेड़ अवस्था का होने पर उक्षतर कहा जाता था। उक्षतर से हिन्दी 'खैरा' शब्द (उक्षतर > उक्खयर > उखइर > खइरअ > खैरा)[17] क्रम में बना है एवं पठा का अर्थ 'प्रस्तर' समग्र रूप में बोधगम्य है, किंतु द्वितीय वर्ग में इन स्थान-नामों के साथ विभेदक संयुक्त हो गए, जिससे उनका समग्र अर्थ विशिष्ट अर्थतत्व में परिवर्तित हो गया।

प्रारंभिक दशा में 4-6 घरों की बस्ती के लिए 'खिरिया' पद पर्याप्त था, पर

ब्राह्मण जाति के आस्पद विशेष व्यक्ति की यश-पिपासा अथवा अलग पहचान देने के कारण 'खिरिया' पद के साथ विभेदक 'मिश्र' को संयुक्त कर दिया गया और स्थान-नाम के रूप में 'खिरिया मिश्र' अस्तित्व में आ गया। प्रथम वर्ग से द्वितीय वर्ग में अर्थतत्व सूक्ष्म हो गया। इसी प्रकार सरोवर, कामधंधा, जंगल और किसी युवती के कारण क्रमशः बम्हौरी, पुरा धंधकुआ (इस गांव में गौरा पत्थर की खानें हैं) खैरा डांग और पठा गोरी स्थानों का नामकरण हुआ। ललितपुर जिले के कुछ स्थान-नाम ऐसे भी हैं, जिनकी रचना में स्थान बोधक पद पुर, गढ़, स्थल, वाला अथवा अवली नहीं हैं। इनमें स्थान बोधक पद घिसते-घिसते लुप्त हो गए हैं और इनकी जगह कुछ विशिष्ट शब्द स्थाननामवत् प्रचलन में आ गए हैं जैसे - रारा (तालबेहट) जिला ललितपुर। ऐसे मिलते-जुलते नाम बुंदेलखंड के अन्य जिलों में भी देखे जाते हैं जैसे - रूरीकलां (महोबा)[18] रूरा अड्डू (जालौन)

जिला ललितपुर में स्थान बोधक पद घिसते-घिसते लुप्त हो जाने वाले कुछ अन्य स्थान-नाम भी हैं -

भोटा (महरौनी) पाह (महरौनी) भोंता (ललितपुर)

जिले के कुछ स्थान-नामों की रूप रचना प्रत्यय के योग-मात्र से हुई है, यथा-

(क) व्यक्ति बोधक -

बानौनी (महरौनी)
पड़वां (महरौनी)

(ख) पदार्थ बोधक -

निवारी (महरौनी)
गेंदौरा (तालबेहट)

(ग) जलाशय बोधक -

झरर (तालबेहट)
अंडेला (ललितपुर) अरण्य डबरा से

(घ) गुण बोधक -

सतगता (ललितपुर) सद्गति से

(ङ) भूमिदशा बोधक -

पठरा (ललितपुर)
टौरिया (महरौनी)
गिरार (महरौनी) गिरि अरण्य से
पठारी (ललितपुर)
पठा (महरौनी)

(च) वृक्ष बोधक –

कैथोरा (ललितपुर)
ऊमरी (महरौनी)
अमौरा (महरौनी)
चिरौला (महरौनी)
बिरारी (ललितपुर)
सेमरा (महरौनी)

(छ) जाति बोधक –

सोंरई (महरौनी)
चढ़रा (महरौनी)
कुर्रट (महरौनी)
बमनौरा (ललितपुर)

(ज) वनस्पति बोधक –

बूटी (महरौनी)
कपासी (ललितपुर)
खैरी (महरौनी)

(झ) पशु बोधक –

भैंसाई (ललितपुर)
रिछा (ललितपुर)

(ञ) पक्षी बोधक –

सुकाड़ी (महरौनी)
चकोरा (महरौनी)

(ट) अवस्था बोधक –

जरया (महरौनी)
बूढ़ी (महरौनी)

(ठ) विपन्नता बोधक –

भैरा (महरौनी)
पीड़ार (महरौनी)

(ड) चंद्रमा संबंधी –

चांदरो (तालबेहट)
चंदेरा (ललितपुर)

उपर्युक्त स्थानों-नामों में प्रयुक्त शब्द उनके दिए गए शीर्षकों से संबंधित

विभिन्न अर्थों का द्योतन करते हैं। यह क्रमश: व्यक्तियों (बाणासुर, पांडव), पदार्थ (नीमफल, गेंद), जलाशय (झरना, अरण्य डबरा), भूमिदशा (पठार, छोटी पहाड़ी, गिरि), वृक्ष (कपित्थ, गूलर, आम, चिरौल, बेर, सेमल), जाति (सहरिया, चढ़ार, कोरी, ब्राह्मण), वनस्पति (गूगल, औषधीय पादप, कपास, खदिर), पशु (भैंस, रीछ), पक्षी (तोता, चकोर), अवस्था (जरावस्था, वृद्धावस्था), विपन्नता (बर्बाद होना, पीड़ा) तथा चंद्रमा से संबंधित हैं।

स्थान-नामों में प्रयुक्त शब्दों का परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन रूप ध्वनिगत तथा अर्थगत दो प्रकार का होता है। रूप ध्वनिगत परिवर्तन को भाषा विज्ञान में शब्दों का विकास कहा जाता है। जनपद के स्थान-नामों में यह इस प्रकार हुआ है, उदाहरणार्थ –

चमार से चमरउवा (ललितपुर)
ब्राह्मण से बमनौरा (ललितपुर)
जामुन से जमुनिया (महरौनी)
कुम्हड़ा से कुम्हैड़ी (महरौनी)
मच्छर से मछरका (महरौनी)
बनिया से बनयाना (महरौनी)
कंकड़ से ककरेला (तालबेहट)

उपर्युक्त स्थान-नामों में शब्द रूप के साथ-साथ ध्वनि रूप में भी परिवर्तन दृष्टव्य है।

दूसरे प्रकार का शब्द परिवर्तन अर्थ के स्तर पर होता है। स्थान-नामों के अध्ययन में यह परिवर्तन बहुत महत्वपूर्ण है। यह परिवर्तन नाम और शब्द का पृथक्करण करता है। इसका सविस्तार वर्णन अध्याय दो में स्थान-नामों का रूप रचना की दृष्टि से अध्ययन करते समय किया जा चुका है। किसी नाम का शब्द अपनी सीमा तक ही अर्थ द्योतन कराने में समर्थ होता है, जबकि शाब्दिक अर्थ से कहीं अधिक व्यापकता स्थान-नाम में सम्मिलित रहती है। उदाहरण के लिए 'कठ' शब्द को लें, जिसका अर्थ है – पुल्लिंग – एक बाजा, काठ, कठोर (केवल समास में) विशेषण– काठ का बना, घटिया, निकृष्ट[19] किंतु 'कठ' स्थान-नाम के अर्थ में भारशिवों (कठ, मर, जर, भर) के वर्ग में से एक है।[20] कठ जाति का पश्चिमी पंजाब में एक गणराज्य भी था। पाणिनि (अष्टाध्यायी 2, 4, 20) ने कठ जाति के लोगों को कंठ या कंथ नाम से पुकारा। 327 ईसा पूर्व में स्वस्थ, सुंदर और निपुण योद्धा कठ लोगों की तलवारों और तीरों से सिकंदर महान की सेना को पूर्व की ओर आगे बढ़ने की अपेक्षा पश्चिम की ओर पलायन करने पर मजबूर होना पड़ा था।[21]

ललितपुर जिले के भारशिव सूचक कुछ स्थान-नाम इस प्रकार हैं -

कठवर (तालबेहट)
मर्रोली (महरौनी)
जरावली (महरौनी)
भारौनी (महरौनी)

शब्द और नाम के अर्थ को पृथक अथवा शाब्दिक अर्थ में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक अर्थों को समाहित करते हुए ललितपुर जिले के कुछ अन्य स्थान-नाम हैं -

(क) सर्प पूजक शिल्पी -

कुरु	-	कुरौरा (महरौनी)
पुरु	-	पुरा (ललितपुर)
मय	-	मैलवारा (ललितपुर)

(ख) ईरान निवासी सूर्य पूजक -

नाग	-	नगारा (महरौनी)
भोगनाग	-	भागनगर (महरौनी)
यक्ष	-	जखौरा (तालबेहट)
मग	-	मगरपुर (ललितपुर)

(ग) मौर्य वंश -

मैरती (ललितपुर)

(घ) मेव (तुगलक कालीन एक आतंकवादी जाति)

महोली (ललितपुर)

(ङ) वाकाटक तथा गोंड़

बहरावट (ललितपुर)
तालबेहट (तालबेहट)
बालाबेहट (ललितपुर)
खिरिया बेहटा (तालबेहट)

(च) उच्छकल्प

छिल्ला (महरौनी तथा ललितपुर)

'सांस्कृतिक भूगोल कोश' (श्याम सुंदर भट्ट) में वर्णित उच्छवृत्ति से भी इसका तारतम्य हो सकता है। खेतों से अनाज के ढेर हटा लेने के बाद कुछ दाने छूट जाते हैं। प्राचीन काल में कुछ तपस्वी ब्राह्मण इन दानों को एकत्रित कर अपनी आजीविका चलाते थे। इस वृत्ति को उन दिनों अपमानजनक नहीं माना जाता था।

(छ) खड़परिका

खड़ोवरा (ललितपुर)

(ज) प्रतिहार

पहारी (महरौनी)

(झ) पाताली

पाली (ललितपुर)

(ञ) कल्चुरि

कलौथरा (तालबेहट)

(ट) सेंगर

सिंगरवारा (महरौनी)[22]

इसी तरह 'पिपरिहा' का शाब्दिक अर्थ पीपल से संबंधित है, किंतु यह राजपूतों की एक शाखा या अल्ल भी हो सकती है।[23] ललितपुर जनपद में ऐसे स्थान-नाम हैं-

पिपरई (ललितपुर), पिपरौनियां (ललितपुर), पिपरिया वंशा, पिपरिया डोंगरा, पिपरिया पाली तथा पिपरिया जागीर (ललितपुर)

शिरीष वृक्ष भूरी छाल वाला ऊंचा पेड़ होता है। इसकी और इमली की पत्तियां एक जैसी होती हैं। मार्च-अप्रैल में यह फूलता है। शिरीष में मृदु, सफेद, सुंदर और सुगंधित फूल लगते हैं। आयुर्वेद में इसे चरपरा, शीतल और कसैला माना गया है। यह त्रिदोष नाशक तथा खुजली, बवासीर, कोढ़ और पसीना में उपयोगी है।[24] वहीं एक अन्य दृष्टि से देखें तो महाभारत के सभा पर्व (32, 6) के अनुसार नकुल ने अपनी पश्चिम दिशा की दिग्विजय में 'शैरीषक' नगर को जीता था।[25] अत: सिरसी (तालबेहट) तथा सिरसी खेड़ा (ललितपुर) उपर्युक्त में किसी से संबंधित हो सकते हैं। गुरयाना (महरौनी) गुरु द्रोणाचार्य से संबंधित अथवा अनुकृत हो सकता है।

खिरिया छतारा (ललितपुर)–महाभारत के आदि पर्व (165, 21) में वर्णित 'अहिछत्र'[26] कंधारी कलां (तालबेहट) - गांधारी[27], कुलुवा (ललितपुर) - कल्हणकृत राजतरंगिणी (3, 452) में 'कुलूत' राज्य की वर्णित प्राकृतिक शोभा[28], कोकटा (ललितपुर)-ऋग्वेद (3, 53, 14) यास्क कृत निरुक्त (6, 32), वायु पुराण (108, 73) एवं वृहत् धर्म पुराण (26, 47) जैसे ग्रंथों में वर्णित असभ्य, अनार्य और अनादरणीय जनों का निवास क्षेत्र 'कीकट'[29] से संबंधित अथवा अनुकृत हो सकते हैं। ललितपुर जनपद के निम्नलिखित कुछ अन्य स्थान-नामों में अर्थ परिवर्तन इस प्रकार हुए हैं -

ऐरा (ललितपुर)–'एरका' – महाभारत में वर्णित कथा के अनुसार श्री कृष्ण के पुत्र सांब ने अपने पेट पर वस्त्रों को लपेट कर सप्तर्षियों का मजाक किया था। इससे सांब के पेट से मूसल निकला। यदुकुल के राजकुमारों को पता था कि यही मूसल उनके विनाश का कारण बनेगा। अत: उन्होंने इस मूसल का चूरा बना दिया और उसे समुद्र में बहा दिया। कालांतर में वही चूरा 'एरका' नामक घास बन गया। इसी घास की तीखी नोकों से यदुकुल विनाश को प्राप्त हुआ।[30] ऐरा बुंदेली बोली में सिंचाई करने की भूतकालिक क्रिया भी है।

सौल्दा (महरौनी)–उत्तरी राजस्थान के बीकानेर से अलवर तक फै ले हुए बड़े भूभाग का नाम 'साल्व' था। मेड़ता और जोधपुर इलाका भी उसी के अंतर्गत था। इस प्रदेश के नागौरी बैल प्रसिद्व रहे हैं। संभवत: यहां के बैलों का ललितपुर के इस स्थान पर विपणन होता रहा होगा, अत: साल्व प्रदेश से अनुकृत होने के कारण इस स्थान का नाम सौल्दा (साल्व + स्थल) पड़ा है।[31]

उषा कुंड-बानपुर के पास जमड़ार नदी में (तहसील महरौनी) – पुराण प्रसिद्व बाणासुर की पुत्री उषा एवं अनिरुद्व की प्रणय गाथा श्रीमद्भागवत (10, 62) में सविस्तार वर्णित है। उषा कुंड का अभिज्ञान इस शिवभक्त बाणासुर की पुत्री उषा से माना गया है। केदारनाथ (उत्तराखंड) के समीप उखीमठ क़स्बे से तथा भरतपुर (राजस्थान) में स्थित उखा मन्दिर से भी 'उषा' का संबंध स्थापित किया जाता है।[32]

चंदावली (महरौनी), चांदरो, चंद्रापुर (तालबेहट), चांदौरा, चंदेरा, चांदपुर (ललितपुर)–चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह है। ज्योतिष के अनुसार चंद्र कर्क राशि का स्वामी है। वहीं चंद्र जल तत्व का देवता है। आयुर्वेद में इसकी प्रवृत्ति कफ की है। वायव्य दिशा, स्त्रीलिंग, सत्वगुण, लवण रस, स्थूल आकार, मोतीमणि, सौम्य स्वभाव, छाती और गले की पीड़ाकारक, समदृष्टि चंद्रमा की विशेषताएं होती हैं। स्थान-नाम के अर्थ परिवर्तन संबंधी एक अन्य व्याख्या के अनुसार शोण नदी का उद्गम-स्थल चंद्र पर्वत माना गया है। शिशु पुराण में नर्मदा नदी को सोमोद्भवा कहा गया है। चंद्र पर्वत अमरकंटक (विंध्याचल) का ही दूसरा नाम है।[33] अत: चंद्र संबंधी स्थान-नाम इस पर्वत के नाम पर रखे गए हो सकते हैं।

डोंगरा कलां (ललितपुर)–महाभारत (सभा पर्व 52, 13 तथा 27, 18) के वर्णन क्रम में दार्व जनपद का उल्लेख दो घटनाओं के संदर्भ में आया है। एक घटना में अर्जुन दार्व जनपद को अपनी विजय यात्रा के क्रम में पराजित करता है। दूसरी घटना में युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के अवसर पर दार्व के नृपति द्वारा उपहार भेंट करना वर्णित है। एक अन्य मत के अनुसार डुग्गर जाति के लोगों का मूल स्थान जम्मू कश्मीर है और डुग्गर जाति ही प्राचीन दार्व जाति थी। डुग्गर जाति आज डोगरा

जाति के नाम से जम्मू में निवास करती है। कुछ अन्य विद्वान भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर स्वात नदी में मिलने वाली पंजकोर नामक सहायक नदी की घाटी को दार्व जनपद का आदि स्थान स्वीकारते हैं। यहां एक कस्बा दीर (Dir) के नाम से जाना भी जाता है।[34] पांडवों का संबंध जिला ललितपुर के सुदूर वन प्रांतर से भी बताया जाता है। इसलिये डोंगरा स्थान-नामों का तादात्म्य 'दार्व' से देखा जा सकता है।

धसान नदी—धसान का पुरातन नाम दशार्ण था। दशार्ण नाम से एक जनपद भी रहा है जो महाभारत के सभा पर्व (29, 4-5) में वर्णित है। यह जनपद भीमसेन द्वारा पदाक्रांत किया गया था। पद्म पुराण में (स्वर्ग खण्ड, अध्याय 6, श्लोक 36) यह जनपद मेकल के साथ गिनाया गया है। ब्रह्मपुराण के अध्याय 6 में इसका नाम मेकल, उत्कल, भोज एवं किष्किंधा के क्रम में रखा गया है। बौद्ध जातकों तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र (भाग-2) में भी दशार्ण का वर्णन आया है। कालिदास के मेघदूत (पूर्व मेघ 24-28) में यहां के प्राकृतिक सौंदर्य का सजीव वर्णन किया गया है। टॉलमी ने दशार्ण का नाम 'दोसारा' (भूगोल 8, 1, 77) कहा है।

दशार्ण का अर्थ है, दस नदियों अथवा दस दुर्गों वाला प्रदेश। इसी का नाम यहां 'धसान' है। इसकी सहायक नदियों द्वारा यह अंचल सिंचित होता है। जमड़ार धसान की एक प्रमुख सहायक नदी है। इसी नदी में उषा कुंड बानपुर के पास स्थित है। वायु पुराण (पूर्वार्ध अध्याय 45, श्लोक 99-101) में ऋक्ष पर्वत से निकलने वाली नदियों (यथा-शोण, महान, नर्मदा, मंदाकिनी, दशार्ण, तमसा इत्यादि) में भी इसका नाम आता है।[35] पं. हरिविष्णु अवस्थी ने दशार्ण (धसान) नदी को बुंदेलखंड की संस्कृतिवाहिनी कहा है।[36] अवस्थी जी ने प्रो. बलभद्र तिवारी की पुस्तक 'बुंदेली समाज और संस्कृति' के आधार पर प्रहलाद की दस ऋणों से मुक्ति होने कारण इस प्रदेश को दशार्ण और यहां बहने वाली नदी को दशार्ण बताया गया है। यह कथा गर्ग संहिता में आई है।

बछरई (महरौनी) बछलापुर (ललितपुर)—चांदपुर ग्राम, जो देवगढ़ तथा दूधई (ललितपुर) मे मध्य में स्थित है, से एक स्तंभलेख उपलब्ध हुआ, जो किसी अज्ञात पुरुष का लेख है, यह महाप्रतिहारान्वय बच्छगोत्रीय है।[37] इसी आधार पर इन स्थानों का नामकरण हुआ है।

चौंतराघाट (ललितपुर)—चंदेलों का राज्यकाल उनकी विजयों तथा वीरता के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है। स्थापत्य तथा ललित कलाओं की भी इस युग में पर्याप्त उन्नति हुई है। अनेक तालाब, मंदिर, बैठक तथा चबूतरों का निर्माण इस युग में हुआ।[38] चंदेल शासक मदनवर्मन (1128-1164 ई.) के नाम पर स्थापित मदनपुर

(महरौनी) ग्राम उनकी यशगाथा का बखान करता है। ललितपुर जनपद के चंदेलकालीन पुरातात्विक साक्ष्य देवगढ़ चांदपुर, दूधई, सीरोन खुर्द (ललितपुर) तथा बानपुर (महरौनी) में दृष्टव्य भी हैं।

बमनौरा (ललितपुर)–महाभारत (सभा पर्व 51, 5) में एक ब्राह्मण जनपद का उल्लेख आया है। ग्रीक लेखक एरियन ने इसे ब्रह्मनोई (Brahmanoi) नाम से संबोधित किया है।[39]

ललितपुर जिले में कुछ स्थान-नाम ऐसे भी हैं जो किसी अन्य नगर अथवा स्थान के नाम पर अनुकृत किए गए हें। ऐसे स्थानों का नामकरण संबंधित नगर के व्यक्तियों के स्थान-नाम पर हुआ संभव है –

भोपालपुरा (तालबेहट)	– भोपाल से
झांसीपुरा – ललितपुर	– झांसी से
मथरा (तालबेहट)	– मथुरा से
विरधा (ललितपुर)	– वर्धा से

विघाखेत (ललितपुर)–विघा महावत (ललितपुर) – पुराणों में पर्वतीय क्षेत्र के 53 उप विभागों (क्षेत्रों) का वर्णन हुआ है। इन उपविभागों में से एक का नाम 'विहा' है।[40] जिले के विघा नाम के स्थान इस पर्वतीय क्षेत्र से अनुकृत संभव हैं।

जिजरवारा (तालबेहट)–रामायण (4, 40) में वानरों द्वारा सीता जी की खोज में पूर्व दिशा की ओर की गई यात्राओं का वर्णन है। इसके अनुसार वानरों ने यवद्वीप (जावा) के बाद शिशिर पर्वत को पार किया। विष्णु पुराण (2, 2, 27-त्रिकूट: शिशिरश्चैव पतंगो रुचकस्तथा) में इस पर्वत की स्थिति मेरु पर्वत (आधुनिक पामीर) के दक्षिण में बताई गयी है। विष्णु पुराण के (2, 4, 5) एक वर्णन के अनुसार राजा मेघा तिथि के पुत्र शिशिर के नाम पर प्लक्ष द्वीप के एक भूभाग का नाम प्रसिद्व हुआ। इसे शिशिर वर्ष भी कहते हैं।[41] एक ऋतु विशेष 'शिशिर वसंतौ पुनरायात:' (आद्य शंकराचार्य कृत चर्पटपंजरिका स्तोत्र से) का नाम भी शिशिर है।

ललितपुर जिले के स्थान-नामों के संदर्भ में उपर्युक्त विवेचन अर्थतत्व को उसके शाब्दिक अर्थ से परे अर्थों को उद्घाटित करता है। अर्थतत्व में अंतर्भुक्त विभिन्न प्रवृत्तियों के विश्लेषण के लिए ललितपुर जनपद के स्थान-नामों को उनमें प्रयुक्त शब्दों के आधार पर निम्नलिखित कोटियों में विभक्त किया जा सकता है –

1. ऐतिहासिक
2. राजनीतिक
3. सामाजिक

4. सांस्कृतिक
5. धार्मिक
6. प्राकृतिक

1. ऐतिहासिक आधार—ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में वैदिक युग की ध्वनियों से लेकर गांधी और अंबेडकर युग तक की शब्दावली प्रयुक्त हुई है। यहां के स्थान-नामों में पौराणिक प्रत्यय एवं परपद प्रयुक्त हुए हैं। जिले के स्थान-नाम यहां की ऐतिहासिक परंपरा से अनुप्राणित हैं। यहां के स्थान-नामों में ऐतिहासिक साक्ष्यों के अंश अभी भी विद्यमान है। ऐसे कुछ स्थान-नाम अधोलिखित प्रकार से हैं –

(क) वैदिक शब्दावली – गोठरा (महरौनी)– गायों के खड़ा होने का स्थान[42]

धवा (महरौनी)– एक वृक्ष
दशरारा (तालबेहट)– दाशराज्ञ

(ख) पौराणिक परपद –

सारसेंड़ (तालबेहट) – सारस + अरण्य
नगवांस (तालबेहट) – नागपाश

(घ) पवित्र एवं औषधीय तृणादिक

दावनी (ललितपुर) दर्भ[43]
बूटी (महरौनी)
गूगर (तालबेहट)

(ड.) जलाशय –

धौरीसागर (महरौनी)
तालगांव (ललितपुर)
बम्हौरी सर (तालबेहट)
झिलगुवां (ललितपुर)

(च) यक्ष एवं यमवाची –

जखौरा (तालबेहट)
जमौरा (महरौनी)

(छ) मातृदेवी –

मातृदेवियां असंख्य हैं। जिले के प्रत्येक गांव में कम-से-कम एक मातृदेवी की पूजा प्रचलित है। अक्सर ऐसी देवी का कोई खास नाम नहीं होता; वह सिर्फ आई अर्थात् माता कहलाती है। इन देवियों की पुरातनता इसी से सिद्ध होती है कि

इनमें से किसी के कोई पुरुष संगी या पति नहीं है। इन देवियों के निराले नाम देखकर ऐसा लगता है कि इनका संबंध ऐसे किसी छोटे-मोटे जनजातीय समूह से रहा है जो अब या तो नि:शेष हैं या सामान्य देहाती करबादी (बेचैनी) में इस क़दर घुलमिल गया है कि उसका कोई चिन्ह शेष नहीं रहा। ललितपुर जिले के अधिसंख्य स्थान-नाम इन्हीं मातृदेवियों के नामों पर आधारित हैं। कबीलाई लोग किसी विपदा के आने पर हर छोटी-मोटी वस्तु पर मातृदेवी का नाम रखकर पूजते थे। उनका विश्वास था कि हमारी इससे रक्षा होगी।

इन मातृदेवियों की पूजा पद्धतियों का आदिम उद्भव और स्वरूप इस हिदायत से साबित होता है कि पूजा के पाषाण के अंदर कोई आच्छादन नहीं, खुला आसमान होना चाहिए। उसके ऊपर छत डाल देने से भारी विपत्ति आ पड़ती है लेकिन गांववाले जब पर्याप्त धनी हो जाते, तब प्राय: देवी को मनाकर इसके लिए राजी कर लेते हैं। यह पूजा पद्धतियां उस समय की है जब घर बसाने का चलन नहीं था और गांव चलते-फिरते हुआ करते थे।

ये देवियां हैं तो माताएं (मातृदेवियां) किंतु अविवाहित हैं। जिस समाज में इनका उद्भव था, उसकी दृष्टि में किसी पिता का होता आवश्यक नहीं था। आगे चलकर उनका विवाह किसी पुरुष देवता से होने लगा।

चौमासा त्रैमासिक (सं. डॉ. कपिल तिवारी) जुलाई अक्टूबर, 2008 में डॉ. महेंद्र भानावत के आलेख 'भारतीय देववाद: उद्भव और विकास' में दिया गया है कि बहुत पहले जब लोगों को चेचक की व्याधि का पता नहीं था, तब लोगों ने इसे शरीर में उठी गर्मी के बुलबुले माना और देह में शीतलता के संचार के लिए शीतला माता जैसी देवी (इसी को रोढ़ि माता भी कहा गया है) की कल्पना और प्रतिष्ठा की। इस मान्यता का विकास 7वीं से 9वीं शताब्दी तक माना जा सकता है, क्योंकि इसी काल में मार्कंडेय पुराण और स्कंद पुराण की रचना हुई, जिनमें शीतला माता का स्मरण किया गया है।

ललितपुर जनपद में पांडवों के अज्ञातवास बिताने के पूर्व तक गोंड़ों का राज्य था। गोंड़ अपने जीवन में भय, बीमारियों से डर और दैवी आपदाओं से बचने के लिए कई मनगढंत देवी-देवताओं की उपासना करते हैं। जरा सा भय हुआ कि गोंड उसे देव की तरह पूजने लगता है। गोंड जनजाति देश की सबसे बड़ी जनजाति है। इन्होंने अपना धन जमीन में दबा रखा था जो ललितपुर जनपद और उसके आस-पास के निवासियों को मिलता रहा है। धनगोल (तालबेहट) 'गोंड़ों का धन' स्थान-नाम इसकी पुष्टि करता है। जनजातियों का एक प्रकार भीलों का है। इनका झूमर नृत्य गोंड़ों के करमा नृत्य का ही एक रूप है। ललितपुर जिले की तालबेहट तहसील

में 'झूमर नाथ' नामक स्थान पर यह नृत्य किया जाता रहा होगा। वर्तमान में इस स्थान पर भगवान शंकर की पूजा-उपासना की जाती है। मातृदेवियों पर इस जिले में कुछ इस प्रकार स्थान-नाम मिलते हैं-

मावलैन (तालबेहट) - मावला माता
भावनी (तालबेहट) - भवानी
जाखलौन (ललितपुर) - जाखमाता

व्युत्पत्ति की दृष्टि से जिले के जाखलौन तथा जखौरा नाम यक्षी और डाकिनी से संबंधित है। कहीं-कहीं ऐसी मान्यता है कि जो औरतें बच्चा जनते समय अथवा डूबकर मर जाती हैं वे ऐसी प्रेतात्मा या पिशाची बन जाती हैं और उन्हें इस नाम से पूजा जाता है।[44]

(ज) पौराणिक -

बानपुर (महरौनी) - बाणासुर
बानौनी (महरौनी) - बाणासुर
कोटरा (तालबेहट) - बाणासुर की मां

(झ) बुद्धकाल -

बुदनी (महरौनी)
पाली (ललितपुर)[45]

वर्ष 2003 में शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली से प्रकाशित डॉ. मालती महाजन की पुस्तक 'उड़ीसा: फ्रॉम प्लेस नेम इन इंस्क्रिप्शंस' (260 वीसी- 1200 ए डी) के पृ. 22 में दिए गए विवरण के अनुसर 'पाली' शब्द 'पाल' के निष्पन्न हुआ है। डॉ. महाजन ने मोनियर मोनियर विलियम्स के संस्कृत इंग्लिश कोश के हवाले से बताया है कि पहले घुमंतू लोगों द्वारा छोटी बस्ती बसाने के लिए 'पाल' कहा जाता था। 'पाली' पाल का ही विकसित रूप है। आगे 'पालिका' इत्यादि शब्द भी इसी से बने हैं।

(ञ) भारशिवों से संबंधित -

भारौनी (महरौनी)
कठवर (तालबेहट)
मर्रोली (महरौनी)
जरावली (महरौनी)

(ट) मौर्य कालीन

मैरती कलां (ललितपुर)

(ठ) हर्ष कालीन

हर्षपुर (तालबेहट)

(ड) रामायण कालीन –

हनूपुरा (तालबेहट)
भरतपुरा (ललितपुर)
रघुनाथपुरा, रामनगर (ललितपुर)

(ढ) महाभारत कालीन –

कोरवास (महरौनी)
कनपुरा (महरौनी)
कंधारी कलां (तालबेहट)
पड़वां (महरौनी)
पड़रिया (महरौनी)

(ण) मुस्लिम कालीन –

दौलता (तालबेहट)
जमालपुर (तालबेहट)
तुरका (तालबेहट)

(त) स्वतंत्रता संघर्ष कालीन

फौजपुरा (ललितपुर)
बख्तर (ललितपुर)
सजा (ललितपुर)
रनगांव (महरौनी)

(थ) स्वातंत्र्योत्तर कालीन –

गांधी नगर – ललितपुर
नेहरू नगर – ललितपुर
इंदिरा कालोनी – महरौनी

इतिहास के साथ-साथ ललितपुर जिले के भौगोलिक परिवेश को उद्‌घाटित करते हुए कुछ स्थान-नाम इस प्रकार हैं –

(क) पठार वाची – पठा (महरौनी)
पहाड़ी खुर्द (महरौनी)
ककरेला (तालबेहट)
टौरिया (महरौनी)

(ख) भूमिदशा वाची –

पथराई (महरौनी)
कारी टोरन (महरौनी)

घुवरा (तालबेहट) - गौरा पत्थर
ककरुवा (महरौनी)

2. राजनीतिक आधार

राजनीतिक घटनाक्रम ही आगे चलकर इतिहास बनता है। दतिया (मध्य प्रदेश), धामौनी (सागर-म.प्र.) और झांसी में बुंदेलखंड की तत्कालीन राजधानी ओरछा के शासक वीरसिंह जू देव ने क़िलों का निर्माण कराया। महाश्वेता देवी के उपन्यास 'झांसी की रानी' के अनुसार जूदेव ने उस समय कहा था- 'धामौनी गढ़ में फौज रहेगी, दतिया का किला बहुत मनोहर और रमणीय होगा तथा झांसी का क़िला होगा सिंह और हाथी के साथ मुठभेड़ करने के लिए'। जनश्रुति यह है कि वृद्धावस्था होने पर वे दतिया से झांसी की तरफ क़िला नहीं देख सके। बोले 'आंख में पूरी झांई-सी भर रही है।' इसी आधार पर इस स्थान का नाम झांसी हो गया।[46] इससे पूर्व झांसी का नाम बलवंतनगर था। झांसी रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म 1 पर एक स्तंभ पर ओरछा के क़िले से झांसी क़िले को देखना लिखा है। परिवर्तन के दोनों बिंदुओं को इतिहास कहा जाता है। इस दृष्टि से ललितपुर जनपद के अधोलिखित स्थान-नाम राजनीति की प्राचीन परंपरा से लेकर आधुनिक परिवर्तनों तक को रूपायित करते हैं-

(क) गौड़ काल -
बालावेहट (ललितपुर)
बेहटा (तालबेहट)

(ख) पांडव काल -
बंडवा (महरौनी)
पड़ोरिया (ललितपुर)

(ग) बुद्ध काल -
बुदनी (महरौनी)
बुधेड़ी (तालबेहट)

(घ) गुप्तकाल -
देवगढ़ (ललितपुर)

(ङ) चंदेल एवं बुंदेल काल -
चंदेलकाल- मदनपुर (महरौनी) दूधई (ललितपुर)
बुंदेलकाल- कुंवरपुरा (महरौनी) पंचमपुर (ललितपुर)

(च) स्वातंत्र्य संघर्ष काल -

सुभाषपुरा - ललितपुर
सिंदवाहा (महरौनी)

(छ) स्वातंत्र्योत्तर काल -

गांधी नगर - ललितपुर

(ज) मुस्लिम शासकों से संबंधित -

शाहपुरा (तालबेहट)

(झ) उपाधि एवं पदों से संबंधित -

राज	- राजपुर (तालबेहट)
रानी	- राइन (ललितपुर)
महाराज	- महाराजपुर (महरौनी)
कुंवर	- कुंवरपुरा (तालबेहट)
जागीर	- पिपरिया जागीर (ललितपुर)

(ञ) आदर्श राजनेताओं से संबंधित -

छत्रसालपुरा - ललितपुर
आजादपुरा - ललितपुर
सुभाषपुरा - ललितपुर
गांधी नगर - ललितपुर

राजनेताओं के नाम पर यह स्थान-नाम स्वाभाविक रूप से ललितपुर नगर में ही प्रचलित हैं और यह अपेक्षाकृत बाद में घटनाओं के कालक्रमानुरूप रखे गए हैं। ऐतिहासिक घटनाओं का समाज पर पड़े प्रभाव को यह स्थान-नाम प्रतिबिंबित करते हैं। इस प्रकार उपर्युक्त राजनीतिक स्थान-नाम राजनीतिक घटनाओं, व्यक्तियों का व्यक्तित्व एवं कालक्रम प्रस्तुत करते हैं।

3. सामाजिक आधार

ललितपुर जिले का समाज विविधता में एकता का जीवंत उदाहरण है। यहां हिंदू, मुसलमान, सिख और ईसाई समुदाय के व्यक्ति भाई चारे के साथ रहते आए हैं। व्यक्तियों से ली गई जानकारी एवं अपनी स्मरण शक्ति के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यहां 1984 ई में इंदिरा गांधी की हत्या होने के बाद के सिख दंगों में हुई छुट-पुट लूट-पाट के अतिरिक्त कोई दंगा अथवा सांप्रदायिक उन्माद नहीं फैला है। हिंदू संप्रदाय अधिसंख्य है, यह विभिन्न जातियों में वर्गीकृत है। मुस्लिमों में भी उनके सामाजिक ढांचे के अनुसार जातियां वर्गीकृत हैं। सबके जीविकोपार्जन

के साधन पृथक-पृथक हैं। अधिकांश व्यक्ति कृषि पर अवलंबित हैं। धार्मिक मान्यताएं भी सबकी भिन्न-भिन्न हैं, जन-जीवन श्रमजीवी है। मूल रूप में व्यक्ति स्वार्थी है, पर समूह के सम्मुख वह प्रतिष्ठा अर्जनार्थ परमार्थी होने का पाखंड रचता है।

(क) वर्ण एवं जाति–जिले के परपद तथा विभेदक संयुक्त स्थान-नामों में निम्न जातियों की पहुंच नहीं हो पाई है, यद्यपि यहां पिछड़ी जातियों से संबंधित विभेदक प्रयुक्त हुए हैं, किंतु दलित जातियों से संबंधित स्वतंत्र स्थान-नाम भी यहां पाए गए हैं, यथा-

ब्राह्मण	–	टीकरा तिवारी (ललितपुर)
		तिबरयाना – तालबेहट
		रावतयाना – ललितपुर
		पंडियाना – पाली (ललितपुर)
		पंडों का पुरा – महरौनी
		चौबयाना – ललितपुर
		सुकलगुवां (महरौनी)
		खिरिया मिश्र (महरौनी तथा ललितपुर)
		बमनगुवां (तालबेहट)
		बमनौरा (ललितपुर)
वैश्य	–	बनयाना (महरौनी)
		सरफयाना – तालबेहट
		मलैयापुरा – महरौनी
		चौधरीपुरा – महरौनी
ठाकुर	–	खिरिया भारंजू (महरौनी)
		खिरिया लटकनजू (महरौनी)
शूद्र	–	सूडर (ललितपुर)[47]
कुम्हार	–	कुमरौला (ललितपुर)
धोबी	–	धोवन खेरी (ललितपुर)
कोरी	–	कुर्रट (महरौनी)
		कुरयाना – पाली (ललितपुर)
चढ़ार	–	चढ़रा (महरौनी)
सहरिया	–	सोंरई (महरौनी)
भील	–	भैलोनी लोध (तालबेहट)[48]

चमार	–	चमरयाना -ललितपुर
		चमरउवा (ललितपुर)
मुसलमान	–	कसाई मंडी – ललितपुर
		शेख का कुंआपुरा – महरौनी
काछी	–	कछियाकुंआपुरा – महरौनी
लुहार	–	लुहरयाना – महरौनी
कायस्थ	–	कायस्थपुरा – महरौनी
सिख	–	सरदारपुरा – ललितपुर
नट	–	नटयाना – पाली (ललितपुर)
लोधी	–	लिधौरा (महरौनी तथा ललितपुर)
यादव	–	कुआघोसी (महरौनी)

(ख) पारिवारिक तथा सामाजिक संबंध –

जीजी	–	जिजयावन (ललितपुर)
देवर	–	देवरा (महरौनी)
साढू	–	साढूमल (महरौनी)

(ग) व्यावसायिक वर्ग से संबंधित –

रंडी	–	रनगांव (महरौनी)
वैद्य	–	बैदपुर (महरौनी)
मोगिया	–	मौगान (महरौनी)

(घ) अस्त्र-शस्त्र से संबंधित –

कवच	–	बख्तर (ललितपुर)
		तुवन मंदिर – ललितपुर[49]
सेना	–	फौजपुरा (ललितपुर)
		छायन (महरौनी)

(ङ) प्रसिद्ध स्थानों तथा नगरों पर आधारित –

जलंधर (महरौनी)
रामपुर (तालबेहट)
रायपुर (तालबेहट)
मऊ (तालबेहट) – 'मही' का ध्वनि परिवर्तन हो सकता है।
वर्मा बिहार (तालबेहट)

(च) दैनंदिन वस्तुओं पर आधारित –

सांकली (ललितपुर) – शृंखला, दरवाजों पर लगाई जाने वाली सांकल

सांकरवार खुर्द तथा कलां (ललितपुर) - शृंखला

(छ) आभूषणों पर आधारित -

बेंदोरा (तालबेहट)

दांवर (ललितपुर)

दावनी (ललितपुर)[50]

(ज) सामाजिक दशाओं पर आधारित -

भैरा (महरौनी)

प्यासा (महरौनी)

पीड़ार (महरौनी)

गुंदरापुर (महरौनी)

ठाठखेड़ा (तालबेहट)

दौलतपुर (महरौनी)

कंगीरपुरा (महरौनी) - ग़रीब (बुंदेली शब्द कोश- डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी)

बीर (महरौनी)

(झ) खान-पान पर आधारित -

सक्तू (महरौनी) - सत्तू

बारचौन (महरौनी) - बेरचूर्ण

डॉ. कामिनी के अनुसार ग्राम-नाम अनुमानाश्रित नहीं चलते। ग्राम-नामों में कोई न कोई अंश प्रमाण के लिए सदैव रहता है। सुकैटा (दतिया), असाटी (टीकमगढ़), बिल्हाटी (झांसी) तथा असनेट (भिंड) क्रमशः शुक, अश्व, बिल्व तथा अश्व-अन्न (रावत-घोड़े का दाना) से संबंधित हाटें (बाजार) थी।[51] इसी तरह ललितपुर जिले का सुकाड़ी (महरौनी) ग्राम 'शुक अरण्य' से संबंधित हो सकता है।

4. सांस्कृतिक आधार

ललितपुर जनपद सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध एवं प्रभावकारी है। यहां की लोककलाएं, गीत-संगीत और नृत्य विशिष्ट है। ललितपुर जनपद का राई नृत्य विश्व में विरल है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी यहां के स्थान-नामों में सुरुचि-संपन्नता प्राप्त होती है।

डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया के अनुसार 'भाषा सामाजिक उपादान है, अतएव स्थल-नामविज्ञान का सीधा संबंध समाज शास्त्र से है। विजय की स्थिति में सांस्कृतिक

शब्द स्थिर रहते हैं, मुख्यत: स्थान-नाम, जैसे अमेरिकी स्थान-नाम विस्कोंसिन, मिशीगन, शिकागो आदि। विजेता परंपरा-प्रचलित स्थान-नामों को बदलता चलता है, जैसे भारत वर्ष में स्थान-स्थान पर अवस्थित सिकंदराबाद, औरंगाबाद आदि। उत्तरी हालैंड में स्कैंडनैवी स्थान-नामों की भरमार है।[52] यहां एक बात और ध्यातव्य है कि विजेता शासक मात्र नगरों अथवा शासित स्थान का अपने नाम पर नामकरण करता है। छोटे-छोटे ग्राम या स्थान उसकी सांस्कृतिक विजय यात्रा से अछूते रहते हैं। अतएव ऐसे स्थान-नामों के अध्ययन से संस्कृति की प्राचीनता को अविकल एवं अविच्छिन्न रूप में समझा जा सकता है। साथ ही आक्रमणकारियों के प्रभाव को उनके द्वारा छोड़े गए सांस्कृतिक अवशेषों के आधार पर चिन्हित किया जा सकता है। इस प्रकार स्थान-नामों में संस्कृति का अत्यंत प्रामाणिक क्रम सुरक्षित रहता है।

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल की मान्यता है कि स्थान-नामों में प्रत्यय, शब्दों का अर्थ सुलझाने के लिए उपयोगी होते हैं। पाणिनि ने अपने समय की भाषा के लिए यह काम बड़ी बारीकी से किया। उनसे पूर्व और उनके पश्चात् व्यक्ति-नाम और स्थान-नामों के पारस्परिक संबंध का इतना ब्यौरेवार अध्ययन नहीं हुआ।[53] डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया ने भी कहा है 'स्थान-नामों के अधिकांश रचनात्मक तत्व- पूर्वपद और परपद- भौगोलिक तत्वों से ही संबद्ध होते हैं।[54] ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में हुई सांस्कृतिक अभिव्यक्ति इस प्रकार है -

(क) सद्‌गुणों से संबंधित -

सतगता (ललितपुर) - सद्गति
उत्तमधाना (ललितपुर)
कल्यानपुरा (ललितपुर तथा तालबेहट)

(ख) लोकनृत्य से संबंधित -

नाचनी (ललितपुर)
नट राई (तालबेहट) राई नृत्य

(ग) विशेष प्रथा से संबंधित -

तेरई (तालबेहट) - तेरहवीं

(घ) ऋषियों, महापुरुषों से संबंधित -

नड़ारी (महरौनी)[55]
कुसमाड़ (महरौनी) - कूष्मांड एक मंत्रकार ऋषि[56]
भौंड़ी (महरौनी) - भृगु
कुंवरपुरा (तालबेहट) - हरदौल

छत्रसालपुरा (ललितपुर) – छत्रसाल

(ङ) गुरूकुल से संबंधित –

गुरसौरा (ललितपुर) – गुरु की सराय

गुरयाना (महरौनी) – गुरु स्थान

(च) संगीत से संबंधित –

टोड़ी (तालबेहट)[57]

(छ) त्योहारों से संबंधित –

गनगौरा (ललितपुर)

5. धार्मिक आधार

ललितपुर जनपद का जनजीवन धर्म से अनुप्राणित है। आमजन अपने जीवन की असफलता का त्राण ईश्वर और धर्म में पाता है। कदाचित् उसे संतोष करने के लिए इससे बढ़कर कोई भरोसा भी नहीं है। ललितपुर नगर के मध्य में तुवन मंदिर है, जहां अंग्रेजों की तोपें रखीं जाती थी। इसीलिये यह 'तोपन-टीला' हुआ और भाषाई विकास क्रम में तुवन हो गया। विभिन्न धर्मो पर आधारित ललितपुर जनपद के स्थान-नाम इस प्रकार हैं –

(क) इस्लाम धर्म पर आधारित –

अजान (महरौनी)

(ख) बौद्ध धर्म पर आधारित –

बुधेड़ी (तालबेहट)

बुदनी (महरौनी)

(ग) हिंदू धर्म पर आधारित –

गणेश – बिनेकाटोरन (ललितपुर)

राम – रघुनाथपुरा (ललितपुर)

भवानी – भावनी (तालबेहट)

शिव – महेशपुरा, शिवपुरा (ललितपुर)

लक्ष्मण – लखनपुरा (ललितपुर)

मातृदेवी – मावलैन (तालबेहट) – सप्तमातृकाएं

दूधई (ललितपुर) – दूदा की माता

भदौरा (महरौनी) – भादवा माता

बरेजा (महरौनी) – पान माता

भैंसाई (ललितपुर) – भैंसासरी माता

माताटीला (तालबेहट)
रिछा (ललितपुर)- रिछाई माता
गनगौरा (ललितपुर) - गनगौर माता
बिहामहावत (ललितपुर) - बैमाता
असउपुरा (तालबेहट) - आसावरी माता
भंवरकली (तालबेहट) - भंवर माता
खोंखरा (ललितपुर)- खों-खों (खांसी) माता
ऊमरी (महरौनी) - ऊमर की माता

ज्योतिर्लिंग - बैजनाथ (महरौनी)
देवता - सुरउवा (ललितपुर)
लक्ष्मी - लक्ष्मीपुरा - ललितपुर
देवताओं का निवास - देवगढ़ (ललितपुर)
स्थान देवता- थनवारा (ललितपुर)
ब्रह्मा और विष्णु - बम्हौरी (तीनों तहसीलों में)
राधा - राधापुर (तालबेहट)
देव - देवरान (तालबेहट)
कृष्ण - किसलवांस (ललितपुर)

(घ) जैन धर्म पर आधारित -

महावीरपुरा (ललितपुर)
बनयाना (ललितपुर)

(ङ) सिख धर्म पर आधारित -

सैपुरा खालसा (ललितपुर)

6. प्राकृतिक आधार

किसी स्थान के नामकरण में भूगोल का पग-पग पर सहारा लिया जाता है। 'महावन' नाम घोषित करता है कि वहां कभी सघन वन रहा होगा। देहरादून का 'कासरौं' नाम से पता चला कि 'कांस' नामक घास का सघन वन वहां होता था। 'गोल्डकोस्ट' स्वर्णभूमि की ओर संकेत करता है। शिवालिक पर्वत श्रृंखला की घाटी (द्रोण-दून) में स्थित होने के कारण देहरादून का विकास हुआ।[58]

स्थान-नामों की सहायता से किए गए अध्ययन द्वारा भौगोलिक सीमा विस्तार का परिचय उपलब्ध होता है।[59] प्राकृतिक घात-प्रतिघातों से भूमि दशा परिवर्तित होती रही। इन परिवर्तनों को कुछ अंशों में स्थान-नाम सुरक्षित किए हुए हैं। प्रकृति

के विविध रूपों – पर्वतों, वनों, नदियों – और नगरों के अवशेषों को क्रमानुसार विवेचित करने में स्थान-नाम सहायक हैं।

मनुष्य प्रकृति पर आदि काल से ही अवलंबित है। उसके सौंदर्य को देखकर मनुष्य आह्लादित होता है। पठार, पहाड़ियां, टीले-टौरियां, पशु-पक्षी, फूल-फलों की विविधता इस जनपद में मौजूद है, जो मनुष्य को स्वाभाविक रूप से आकर्षित करती है। प्रकृति के कुछ प्रमुख रूप इस जनपद में इस प्रकार हैं-

(क) वृक्ष – अकोसा, अचार, अजान, अमलतास, अमोला, अमारा, अरजुन, अरूं, असना, सेजा, आम, आंवला, एरवां, इमली, कांकर, कठबेर, कंजी, करघई, कसई, काला, सिरस, सलई, कैंथ, खरहरा, खैर, गुलमोहर, गूलर, चिलबिल, जामुन, तेंदू, तुन, धुआर, याज या धुर्रा, नीम, पलाश या ढाक, पिचार या चिरौंजी, पीपल, बबूल, बरगद, महुआ, बहेड़ा, यूकेलिप्टस, शीशम, सागौन, सेंडलवुड, हल्दू।[60]

(ख) जंगली जानवर – बंदर, लंगूर, शेर, गुलदार या बघेरा, जंगली बिल्ली, भालू, लकड़बग्घा, गीदड़ या सियार, जंगली कुत्ता, भेड़िया, लोमड़ी, चिकारा, कस्तूरी, चौसिंघा, नीलगाय, मृग या काला हिरन, चीतले, सांभर, जंगली सुअर, गिलहरी, साही और खरगोश।[61]

(ग) पालतू जानवर – गाय, भैंस, बैल, बकरा-बकरी, भेड़, घोड़ा-घोड़ी, पड़ा (भैंसा), कुत्ता, बिल्ली प्रमुख हैं।

(घ) रेंगने वाले जंतु – कछुआ, गोह, अजगर, धामन, नाग, करैत, रसेल, वाइपर प्रमुख हैं।

(ङ) मछलियां – मछलियों के बहुत से प्रकार यहां पाए जाते हैं – करोंच, चेलवा, टेंगरा, दरियाई टेंगर, नैन, वाम, महासीर, मोह, मंगूर, रोहू, सिंधी, सिंधरी, सिलोंद, सौर इत्यादि।[62]

(च) औषधीय पादप – अनेक औषधीय पादप यहां की टौरियों और जंगलों में पाए जाते हैं –

ब्राह्मी, शंकाहुली, छौंकर, अपामार्ग (अद्दाझारौ), रतनजोत (जैट्रोफा), सफे द मूसली, अश्व गंधा इत्यादि।

प्रकृति के उपर्युक्त रूपों तथा अन्य प्राकृतिक उपादानों पर आधारित ललितपुर जिले के स्थान-नाम इस प्रकार हैं –

(क) फल-फूलों से संबंधित –

बेर – बिरारी (ललितपुर), विरौरा (ललितपुर)
महुआ का फल – गुलेंदा (तालबेहट)

सिंघाड़ा	–	सिंगरवारा (महरौनी)
नीमफल	–	निवारी (महरौनी)
खजूर	–	खजुरिया (ललितपुर)

(ख) पेड़-पौधों से संबंधित –

आम	–	अमउखेड़ा (ललितपुर)
		अमौरा (महरौनी)
		अमौदा (महरौनी)
इमली	–	इमलिया (महरौनी)
बरगद	–	बरतला (महरौनी)
		बारौद (ललितपुर)
		बरखेरा (ललितपुर)
		बरौदा स्वामी (ललितपुर)
		बर खिरिया (ललितपुर)
		बरोदी नकीव (ललितपुर)
		बटवाहा (तालबेहट)
		बरौदिया (महरौनी)
खैर (खदिर)	–	खैराई (महरौनी)
		खैरी (महरौनी)
		खैरपुरा (महरौनी)
		खैरा (तालबेहट)
		खैरी डांग (तालबेहट)
		खैरा डांग (तालबेहट)
कैथ (कपित्थ)	–	कैथोरा (ललितपुर)
गूलर (ऊमर)	–	ऊमरी (महरौनी)
चिरौल	–	चिरौला (महरौनी)
नीम	–	नीम गांव (महरौनी)
सेमल	–	सेमरा बुजुर्ग (महरौनी)
		सेमर खेड़ा (महरौनी)
		सेमरा भाग नगर (महरौनी)
		सेमरा (ललितपुर)
अनार	–	अनौरा (ललितपुर)
महुआ	–	महुआ खेड़ा (महरौनी)

महोली	–	महोली (ललितपुर)[63]
तेंदू	–	तिंदरा (तालबेहट)
जामुन	–	जामुनधाना कलां एवं खुर्द (ललितपुर)
		जमुनिया कलां एवं खुर्द (महरौनी)
गुरार या सिर्स	–	सिरसी खेड़ा (ललितपुर)
नीबू	–	बिजौरी (ललितपुर)
पीपल	–	पिपरिया (महरौनी)
		पिपरट (महरौनी)
		पिपरई (ललितपुर)
		पिपरौनिया (ललितपुर)
		पिपरिया (ललितपुर)
अंडी	–	अंडेला (ललितपुर)
कंद	–	कंधारी कलां (तालबेहट)
दर्भ	–	दावनी (ललितपुर)
पान	–	बरेजा (महरौनी)
तिल	–	तिलहरी (ललितपुर)
करौंदा	–	करौंदा (महरौनी)
ककड़ी	–	ककड़ारी (महरौनी तथा तालबेहट)
कुम्हड़ा	–	कुम्हैड़ी (महरौनी)
कपास	–	कपासी (ललितपुर)
मिर्च	–	मिर्चवारा (ललितपुर तथा महरौनी)
बाजरा	–	बजर्रा (ललितपुर)
बल्लरी	–	बलरगुवां (तालबेहट)
गूगल	–	गूगर (तालबेहट)
		गुगरवारा (महरौनी)
शंकाहुली	–	सांकली (ललितपुर)
अजान	–	अजान (ललितपुर)
जड़	–	जरुवा (महरौनी)
सेवन	–	सिवनी कलां (ललितपुर)

(सी) वनी (सीमा पर स्थित) से भी विकसित हो सकता है।[64]

(ग) जल स्त्रोतों से संबंधित –

तालगांव (ललितपुर)

तलैयापुरा (ललितपुर)
कुआंतला (ललितपुर)
तालाबपुरा (ललितपुर)
बरतला (महरौनी)
तलऊ (महरौनी)
दारुतला (महरौनी)
झरर (तालबेहट)
झिलगुवां (ललितपुर)
तालबेहट (तालबेहट)
धौरी सागर (महरौनी)
कुआगांव (महरौनी)
बम्हौरी सर (तालबेहट)
गंगासागर (महरौनी)
कुआ घोसी (महरौनी)

(घ) पशु-पक्षियों से संबंधित -

भैंसर्रा (महरौनी)	भैंस
रीछपुरा (ललितपुर)	रीछ
गदयाना (तालबेहट)	गधा
सेरवास कलां (तालबेहट)	शेर का निवास
मादोन (ललितपुर)	शेर का घर
बंदरेला (तालबेहट)	बंदर
चितरा (ललितपुर)	चीतल
सूडर (ललितपुर)	सुअर
बघौरा (तालबेहट)	बाघ
रिछा (ललितपुर)	रीछ
तिंदरा (तालबेहट)	तेंदुआ
बिलाटा (महरौनी)	नर बिल्ली
बिल्ला (महरौनी)	नर बिल्ली
चकोरा (महरौनी)	चकोर
सुकाड़ी (महरौनी)	तोता
गिदवाहा (महरौनी)	गिद्ध
हंसरा (महरौनी)	हंस

सारसेंड़ (तालबेहट)	सारस
टेटा (तालबेहट)	टेंटा[65]
कलरव (ललितपुर)	पक्षियों का शोरगुल
घुवरा (तालबेहट)	उल्लू
कोकटा (ललितपुर)	चकवा

(ङ) जीव-जंतुओं से संबंधित -

धमना (तालबेहट)	सर्प विशेष
मकरीपुर (महरौनी)	मकड़ी
मगरपुर (महरौनी)	मगरमच्छ
मछरका (महरौनी)	मच्छर
मिदरवाहा (महरौनी)	मेंढक
नगवांस (तालबेहट)	नाग
भौंरसिल (ललितपुर)	भ्रमर
गेवरा गुंदेरा (तालबेहट)	विषखोपड़ा

(च) उपग्रह संबंधी -

इस श्रेणी में चंद्रमा से संबंधित छः स्थान-नाम जिले की तीनों तहसीलों में प्राप्त हुए हैं।

(छ) वन संबंधी -

झांकर (महरौनी)	झाड़ - झंखाड़
झरावटा (महरौनी)	झुरमुट
झरकौन (ललितपुर)	
वनगुवां (महरौनी तथा तालबेहट)	

इस श्रेणी में डांग (जंगल) विभेदक पांच स्थान-नाम जिले की तालबेहट तहसील में मिलते हैं।

(ज) अन्न संबंधी -

मसौरा खुर्द तथा कलां (ललितपुर) - मसूर

इस प्रकार स्थान-नामों के अर्थतात्विक अध्ययन से हमें तत्संबंधी इतिहास, समाज, संस्कृति, भूगोल, भाषा, अर्थ और राजनीति का परिज्ञान प्राप्त होता है।

संदर्भ

1. हलायुध कोश, उद्धृत, नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 40
2. संस्कृत हिंदी कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृ. 518

3. A name may be defined, broadly, as a word or small group of words indicating to a particular entity in its entirely without necessarily or essentially indicating any special quantity of the entity – Encyclopeedia Britannica. Vol. 15, p. 1156.
उद्धृत उपनाम: एक अध्ययन, डॉ. शिवनारायण खन्ना पृ. 1-2
4. अभिधान अनुशीलन, डॉ. विद्याभूषण विभु, पृ. 11-12
5. नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 45-47
6. सांस्कृतिक भूगोल कोश, श्याम सुंदर भट्ट, पृ. 164
7. पाणिनि कालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 37
8. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 143
9. पाणिनि कालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 37
10. सूत्रकृतांगदीपिका टीका, 2/2/13 उद्धृत, नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 99-100
11. कल्पसूत्र टीका, 89, उद्धृत, नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 100
12. महाभाष्य 5/2/109 तथा 1/1/51, उद्धृत, नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 100
13. मोनियर मोनियर विलियम्स, संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी, उद्धृत, नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 73
14. पाणिनि कालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल पृ. 78
15. उद्धृत, नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, पृ. 103
16. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 145
17. पाणिनि कालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 215-216
18. दैनिक जागरण, कानपुर दिनांक 5 फरवरी, 2009
19. ज्ञान शब्दकोश, पृ. 133
20. बानपुर विविधा, सं. डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी, पृ. 176
21. सांस्कृतिक भूगोल कोश, श्याम सुंदर भट्ट, पृ. 34
22. बानपुर विविधा, पृ. 176 के विवरणानुसार।
23. http://www.pustak.org/bs/home.php?mean=52030, searched on 13.3.09
24. आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन, डॉ. कामिनी, पृ. 149।
25. तदैव, पृ. 62
26. सांस्कृतिक भूगोल कोश, श्याम सुंदर भट्ट, पृ. 71
27. तदैव, पृ. 60
28. तदैव, पृ. 48
29. तदैव, पृ. 45
30. तदैव, पृ. 30
31. पाणिनिकालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 217
32. सांस्कृतिक भूगोल कोश, श्याम सुंदर भट्ट, पृ. 23 एवं 124
33. तदैव, पृ. 65
34. तदैव, पृ. 94

35. तदैव, पृ. 93-94
36. बुंदेलखंडः प्रकृति और पुरुष, संपादक पं. हरिविष्णु अवस्थी तथा अन्य, पृ. 184
37. चंदेलकालीन बुंदेलखंड का इतिहास, डॉ. अयोध्या प्रसाद पांडेय, पृ. 93
38. तदैव, पृ. 103
39. सांस्कृतिक भूगोल कोश, श्याम सुंदर भट्ट, पृ. 124
40. तदैव, पृ. 181
41. सांस्कृतिक भूगोल कोश, श्याम सुंदर भट्ट, पृ. 197
42. वैदिक इंडैक्स भाग 1, ए.ए. मैक्डोनेल एवं ए.बी. कीथ, अनुवादक श्री रामकुमार राय, पृ 268
43. प्रथम प्रनाम किए सिर नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई। श्री रामचरितमानस, सुंदरकांड 50/7
44. मिथक और यथार्थ, डॉ. दामोदर धर्मानंद कोसंबी अनु0, डॉ. नंद किशोर नवल, पृ. 114
45. इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग धार्मिक ग्रंथ अथवा बुद्ध वचन की पंक्ति के अर्थ में मिलता है - प्राकृत विमर्श, डॉ. सरयू प्रसाद अग्रवाल, पृ. 22
46. झांसी की रानी, महाश्वेता देवी, अनु0 डॉ. रामशंकर द्विवेदी, पृ. 23
47. ब्राह्मणक जनपद की तरह शौद्रायण लोग (यूनानी रूप 'सोडराई') भी सिकंदर से लड़े थे - पाणिनि कालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 65
48. भैलोनी सूबा (तालबेहट) के बुजुर्ग ग्रामीणों ने बताया कि राजस्थान के 'भई सतलोनिया' स्थान से इस ग्राम के पूर्वज यहां आकर बसे थे जिसके कारण इस गांव का नाम भैलोनी पड़ा।
49. पुराना नाम तोपन टीला, इस स्थान पर अंग्रेजी सैनिकों की छावनी हुआ करती थी, जहां अंग्रेजों की तोपें रखी जाती थीं। ललितपुर स्वर्ण जयंती स्मारिका '98, पृ. 87
50. माथे पर पहनने का एक तरह का झालदार लंबोतरा गहना, http://www.pustak.org/bs/home.php?mean=49863, searched on 13.3.09
51. आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन, डॉ. कामिनी पृ. 150
52. भाषा-भूगोल, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 340-341
53. पाणिनि कालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 37
54. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 144
55. नड़-एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम, http://www.pustak.org/bs/home.php?mean=49863, searched on 13.3.09
56. ज्ञान शब्दकोश, पृ. 169
57. 1-प्रातः काल गाई जाने वाली संपूर्ण जाति की एक रागिनी 2- संगीत में चार मात्राओं का एक ताल, http://www.pustak.org/bs/home.php?mean=35580, searched on 13.3.09
58. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 137
59. पाणिनि कालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 40
60. उ.प्र. जिला गजेटियर - ललितपुर, पृ. 8
61. तदैव, पृ. 9

62. तदैव, पृ. 9
63. इमारती लकड़ी वाला वृक्ष, http://www.pustak.org/bs/home.php?mean=61195, searched on 13.3.09
64. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. – 146
65. बगुले की जाति का चितकबरे रंग का एक बड़ा पक्षी, http://www.pustak.org/bs/home.php?mean=35464, searched on 13.3.09

अध्याय - 5

स्थान-नामों का भाषा एवं ध्वनि संबंधी विवेचन

किसी जिले के स्थान-नामों में प्रयुक्त शब्दावली का भाषा एवं ध्वनिगत विवेचन उस जिले के बोली-रूप को व्यवस्थित करता है। इस दृष्टि से ललितपुर जिले के स्थान-नामों का भाषा एवं ध्वनि संबंधी विवेचन आलोच्य अध्याय में किया जाएगा।

स्थान-नामों की रचना में मूल इकाई शब्द होता हैं। अत: शब्द ही भाषा एवं ध्वनिगत विवेचन का आधार है। पाणिनि के अनुसार शब्द का अर्थ 'व्यक्ति' भी होता है और 'जाति' भी। पाणिनि ने आचार्य वाजप्यायन के मत से जाना कि 'गौ' शब्द का अर्थ गौ-जाति मात्र है। वहीं आचार्य व्याडि के मत से जाना गया है कि 'गौ' शब्द व्यक्ति रूप में केवल एक गौ का वाचक है। पाणिनि ने उक्त आचार्य-द्वय के मतों में सत्यांश माना है।[1]

ललितपुर जिले के एकपदीय तथा द्विपदीय अधोलिखित स्थान-नामों की प्रकृति को यदि देखा जाए तो हम पाते हैं कि इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश से प्राप्त भाषा तत्वों को सुरक्षित रखते हुए स्थानीय बोली के अनुसार ध्वनि और भाषागत परिवर्तन किए गए हैं-

स्थान-नाम	**मूल शब्द**
बुधेड़ी (तालबेहट)	बुद्ध अरण्य
तरावली (महरौनी)	तारा अवली
सिंदवाहा (महरौनी)	सिंधिया बाड़ा
अजनौरा (महरौनी)	अज नगर[2]

'बुधेड़ी' नाम के मूल शब्द का परपद 'अरण्य' विकसित होकर 'ऐड़ी' हो गया। 'बुद्ध' में 'द' का द्वित्व सामान्य होकर 'ध' हो गया। 'तरावली' के मूल शब्द 'तारा' का 'तरा' ह्रस्वीकरण की प्रवृत्ति के कारण हुआ हैं। 'अवली' पद इस स्थान नाम में संस्कृत की भांति बना हुआ है। 'सिंदवाहा' में 'सिंधिया' का ह्रस्वीकरण तो हुआ ही, 'ध' का भी अल्पप्राणीकरण हो गया। 'बाड़ा' का रूपांतरण 'वाहा' हो

गया। 'अजनौरा' का पूर्वपद तत्सम 'अज' सुरक्षित है, पर 'नगर' शब्द परिवर्तित होकर 'नौरा' हो गया।

स्थानीय भाषागत विशिष्टताएं–ललितपुर जिले की सामाजिक संरचना में अनेक विविधताएं हैं। यहां शिक्षित वर्ग है तो बहुत बड़ा वर्ग अशिक्षितों का भी है। 'पांच कोस पर बदले पानी कोस-कोस पर पानी' के अनुसार बोली के कई रूप यहां पाये जाते हैं। भाषा के लिखित रूप और बोलचाल के रूपों में अंतर है। जातियों के समूहों के बोली रूपों में भी अंतर पाया जाता है। मुस्लिम परिवारों में यहां की बोली को कुछ उर्दू शब्दों में संश्लिष्ट किया जाता है। आदिवासियों की बोली में ललितपुर जनपद की बोली में बलाघातिक परिवर्तन पाए जाते हैं। कुछ प्रमुख ध्वनिगत विशेषताएं यहां के स्थान-नामों को केंद्र में रखकर इस प्रकार रेखांकित की जा सकती हैं-

1. सानुनासिक प्रयोग–यह शब्द के प्रारंभ, मध्य और अंत सभी जगह उपलब्ध है, यथा -

आदि	–	रोंड़ा (ललितपुर)
मध्य	–	म्यांव (महरौनी)
अंत	–	कुचदों (ललितपुर) जमुनियां (ललितपुर)
आदि एवं अंत	–	हंसगुवां (तालबेहट)
मध्य एवं अंत	–	बनगुवां कलां (तालबेहट)

2. अल्पप्राणीकरण–स्थान-नामों के महाप्राण शब्दों का परिवर्तन अल्पप्राण शब्दों में होता है, यथा -

अहिरा	–	ऐरा (ललितपुर)
सिमरधा	–	सिमरदा (ललितपुर)
खोंखरा	–	खोंकरा (ललितपुर)
चढ़रा	–	चड़रा (महरौनी)

3. महाप्राणीकरण–

बहरावट (ललितपुर)	–	भैरावट
बेहटा (तालबेहट)	–	भेटा

किंतु यह परिवर्तन बोली के उच्चरित रूपों में ही पाया जाता है।

4. ओकारांत प्रवृत्ति–बोली के समान स्थान-नामों की संज्ञाएं भी 'ओ' कारांत प्राप्त होती हैं, यथा -

डगराना (महरौनी)	–	डगरानो
सिंदवाहा (महरौनी)	–	सिंदवाओ

परसाटा (महरौनी) – परसाटा
करमुहारा (ललितपुर) – करमुआओ

5. 'ह'कार लोप की प्रवृत्ति–बुंदेली बोली की ही भांति ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में यह प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हुई है –

मुहारा (तालबेहट) – मुआरा
सुनवाहा (महरौनी – सुनवाओ
बम्हौरी बहादुर सिंह (महरौनी) – बमौई बहादुर सींग
नौहर कलां (ललितपुर) – नौरकलां
महर्रा (ललितपुर) – मार्रा
महरौनी (महरौनी तहसील) – मारौनी

6. 'र'कार लोप की प्रवृत्ति–यह प्रवृत्ति भी ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में दृष्टव्य है

मिर्चवारा (ललितपुर तथा महरौनी) – मैचवारा
डोरना (ललितपुर) – डोन्ना

किंतु अधिकांश स्थान-नामों में यह ध्वनि ('र'कार) सुरक्षित भी है –

धौर्रा (ललितपुर)
मर्रोली (महरौनी)
दुर्जनपुरा (ललितपुर)
बजर्रा (ललितपुर)
महर्रा (ललितपुर)

यहां स्थान-नामों में अंतिम वर्ण 'र' का परिवर्तन बिना स्वर बदले हुए होता है।

गंगचारी (महरौनी) – गंगचाई
लड़वारी (तालबेहट) – लड़वाई
सुरवारा (ललितपुर) – सुरवाओ

उपर्युक्त स्थान-नामों में प्रयुक्त अंतिम 'र' वर्ण 'इ' में परिवर्तित तभी होता है, जब 'र' वर्ण 'ई' स्वर से संयुक्त हो तथा 'री' के पूर्व का वर्ण 'आ'कारांत हो। इसी प्रकार अंतिम 'रा' वर्ण 'ओ' में परिवर्तित तब होता है जब 'रा' के पूर्व का वर्ण 'आ'कारांत हो।

7. स्वर संबंधी परिवर्तन–जिले की बोली में 10 स्वर- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, आ- व्यवहृत होते हैं। यह स्वर जिले के स्थान नामों में भी प्रयुक्त हुए हैं। सभी स्वरों के अनुनासिक रूप उपलब्ध होते हैं। ललितपुर जनपद के स्थान-नामों में 'इ'कारांत और 'उ'कारांत अभिधान नहीं पाये जाते हैं। बोली के उच्चरित रूपों

में भी यह प्रवृत्ति नहीं मिलती, किंतु यहां के स्थान-नामों में 'ई'कारांत एवं 'ऊ'कारांत रूप अवश्य उपलब्ध हैं यथा -

'ई'कारांत	-	करमई (तालबेहट)
		ऊमरी (महरौनी)
'ऊ'कारांत	-	तलऊ (महरौनी)
		खिरिया भारंजू (महरौनी)

(क) स्वरों में अनुनासिकता -

अं	-	अंडेला (ललितपुर) अंधेर (ललितपुर)
आं	-	कुआं घोसी (महरौनी)
इं	-	सिंदवाहा (महरौनी)
ईं	-	तेरईं (तालबेहट)
उं	-	कुंवरपुरा (तालबेहट)
ऐं	-	गेंदोरा (तालबेहट)
ओं	-	समोंगर (महरौनी)
		डोंगरा कलां (ललितपुर)

(ख) द्विस्वर संयोग -

अ	+	ऊ	=	अऊ	-	मऊ (तालबेहट)
आ	+	ऊ	=	आऊ	-	प्याऊ (ललितपुर)
अ	+	इ	=	अई	-	नावई (महरौनी)
आ	+	ई	=	आई	-	छिपाई (तालबेहट)
उ	+	आ	=	उवा	-	कुलुवा (ललितपुर)
औ	+	आ	=	औआ	-	पटौआ (ललितपुर)
ऐ	+	आ	=	ऐआ	-	सलैआ (ललितपुर)

(ग) त्रिस्वर संयोग -

अ+ उ + आ	=	अउआ	-	चमरउआ (ललितपुर)

8. व्यंजन संबंधी परिवर्तन —जनपद ललितपुर के स्थान-नामों में निम्नलिखित व्यंजन प्रयुक्त हुए हैं-

स्पर्श ध्वनियां	-	क, ख, ग, घ
		ट, ठ, ड, ढ
		त, थ, द, ध
		प, फ, ब, भ
स्पर्श संघर्षी	-	च, छ, ज, झ

संघर्षी	–	श, स, ह
अनुनासिक	–	न, म
पार्श्विक	–	ल
लुंठित	–	र
उत्क्षिप्त	–	ढ़, ड
अर्ध स्वर	–	य, व

उपर्युक्त व्यंजनों के अतिरिक्त संयुक्त व्यंजन भी यहां के स्थान-नामों में प्रयुक्त हुये हैं।

(क) द्विव्यंजन संयोग -

क	+	त	–	सक्तू(महरौनी)
ल	+	य	–	कल्यानपुरा (ललितपुर तथा तालबेहट)
ल	+	ट	–	गिल्टौरा (ललितपुर)
ल	+	द	–	सौल्दा (महरौनी)
न	+	ध	–	जलंधर (महरौनी)
न	+	द	–	बंदपुरा (ललितपुर)
त	+	त	–	उश्रमधाना (ललितपुर)
र्	+	र	–	धौर्रा (ललितपुर)
म	+	ह	–	बम्हौरी शहना (तालबेहट)
त	+	थ	–	नत्थीखेड़ा (तालबेहट)
क	+	स	–	रक्सा (तालबेहट)
स्त्र	+	त्र	–	वस्त्रावन (तालबेहट)
र्	+	ष	–	हर्षपुर (तालबेहट)
र्	+	ज	–	अर्जुन खिरिया (महरौनी)
म	+	ह	–	कुम्हैड़ी (महरौनी)
क	+	य	–	क्योलारी (महरौनी)
ल	+	ल	–	छिल्ला(ललितपुर तथा महरौनी)
म	+	य	–	म्यांव (महरौनी)
न	+	ज	–	लखंजर (महरौनी)
र्	+	च	–	मिर्चवारा(महरौनी तथा ललितपुर)
श	+	य	–	श्यामपुरा (महरौनी)

(ख) त्रिव्यंजन संयोग -

न्+	द +	र्	–	चंद्रापुर (तालबेहट)

(ग) अनुनासिकता लोप – ललितपुर जनपद की बोली में अनुनासिकता का बाहुल्य है। हाथ का हांत उच्चरित रूप है, पर कुछ स्थान-नामों में अनुनासिकता लुप्त हो गई है, जैसे –

अनुनासिक रूप	**अननुनासिक रूप**
टेंटा	टेटा (तालबेहट)
कुआंगांव	कुआगांव (महरौनी
कृष्ण आवास	किसलवास (ललितपुर)
मांद	मादौन (ललितपुर)

(घ) महाप्राणत्व लोप –

'भ' वर्ण लोप	–	दावनी (ललितपुर)
'ख' वर्ण लोप	–	भीकमपुर (महरौनी)
'ध' वर्ण लोप	–	सिंदवाहा (महरौनी)
'ढ' वर्ण लोप	–	मिदरवाहा (महरौनी)

(ङ) 'य' का 'ज' में परिवर्तन –

जखौरा (तालबेहट)

(च) 'ण' का 'न' में परिवर्तन –

बानपुर (महरौनी)

(छ) 'ड़' का 'र' में परिवर्तन –

खाई खेरा (ललितपुर)

(ज) 'ट' का 'त' में परिवर्तन –

हनौतिया (ललितपुर) हनौता (तालबेहट)

इस स्थान-नाम का मूल रूप 'हिरण अटवी' था। वनवाची 'अटवी'[3] परपद में 'इया' ऊनवाचक प्रत्यय के योग से 'अटविया' रूप व्युत्पन्न हुआ। वर्ण-विपर्यय के कारण 'अवटिया' रूप हुआ। 'अ' तथा 'व' ध्वनियां 'औ' में परिवर्तित होकर हिरण में 'इ' कार और 'र' का लोप हो गया और 'ण' वर्ण 'न' ध्वनि के साथ संयुक्त होकर 'ट' वर्ण 'त' में परिवर्तित हो गया। इस प्रकार 'हनौतिया' स्थान-नाम प्रचलित हुआ।

(झ) अरण्य की ध्वनियों का परिवर्तन –

कुसमाड़ (महरौनी)	–	कुसुम + अरण्य
सारसेड़ (तालबेहट)	–	सारस + अरण्य
बुधेड़ी (तालबेहट)	–	बुद्ध + अरण्य
कुम्हैंडी़ (महरौनी)	–	कुंभ + अरण्य

अंडेला (ललितपुर)-	अरण्य + इला (पृथ्वी)[4]	
तुलनीय	–	मछंड (भिंड)

(ञ) हाट की ध्वनियों का परिवर्तन -

बिजरौठा (तालबेहट)	–	बिजरा + हट्ट
कोकटा (ललितपुर)	–	कोक + हट्ट
कुर्रट (महरौनी)	–	कुरु + हट्ट
छपरट (महरौनी)	–	छप्पर + हट्ट

(ट) स्थल की ध्वनियों का परिवर्तन -

बरेठ (ललितपुर)	–	बट + स्थली
खजुरिया	–	खर्जुर + स्थली
कलौथरा (तालबेहट)	–	कल्चुरि + स्थल
सौल्दा (महरौनी)	–	साल्व (अलवर से उत्तरी बीकानेर तक का फै ला प्रदेश) + स्थान
मऊठाना (ललितपुर)	–	मही + स्थल

(ठ) गृह की ध्वनियों का परिवर्तन -

तिलहरी (ललितपुर) + तिल गृह

(ड) वर्ण परिवर्तन - मूल संज्ञा शब्दों में 'अवनी' प्रत्यय संयुक्त होने के पश्चात शब्द का प्रथम वर्ण दीर्घ से लघु हो जाता है -

बगौनी (महरौनी) - बाग + अवनी

इसी तरह 'आरी' प्रत्यय के साथ एक स्थान-नाम दृष्टव्य है -

घुटारी (ललितपुर) = घोट + आरी

पाणिनि के अनुसार जनपद की भौगोलिक इकाई के अंतर्गत मनुष्यों के रहने के स्थान नगर और ग्राम कहलाते थे। इनसे भी छोटे स्थानों को घोष (6/2/85) और खेड़ों को खेट (2/2/126) कहा जाता था। पाणिनि ने कहीं ग्राम और नगर में भेद माना है तो कहीं ग्राम शब्द से नगर का भी ग्रहण किया है किंतु पंतजलि ने ग्राम और नगर में अंतर करने के लिये 'लोक' को प्रमाण माना है।[5] स्थान-नाम की विकसित ध्वनियों का मूल ज्ञात करने के लिए स्थान-नामों में संयुक्त प्रत्ययों का अध्ययन आवश्यक होता है। यह अध्ययन पुस्तक के षष्ठ अध्याय में किया गया है।

9. स्थान-नामों के लिखित व उच्चरित रूपों में अंतर–किसी शब्द के लिखित रूपों में उसका 'वर्ण' सर्वोपरि माना जाता है, जबकि उच्चरित रूपों में ध्वनि का महत्व सर्वाधिक होता है। ललितपुर जिले के एकपदीय स्थान नामों में

द्विपदीय, बहुपदीय एवं वाक्यांश मूलक स्थान-नामों की अपेक्षा लिखित एवं उच्चरित रूपों में अधिक अंतर देखा गया है। भाषा का लिखित रूप मानक और शुद्ध होता है जबकि उच्चरित रूप 'आत्मगत' होता है। इसलिए उच्चरित रूप के अध्ययन में यह उल्लेख्य है कि किसी स्थान नाम का उच्चरित रूप मात्र वही नहीं, जो यहां दिया जा रहा है, फिर भी ध्वनि परिवर्तन को समझने की दृष्टि से ललितपुर जिले के स्थान-नामों में लिखित एवं उच्चरित रूपों में निम्नलिखित प्रमुख अंतर प्राप्त होते हैं -

	लिखित रूप	*उच्चरित रूप*	*तहसील*
1.	दौलता	दौल्ता	तालबेहट
2.	ककड़ारी	ककड़ाई	तालबेहट
3.	गदयाना	गदयानो/गदयाने	तालबेहट
4.	गढ़िया	गड़िया	तालबेहट
5.	ठाठखेरा	ठाटखेरो	तालबेहट
6.	दशरारा	दसराओ	तालबेहट
7.	तालबेहट	तालबैट	तालबेहट
8.	बम्हौरी सर	बमोई	तालबेहट
9.	रजावन	रजौन	तालबेहट
10.	राधापुर	रादापुर	तालबेहट
11.	लड़वारी	लड़वाई	तालबेहट
12.	हर्षपुर	हर्सपुर	तालबेहट
13.	शाहपुर	सायपुर	तालबेहट
14.	अर्जुन खिरिया	अरजन खिरिया	महरौनी
15.	उदयपुरा	उदैपुरा/उदैपुरै	महरौनी
16.	कैलगुवां	कैलग्वां	महरौनी
17.	कारीटोरन	काईटोरन	महरौनी
18.	खिरिया मिश्र	खिरिया मिसर/कड़ोरे/नकटा	महरौनी
19.	गहराव	गैरायं/गैराव	महरौनी
20.	गुढ़ा	गुड़ा	महरौनी
21.	चौमहू	चौमऊ	महरौनी
22.	चढ़रा	चड़रा	महरौनी
23.	डगराना	डगरानौ	महरौनी
24.	समोगर	समोंगर	महरौनी
25.	सैदपुर	सैतपुर	महरौनी

26. बूढ़ी	बूड़ी	महरौनी
27. निवारी	निवाई	महरौनी
28. बूटी	बुटी	महरौनी
29. सतलींगा	सतलींजा	महरौनी
30. सिंदवाहा	सिंदवाऔ	महरौनी
31. महरौनी	मारौनी	महरौनी
32. दौलतपुर	दौलतपुरा	महरौनी
33. नगारा	नगाओ/नगायं	महरौनी
34. धवारी	धवाई	महरौनी
35. बकसपुर	बगसपुर	महरौनी
36. बरेजा	बरेजौ	महरौनी
37. बमराना	बमरानौ	महरौनी
38. पिसनारी	पिसनाई	महरौनी
39. पाह	पाय	महरौनी
40. मिर्चवारा	मेंचवाओ/मैंचवायं	महरौनी
41. ललितापुर	लल्तापुर	महरौनी
42. ललितपुर	लल्तपुर/लतपुर	ललितपुर
43. करमुहारा	करमुआऔ	ललितपुर
44. खोंखरा	खौंकरा	ललितपुर
45. पनारी	पनाई	ललितपुर
46. डोरना	डोन्ना	ललितपुर
47. सतवांसा	सतमासा	ललितपुर
48. सेरवांस कलां	सैरमास	ललितपुर
49. सिवनी कलां	सेवनी	ललितपुर
50. सूडर	सुड़र	ललितपुर
51. दूधई	दूदई	ललितपुर
52. जहाजपुर	झाजपुर	ललितपुर
53. देवगढ़	देवगड़	ललितपुर
54. कारीसा	काईसा	ललितपुर
55. निबाहो	निभाओ/निभाव	ललितपुर
56. दुर्जनपुरा	दुरजनपुरा	ललितपुर
57. बख्तर	बक्तर	ललितपुर

58. पटौवा	पटउवा	ललितपुर
59. पड़ोरिया	पड़रिया	ललितपुर
60. बंदरगुढ़ा	बंदरगुड़ा	ललितपुर
61. विघा महावत	बिघा महौत	ललितपुर
62. बिरारी	बिराई	ललितपुर
63. मनगुवां	मनगुवें	ललितपुर
64. रघुनाथपुरा	रगनातपुरा	ललितपुर
65. मुड़ारी	मुड़ाई	ललितपुर
66. शिवपुरा	सेवपुरा	ललितपुर
67. सिमरधा	सिमरदा/सिमरदै	ललितपुर
68. बारयो	बारौ	महरौनी
69. पियरा	पीरा	महरौनी
70. करमरा	करमऔ/करमएं	ललितपुर
71. करेंगा	करैंगा	तालबेहट

उच्चारणगत विषेशताएं

1. स्थान-नामों के शब्दांत में यदि 'दीर्घ' स्वर 'आ' आता है तब उच्चरित रूप 'आ औ/ऐ' हो जाता है। यथा क्रमांक 6, 3, 23, 37, 40, 43
2. 'व' का उच्चारण 'म' किया जाता है, यथा क्रमांक 47
3. मूर्धन्य 'ष' तथा तालव्य 'श' का उच्चारण 'दंत्य' 'स' होता है, यथा क्रमांक 12, 13, 66
4. 'ह' का लोप, यथा क्रमांक 7, 8, 13, 19, 21, 30, 39, 52, 55
5. व्यंजनों का संयुक्तीकरण, यथा क्रमांक 1
6. दीर्घ स्वरों का ह्रस्वीकरण, यथा क्रमांक 28
7. 'द' का उच्चारण 'म' यथा क्रमांक 25
8. 'र' वर्ण का लोप, यथा क्रमांक 38, 40, 46, 54, 62
9. उत्क्षिप्त ध्वनि का आगम, यथा क्रमांक 50
10. 'ग' का उच्चारण 'ज', यथा क्रमांक 29
11. 'खुर्द' के स्थान पर 'छोटा' तथा 'कलां' और 'बुजुर्ग' के स्थान पर 'बड़ा' विभेदक उच्चरित किया जाता है।
12. अल्पप्राणीकरण, यथा क्रमांक 51, 53, 57, 60, 64
13. महाप्राणीकरण, यथा क्रमांक 52, 55

14. स्वर परिवर्तन, यथा क्रमांक 40, 49, 66
15. स्वर लोप, यथा क्रमांक 16
16. स्वरागम, यथा क्रमांक 31
17. व्यंजन लोप, यथा क्रमांक 15, 42, 69
18. व्यंजन परिवर्तन, यथा क्रमांक 22, 26, 35
19. व्यंजन पूर्णीकरण, यथा क्रमांक 14, 18
20. अनुस्वार आगम, यथा क्रमांक 19, 24, 40
21. कुछ स्थानों के विभेदक किसी ख्याति प्राप्त स्थानीय व्यक्ति के नाम से उच्चरित होते हैं यथा खिरिया कड़ोरे मिसिर की अथवा नकटे की खिरिया, यथा क्रमांक 18
22. 'व' का उच्चारण नाम के प्रथम व्यंजन में 'ब' होता है, यथा विजयपुरा का बिजयपुरा (ललितपुर), वुदनी का बुदनी (महरौनी)

उपर्युक्त परिवर्तनों के मूल में प्रयत्नलाघव, मुख-सुख, अज्ञान तथा अल्पज्ञान होता है।

23. कुछ स्थान अपने पुराने नामों द्वारा अभिहित होते हैं, यथा

प्राचीन रूप	नवीन रूप
चिगलउवा	बुरौगांव (महरौनी)

24. 'ओ'कारांत नामों का 'औ'कारांत तथा 'ए'कारांत नामों का उच्चारण 'ऐ'कारांत होता है, यथा क्रमांक 44 तथा 71।

10. व्याकरणिक रूपरेखा—व्याकरणिक कोटियों के आधार पर ललितपुर जिले के स्थान-नामों की शब्दावली का व्याकरणिक स्वरूप निश्चित किया जा सकता है। शब्द रचना और पद रचना द्वारा भाषा का गठन होता है।

इस आधार पर यौगिक तथा सामासिक स्थान-नामों की रचना, लिंग व्यवस्था, कारक चिन्हों का प्रयोग तथा संयुक्तीकरण, अव्यय-युक्त रचनाएं, स्थान-नामों में पुनरुक्तियां, स्थान-नामों के युग्म रूप, संधियां तथा स्थान-नामों से संबंधित लोकोक्तियों जैसी व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषण किया जा सकता है।

(क) यौगिक और सामासिक स्थान-नाम -

सरल शब्द	-	बार (तालबेहट)
यौगिक शब्द	-	बारौद (ललितपुर)
सामासिक शब्द	-	बहादुरपुर (महरौनी) तत्पुरुष समास
उपसर्गयुक्त शब्द	-	विजयपुरा (ललितपुर)
प्रत्ययुक्त शब्द	-	बिरारी (ललितपुर)

(ख) लिंग व्यवस्था—डॉ. सरयू प्रसाद अग्रवाल ने केवल पुल्लिंग संज्ञा शब्द में प्रयुक्त होने वाले 'वा' प्रत्यय को अवधी की विशेषता तथा 'इया' प्रत्यय को 'स्त्रीलिंग' की प्रवृत्ति माना है। डॉ. दीप्ति शर्मा के अनुसार 'प्रत्यय' के कारण किसी शब्द का लिंग निर्णीत नहीं होता अपितु उससे केवल द्योतन होता है। 'लिंग' शब्दनिष्ठ होता है और लिंग के निर्णय का एकमात्र आधार लोक द्वारा स्वीकृत प्रयोग होता है।[6]

ललितपुर जनपद में 'अ', 'ऊ', 'ई', इया प्रत्ययांत स्थान-नाम स्त्रीलिंग हैं। 'स्थली' का घिसा रूप 'री' उच्चारण रूप 'ई' तथा 'अवली' और 'अवल' युक्त स्थान-नाम भी स्त्रीलिंग के अंतर्गत आते हैं। इसके अतिरिक्त अहरी, अर, अवनियां, अवनी, आई, इल, अट, एही, ओढ़ी, एरी, ओरी, एड़ी, टी, ती, इत्यादि प्रत्यय युक्त स्थान-नाम स्त्रीलिंग कोटि में आते हैं।

पुल्लिंग के अंतर्गत आने वाले स्थान-नाम अत, औवा, दा, ना, का, वाना, गाना, वाहा, ठाना, खरा, एंगा, एंदा, ईसा, आटा, आदि प्रत्यय संयुक्त हैं।

द्विपदीय, बहुपदीय तथा वाक्यांश मूलक स्थान-नामों के लिंग का निर्धारण परपद तथा विभेदक पर आधारित होता है।

(ग) कारकों का प्रयोग तथा संयुक्तीकरण -

बम्हौरी - बहादुर सिंह की (महरौनी)

ललितपुर जनपद की बोली में स्थान-नामों में परसर्ग संयुक्त करते हुए प्रयोग भी देखे गए हैं -

ही - छिल्लै जा रए
छिल्ला (महरौनी) ही जा रहे हैं।

भी - बारउ चलौ
बार (तालबेहट) भी चलो।

अपादान कारक में
मारौनी धरो
क्या महरौनी में रखा है?

(घ) अव्यय युक्त स्थान-नाम -

बुरौगांव उर्फ चिगलउवा (महरौनी)

(ङ) स्थान-नामों में पुनरुक्तियां—इसका कारण प्रथम गांव के निवासियों का अथवा कुछ निवासियों का दूसरी जगह जाकर बसना और शासक के प्रति सम्मान भावना प्रदर्शित करना है। प्रथम स्थान-नाम के प्रति आसक्ति और रूढ़ियां भी पुनरुक्ति का कारण हो सकती हैं। इस जनपद के ही नहीं; स्वयं उस ग्राम के

निवासी भी यह जानकर अचंभित हो जाते हैं कि उनके ही स्थान-नाम का कोई अन्य स्थान-नाम इसी जनपद और तहसील में ही नहीं कोई-कोई उसी ब्लॉक में भी स्थित है। पुनरुक्ति परक स्थान-नाम ललितपुर जिले में 44 हैं, जो इस प्रकार हैं। कोष्ठक में ब्लॉक तथा तहसील नाम दिए गए हैं-

1. खिरिया मिश्र (जखौरा - ललितपुर)	खिरिया मिश्र (बार - महरौनी)
2. खिरिया खुर्द (जखौरा - तालबेहट)	खिरिया खुर्द (जखौरा - ललितपुर)
3. डोंगरा कलां (मड़ावरा - ललितपुर)	डोंगरा कलां (बिरधा - ललितपुर)
4. नयागांव (मड़ावरा - महरौनी)	नयागांव (बिरधा - ललितपुर)
5. कल्यानपुरा (बिरधा - ललितपुर)	कल्यानपुरा (जखौरा - तालबेहट)
6. कलौथरा (तालबेहट - तालबेहट)	कलौथरा (बिरधा - ललितपुर)
7. पिपरई (तालबेहट - तालबेहट)	पिपरई (बिरधा - ललितपुर)
8. बरखेरा (बिरधा - ललितपुर)	बरखेरा (मड़ावरा - महरौनी)
9. बरौदिया (मड़ावरा - महरौनी)	बरौदिया (बिरधा - ललितपुर)
10. बम्हौरी कलां (मड़ावरा - महरौनी)	बम्हौरी कलां (जखौरा - ललितपुर)
11. बछरावनी (मड़ावरा - महरौनी)	बछरावनी (बार - तालबेहट)
12. बिजयपुरा (तालबेहट - तालबेहट)	बिजयपुरा (बिरधा - ललितपुर)
13. बैरवारा (मड़ावरा - महरौनी)	बैरवारा (जखौरा - ललितपुर)
14. मुड़िया (मड़ावरा - महरौनी)	मुड़िया (महरौनी - महरौनी)
15. रसोई (बिरधा - ललितपुर)	रसोई (जखौरा - ललितपुर)
16. लिधौरा (मड़ावरा - महरौनी)	लिधौरा (बिरधा - ललितपुर)
17. सिमरिया (महरौनी - महरौनी)	सिमरिया (बार - महरौनी)
18. सोंरई (मड़ावरा - महरौनी)	सोंरई (जखौरा - तालबेहट)
19. गेंदौरा (जखौरा - ललितपुर)	गेंदौरा (बार - तालबेहट)
20. गोंना (मड़ावरा - महरौनी)	गोंना (महरौनी - महरौनी)
21. चंदेरा (जखौरा - ललितपुर)	चंदेरा (बिरधा - ललितपुर)
22. टीला (बिरधा - ललितपुर)	टीला (बार - महरौनी)
23. दिदौरा (तालबेहट - तालबेहट)	दिदौरा (बार - महरौनी)
24. धमना (तालबेहट - तालबेहट)	धमना (बार - तालबेहट)
25. धुरवारा (महरौनी - महरौनी)	धुरवारा (जखौरा - तालबेहट)
26. नीमखेड़ा (मड़ावरा - महरौनी)	नीमखेरा (बिरधा - ललितपुर)
27. पाली (बिरधा - ललितपुर)	पाली (महरौनी - महरौनी)
28. आलापुर (बिरधा - ललितपुर)	आलापुर (जखौरा - ललितपुर)

29. कनपुरा (बिरधा - ललितपुर)	कनपुरा (महरौनी - महरौनी)
30. कारीटोरन (बार - तालबेहट)	कारीटोरन (मड़ावरा - महरौनी)
31. ककड़ारी (तालबेहट - तालबेहट)	ककड़ारी (बार - महरौनी)
32. छिल्ला (बिरधा - ललितपुर)	छिल्ला (बार - महरौनी)
33. क्योलारी (महरौनी - महरौनी)	क्योलारी (बिरधा - ललितपुर)
34. टौरिया (जखौरा - ललितपुर)	टौरिया (बार - महरौनी)
35. मिर्चवारा (जखौरा - ललितपुर)	मिर्चवारा (बार - महरौनी)
36. दैलवारा (जखौरा - ललितपुर)	दैलवारा (बार - महरौनी)
37. जखौरा (महरौनी - महरौनी)	जखौरा (जखौरा - तालबेहट)
38. बिरधा (तालबेहट - तालबेहट)	बिरधा (बिरधा - ललितपुर)
39. रमेशरा (बिरधा - ललितपुर)	रमेशरा (महरौनी - महरौनी)
40. म्यांव (तालबेहट - तालबेहट)	म्यांव (बार - महरौनी)
41. ककरुवा (मड़ावरा - महरौनी)	ककरुवा (जखौरा - ललितपुर)
42. इमिलिया (बार - तालबेहट)	इमिलिया (बिरधा - ललितपुर)
43. गंगचारी (मड़ावरा - महरौनी)	गंगचारी (बार - महरौनी)
44. कुंवरपुरा (तालबेहट - तालबेहट)	कुंवरपुरा (महरौनी - महरौनी)

इसके अतिरिक्त ललितपुर जिले में पुनरुक्ति परक स्थान-नामों की पृथकता के लिए पूर्वपद, परपद तथा विभेदकों का प्रयोग भी किया गया है।

पूर्वपद समान, किंतु विभेदक अलग स्थान-नामों की संख्या इस प्रकार हैं -

नया	- 2	गुढ़ा	- 2
सेमरा	- 2	डोंगरा	- 2
पहाड़ी	- 2	मसौरा	- 2
खिरिया	- 11 (खिरिया मिश्र छोड़कर)	महरौनी	- 2
पुरा	- 2	सैपुरा	- 2
कुआ	- 3	पिपरिया	- 4
बम्हौरी	- 13		

परपद एवं विभेदकों की समानता के आधार पर स्थान-नामों की पुनरुक्ति संख्या इस प्रकार है -

कलां	- 28	खुर्द	- 32
बुजुर्ग	- 2	डांग	- 5
टोरन	- 3	माफ/माफी	- 4
खेत	- 2	गिरंट	- 5

पहाडी/पहाड़/पठार – 3 खिरिया – 1
खेड़ा/खेरा – 10 सागर– 2
तला – 3

(च) स्थान-नामों के युग्म-रूप—पुनरुक्ति और युग्म ललितपुर जिले की बोली की ही नहीं अपितु संपूर्ण भारतीय भाषाओं की विशेषता है। स्थान-नामों में आई यह प्रवृत्ति ललितपुर जिले के स्थान-नामों में इस प्रकार है –

बुदनी – नाराहट (महरौनी)
पटना – सिंदवाहा (महरौनी)
कुआ – किसरदा (महरौनी)
पिपरिया – डोंगरा (ललितपुर)
पिपरिया – पाली (ललितपुर)
खिरिया – बेहट (तालबेहट)
रमपुरा – कठवर (तालबेहट)
गुढ़ा – मड़ावरा (महरौनी)
सेमरा – भागनगर (महरौनी)
भोंती – मड़ावरा (महरौनी)
बम्हौरी – सिंदवाहा (महरौनी)
बुदनी – मड़ावरा (महरौनी)
टेटा – जमालपुर (तालबेहट)
पुरा – पाचौनी (तालबेहट)
गौना – कुसमाड़ (महरौनी)

स्थान-नामों के युग्म यहां प्रदेश की सीमा को भी लांघ जाते हैं, यथा –

बार – लड़वारी (तालबेहट उ.प्र.)
अहार – लड़वारी (टीकमगढ़ म.प्र.)

कुछ स्थान-नामों की युग्मता उनकी ध्वन्यात्मकता के कारण कर्णप्रिय हो जाती है, जैसे छिल्ला – बिल्ला (महरौनी)
चढ़रऊ – भडरऊ (ललितपुर)

(छ) संधियां—दो वर्णो के मेल से होने वाला विकार ही संधि है। जिले के अनेक स्थान-नामों में दो पदों के संयुक्त होने पर पहले पद का अंत्य वर्ण और अंतिम पद के पहले वर्ण में संधि हो गई है। कभी-कभी दो से भी अधिक वर्णो की संधि स्थान-नामों में प्राप्त हुई है।

दिद + अवनि + इयां = दिदौनियां (महरौनी)
ब्रह्म + अयन + अवनि = बमराना (महरौनी)

(1) स्वर संधि-

सुनौनी = सुन + औनी - अ + औ
पिपरौनियां = पीपर + औनिया - अ + औ

(2) व्यंजन संधि-

महरौनी = महर + औनी (महरौनी)
भैंसाई = भैंस + आई (ललितुपर)

(3) विसर्ग संधि-

दुर्जनपुरा = दु: + जनपुरा (ललितपुर)

(ज) पूर्व पद के रूप में विशेषण

कारी पहाड़ी (तालबेहट)
कारो खेत (तालबेहट)

11. स्थान-नामों से संबंधित लोकोक्तियां—लोकमान्यता द्वारा निर्मित प्रासंगिक अभिव्यक्ति लोकोक्ति कही जाती है। इनमें लोकजीवन का सार तत्व सम्मिलित रहता है। जनसमुदाय में लोकोक्तियां अपनी बोधगम्यता और 'गागर में सागर' भरने की क्षमता के कारण प्रचलित रहती हैं। 'सूक्ति या सुभाषित प्राय: व्यक्ति या कृति विशेष का कथन होता है। जब यह कथन व्यक्ति की लेखकीय सीमाओं से ऊपर उठकर पीढ़ी दर पीढ़ी अर्जित लोकानुभव तथा लोकज्ञान से परिमार्जित होता जाता है, काल की अग्नि में युग-युगों तक तपता है, तब कुंदन बनकर इसका नाम लोकोक्ति हो जाता है।'[7]

किसी स्थान से संबंधित प्रचलित लोकोक्ति में वहां का जनजीवन और उसकी भावराशि समाहित रहती है। जिले के स्थान-नामों से संबंधित कुछ प्रमुख लोकोक्तियां और उनके अर्थ इस प्रकार हैं-

(1) ललितपुर -

झांसी गरे की फांसी, दतिया गरे कौ हार।
नहीं ललितपुर छोड़िए, जब तक मिले उधार।।

निष्कर्ष—जैन समाज की बाहुल्यता और उसकी धन संपन्नता के कारण यह लोकोक्ति प्रचलित हुई। जिले में अधिकांश साहूकार इसी समाज से हैं। ललितपुर जनपद के भोले-भाले ग्रामीण ईमानदारी से अपना ऋण अदा कर देते हैं, जिससे यहां का साहूकार अपना माल उधार देने में संकोच नहीं करता। झांसी के लोगों का विद्रोही स्वभाव और दतिया वासियों का प्रेमभाव इस लोकोक्ति की प्रथम पंक्ति का

आशय है। उल्लेखनीय है कि झांसी अंग्रेजों के लिए 1857 ई. में फांसी का फंदा साबित हुई थी, जबकि दतिया में उन्हें पर्याप्त संरक्षण प्राप्त हुआ।

इसी लोकोक्ति के समानांतर एक लोकोक्ति कुमाउंनी भाषा में मिलती है –

झांसी फांसी, भुड़ंग हार।
चौखुटी नि छोड़ौ मिलौ उधार।।

(कुमाउंनी भाषा और उसका साहित्य, त्रिलोचन पांडेय, पृ. 37)[8]

(2) रजवारा (ललितपुर) –

खिलचीपुर को बानिया रजवारे को राव
गई चंदेरी जानिए, सुन बेटा दरयाव।।[9]

निष्कर्ष–बानपुर और चंदेरी के राजा मोद प्रहलाद की विलासिता और प्रजाहितों से दूर रहने के कारण रजवारा के राव साहब ने अन्य लोगों के साथ मिलकर राजद्रोह किया था।

(3) टेटा – जमालपुर (तालबेहट) –

फौज फिरंगन की लएं आ गओ जान बतीस।
टेटा के मौरां मरे बुन्देले चौंतीस।।[10]

निष्कर्ष–ग्वालियर के महाराजा सिंधिया ने सन् 1810 में अपने फ्रेंच सेनापति जॉन वैप्टिस्ट को चंदेरी पर आक्रमण करने के लिए भेजा। इसका असफल प्रतिरोध तालबेहट से आगे जमालपुर-टेटा में बांसी एवं मुहारे के ठाकुरों ने किया था। फ्रेंच सेनापति की सफलता पर सिंधिया ने उसे जरया (महरौनी) की जागीर दी थी, जहां आज भी वैप्टिस्ट वंशज निवास करते हैं।

(4) पुरा – (महरौनी) –

पुरा सौन की खान।
राजा जानै और सुजान।।[11]

निष्कर्ष – पुरा – ककड़ारी (महरौनी) में 1857 ई. की बगावत के लिये बानपुर के राजा मर्दनसिंह का युद्ध कोष इकट्ठा किया जा रहा था। कतिपय विशेष व्यक्तियों के अतिरिक्त इसके बारे में किसी को पता नहीं था।

(5) श्यामपुरा (महरौनी) –

बसें न ऊजर होय।
ललू कौ श्यामपुरा।।[12]

निष्कर्ष–इस गांव में मात्र दो ठाकुर परिवार निवास करते हैं। जिनके पास 143.46 हेक्टेयर जमीन है। श्यामपुरा में कुल 81 खाते तथा 112 खातेदार हैं, किंतु यह दो परिवारों के बीच के ही व्यक्ति हैं।

(6) खिरिया मिश्र (महरौनी) -

और कौ पड़ो।
खिरिया को गांड़ को कड़ो।।

निष्कर्ष–किसी अन्य स्थान का निवासी खूब पढ़ा-लिखा हो तो भी वह खिरिया मिश्र (महरौनी) के अनपढ़ निवासियों जैसी बुद्धि नहीं रख सकता अर्थात् यहां के लोग अति चतुर समझे जाते हैं।

(7) बानपुर (महरौनी) - बीर बानपुर कंचनपुरी
सिर पर धरें मठा खों फिरी।

निष्कर्ष–इसका अभिप्राय बीर, बानपुर और कंचनपुरी गांवों का पास-पास बसा होना है।

(8) बार, पुलवारा, गैंदोरा तथा लड़वारी (तालबेहट) -

बार बरै पुलवारा तापै, गेंदोरा में संख बजे लड़वारी कूका देय।

निष्कर्ष–उपर्युक्त चार ग्राम पास-पास बसे हैं।

जिले के स्थान-नामों की अनेक विशेषताओं को यहां की लोकोक्तियां उद्घाटित करती हैं। इनके अध्ययन-अनुसंधान की आवश्यकता पृथक रूप से है।

12. स्थान-नामों की आक्षरिक संख्या

अक्षर	*तहसील तालबेहट*	*तहसील महरौनी*	*तहसील ललितपुर*	*योग*
अ	1	12	8	21
आ	.	.	3	3
इ	1	3	2	6
उ	2	4	3	9
ऊ	.	1	.	1
ए	.	.	1	1
ऐ	1	.	1	2
क	21	18	26	65
ख	8	11	11	30
ग	6	24	9	39
घ	1	.	3	4
च	5	8	13	26
छ	1	9	1	11
ज	4	11	9	24

झ	2	2	2	6
ट	2	6	4	12
ठ	1	2	1	4
ड	1	3	3	7
त	4	4	4	12
थ	1	.	1	2
द	5	17	8	30
ध	5	5	3	13
न	5	11	14	30
प	9	24	25	58
फ	1	.	1	2
ब	32	46	46	124
भ	10	12	10	32
म	6	20	27	53
र	9	6	12	27
ल	2	7	4	13
श	1	1	1	3
स	12	29	26	67
ह	9	5	3	17
योग	168	301	285	754

'व' और 'श' वर्णों का लिखित रूप उच्चारण में क्रमशः 'ब' और 'स' हो जाता है। स्थान-नामों के लिखित एवं उच्चरित रूपों में अंतर इसी अध्याय में दर्शाया जा चुका है।

संदर्भ

1. पाणिनि कालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 4
2. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 145
3. हिंदी शब्द सागर, पृ. 130 उदधृत, आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन, डॉ. कामिनी, पृ. 167
4. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 144
5. पाणिनि कालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 76
6. व्याकरणिक कोटियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, डॉ. दीप्ति शर्मा, पृ. 37 एवं 39 उद्धृत,

आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन, डॉ. कामिनी, पृ. 174
7. बुंदेलखंड की काव्यात्मक कहावतें, संकलन एवं संपादन श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' पृ. 12
8. तदैव, पृ. 23
9. बानपुर विविधा, संपादक डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी, पृ. 62
10. तदैव, पृ. 20
11. तदैव, पृ. 26
12. श्यामपुरा के एक ग्रामीण द्वारा प्राप्त दिनांक 27.01.2009

अध्याय - 6

स्थान-नामों का भाषा-भौगोलिक विवेचन

शब्द अभिव्यक्ति के संकेत होते हैं। सामाजिक मनुष्यों के बीच विचारों के आदान-प्रदान हेतु व्यक्त किए गये ध्वनिसंकेतों को भाषा कहते हैं, वहीं जब किसी भाषा का अध्ययन भौगोलिक परिवेश में किया जाता है तब वह 'भाषा-भूगोल' कहा जाता है। भाषा-भूगोल का तात्पर्य उस शाखा से है जो भाषीय व्यापार की भौगोलिक स्थिति तथा परिसीमाओं का अध्ययन एवं वर्गीकरण प्रस्तुत करती हैं अर्थात् इस शास्त्र की सहायता से किसी भी क्षेत्र विशेष की स्थानीय बोली या बोलियों में स्वन, स्वनिम, सुर, शब्द-समूह, रूप तथा वाक्य-रचना आदि की विशेषताओं का अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है, साथ ही यह भी देखा जाता है कि उपर्युक्त दिशाओं में कहां-कहां, क्या-क्या अंतर है। क्षेत्र-विशेष की बोली के अध्ययन के कारण ही इसको क्षेत्र-भाषा विज्ञान (Area Linguistics) या क्षेत्रीय-भाषा विज्ञान (Areal Linguistics) भी कहते हैं और बोली का अध्ययन होने के कारण यह बोली विज्ञान (Dialectology) या भाषिक भूगोल (Dialect Geography) भी कहलाता है।[1]

ललितपुर जनपद में बोली जाने वाली बुंदेली भाषा एक बहुत बड़े क्षेत्र- बुंदेलखंड- की भाषा है। उन्नतोदर समचतुर्भुज के रूप में बुंदेलखंड उत्तरी अक्षांश 23°-24° अंश तथा 26°-50° अंश और पूर्वी देशांतर 77°-52° अंश तथा 82° अंश के मध्य स्थित है।[2] इस क्षेत्र की उत्तर-दक्षिण लंबाई लगभग 300 मील और पूर्व-पश्चिम चौड़ाई लगभग 225 मील है। इस प्रकार यह लोक भाषा लगभग 67,500 वर्गमील में बोली जाती है।[3] अरबी शब्द 'मील' दूरी की एक नाप है, जिसमें 1760 गज होते हैं[4] एक गज-3 फीट लंबा होता है, जिसमें 0.9144 विशुद्ध मीटर होते हैं।[5] इस प्रकार एक मील में 1609.344 विशुद्ध मीटर होते हैं।

बुंदेलखंड की उत्तर-दक्षिण लंबाई 483 किमी0 और पूर्व-पश्चिम चौड़ाई 362 कि.मी. है और इसका कुल क्षेत्रफल 1,74,846 वर्ग कि.मी. है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार बुंदेलखंड की कुल जनसंख्या 1,55,01,302 है, जिसमें उत्तर

प्रदेश के बुंदेलखंड (सात जिले) की जनसंख्या 82,32,847 तथा मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड (छः जिले) की जनसंख्या 72,68,455 है, किंतु भाषा प्रयोग की दृष्टि से बुंदेलखंड क्षेत्र और अधिक व्यापक है।

भाषा-भूगोल की दृष्टि से डॉ. कृष्णलाल 'हंस' ने अपनी पुस्तक 'बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप' में संपूर्ण बुंदेलखंड को मानचित्र में प्रतिदर्शित करते हुए पांच भागों में विभाजित किया है –

(1) उत्तरी क्षेत्र–इसमें मध्य प्रदेश के मुरैना (श्योपुर तहसील छोड़कर), भिंड तथा ग्वालियर जिले आते हैं। इस क्षेत्र में भदावरी बुंदेली का व्यवहार किया जाता है।

(2) दक्षिणी क्षेत्र–इसमें मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा, सिवनी और बालाघाट जिले आते हैं। इसके सीमावर्ती क्षेत्र में मराठी का प्रभाव देखा जाता है।

(3) पूर्वी क्षेत्र–इसमें उत्तर प्रदेश के जालौन, हमीरपुर, महोबा तथा म.प्र. के छतरपुर का पूर्वी भाग, पन्ना जिला तथा जबलपुर जिले का कुछ उत्तरी और पूर्वी भाग सम्मिलित है। पूर्वी क्षेत्र के राठ क्षेत्र में 'लोधांती' तो केन नदी के तटवर्ती क्षेत्र में 'कुंड्री' बुंदेली बोली जाती है। वहीं यमुना नदी के तटवर्ती क्षेत्र में 'तिरहारी' तो इसके दक्षिणी-पश्चिमी भाग में 'बनाफरी' बुंदेली प्रयोग की जाती है। जालौन जिले के पूर्वी सीमावर्ती भाग में बुंदेली का एक और रूप 'निभहा' का प्रयोग देखने को मिलता है।

(4) पश्चिमी क्षेत्र–इसके अंतर्गत मुरैना जिले की श्योपुर तहसील, शिवपुरी, गुना, विदिशा और होशंगाबाद जिले का पश्चिमी भाग और सीहोर जिला आता है। इस क्षेत्र में मालवी और राजस्थानी बोलियों का प्रभाव मिलता है।

(5) मध्यवर्ती क्षेत्र–इस भाग में उ.प्र. के झांसी तथा ललितपुर तथा म.प्र. के टीकमगढ़, छतरपुर का मध्य और पश्चिमी भाग, विदिशा (कुछ पश्चिमी भाग छोड़कर), सागर, दमोह, जबलपुर (कटनी तहसील के अतिरिक्त), रायसेन, होशंगाबाद और नरसिंहपुर जिले आते हैं। इसे शुद्ध बुंदेली का क्षेत्र कहा गया है।[6] यह किसी अन्य भाषा अथवा बोलियों से लगभग अप्रभावित है, इसीलिए इसे शुद्ध बुंदेली कहा गया। मध्यवर्ती बुंदेली क्षेत्र के दतिया जिले के बोली रूप को जॉर्ज ग्रियर्सन (लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया, खंड-9 भाग-1 पृ0-473) ने 'पंवारी' कहा है। पन्ना और दमोह की बुंदेली को 'खटोला' कहा गया है।

ललितपुर जनपद की बोली शुद्ध बुंदेली है। लोक भाषा-भाषी अपने द्वारा प्रयुक्त शब्दों का उच्चारण व्याकरण अथवा ध्वनि-विज्ञान के नियमों का ध्यान नहीं रखते, वे अपने बोलने की सुविधा और सरलता की दृष्टि से ही शब्दों का उच्चारण

करते हैं। इसी में उनकी भाषा (वास्तव में बोली) का स्वाभाविक रूप निखरता है। किसी भी बोली का स्वाभाविक और वास्तविक रूप अशिक्षित ग्रामीण स्त्री-पुरुषों की बोली में ही परिलक्षित होता है। उनका अपनी बोली में प्रयुक्त शब्दों के शुद्ध अथवा अशुद्ध रूपों से भी कोई संबंध नहीं होता।[7]

भाषा-सर्वेक्षण में सैकड़ों नगरों तथा ग्रामों के नाम आए हैं। उनका ठीक-ठीक अक्षर विन्यास या तो अनिश्चित है अथवा उन्हें परंपरा से एक रूप में लिखा जा रहा है। समस्या यह है कि उन अप्रसिद्ध स्थानों के नामों को किस रूप में लिखा जाए जिनका अक्षर-विन्यास अनिश्चित है। भारत के अधिकांश भागों में प्रयोग के अनुसार ही शुद्धरूप में नामों के लिखने की परंपरा नहीं है।[8] लेकिन ध्यातव्य है कि भारत के कई स्थान-नामों को अंग्रेजी शासन में अप्रयुक्त परंपरा के अनुसार लिखा गया है। अंग्रेजी ध्वनियों के अनुसार भारत के स्थान-नामों का लिखित रूप निर्धारित कर दिया गया। यह विविधता ध्वनि परिवर्तन के कारण हुई, जैसे मुंबई को बंबई, उरई को ओरई रूप में लिखा जाना। इसे अब सरकारों द्वारा कहीं-कहीं परिवर्तित किया जा रहा है।

अत: प्रयोगों के वैविध्य एवं परंपरा के कारण स्थान-नामों के भौगोलिक परिवर्तनों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। ऐसे अध्ययन से क्षेत्र-विशेष के भाषा-प्रयोगों पर भी प्रकाश पड़ता है।

ललितपुर जिले की बोली का रूप झांसी के बुंदेली रूप से बहुत भिन्न नहीं है, पर कुछ अंतर अवश्य है। यह अंतर स्थान-नामों के उच्चारण में भी देखा जाता है, जैसे-

1. 'ओ'कारांत शब्दों का उच्चारण 'औ'कारांत तथा 'ए'कारांत शब्दों का उच्चारण 'ऐ'कारांत होता है यथा - कैथोरा - कैथौरा (ललितपुर) तथा तालबेहट - तालबैट

2. कुछ स्थान-नामों की संज्ञाएं परिवर्तित हो गई हैं - चिगलउवा का बुरौगांव (महरौनी)।

इसके अतिरिक्त बुंदेली के अन्य रूपों के समान यहां के स्थान-नामों में अनुनासिकता, 'र' वर्ण का लोप और 'र' वर्ण से अगले वर्ण का द्वित्व हो जाना ललितपुर जनपद के स्थान-नामों की ध्वनिगत विशेषता है। 'ह' कार लोप, 'ढ़' का 'ड़' रूप में परिवर्तन 'अव' का 'औ' रूप, 'अवनी' और 'अवली' प्रत्ययों का घिसा रूप भी यहां पाया जाता है। जिले के समस्त एकपदीय सरल स्थान-नाम और एकपदीय प्रत्यय तथा उपसर्ग युक्त स्थान-नामों के यह परिवर्तन बोली की निरंतर विकासमान प्रवृत्ति के द्योतक हैं। ललितपुर जनपद का दक्षिणी भाग सागर जिले की

उत्तरी सीमा से संलग्न हैं, जिससे इस क्षेत्र की बोली पर झांसी की अपेक्षा उत्तरी सागर की बोली का अधिक प्रभाव दिखाई देता है। यह प्रभाव इस जिले के दक्षिणी भाग की बोली पर ही है। एक ग्राम से सटे दूसरे ग्राम को बोली में भी किंचित भिन्नता यहां दिखती है। ललितपुर जनपद की बुंदेली के इन विविध रूपों का सर्वेक्षण एक पृथक अध्ययन का विषय हो सकता है। उत्तरी भाग का बुंदेली रूप झांसी के समान ही है।[१] यहां इसका एक उदाहरण देना अनुपयुक्त न होगा –

''एक सौदागर के चार मौड़ा हते, जब बे खा-पी के संवर गये और ब्याव लाक हो गये तौ सौदागर बऊ ढूंड़न खौं निकरौ, चलत-चलत बौ एक सैर में आऔ। बो उते ताल के करकैं रूखन की गैरी छांयरी में बैठ गऔ। तनक देर में ऊ सैर की भौतसी बिटियां ताल पै पानू भरबे आईं। उनमें एक मौंड़ी ऊ की हती जौन ऊ सहर में सबसें जादा पइसाबारौ हतौ। बे मौंड़ी ताल से पानू भरकैं पनै-पनै घरै जान लगीं। सब मौंड़ियन की मूड़न पै खबसूरत नौंने-नौंने घैला हते, पै ऊ पइसा बारे सौदागर की मौंडी की मूड़ पै एक झांजरो घैला हतो। संग की बिटियन ने कई कै काय बाई, तुमाऔ बाप तौ सबमें भौत पइसाबारौ है, फिर तुम जौ झांजरौ घैला खौं काम में काए ल्या रई?''

भाषा-भौगोलिक वितरण—ललितपुर जनपद मध्य प्रदेश के शिवपुरी, गुना, सागर, छतरपुर, टीकमगढ़ तथा उ.प्र. के झांसी जनपद से घिरा हुआ है। इस जिले के स्थान-नामों के भाषा-भौगोलिक वितरण को समझने के लिए पूर्वपद, परपद, विभेदक तथा प्रत्ययों वाले स्थान-नामों का अध्ययन करना आवश्यक है –

(क) पूर्वपद एवं परपदों वाला भू-भाग – पूर्वपद एवं परपदों की सूची पुस्तक के क्रमश: परिशिष्ट-दो (ग) एवं (घ) में दी गई है।

1. खिरिया—इस पूर्वपद का प्रयोग ललितपुर जिले की तीनों तहसीलों में कुल तेरह बार हुआ है। इसका सर्वाधिक छ: बार प्रयोग जिले की महरौनी तहसील में हुआ है। खिरिया पूर्वपद का प्रयोग चार बार ललितपुर तहसील में तथा तीन बार तालबेहट तहसील में हुआ है। 'खिरिया' पद के प्रयोगाधिक्य को देखते हुए अतिशयोक्तिपूर्ण कहा जाता है कि यहां चौंसठ खिरियां हैं।

खिरिया मिश्र (महरौनी तथा ललितपुर)
खिरिया डांग (तालबेहट)
खिरिया छतारा (ललितपुर)

2. बम्हौरी—जिले में बम्हौरी पूर्वपद भी तीनों तहसीलों में तेरह बार प्रयुक्त हुआ है। पांच-पांच बार महरौनी और ललितपुर तहसीलों में तथा तीन बार तालबेहट तहसील में इसका प्रयोग हुआ है ।

बम्हौरी खुर्द (महरौनी)
बम्हौरी खड़ैत (तालबेहट)
बम्हौरी कलां (ललितपुर)

3. पहाड़ी—इस पूर्वपद का प्रयोग महरौनी तहसील में दो बार हुआ है।

पहाड़ी खुर्द तथा पहाड़ी कलां

4. कारी/कारो/काला—यह पूर्वपद तीन बार तालबेहट तहसील में तथा एक-एक बार महरौनी तथा ललितपुर तहसील में प्रयुक्त हुआ है। ग्रेनाइट का काले रंग का पत्थर तालबेहट तहसील में पाए जाने से कदाचित् यह पूर्वपद यहां अधिक प्रयोग में आया है—

कारोखेत (तालबेहट)
काला पहाड़ (ललितपुर)
कारी टोरन (महरौनी)

5. पुरा—इस पूर्वपद का प्रयोग तालबेहट तहसील के दो स्थान-नामों के साथ प्रयुक्त हुआ है।

पुरा पाचौनी तथा पुरा खुर्द

6. पूरा—यह भी तालबेहट तहसील में ही दो बार व्यवहृत है -

पूरा कलां तथा पूरा खुर्द

(ख) परपदों वाला भू-भाग—ललितपुर जनपद में परपदों का प्रयोग अधिक संख्या में हुआ है, पूर्वपदों की अपेक्षा परपदों का प्रयोग उच्चारण की सुकरता के कारण किया जाता है। पुस्तक के परिशिष्ट दो (घ) में परपदों की सूची दृष्टव्य है।

1. पुरा—ललितपुर जिले में इस परपद का सर्वाधिक छियालीस बार प्रयोग हुआ है। इनमें सर्वाधिक सत्ताइस बार ललितपुर तहसील में तथा तालबेहट तथा महरौनी तहसीलों में क्रमशः दस तथा नौ बार यह परपद प्रयुक्त हुआ है -

असउपुरा (तालबेहट)
कनपुरा (महरौनी)
फौजपुरा (ललितपुर)

2. पुर—यह 'पुरा' के बाद दूसरा सर्वाधिक प्रयुक्त परपद है जो तीनों तहसीलों में कुल तेतीस बार व्यवहृत है, जिनमें यह सर्वाधिक सोलह बार महरौनी तहसील में प्रयुक्त हुआ है।

उगरपुर (तालबेहट)
छितरापुर (महरौनी)
मगरपुर (ललितपुर)

3. वारा/वार/वारी—यह परपद तीनों तहसीलों में कुल बत्तीस बार प्रयुक्त हुए हैं, जिनमें सर्वाधिक अट्ठारह बार यह ललितपुर तहसील में प्रयुक्त हुए हैं -

घटवार (ललितपुर)
गुगरवारा (महरौनी)
लड़वारी (तालबेहट)

4. गुवां—कुल सत्रह बार तीनों तहसीलों में प्रयुक्त यह परपद सबसे कम ललितपुर तहसील में कुल तीन बार प्रयुक्त हुआ है -

उदगुवां (तालबेहट)
खुटगुवां (महरौनी)
इकलगुवां (ललितपुर)

5. गांव—तालबेहट तहसील को छोड़कर यह परपद दोनों तहसीलों में कुल पांच बार प्रयुक्त हुआ है-

कुआगांव (महरौनी)
नयागांव (ललितपुर)

6. धाना—यह परपद जिले की ललितपुर तहसील में तीन बार व्यवहृत हुआ है-

जामुनधाना, कलां, जामुनधाना खुर्द तथा उश्रमधाना

8. वास/वांस/वांसा—यह परपद भी जिले की तीनों तहसीलों में कुल आठ बार प्रयुक्त हुए हैं—

नगवांस (तालबेहट)
कोरवास (महरौनी)
खितवांस (ललितपुर)

9. बेहट/बेहटा—गोंड़कालीन यह परपद जिले में गोंड़ राजाओं के शासनकाल का प्रत्यक्ष उदाहरण है। यह परपद तालबेहट और ललितपुर तहसीलों में कुल तीन बार मिलते हैं -

खिरियाबेहटा (तालबेहट)
बालाबेहट (ललितपुर)

एक स्थान नाम बेहटा (तालबेहट) एकपदीय भी प्राप्त हुआ है।

10. तला—महरौनी और ललितपुर तहसीलों में कुल तीन बार यह परपद प्रयुक्त हुआ है-

बरतला (महरौनी)
कुवातला (ललितपुर)

दारुतला (ललितपुर)

11. सागर–यह परपद महरौनी तहसील में दो बार व्यवहृत हुआ है –

गंगासागर तथा धौरीसागर

(ग) विभेदकों वाला भू-भाग–परपद अथवा उत्तरपद तथा विभेदकों में बहुत सूक्ष्म अंतर है। यहां जो पद स्थान-नाम के साथ संयुक्त है, उसे परपद कहा गया है और जो पद स्थान-नामों में पृथक रूप से संयुक्त है, उसे विभेदक कहा गया है। जिले में कुल बावन विभेदक- छोटे-बड़े मिलाकर- प्रयुक्त हुए, उन सबका उल्लेख यहां स्थान-विस्तार के कारण नहीं किया जा सकता। पुस्तक के परिशिष्ट-दो (ङ) में विभेदकों की संख्या-सूची तहसीलवार दी गयी है। कुछ प्रमुख विभेदक इस प्रकार हैं

1. कलां–जिले की तीनों तहसीलों में कुल अट्ठाइस बार यह विभेदक व्यवहृत हो रहा है। 'कलां' को यहां के व्यक्ति 'बड़ा' उच्चरित करते हैं। 'कलां' विभेदक स्थान 'खुर्द' स्थान की तुलना में बड़ा होता रहा है, लेकिन अब इसके अपवाद मिलने लगे हैं –

सूरी कलां (महरौनी)
मसौरा कलां (ललितपुर)
पूरा कलां (तालबेहट)

2. खुर्द–इस विभेदक का आशय 'छोटा' अथवा 'कनिष्ठ' होने से है। स्थानीय निवासी 'खुर्द' विभेदक स्थानों का छोटा बोलते भी हैं। यह विभेदक भी जिले की तीनों तहसीलों में सर्वाधिक बत्तीस बार प्रयुक्त हो रहा है –

कंधारी खुर्द (तालबेहट)
इमलिया खुर्द (महरौनी)
सीरौन खुर्द (ललितपुर)

3. बुजुर्ग–कला, खुर्द और बुजुर्ग विभेदक संयुक्त स्थानों का प्रारंभिक पद कई स्थान-नामों में समान होता है। इन तीन अलग-अलग विभेदकों से ही ऐसे स्थानों के पृथकत्व का बोध होता है। बुजुर्ग विभेदक भी 'बड़ा' आशय से व्यवहृत होता है। यह विभेदक महरौनी तहसील में दो बार प्रयुक्त हुआ है –

सेमरा बुजुर्ग तथा गुढ़ा बुजुर्ग

4. डांग–स्थानीय बोली में इस शब्द का अर्थ जंगल होता है। जंगलों में बसे स्थानों को 'डांग' विभेदक से अभिज्ञात किया गया। यह विभेदक तालबेहट तहसील में छः बार आया है –

मथरा, बरौंदा, खैरा, खैरी, खिरिया तथा सेमरा डांग।

5. गिरंट–अंग्रेजों द्वारा जागीर-भूमि 'ग्रांट' (अनुदान) के रूप में प्रदान करने के कारण स्थान-नामों के साथ यह परपद प्रयुक्त होने लगा। महरौनी तहसील में ऐसे पांच स्थान-नाम हैं जिले के निम्नलिखित 'गिरंट' विभेदक युक्त स्थानों को अरण्यों के रूप में सुरक्षित रखा गया है -

अगौड़ी, टीकरा, सिलावन, सुनवाहा तथा बीर

6. माफ/माफी–जिले की तीनों तहसीलों में इस विभेदक के कुल चार स्थान-नाम अस्तित्व में हैं-

बिनेका माफी तथा जमौरा माफी (तालबेहट)
मऊ माफी (ललितपुर)
गर्रोली माफ (महरौनी)

7. टोरन–तीनों तहसीलों में एक-एक स्थान-नाम इस विभेदक द्वारा व्यवहृत हुआ है-

कारी टोरन (महरौनी)
बिनेका टोरन (ललितपुर)
कारी टोरन (तालबेहट)

8. पहाड़ी/पहाड़/पठार–इन विभेदकों से संयुक्त ललितपुर तहसील में दो तथा तालबेहट तहसील में एक स्थान-नाम पाया गया है -

कारी पहाड़ी (तालबेहट)
काला पहाड़ तथा बम्हौरी पठार (ललितपुर)

9. घाट–ललितपुर तथा तालबेहट तहसीलों में कुल तीन स्थान-नाम इस विभेदक से संयुक्त हैं -

चौंतरा घाट तथा कचनोंदा घाट (ललितपुर)
बम्हौरी घाट (महरौनी)

10. कलां खुर्द–जिले के एक स्थान-नाम में यह दोनों विभेदक एक साथ संयुक्त है-

हंसार कलां खुर्द (ललितपुर)

(घ) प्रत्ययों वाला भू-भाग–प्रत्ययों से स्थान-नामों की क्षेत्रीय विशेषताओं का पता चलता है। ललितपुर जिले के स्थान-नामों में सैकड़ों प्रत्यय प्रयुक्त हुए हैं, जो यहां के लोगों की सुरुचि संपन्नता और बुद्धि-कौशल का द्योतक है। इनकी सूची पुस्तक के परिशिष्ट-दो (क) में दी गई है। प्रत्ययों की अलग-अलग विशेषताएं स्थान-नामों में उद्घाटित हो सकें, इसलिए अधिकांश प्रत्ययों को अलग-अलग इस परिशिष्ट सूची में दर्शाया गया है। यहां कुछ प्रमुख प्रत्ययों का विवेचन उनके भाषा-

भौगोलिक वितरण के आधार पर किया जा रहा है। प्रत्ययों का रूप रचनागत विवेचन पुस्तक के दूसरे अध्याय में किया गया है –

1. अर/रा/र्रा/री–इन प्रत्ययों का व्यवहार क्षेत्र जिले की तीनों तहसीलों में है। सर्वाधिक प्रयोग ललितपुर तहसील में नौ बार हुआ है –

आगर (ललितपुर)
देवरा (महरौनी)
झरर (तालबेहट)

2. अवनी–जिले की तीनों तहसीलों में कुल पांच बार यह प्रत्यय व्याप्त हुआ है। तालबेहट तहसील में सर्वाधिक तीन बार यह प्रत्यय आया है –

चुरावनी (तालबेहट)
बछरावनी (महरौनी)
मलावनी (ललितपुर)

3. अऊवा–यह प्रत्यय ललितपुर तहसील में सर्वाधिक चार बार तथा एक बार महरौनी तहसील में व्यवहृत हुआ है –

चमरउवा (ललितपुर)
मलऊवा (महरौनी)

4. अवली–तीन बार महरौनी तथा एक बार ललितपुर तहसील में यह प्रत्यय आया है–

चंदावली (महरौनी)
नुनावली (ललितपुर)

5. आना–यह प्रत्यय महरौनी तहसील में चार बार आया है –

बमराना, डगराना, गुरयाना तथा बनयाना

6. आटा–यह प्रत्यय महरौनी तहसील में तीन बार प्रयुक्त हुआ है –

बिलाटा, परसाटा तथा कवराटा

7. अट–यह प्रत्यय भी महरौनी तहसील में चार बार आया है –

भोंरट, कुर्रट, पिपरट तथा छपरट

8. आरा–यह प्रत्यय महरौनी तहसील में दो बार तथा ललितपुर तहसील में तीन बार प्रयुक्त हुआ है –

जगारा (महरौनी)
करमुहारा (ललितपुर)

9. अटा–ललितपुर तहसील में मात्र एक बार यह प्रत्यय आया है –

कोकटा (ललितपुर)

10. आरी—इक्कीस बार इस प्रत्यय का प्रयोग जिले की तीनों तहसीलों में हुआ है -

मुड़ारी (ललितपुर)
फड़ारी (तालबेहट)
पिसनारी (महरौनी)

11. आवर—इस प्रत्यय का प्रयोग तालबेहट तहसील के इस स्थान-नाम में एक बार हुआ है -

झावर

12. आवन—तालबेहट तहसील में सर्वाधिक तीन बार तथा तीन बार महरौनी एवं ललितपुर तहसीलों में यह प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है-

जिजयावन (ललितपुर)
डुलावन (तालबेहट)
सिलावन (महरौनी)

13. इया/यां—इस प्रत्यय के स्थान-नाम तीनों तहसीलों में कुल तीस मिलते हैं-

खजुरिया (ललितपुर)
इमिलिया (तालबेहट)
पिपरिया (महरौनी)

14. एरा/एर—यह प्रत्यय जिले की तीनों तहसीलों में कुल आठ बार प्राप्त हुए हैं-

हंसेरा (महरौनी)
अंधेर (ललितपुर)
भुचेरा (तालबेहट)

15. एंगा, एंदा, ऐंड़, एड़ी—यह प्रत्यय अलग-अलग एक-एक बार तालबेहट तहसील में प्रयुक्त हुए हैं -

करेंगा, गुलेंदा, सारसेंड़ तथा बुधेड़ी

एक बार 'एड़ी' प्रत्यय महरौनी तहसील में प्रयुक्त हुआ है -

कुम्हैड़ी

16. औरी/औरा—जिले की तीनों तहसीलों में यह प्रत्यय कुल छप्पन बार प्रयुक्त हुए हैं-

अगौरा (महरौनी)
बम्हौरी शहना (तालबेहट)

गिल्टौरा (ललितपुर)

17. औन—यह प्रत्यय भी तीनों तहसीलों में कुल बारह बार व्यवहृत हुआ है –

पारौन (तालबेहट)

सीरौन (महरौनी)

पंचौरा (ललितपुर)

18. औंदा/ओदा/ओंदा/औद—इस प्रकार के प्रत्यय ललितपुर तहसील में अधिक मिलते हैं। डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया ने 'औंधा', से इनका विकास माना है और 'औंधा' को संस्कृत 'पद्र' का विकसित रूप माना है, जो गांववाची शब्द है।[10] वहीं डॉ. हरदेव बाहरी ने 'औंधा' को अवमूर्ध झ ओमुद्ध से परिवर्तित माना है।[11] कदाचित् यह अंतर इसलिए है कि डॉ. भाटिया ने इसे प्रत्यय मानकर इसकी व्युत्पत्ति की है तो डॉ. बाहरी ने इसे तद्भव मानकर इसका अर्थ खोजा है। ललितपुर जनपद में ऐसे कुल नौ स्थान-नाम हैं, जिनमें कुछ इस प्रकार हैं –

बरोदा स्वामी (ललितपुर)

करौंदा (महरौनी)

19. वाहा—महरौनी और ललितपुर तहसीलों में कुल आठ बार यह प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है–

सिंदवाहा (महरौनी)

भगवाहा (ललितपुर)

इस प्रकार यह भाषा-भौगोलिक वितरण स्थान-नामों की प्राचीन ऐतिहासिक परंपरा को उद्घाटित करता है, 'अरण्य' पद से व्युत्पन्न ऐंड़/एंडी इत्यादि प्रत्यय इसकी पुष्टि करते हैं। अवला, औली प्रत्यय इस जिले की प्राचीनता को ईसा की तीसरी चौथी शताब्दी तक ले जाते हैं। 'वाहा' प्रत्यय युक्त स्थान-नाम प्राचीन सार्थवाहों के मध्य आते थे। व्यापारियों को पहले सार्थवाह (कारवां) कहा जाता था।[12] इसी प्रकार नवीन बस्तियों के सूचक कुछ विभेदक यहां मिलते हैं, जबकि 'गिरंट' विभेदक अंग्रेजों के समय का है। माफ और माफी विभेदक भी सल्तनत काल के बाद के हैं।

स्थान-नामों के आधार पर ललितपुर जिले के भाषा भौगोलिक विवेचन से यहां की सांस्कृतिक विविधता तो उद्घाटित होती ही है, इनसे स्थानीय बोली की सीमा और विकास को भी रेखांकित किया जा सकता है। यह विवेचन पुरातत्व के कालक्रम को व्यवस्था प्रदान करता है। समाज की मान्यताओं, रुचियों और व्यवहारों तथा राजनैतिक घटनाक्रम को स्थान-नामों के द्वारा ही भाषा-भूगोल क्रम प्रदान करता है।

संदर्भ

1. भाषा-भूगोल, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ. 30
2. चंदेलकालीन बुंदेलखंड का इतिहास, डॉ. अयोध्या प्रसाद पांडेय, पृ. 1
3. बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ. कृष्णलाल 'हंस', पृ. 299
4. ज्ञान शब्द कोश, सं. मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, पृ. 641
5. Little Oxford English Dictionary (Indian Edition) 9th Edition, pp. Factfinder, 16
6. बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ. कृष्णलाल 'हंस', पृ. 302-304
7. तदैव, पृ. 309
8. भारत का भाषा सर्वेक्षण (खंड-1 भाग-1), सर जॉर्ज ग्रियर्सन अनु0 डॉ. उदयनारायण तिवारी, पृ. 385-386
9. बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ. कृष्णलाल 'हंस', पृ. 445-446
10. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, पृ0 145
11. हिंदी उद्भव: विकास और रूप, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 181
12. समांतर कोश, अनुक्रम खंड, अरविंद कुमार, पृ. 1683

अध्याय - 7

उपसंहार

निष्कर्ष एवं स्थापना

ललितपुर जनपद 27.68 उत्तरी अक्षांश तथा 85.32 पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पश्चिम भाग में बसा यह जिला उत्तर में उत्तर प्रदेश के जनपद झांसी से, दक्षिण में मध्य प्रदेश के जनपद सागर से, पूर्व में टीकमगढ़ तथा छतरपुर जनपदों से तथा पश्चिम में शिवपुरी तथा अशोकनगर जिलों से घिरा हुआ है। भारत की भौगोलिक स्थिति के अनुसार बुंदेलखंड भारतवर्ष का हृदयस्थल है किंतु ललितपुर जनपद बुंदेलखंड का हृदयस्थल ही नहीं, हृदयाकृति का भी जनपद है। वर्तमान में बुंदेलखंड में उत्तर प्रदेश के झांसी मंडल के तीन जिले- झांसी, ललितपुर एवं जालौन- एवं चित्रकूट मंडल के चार जिले- बांदा, हमीरपुर, महोबा एवं चित्रकूट- के अलावा मध्य प्रदेश के सागर मंडल के पांच जिले -टीकमगढ़, छतरपुर, दमोह, पन्ना तथा सागर- एवं ग्वालियर मंडल का दतिया जिला सांस्कृतिक इकाई के रूप में सम्मिलित है। इन जिलों के अतिरिक्त मध्य प्रदेश के भिंड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, गुना, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, जबलपुर एवं सतना जिलों के आंशिक भागों में बुंदेलखंड परिक्षेत्र विस्तृत है। भाषा, रहन-सहन एवं भूमि-वैशिष्ट्य के कारण इसे प्रशासनिक इकाई के रूप में गठित करने के लिए इस अंचल के लोगों की बहुत पुरानी मांग चल रही है।

स्वतंत्रता के बाद 1 मार्च 1974 को झांसी जनपद से पृथक् होकर ललितपुर जनपद का गठन हुआ था। इससे पूर्व ब्रिटिश शासनकाल में 1861 ई से 1891 ई तक यह जनपद मुख्यालय रहा था। इस जिले के अंतर्गत संप्रति तीन तहसीलें- ललितपुर, महरौनी एवं तालबेहट- आती हैं।

5039 वर्ग किलोमीटर में फै ले इस जिले की जनसंख्या सन् 2001 की जनगणना के अनुसार 9,77,734 व्यक्ति है। इस प्रकार यहां का जनघनत्व 194 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। लिंग अनुपात प्रति हजार पुरुषों पर 882 महिलाओं का तथा साक्षरता

दर 49.93 प्रतिशत है। छ: वर्ष तक की आयु के बच्चों का लिंग अनुपात 931 है। यहां औसत प्रति घर 6 व्यक्तियों का निवास है। ललितपुर जनपद में प्रतिवर्ष औसत वर्षा दर 1044 मिलीलीटर है। यहा का अधिकतम तापमान 46 डिग्री सें0 है।

दिल्ली-मुंबई रेलवे लाइन इस जनपद के बीच से होकर गुजरती है। राष्ट्रीय राजमार्ग 26 जिले के बीच से होकर निकला है। ललितपुर से निकटतम हवाई अड्डा 235 किमी दूर ग्वालियर में स्थित है। विश्वप्रसिद्ध पर्यटन तीर्थ खजुराहो यहां से वाया बानपुर 172 किमी सड़क मार्ग की दूरी पर है।

उत्तर प्रदेश के 29,418 वर्ग किमी क्षेत्र में फैला बुंदेलखंड प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 12.21 प्रतिशत भाग है। यहां 82.32 लाख जनसंख्या निवास करती है, जो प्रदेश की कुल जनसंख्या का 4.95 प्रतिशत है। ललितपुर जनपद की जनसंख्या उत्तर प्रदेश की कुल जनसंख्या का 0.59 प्रतिशत है, जो उत्तर प्रदेश के कुल क्षेत्रफल के 2.13 प्रतिशत भूभाग पर निवास करती है। जबकि बुंदेलखंड में इस जनपद की हिस्सेदारी क्षेत्रफल की दृष्टि से 17.13 प्रतिशत तथा जनसंख्या की दृष्टि से 11.88 प्रतिशत है।

जिले में यूनीसेफ की वेबसाइट के अनुसार पांच वर्ष से नीचे के शिशुओं की मृत्युदर 44 प्रति हजार हो गई है। यह आंकड़ा देश में 49 तथा प्रदेश में 73 प्रति हजार का है। इस जिले में निर्मित बांधों की संख्या एशिया में सर्वाधिक है। भारत के तीन स्थानों पर साइफन पद्धति से बांध बने हैं, जिनमें एक ललितपुर का गोविंदसागर बांध है।

इस जनपद की सुरम्य प्राकृतिक छटाएं एवं जनमानस की सहृदयता किसी का भी मन मोह लेती है। यहां के लोगों की सरलता एवं शांतिप्रियता प्रदेश के बाहर भी सराही जाती है। ग्रेनाइट, गौरा पत्थर, इमारती पत्थर एवं राक फास्फेट यहां की खनिज संपदा है। जनपद में वनों का भी बाहुल्य है। जनपद की जनसंख्या कृषि के अतिरिक्त खनिज एवं वनोत्पादकों से जुड़े कार्यों में लगी है।

ललितपुर जनपद की बोली बुंदेली है। यह शुद्ध बुंदेली का क्षेत्र है, जिसमें बुंदेली की समस्त विशेषताएं पाई जाती हैं। भाषा विज्ञानियों के अनुसार बुंदेली का शुद्ध और सात्विक रूप यहां की बोली में व्याप्त है। गाली में भी 'जू' निपात जोड़कर व्यवहार में लाया जाता है।

इस जिले में विभिन्न जातियां निवास करती हैं। इनके व्यवसाय भी भिन्न-भिन्न हैं। धार्मिक मान्यताएं एवं जीवन-यापन संबंधी विश्वासों में विविधताएं तो हैं किंतु सांगठनिक एवं सांस्कृतिक एकसूत्रता में इनका तिरोभाव हो जाता है। औसत रूप से जिले में सात किमी से अधिक की दूरी पर एक गांव आबाद है।

जिले की सहरिया जनजाति से इस जनपद का संबंध आगम ग्रंथों में वर्णित शावर संस्कृति से जुड़ता है। जिले की प्राचीनता का क्रमिक इतिहास यहां के स्थान-नामों में उपलब्ध हो जाता है। आदिवासियों और उनकी लोकमाताओं पर आधारित स्थान-नाम, यक्षवाची स्थान-नाम तथा उनकी भग्न मूर्तियां, सार्थवाहों का उल्लेख, भारशिवों के स्थान-नाम और उनमें संयुक्त प्रत्ययों में से झांकते अवली और अवना रूप इस भूभाग की पुरातनता के साक्षी हैं।

स्थान-नामों में भाषा, पुरातत्व एवं इतिहास के महत्वपूर्ण संकेत सन्निहित रहते हैं। यहां के स्थान-नाम तत्संबंधी स्थानों की भौतिक विशेषताओं को ही प्रतिबिंबित नहीं करते, अपितु स्थानीय निवासियों की भाषा, इतिहास, रहन-सहन, आदतों, स्थानिक विशिष्टताओं एवं पर्यावरणीय चेतना को भी रूपायित करते हैं। अनिवार्य रूप में ऐसा नहीं होने के कारण स्थान-नामों को निरर्थक व्यक्तिवाचक संज्ञा कहा गया किंतु स्थान-नामविज्ञानी स्थान-नाम की व्युत्पत्ति और उसके अर्थों को ज्ञात करके संबंधित क्षेत्र के ऐतिहासिक भूगोल से हमें परिचित कराता है। स्थान-नामविज्ञान (Toponymy) स्थान-नामों का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। इसके लिए उसे नृजाति विज्ञान (Ethnology), शब्द विज्ञान (Etymology), नाम विज्ञान (Onomastics), भूगोल, इतिहास, भाषा विज्ञान, संस्कृति एवं पर्यावरण के क्षेत्रों में उतरना पड़ता है। तभी कोई स्थान-नाम अध्ययन अनुमानाश्रित न रहकर यथार्थ के धरातल पर उपलब्धियों तक पहुंचता है। स्थान-नामों का यह अध्ययन यों भाषा विज्ञान के क्षेत्र तक ही सीमित था किंतु इसे संपन्न करने के लिए लेखक को उक्त अंतर्विषयी अध्ययनों में प्रवेश करना पड़ा है।

तालाब, डबरा, झरना इत्यादि जलस्रोत जन-जीवन की प्राथमिक आवश्यकता है। जिले के तलउ, बरतला, झरर इत्यादि ऐसे ही स्थान नाम हैं। बस्तियां बसने के बाद कुओं का अस्तित्व आया। कुआ की सुविधा होने के बाद कुआंतला, कुआगांव जैसे स्थान-नाम रखे गए। जिले के पेड़-पौधों एवं वनस्पतियों से संबंधित स्थान-नाम इस जिले की प्राकृतिक सुषमा एवं विविधता को रूपायित करते हैं। शेर की प्रजाति के विविध पशु चीता, बाघ, नाहर से संबंधित स्थान-नाम यहां के भीषण एवं विशाल वन्य क्षेत्र का बोध कराते हैं।

स्थान-नामों में विविध सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां प्रतिबिंबित हुई हैं। किसी जाति अथवा उपजाति द्वारा बसाए गए स्थान-नाम संबंधित जातियों की स्वीकार्यता एवं सौहार्द के संकेतक हैं। पहाड़ियों, टौरियों, पठारों तथा गिरियों से संबंधित स्थान नाम यहां की भौगोलिक स्थिति को दर्शाते हैं। कंकड़, पत्थर के ऊपर रखे गए स्थान-नामों से यहां भूमिदशा का पता चलता है। विविध देवी-देवताओं के

नामों से विदित होता है कि यहां कभी आदिवासी संस्कृति का प्रभुत्व रहा होगा, जिन्होंने आपदाओं से रक्षा करने के लिए कई प्राकृतिक उपादानों पर स्थानों का नामकरण किया। संबंधित देवी-देवता का पुण्य स्मरण एवं उपासना का इससे अच्छा और क्या तरीक़ा हो सकता था।

जिले की राजनैतिक दशा को दर्शाते यहां के स्थान-नाम मिल जाते हैं। गोंड़ राजा सुम्मेरसिंह के नाम पर सुमेरा तालाब, उसकी पत्नी ललितकुंवर के नाम पर ललितपुर नगर का नाम तथा अनेक 'बेहट' नाम इस क्षेत्र में गोंड़ शासकों की रही सुदृढ स्थिति के मानो जीवाश्म हैं। यह क्षेत्र राजनैतिक दृष्टि से भारत की हस्तिनापुर व इंद्रप्रस्थ की केंद्रीय सत्ता की उठा-पटक में अपने नैतिक मानदंडों का निर्वाह करता रहा। चंदेल एवं बुंदेल वंश के विकास और वैभव के अवशेष इस क्षेत्र में विपुल मात्रा में विद्यमान हैं। यहां के बुंदेला शासकों में अपनी भाषा के प्रति गौरव-भाव रहा। बुंदेला शासन के सूत्रपात के बाद ओरछा के महाराजा मधुकरशाह (1554-1592 ई.) के समय से ही बुंदेली भाषा राजकाज की भाषा बन गई थी, जो झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई एवं बानपुर नरेश मर्दनसिंह के समय 1857 ई तक बनी रही।

जिले के स्थान-नामों में आर्थिक स्थिति का चित्रण भी प्राप्त होता है। राजस्थान के सौल्व क्षेत्र से आए बैलों को विक्रय करने का स्थान 'सौल्दा' हो गया। भलानस् और दाशराज्ञ पर रखे गए स्थान-नाम जिले को पाणिनिकाल में ले जाते हैं। नगर क्षेत्रों के आधुनिक स्थान-नाम देश में हुए नवजागरण आंदोलन को अभिव्यक्त करते हैं। नेहरू नगर, सुभाषपुरा, आज़ादपुरा, टिपुआ गांधी चौक, अंबेडकर चौराहा जैसे स्थान-नाम स्वाधीनता आंदोलन के पुरोधाओं का सर्वदा स्मरण हैं।

अरबी-फारसी, तुर्की, जापानी, अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं के शब्दों और ध्वनियों को लेकर रखे गए स्थान-नामों से यह प्रकट है कि देश पर पड़े विदेशी सांस्कृतिक प्रभावों से यह जिला भी अछूता नहीं रह सका। विदेशी ध्वनियों एवं पदों को जिले की बोली में दूध में पानी की तरह आत्मसात किया गया है, जिससे विविधता में एकता का संदेश अपनी सहजता में समाहित हो गया है। यहां के स्थान-नामों में विभिन्न भाषाओं में हुए आमेलन को देखकर यह पता कर पाना मुश्किल हो गया कि तुरका, सजा, अजान, सैदपुर, सैपुरा, शाहपुर, बहादुरपुर, करोंदा जैसे स्थान-नामों की ध्वनियां कितनी विदेशी शब्दों पर आधारित हैं और कितनी संस्कृत शब्दों से विकसित। चांदपुर, जहाजपुर, जमालपुर इत्यादि स्थान-नामों में विदेशी शब्दों के साथ संस्कृत और हिन्दी की ध्वनियां मिलकर एक हो गई हैं। संस्कृत की ध्वनियां यहां के अधिकांश स्थान-नामों में सुरक्षित हैं। स्थान-नामों के क्रमश:

विकास एवं उनके लिखित तथा उच्चरित रूपों में बुंदेली भाषा की ध्वनियां स्पष्टत: दृष्टिगोचर हैं। स्थान नामों में तत्सम, तद्भव, देशज एवं स्थानीय शब्दावली प्रयुक्त हुई है। अनेक ध्वनिगत परिवर्तन जिले के स्थान-नामों में हुए हैं, जो जिले की बोली की प्रकृति के अनुकूल हैं।

प्राकृतिक उपादानों पर रखे गए सर्वाधिक स्थान-नाम यह घोषित करते हैं कि यहां के लोग प्रकृति प्रेमी एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति सर्वथा जागरूक रहे। यहां के स्थान-नाम ऋषियों तथा युगपुरुषों के प्रति लोगों में आदर की भावना को रूपायित करते हैं तथा बस्तियों को बसने के ऐतिहासिक क्रमों (ग्राम, पुर, नगर, गढ़) को भी निरूपित करते हैं।

स्थान-नामों के इस अध्ययन से जिले की समर्थ एवं भावप्रवण शब्दावली के माध्यम से ललितपुर जिले की प्राचीनता का क्रमिक ब्यौरा प्राप्त हुआ है। राष्ट्रभाषा हिंदी को समृद्ध बनाने के लिए बोलियों की शब्द-संपदा का परीक्षण-निरीक्षण करने की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से यह अध्ययन उपादेय हो जाता है। जिले पर पड़े प्राकृतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक प्रभावों को स्थान-नामों के इस अध्ययन ने प्रामाणिक एवं पुष्ट किया है। इस अध्ययन से जिले के बोली-भूगोल को क्रमिकता प्राप्त हुई है। यही नहीं, इस अध्ययन से यहां की सामाजिक पद्धतियों, रीति-रिवाज, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं, नैतिक मर्यादाओं, सौंदर्य-बोध, जातीय इतिहास एवं परिवर्तित सामाजिक दृष्टिकोण को समझने में सहायता मिल सकेगी।

ललितपुर जनपद की आधिकारिक वेबसाइट पर रखे गए जनपद-मानचित्र के स्थान-नामों में अत्यधिक वर्तनी दोष हैं। इस मानचित्र में जनपद की नदियों का नामकरण एवं उसके मार्गों का आरेखन भी त्रुटिपूर्ण किया गया है। जनपद से संबंधित साहित्य तथा इतिहास के ग्रंथों एवं सर्वेक्षण के आधार पर लेखक ने मानचित्र में नदियों एवं बांधों के आरेखन में परिवर्धन, संशोधन करने के साथ-साथ स्थान-नामों की वर्तनी का परिमार्जन किया है। स्थान-नामों में संयुक्त पूर्वपद, परपद एवं विभेदक संबंधी संलग्न मानचित्रों से ललितपुर जनपद की भौगोलिक एवं भाषा वैज्ञानिक स्थिति को जानने में सहायता मिल सकेगी।

स्थान-नामों का अध्ययन हिंदी क्षेत्र में ही नहीं, संपूर्ण भारतवर्ष में भी बहुत कम हुआ है। अत: ज्ञान की अन्य अनेक संभावनाओं के द्वार इससे खुलते हैं। स्थान-नाम विज्ञानियों के लिए स्रोतगत स्तर पर कुछ स्थान-नाम अभी भी पहेली बने हुए हैं। ऐसे स्थान-नामों में प्रयुक्त शब्दों को भाषा-विज्ञानी अपना समाधान रूढ़ कहकर देते हैं किंतु मेरे विचार से स्थान-नाम विज्ञानी के लिए कोई स्थान-नाम

निरर्थक नहीं होना चाहिए। यह भी सही है कि हर किसी की अपनी क्षमता एवं सीमा होती है, मेरी भी है, अत: यह कदापि नहीं माना जा सकता कि इस अध्ययन के निष्कर्ष एवं स्थापनाएं अंतिम एवं संपूर्ण हो गई हैं, क्योंकि-

'इससे ज़ेहनों की बुलंदी का पता चलता है
नाम ज़र्रों के तुम महो-अख़्तर रखना।'

परिशिष्ट एक

ललितपुर जनपद के स्थान–नामों की सूची[1]

कः नगर क्षेत्र –

क्र.	*नगर क्षेत्र का नाम*	*ब्लॉक*	*तहसील*	*जनसंख्या*	*क्षे. अन्दर व हदबाहर (हे).*
1	ललितपुर नगर पालिका	जखौरा	ललितपुर	111892	3583.324
2	तालबेहट नगर पंचायत	तालबेहट	तालबेहट	12665	5170.14
3	महरौनी नगर पंचायत	महरौनी	महरौनी	8668	
4	पाली नगर पंचायत	बिरधा	ललितपुर	8719	
				141944	

खः आबाद ग्राम –

क्र0	*आबाद स्थान का नाम*	*ब्लॉक*	*तहसील*	*जनसंख्या*	*क्षेत्रफल (हे0)*	*ग्राम पंचायत*
1	*2*	*3*	*4*	*5*	*6*	*7*
1.	असऊपुरा	तालबेहट	तालबेहट	1204	469.07	असऊपुरा
2.	अगौड़ी	महरौनी	महरौनी	911	1768.468	अगौड़ी
3.	अगौड़ी गिरंट	महरौनी	महरौनी	49	292.651	
4.	अगौरा	महरौनी	महरौनी	868	625.099	
5.	अगरा	मड़ावरा	महरौनी	70	278.535	
6.	अजनौरा	बार	महरौनी	841	843.587	अजनौरा
7.	अजान	महरौनी	महरौनी	596	119.563	
8.	अमौदा	मड़ावरा	महरौनी	548	579	
9.	अमौरा	महरौनी	महरौनी	1307	1621.033	अमौरा
10.	अर्जुन खिरिया	मड़ावरा	महरौनी	1527	1482.708	अर्जुन खिरिया
11.	अंधियारी	जखौरा	ललितपुर	1072	472.894	अंधियारी

12.	अड़वाहा	जखौरा	ललितपुर	1829	768.551	अड़वाहा
13.	अनौरा	बिरधा	ललितपुर	1386	1579.49	अनौरा
14.	अंडेला	बिरधा	ललितपुर	1301	435.97	अंडेला
15.	अंधेर	जखौरा	ललितपुर	878	495.797	
16.	अमऊखेड़ा	बिरधा	ललितपुर	293	196.094	
17.	अमरपुर	जखौरा	ललितपुर	583	613.894	
18.	आगर	जखौरा	ललितपुर	554	920.194	
19.	आलापुर	जखौरा	ललितपुर	1871	545.781	आलापुर
20.	आलापुर	बिरधा	ललितपुर	679	413.625	
21.	इकौना	मड़ावरा	महरौनी	980	592.611	इकौना
22.	इमिलिया	बार	तालबेहट	657	528.634	
23.	इमिलिया	बिरधा	ललितपुर	163	169.85	
24.	इमलिया खुर्द	मड़ावरा	महरौनी	94	238.8	
25.	इमलिया कलां	मड़ावरा	महरौनी	1081		
26.	इकलगुवां	जखौरा	ललितपुर	514	404.344	
27.	उगरपुर	तालबेहट	तालबेहट	1156	734.003	उगरपुर
28.	उदगुवा	तालबेहट	तालबेहट	561	537.785	उदगुवा
29.	उदयपुरा	बार	महरौनी	1263	894.892	उदयपुरा
30.	उदया	बार	महरौनी	671	375.536	
31.	उल्दना कलां	महरौनी	महरौनी	1589		उल्दना कलां
32.	उल्दना खुर्द	मड़ावरा	महरौनी	912	850.602	उल्दना खुर्द
33.	उत्तमधाना	बिरधा	ललितपुर	962	574.913	उत्तमधाना
34.	उमरिया डोंगरा	बिरधा	ललितपुर	741	392.228	उमरिया डोंगरा
35.	ऊमरी	बार	महरौनी	660	822.034	ऊमरी
36.	एरावनी	बिरधा	ललितपुर	1195	859.885	एरावनी
37.	ऐरा	बिरधा	ललितपुर	1491	909.6	ऐरा
38.	ऐवनी	तालबेहट	तालबेहट	1076	711.76	
39.	क्योलारी	बिरधा	ललितपुर	442	1997.705	
40.	क्योलारी	महरौनी	महरौनी	1100	1319.064	क्योलारी
41.	कंगीरपुरा	तालबेहट	तालबेहट	49	213.459	
42.	कंधारी कलां	तालबेहट	तालबेहट	1450	1746.416	कंधारी कलां
43.	ककड़ारी	तालबेहट	तालबेहट	1623	1029.445	ककड़ारी
44.	ककड़ारी	बार	महरौनी	1335	1372.963	ककड़ारी
45.	ककरेला	तालबेहट	तालबेहट	623	405.825	
46.	कठवर	बार	तालबेहट	425	448.511	
47.	कडेसरा कलां	तालबेहट	तालबेहट	4612	2185.97	कडेसरा कलां
48.	कड़ेसरा खुर्द	तालबेहट	तालबेहट	534	407.438	

49. कड़ेसरा वांसी	तालबेहट	तालबेहट	822	568.569	कड़ेसरा वांसी
50. कंधारी खुर्द	तालबेहट	तालबेहट	878	769.189	
51. कपडेर कलां	तालबेहट	तालबेहट	33	390.844	
52. करेंगा	तालबेहट	तालबेहट	812	838.323	
53. करमई	बार	तालबेहट	2003	1593.241	करमई
54. कलौथरा-कंजीपुरा	तालबेहट	तालबेहट	396	331.669	
55. कल्यानपुरा	जखौरा	तालबेहट	1716	596.19	कल्यानपुरा
56. कल्यानपुरा	बिरधा	ललितपुर	5183	5272.763	कल्यानपुरा
57. कनपुरा	महरौनी	महरौनी	11	238.558	
58. कनपुरा	बिरधा	ललितपुर	101	459.825	
59. करौदा	महरौनी	महरौनी	1145	1210.499	
60. कवराटा	मड़ावरा	महरौनी	556	2174.801	
61. ककोरिया	बिरधा	ललितपुर	702	471.313	ककोरिया
62. ककरुवा	जखौरा	ललितपुर	882	851.397	ककरुवा
63. ककरुवा	मड़ावरा	महरौनी	2076	2088.443	ककरुवा
64. कचनौंदा कलां	बिरधा	ललितपुर	2841	1532.459	कचनौंदा कलां
65. कचनौदा घाट	जखौरा	ललितपुर	188	205.9	
66. कपासी	बिरधा	ललितपुर	762	861.394	कपासी
67. करगन	जखौरा	ललितपुर	1292	698.715	करगन
68. करमरो	बिरधा	ललितपुर	1569	597.ष्412	करमरो
69. करमुहारा	जखौरा	ललितपुर	1088	1024.694	
70. करारी	जखौरा	ललितपुर	503	674.181	
71. कलौथरा	बिरधा	ललितपुर	1473	1494.466	कलौथरा
72. कलरव	बिरधा	ललितपुर	708	942.9	
73. कारोखेत	तालबेहट	तालबेहट	62	97.727	
74. कारीटोरन	बार	तालबेहट	671	661.289	कारीटोरन
75. कारीटोरन	मड़ावरा	महरौनी	2390	1820.174	कारीटोरन
76. कारी पहाड़ी	जखौरा	तालबेहट	907	455.435	
77. कारीसा	बिरधा	ललितपुर	76	762.265	
78. काला पहाड़	जखौरा	ललितपुर	1385	932.652	
79. किसरदा	महरौनी	महरौनी	844	671.885	
80. किसलवांस	जखौरा	ललितपुर	2046	1093.317	किसलवांस
81. किरोंदा	बिरधा	ललितपुर	130	274.878	
82. कुचदों	बिरधा	ललितपुर	426	285.503	
83. कुमरौल	बिरधा	ललितपुर	420	664.902	
84. कुमरौला	बिरधा	ललितपुर	907	609.588	
85. कुलुवा	बिरधा	ललितपुर	98	575.592	

86.	कुवांतला	जखौरा	ललितपुर	1918	660.508	कुवांतला
87.	कुआंघोसी	महरौनी	महरौनी	1607	1051.687	कुआघोसी
88.	कुआगांव	बार	महरौनी	2083	1696.373	कुआगांव
89.	कुम्हैड़ी	महरौनी	महरौनी	5471		कुम्हैड़ी
90.	कुसमाड	महरौनी	महरौनी	1307	1935.892	कुसमाड
91.	कुरौरा	महरौनी	महरौनी	1310	1305.447	कुरौरा
92.	कुर्रट	मड़ावरा	महरौनी	982	622.989	कुर्रट
93.	कैथोरा	बिरधा	ललितपुर	737	397.318	
94.	कैलगुवां	बार	महरौनी	4448	2719.372	कैलगुवां
95.	कैलोनी	बार	महरौनी	517	1050.314	
96.	कोकटा	बिरधा	ललितपुर	141	636.391	
97.	कोटरा	तालबेहट	तालबेहट	1055	3363.585	
98.	कोरवास	महरौनी	महरौनी	1345	1150.039	कोरवास
99.	खजरा	बार	तालबेहट	1440	562.787	खजरा
100.	खटौरा	महरौनी	महरौनी	983	1073.731	खटौरा
101.	खजुरिया	बिरधा	ललितपुर	1868	1254.282	खजुरिया
102.	खड़ेरा	जखौरा	ललितपुर	1166	715.691	खड़ेरा
103.	खड़ोवरा	जखौरा	ललितपुर	1140	981.824	खड़ोवरा
104.	खाँदी	तालबेहट	तालबेहट	14143		खाँदी
105.	खाकरौन	बार	महरौनी	795	545.126	
106.	खाईखेरा	बिरधा	ललितपुर	91	192.074	
107.	खितवांस	बिरधा	ललितपुर	2305	2216.435	खितवांस
108.	खिरिया खुर्द	जखौरा	तालबेहट	454	184.657	
109.	खिरिया छतारा	बिरधा	ललितपुर	2576	375.564	खिरिया छतारा
110.	खिरिया मिश्र	जखौरा	ललितपुर	226	210.021	
111.	खिरिया मिश्र	बार	महरौनी	410	460.734	
112.	खिरिया पाली	बिरधा	ललितपुर	18	477.926	
113.	खिरिया बेहटा	बार	तालबेहट	4	424.019	
114.	खिरिया डांग	तालबेहट	तालबेहट	249	178.377	
115.	खिरिया उवारी	मड़ावरा	महरौनी	862	636.814	
116.	खिरिया भारंजू	महरौनी	महरौनी	759	1299.386	
117.	खिरिया लटकनजू	महरौनी	महरौनी	1576	1030.205	खिरिया लटकनजू
118.	खुटगुवां	मड़ावरा	महरौनी	709	763.491	खुटगुवां
119.	खुरा	जखौरा	ललितपुर	988	615.812	
120.	खैरा	बार	तालबेहट	825	623.836	
121.	खैरा डांग	तालबेहट	तालबेहट	614	380.356	खैरा डांग
122.	खैरी डांग	तालबेहट	तालबेहट	474	267.858	

123. खैरपुरा	मड़ावरा	महरौनी	595	518.232	
124. खैराई	मड़ावरा	महरौनी	80	410.832	
125. खोंखरा	बिरधा	ललितपुर	742	379.991	
126. गंगचारी	बार	महरौनी	1555	1068.957	गंगचारी
127. गंगचारी	मड़ावरा	महरौनी	533	416.339	
128. गंगासागर	बार	महरौनी	328	320.779	
129. गंगारी	जखौरा	ललितपुर	709	638.718	
130. गढिया	बार	तालबेहट	1786	915.802	गढिया
131. गदयाना	बार	तालबेहट	3453	2562.378	गदयाना
132. गगनियाँ	महरौनी	महरौनी	269	465.501	
133. गदनपुर	मड़ावरा	महरौनी	1583	1213.031	गदनपुर
134. गदौरा	मड़ावरा	महरौनी	1180	695.764	गदौरा
135. गढ़ौली	बिरधा	ललितपुर	580	297.12	
136. गढौली कलां	महरौनी	महरौनी	2171	2727.247	गढौली कलां
137. गढौली खुर्द	मड़ावरा	महरौनी	274	620.842	
138. गर्रोली माफ	मड़ावरा	महरौनी	451	341.343	
139. गहराव	बार	महरौनी	557	570.213	
140. गनगौरा	जखौरा	ललितपुर	1555	962.821	गनगौरा
141. गिदवाहा	मड़ावरा	महरौनी	1751	1681.981	गिदवाहा
142. गिरार	मड़ावरा	महरौनी	1833	2116.532	गिरार
143. गिल्टौरा	बिरधा	ललितपुर	603	449.949	
144. गुलेंदा	तालबेहट	तालबेहट	876	1309.998	गुलेंदा
145. गूंगर	तालबेहट	तालबेहट	389	702.451	
146. गुगरवारा	बार	महरौनी	1594	1217.456	गुगरवारा
147. गुंदरापुर	महरौनी	महरौनी	1471	1345.217	गुंदरापुर
148. गुढा	महरौनी	महरौनी	3638	3051.114	गुढा
149. गुढ़ा बुजुर्ग	मड़ावरा	महरौनी	1676	845.673	गुढ़ा बुजुर्ग
150. गुढ़ा मडावरा	मड़ावरा	महरौनी	984	612.244	गुढ़ा मडावरा
151. गुरयाना	मड़ावरा	महरौनी	1006	1013.815	गुरयाना
152. गुदावल	जखौरा	ललितपुर	21	588.876	
153. गुरसौरा	जखौरा	ललितपुर	1572	797.322	गुरसौरा
154. गेंदोरा	बार	तालबेहट	1445	759.898	गेंदोरा
155. गेंदौरा	जखौरा	ललितपुर	491	284.614	
156. गेवरा गुंदेरा	तालबेहट	तालबेहट	2575	2512.382	
157. गेंचवारा	जखौरा	ललितपुर	500	505.128	
158. गोठरा	मड़ावरा	महरौनी	7	930.497	
159. गोना	महरौनी	महरौनी	1882		गोना

160. गोना	मड़ावरा	महरौनी	4455		गोना
161. गोरा	जखौरा	ललितपुर	1144	451.971	गोरा
162. गोरा कछया	मड़ावरा	महरौनी	800	617.043	
163. गोरा कलां	मड़ावरा	महरौनी	1960	1726.185	गोरा कलां
164. गोराखुर्द	मड़ावरा	महरौनी	529	404.78	
165. घटवार	जखौरा	ललितपुर	1136	583.021	घटवार
166. घिसौली	जखौरा	ललितपुर	1670	1372.932	घिसौली
167. घुटारी	जखौरा	ललितपुर	339	347.44	
168. घुवरा	जखौरा	तालबेहट	393	80.604	
169. चंदेरा	जखौरा	ललितपुर	57	211.964	
170. चंदेरा	बिरधा	ललितपुर	637	837.126	
171. चंदावली	बार	महरौनी	1717	1995.704	चंदावली
172. चंद्रापुर	तालबेहट	तालबेहट	702	624.171	
173. चकौरा	बार	महरौनी	1520	779.725	चकौरा
174. चढ़रा	महरौनी	महरौनी	519	662.63	
175. चढ़रऊ	बिरधा	ललितपुर	2733	967.594	चढ़रऊ
176. चमरऊवा	जखौरा	ललितपुर	827	522.728	
177. चांदपुर	बिरधा	ललितपुर	42	271.982	
178. चांदरो	तालबेहट	तालबेहट	950	719.939	
179. चांदौरा	मड़ावरा	महरौनी	418	217.654	
180. चिरौला	महरौनी	महरौनी	458	328.375	
181. चितरा	जखौरा	ललितपुर	474	406.202	
182. चीमना	बिरधा	ललितपुर	319	184.113	
183. चीरा कोड़र	बिरधा	ललितपुर	549	262.22	
184. चुनगी	तालबेहट	तालबेहट	953	714.989	चुनगी
185. चुरावनी	तालबेहट	तालबेहट	1240	903.963	चुरावनी
186. चौबारो	तालबेहट	तालबेहट	1012	572.278	चौबारो
187. चौका	महरौनी	महरौनी	330	484.202	
188. चौकी	महरौनी	महरौनी	854	1059.69	चौकी
189. चौमहू	महरौनी	महरौनी	186	247.945	
190. चौसा	जखौरा	ललितपुर	467	451.425	
191. चौंतराघाट	बिरधा	ललितपुर	220	159.704	
192. चौरसिल	जखौरा	ललितपुर	453	283.602	
193. छपरट	महरौनी	महरौनी	1058	878.321	छपरट
194. छपरौनी	मड़ावरा	महरौनी	414	1002.81	छपरौनी
195. छापछौल	महरौनी	महरौनी	1734	1852.675	छापछौल
196. छायन	महरौनी	महरौनी	1630	519.162	छायन

197. छिल्ला	बार	महरौनी	706	661.005	
198. छिल्ला	बिरधा	ललितपुर	960	828.833	
199. छिपाई	जखौरा	तालबेहट	2435	350.47	छिपाई
200. छितरापुर	मड़ावरा	महरौनी	550	869.889	
201. छीपरा	मड़ावरा	महरौनी	10	139.305	
202. जखौरा	जखौरा	तालबेहट	7509	2209.715	जखौरा
203. जमौरा माफी	जखौरा	तालबेहट	928	361.504	जमौरा माफी
204. जमालपुर	तालबेहट	तालबेहट	2653	3152.224	जमालपुर
205. जखौरा	महरौनी	महरौनी	1658	584.421	जखौरा
206. जगारा	महरौनी	महरौनी	650	871.578	
207. जमौरा	मड़ावरा	महरौनी	179	1078.818	
208. जरया	महरौनी	महरौनी	2023	1909.91	जरया
209. जरावली	बार	महरौनी	1226	1204.863	जरावली
210. जलंधर	मड़ावरा	महरौनी	1088	689.714	जलंधर
211. जमुनियां	बिरधा	ललितपुर	954	384.567	जमुनियां
212. जहाजपुर	बिरधा	ललितपुर	344	205.649	
213. जामुनधाना कलां	बिरधा	ललितपुर	1711	1263.189	जामुनधाना कलां
214. जामुनधाना खुर्द	जखौरा	ललितपुर	992	327.009	
215. जाखलौन	बिरधा	ललितपुर	8135	2884.015	जाखलौन
216. जिजरवारा	तालबेहट	तालबेहट	310	647.164	
217. जिलौनी	मड़ावरा	महरौनी	166	125.712	
218. जिजयावन	जखौरा	ललितपुर	2848	2098.414	जिजयावन
219. जीरौन	बिरधा	ललितपुर	1320	671.338	जीरौन
220. जुगपुरा	जखौरा	ललितपुर	1148	148.595	
221. जैतूपुरा	मड़ावरा	महरौनी	373	606.999	
222. जैरवारा	जखौरा	ललितपुर	1202	726.221	जैरवारा
223. झरर	तालबेहट	तालबेहट	283	569.901	
224. झरावटा	मड़ावरा	महरौनी	1581	1513.337	झरावटा
225. झरकौन	बिरधा	ललितपुर	2074	1141.129	झरकौन
226. झांकर	मड़ावरा	महरौनी	581	557.664	
227. झावर	तालबेहट	तालबेहट	1506	1016.658	झावर
228. टीला	बार	महरौनी	593	380.511	
229. टीला	बिरधा	ललितपुर	661	605.868	
230. टीकरा	महरौनी	महरौनी	555	832.226	
231. टीकरा तिवारी	बिरधा	ललितपुर	1261	860.574	टीकरा तिवारी
232. टीकरी	महरौनी	महरौनी	236	259.15	
233. टेटा	तालबेहट	तालबेहट	1208	456.526	

234. टेनगा	बिरधा	ललितपुर	1921	1088.497	टेनगा
235. टोड़ी	बार	तालबेहट	2491	1154.262	टोड़ी
236. टौरी	मड़ावरा	महरौनी	662	427.177	
237. टौरिया	बार	महरौनी	1239	1675.608	टौरिया
238. टौरिया	जखौरा	ललितपुर	451	2285.493	
239. ठनगना	मड़ावरा	महरौनी	176	358.957	
240. ठगारी	बिरधा	ललितपुर	647	630.277	ठगारी
241. ठाठखेरा	बार	तालबेहट	440	1278.825	
242. डगराना	बार	महरौनी	2456	2204.43	डगराना
243. डुलावन	बार	तालबेहट	2401	997.928	डुलावन
244. डुगरिया	बिरधा	ललितपुर	1173	418.618	डुगरिया
245. डोंगरा खुर्द	महरौनी	महरौनी	1764	4928.837	डोंगरा खुर्द
246. डोंगरा कलां	मड़ावरा	महरौनी	2827		डोंगरा कलां
247. डोंगरा कलां	बिरधा	ललितपुर	5402	4209.129	डोंगरा कलां
248. डोरना	बिरधा	ललितपुर	302	289.205	
249. तरगुवां	तालबेहट	तालबेहट	1501	1398.034	तरगुवां
250. तरावली	मड़ावरा	महरौनी	759	351.216	तरावली
251. तलऊ	महरौनी	महरौनी	192	499.205	
252. तालगाँव	बिरधा	ललितपुर	976	1165.531	
253. तिलहरी	जखौरा	ललितपुर	689	372.856	तिलहरी
254. तिंदरा	तालबेहट	तालबेहट	424	713.739	
255. तिसगना	मड़ावरा	महरौनी	599	2012.152	
256. तुरका	बार	तालबेहट	830	451.544	तुरका
257. तेरई	तालबेहट	तालबेहट	2230	424.003	तेरई
258. तेरा	बिरधा	ललितपुर	1653	1874.375	तेरा
259. तोर	बिरधा	ललितपुर	1077	888.602	
260. थनवारा	जखौरा	ललितपुर	2502	2415.215	थनवारा
261. थाना	तालबेहट	तालबेहट	3275	1474.853	थाना
262. दतया	बिरधा	ललितपुर	2	438.33	
263. दशरारा	बार	तालबेहट	1359	448.859	दशरारा
264. दरौना	महरौनी	महरौनी	633	241.301	
265. दरौनी	बार	महरौनी	1143	1479.198	दरौनी
266. दांवर	बिरधा	ललितपुर	775	1026.524	दांवर
267. दांगली	मड़ावरा	महरौनी	729	543.4	
268. दावनी	जखौरा	ललितपुर	3073	2239.384	दावनी
269. दारुतला	मड़ावरा	महरौनी	257	152.038	
270. दिदौरा	तालबेहट	तालबेहट	291	759.296	

271. दिदौरा	बार	महरौनी	1441	1230.176	दिदौरा
272. दिगवार	महरौनी	महरौनी	584	457.507	दिगवार
273. दिगवार	मड़ावरा	महरौनी	848	612.8	
274. दिदौनियां	मड़ावरा	महरौनी	584	203.354	दिदौनियां
275. दिदौली	महरौनी	महरौनी	176	471.924	
276. दुधवा	बार	तालबेहट	13	176.281	
277. दुर्जनपुरा	जखौरा	ललितपुर	199	365.26	
278. दूधई	बिरधा	ललितपुर	979	1420.523	
279. देवरान	बार	तालबेहट	3578	1106.636	देवरान
280. देवरा	मड़ावरा	महरौनी	47	176.773	
281. देवरी	मड़ावरा	महरौनी	652	242.147	
282. देवरान कलां	महरौनी	महरौनी	806	1177.292	देवरान कलां
283. देवरान खुर्द	महरौनी	महरौनी	565	394.222	
284. देवगढ़	बिरधा	ललितपुर	699	901.405	देवगढ़
285. देवरी	जखौरा	ललितपुर	235	825.633	देवरी
286. दैनपुरा	मड़ावरा	महरौनी	768	268.147	
287. दैलवारा	बार	महरौनी	991	702.987	
288. दैलवारा	जखौरा	ललितपुर	4777	2284.054	दैलवारा
289. दौलतपुर	मड़ावरा	महरौनी	239	489.463	
290. दौलतपुरा	बार	महरौनी	232	396.557	
291. दौलता	तालबेहट	तालबेहट	705	242.086	
292. धनगौल	तालबेहट	तालबेहट	1491	660.221	धनगौल
293. धमकना	तालबेहट	तालबेहट	1011	178.971	
294. धमना	बार	तालबेहट	844	755.971	
295. धमना	तालबेहट	तालबेहट	543	676.599	
296. धवा	मड़ावरा	महरौनी	1499	583.301	धवा
297. धवारी	महरौनी	महरौनी	1284	1013.103	धवारी
298. धुरवारा	जखौरा	तालबेहट	1021	830.414	धुरवारा
299. धुरवारा	महरौनी	महरौनी	866	1074.629	
300. धोवनखेरी	बिरधा	ललितपुर	836	532.689	
301. धौरी सागर	मड़ावरा	महरौनी	2020	73080.70	धौरी सागर
302. धौलपुरा	मड़ावरा	महरौनी	582	571.799	
303. धौजरी	बिरधा	ललितपुर	627	1590.889	
304. धौर्रा	बिरधा	ललितपुर	3886	1469.794	धौर्रा
305. नगदा	तालबेहट	तालबेहट	1	75.737	
306. नगवांस	जखौरा	तालबेहट	594	721.213	नगवांस
307. नटराई	जखौरा	तालबेहट	1	53.099	

308. नत्थीखेड़ा	तालबेहट	तालबेहट	3149	2921.413	नत्थीखेड़ा
309. नयाखेड़ा	तालबेहट	तालबेहट	277	386.987	
310. नगारा	बार	महरौनी	636	382.448	
311. नडारी	मड़ावरा	महरौनी	338	393.182	
312. नकवाना	बिरधा	ललितपुर	379	353.945	
313. नदनवारा	जखौरा	ललितपुर	1982	747.676	नदनवारा
314. नयागांव	मड़ावरा	महरौनी	275	287.275	
315. नयागांव	बिरधा	ललितपुर	1516	1809.722	नयागांव
316. ननौरा	जखौरा	ललितपुर	2077	2051.653	ननौरा
317. नावई	महरौनी	महरौनी	632	345.926	
318. नाराहट	मड़ावरा	महरौनी	7182		नाराहट
319. निवारी	महरौनी	महरौनी	633	930.616	
320. निबाई	जखौरा	ललितपुर	1376	520.012	निबाई
321. निबाहो	जखौरा	ललितपुर	797	759.761	
322. निवौआ	बिरधा	ललितपुर	616	369.064	
323. नीमखेरा	बिरधा	ललितपुर	837	725.936	नीमखेरा
324. नीमखेड़ा	मड़ावरा	महरौनी	622	470.161	नीमखेड़ा
325. नुनावली	बिरधा	ललितपुर	893	1337.388	
326. नैकोरा	महरौनी	महरौनी	1093	894.731	नैकोरा
327. नैगुवां	महरौनी	महरौनी	1173	553.803	
328. नैनवारा	महरौनी	महरौनी	1360	858.684	नैनवारा
329. नैगाय खुर्द	जखौरा	ललितपुर	88	339.765	
330. नैगाय कलां	जखौरा	ललितपुर	609	671.811	
331. नौहर खुर्द	जखौरा	ललितपुर	633	707.662	
332. नौहर कलां	जखौरा	ललितपुर	1247	1791.058	नौहर कलां
333. प्यासा	महरौनी	महरौनी	784	1675.747	
334. पंचौरा	जखौरा	ललितपुर	899	427.523	
335. पंचमपुर	जखौरा	ललितपुर	1159	787.7	पंचमपुर
336. पचौडा	महरौनी	महरौनी	899	801.552	पचौडा
337. पटना मड़ावरा	मड़ावरा	महरौनी	1991		पटना मड़ावरा
338. पटसेमरा	बिरधा	ललितपुर	1738	1018.521	पटसेमरा
339. पटौरा खुर्द	जखौरा	ललितपुर	744	713.867	पटौरा खुर्द
340. पटौरा कलां	जखौरा	ललितपुर	1049	987.939	पटौरा कलां
341. पटौवा	बिरधा	ललितपुर	1673	1672.203	पटौवा
342. पथराई	महरौनी	महरौनी	739	488.582	पथराई
343. पठराई	बिरधा	ललितपुर	222	210.527	
344. पठरा	बिरधा	ललितपुर	359	206.193	

345. पठारी	बिरधा	ललितपुर	365	219.781	
346. पठा बिजयपुरा	महरौनी	महरौनी	4269		पठा बिजयपुरा
347. पठा पचौड़ा	बार	तालबेहट	383	863.109	
348. पठागोरी	जखौरा	ललितपुर	26	132.327	
349. पड़ना	बिरधा	ललितपुर	457	126.08	पड़ना
350. पड़रिया	मड़ावरा	महरौनी	495	416.496	
351. पड़ोरिया	बिरधा	ललितपुर	773	435.77	
352. पनारी	जखौरा	ललितपुर	1472	1159.527	
353. परसई	मड़ावरा	महरौनी	397	474.779	
354. परसाटा	मड़ावरा	महरौनी	640	1538.696	
355. पहाड़ी खुर्द	मड़ावरा	महरौनी	204	380.05	
356. पहाड़ी कलां	मड़ावरा	महरौनी	1305	384.991	पहाड़ी कलां
357. पवा	तालबेहट	तालबेहट	3117	2265.988	पवा
358. पड़वां	महरौनी	महरौनी	2044	2321.283	पड़वां
359. परौंदा	जखौरा	ललितपुर	726	588.556	
360. पांपरो	मड़ावरा	महरौनी	100	188.576	
361. पारौन	बार	तालबेहट	2075	1236.228	पारौन
362. पारौल	मड़ावरा	महरौनी	2936	2842.518	पारौल
363. पाली	महरौनी	महरौनी	582	687.385	
364. पाली ग्रामीण	बिरधा	ललितपुर	848	1968.031	
365. पाह	बार	महरौनी	2260	2314.713	पाह
366. पाचौनी	जखौरा	ललितपुर	1317	702.059	पाचौनी
367. पिपरा	जखौरा	तालबेहट	2221	1384.576	पिपरा
368. पिपरट	मड़ावरा	महरौनी	626	964.908	
369. पिपरई	बिरधा	ललितपुर	1535	977.321	पिपरई
370. पिपरई	तालबेहट	तालबेहट	1135	889.004	
371. पिपरिया	मड़ावरा	महरौनी	438	563.314	
372. पिपरौनिया	बिरधा	ललितपुर	299	223.486	
373. पिपरिया डोंगरा	बिरधा	ललितपुर	559	343.08	
374. पिपरिया पाली	बिरधा	ललितपुर	759	831.37	
375. पिपरिया वंशा	बिरधा	ललितपुर	1159	702.153	
376. पिपरिया जागीर	बिरधा	ललितपुर	636	615.804	पिपरियाजागीर
377. पिसनारी	मड़ावरा	महरौनी	931	1623.914	
378. पीड़ार	मड़ावरा	महरौनी	1043	866.14	पीड़ार
379. पुरा	बिरधा	ललितपुर	549	471.048	
380. पुरा पाचौनी	बार	तालबेहट	567	645.021	
381. पुरा धंधकुवा	बार	महरौनी	923	963.473	पुरा धंधकुवा

382. पूरा खुर्द	तालबेहट	तालबेहट	1405	768.259	
383. पूरा कलां	तालबेहट	तालबेहट	6449	2875.666	पूरा कलां
384. पुलवारा	बार	तालबेहट	1403	578.939	पुलवारा
385. फड़ारी	बार	तालबेहट	176	235.394	
386. फौजपुरा	जखौरा	ललितपुर	162	2383.493	
387. बंगरा	बार	महरौनी	539	423.474	
388. बंगरुवा	महरौनी	महरौनी	851	966.946	
389. बंगरिया	बिरधा	ललितपुर	1067	979.933	बंगरिया
390. बंट	बिरधा	ललितपुर	2580	2483.927	बंट
391. बन्दपुरा	जखौरा	ललितपुर	648	365.685	
392. बंदरगुढ़ा	बिरधा	ललितपुर	1083	1247.324	बंदरगुढ़ा
393. बन्दरेला	तालबेहट	तालबेहट	125	240.293	
394. बण्डवा	मड़ावरा	महरौनी	153	529.59	
395. बर्मा बिहार	तालबेहट	तालबेहट	837	1190.115	बर्मा बिहार
396. बजर्रा	बिरधा	ललितपुर	1135	1048.656	बजर्रा
397. बरखेरा	बिरधा	ललितपुर	1026	681.575	बरखेरा
398. बरखेरा	मड़ावरा	महरौनी	261	608.334	
399. बर खिरिया	बिरधा	ललितपुर	1816	920.57	बर खिरिया
400. बरी खुर्द	तालबेहट	तालबेहट	730	378.727	बरी खुर्द
401. बरी कलां	तालबेहट	तालबेहट	564	391.672	
402. बरेठी	बिरधा	ललितपुर	2	386.419	
403. बरदेही	जखौरा	ललितपुर	371	313.308	
404. बरोदी नकीब	जखौरा	ललितपुर	363	323.987	
405. बरौदा बिजलौन	बिरधा	ललितपुर	1334	916.614	बरौदा बिजलौन
406. बरौदिया	मड़ावरा	महरौनी	895	678.761	बरौदिया
407. बरौदिया	बिरधा	ललितपुर	700	385.833	
408. बरौदिया राइन	बिरधा	ललितपुर	1079	660.267	
409. बरेजा	मड़ावरा	महरौनी	737	475.355	
410. बरतला	बार	महरौनी	404	477.155	
411. बख्तर	जखौरा	ललितपुर	754	350.914	बख्तर
412. बम्हौरी सिंदवाहा	मड़ावरा	महरौनी	235	134.607	
413. बम्हौरी खुर्द	मड़ावरा	महरौनी	709	599.258	बम्हौरी खुर्द
414. बम्हौरी घाट	महरौनी	महरौनी	1170	836.008	
415. बम्होरी बहादुरसिंह	महरौनी	महरौनी	1921	1559.9	बम्होरी बहादुरसिंह
416. बम्हौरी नांगल	जखौरा	ललितपुर	439	524.072	
417. बम्हौरी पठार	बिरधा	ललितपुर	347	113.047	
418. बम्हौरी वंशा	बिरधा	ललितपुर	652	89.299	बम्हौरी वंशा

419. बम्हौरी कलां	जखौरा	ललितपुर	2585	2011.91	बम्हौरी कलां
420. बम्हौरी कलां	मड़ावरा	महरौनी	2272		बम्हौरी कलां
421. बम्हौरी खड़ैत	बार	तालबेहट	1100	1048.377	बम्हौरी खड़ैत
422. बम्हौरी शहना	बार	तालबेहट	881	324.224	
423. बम्हौरी सर	तालबेहट	तालबेहट	1790	554.851	बम्हौरी सर
424. बमरौला	बिरधा	ललितपुर	450	327.764	
425. बघौरा	तालबेहट	तालबेहट	951	1058.663	बघौरा
426. बमनौरा	बिरधा	ललितपुर	205	266.055	
427. बड़ौरा	जखौरा	ललितपुर	401	458.309	
428. बमराना	मड़ावरा	महरौनी	1180	566.56	बमराना
429. बलना	मड़ावरा	महरौनी	595	595.386	
430. बहादुरपुर	मड़ावरा	महरौनी	1663	1405.875	बहादुरपुर
431. बकसपुर	महरौनी	महरौनी	324	294.245	
432. बसवां	जखौरा	ललितपुर	1654	1752.165	बसवां
433. बगौनी	मड़ावरा	महरौनी	1557	1631.292	बगौनी
434. बनयाना	मड़ावरा	महरौनी	905	1424.765	
435. बछलापुर	बिरधा	ललितपुर	1087	1144.703	बछलापुर
436. बछरावनी	बार	तालबेहट	1515	1176.269	बछरावनी
437. बछरावनी	मड़ावरा	महरौनी	678	569.077	
438. बछरई	मड़ावरा	महरौनी	1223	1253.935	बछरई
439. बटवाहा	तालबेहट	तालबेहट	356	1151.475	
440. बसतगुवां	बार	तालबेहट	2669	736.157	बसतगुवां
441. बदनपुर	तालबेहट	तालबेहट	250	169.495	
442. बनगुवां	मड़ावरा	महरौनी	373	616.558	
443. बनगुवां खुर्द	तालबेहट	तालबेहट	355	561.571	
444. बनगुवा कलां	तालबेहट	तालबेहट	5259	1173.659	बनगुवां कलां
445. बमनगुवां	तालबेहट	तालबेहट	176	133.985	
446. बडगाना	मड़ावरा	महरौनी	756	772.37	
447. बड़ोखरा	बार	महरौनी	1388	1740.397	बड़ोखरा
448. बड़वार	मड़ावरा	महरौनी	515	380.926	
449. बरौदा डांग	बार	तालबेहट	4079	1858.298	बरौदा डांग
450. बरौदा स्वामी	जखौरा	ललितपुर	2582	1436.7	बरौदा स्वामी
451. बस्त्रावन	बार	तालबेहट	1407	883.901	बस्त्रावन
452. बलरगुवां	तालबेहट	तालबेहट	296	505.088	
453. बारई	मड़ावरा	महरौनी	257	340.505	
454. बारौन	महरौनी	महरौनी	1063	291.361	बारौन
455. बानौली	जखौरा	ललितपुर	705	680.31	

456. बानौनी	बार	महरौनी	1993	1324.841	बानौनी
457. बानपुर	बार	महरौनी	10219		बानपुर
458. बारोद	बिरधा	ललितपुर	2019	1677.479	बारोद
459. बांसपुर	बिरधा	ललितपुर	441	92.002	
460. बांसी	जखौरा	तालबेहट	7939	1472.604	बांसी
461. बाजनो	जखौरा	तालबेहट	635	582.881	
462. बादरौन	जखौरा	तालबेहट	720	1086.451	
463. बार	बार	तालबेहट	7425	2193.974	बार
464. बारचौन	मड़ावरा	महरौनी	714	372.333	बारचौन
465. बारयो	महरौनी	महरौनी	1049	1169.664	
466. बालाबेहट	बिरधा	ललितपुर	6279	3637.434	बालाबेहट
467. बिरौरा	जखौरा	ललितपुर	167	484.029	
468. बिगारी	तालबेहट	तालबेहट	950	1401.795	बिगारी
469. बिजयपुरा	तालबेहट	तालबेहट	3100	1410.335	बिजयपुरा
470. बिघाई	मड़ावरा	महरौनी	332	388.325	
471. बिरौदा	मड़ावरा	महरौनी	350	348.679	
472. बिघाखेत	जखौरा	ललितपुर	787	529.115	
473. बिघामहावत	जखौरा	ललितपुर	835	578.791	बिघामहावत
474. बिजौरी	बिरधा	ललितपुर	265	224.903	
475. बिजयपुरा	बिरधा	ललितपुर	388	526.885	
476. बिनेकाटोरन	जखौरा	ललितपुर	438	442.429	
477. बिनेकामाफी	जखौरा	तालबेहट	959	1056.537	
478. बिरधा	बिरधा	ललितपुर	5163	2264.837	बिरधा
479. बिरधा	तालबेहट	तालबेहट	3684	2613.412	बिरधा
480. बिरारी	बिरधा	ललितपुर	2942	1447.026	बिरारी
481. बिल्ला	बार	महरौनी	2204	2714.215	बिल्ला
482. बिलाटा	बार	महरौनी	858	699.571	
483. बिजरौठा	तालबेहट	तालबेहट	6469	2256.121	बिजरौठा
484. बीर	बार	महरौनी	1311	675.203	
485. बुड़ेरा	जखौरा	तालबेहट	492	575.53	
486. बुढ़वार	जखौरा	ललितपुर	4056	2471.251	बुढ़वार
487. बुधेड़ी	जखौरा	तालबेहट	632	1015.081	
488. बुदावनी	तालबेहट	तालबेहट	986	525.176	बुदावनी
489. बुदनी मडावरा	महरौनी	महरौनी	1053	0	बुदनी मडावरा
490. बुदनी नाराहट	मड़ावरा	महरौनी	185	5762.373	
491. बुरौगांव	बार	महरौनी	2704	2164.541	बुरौगांव
492. बूटी	बार	महरौनी	309	706.101	

493. बूढ़ी	महरौनी	महरौनी	439	344.419	
494. बूचा	जखौरा	ललितपुर	1118	470.21	बूचा
495. बेहटा	बार	तालबेहट	1	406.91	
496. बेटना	बिरधा	ललितपुर	748	561.959	
497. बेसरा	बिरधा	ललितपुर	268	390.11	
498. बैदौरा	तालबेहट	तालबेहट	478	839.6	
499. बैदपुर	महरौनी	महरौनी	30	283.896	
500. बैजनाथ	महरौनी	महरौनी	378	469.062	
501. बैरवारा	मड़ावरा	महरौनी	1482	1474.84	बैरवारा
502. बैरवारा	जखौरा	ललितपुर	523	206.194	
503. भंवरकली	तालबेहट	तालबेहट	460	210.371	
504. भदौना	तालबेहट	तालबेहट	890	461.925	
505. भदौरा	महरौनी	महरौनी	1534	2009.288	भदौरा
506. भरतिया	महरौनी	महरौनी	85	293.924	
507. भड़रा	जखौरा	ललितपुर	799	510.992	भड़रा
508. भडरऊ	बिरधा	ललितपुर	1135	417.861	
509. भरतपुरा	जखौरा	ललितपुर	1755	977.034	भरतपुरा
510. भारौन	बिरधा	ललितपुर	779	2103.294	
511. भावनी	बार	तालबेहट	1307	682.657	भावनी
512. भारौनी	बार	महरौनी	442	425.314	
513. भीकमपुर	मड़ावरा	महरौनी	1239	1432.762	भीकमपुर
514. भुचेरा	तालबेहट	तालबेहट	1973	1740.42	भुचेरा
515. भुजऊपुरा	तालबेहट	तालबेहट	402	157.456	
516. भूषरा	महरौनी	महरौनी	103	253.575	
517. भैंसाई	जखौरा	ललितपुर	510	1000.827	
518. भैसनवारा कलां	तालबेहट	तालबेहट	453	343.149	
519. भैसनवारा खुर्द	तालबेहट	तालबेहट	481	676.751	
520. भैलोनी सूबा	बार	तालबेहट	1875	2435.015	भैलोनी सूबा
521. भैलोनी लोध	बार	तालबेहट	1606	774.339	भैलोनी लोध
522. भैलवारा	बिरधा	ललितपुर	457	366.015	
523. भैरा	महरौनी	महरौनी	2097	1060.111	भैरा
524. भोंटी नाराहट	मड़ावरा	महरौनी	104	245.871	
525. भोंडी	महरौनी	महरौनी	1129	882.144	भोंडी
526. भोंती मड़ावरा	मड़ावरा	महरौनी	924	258.861	भोंती मड़ावरा
527. भोंरट	महरौनी	महरौनी	267	361.181	
528. भोंता	बिरधा	ललितपुर	438	891.155	
529. भोंटा	महरौनी	महरौनी	1253	1875.127	भोंटा

530.	भोंरसिल	जखौरा	ललितपुर	589	1041.097	
531.	भोपालपुरा	तालबेहट	तालबेहट	128	159.593	
532.	भौंरदा	बिरधा	ललितपुर	1021	1128.392	भौंरदा
533.	म्यांव	बार	महरौनी	1699	2322.911	म्यांव
534.	म्यांव	तालबेहट	तालबेहट	2217		म्यांव
535.	मकरीपुर	मड़ावरा	महरौनी	472	478.742	
536.	मथरा डांग	बार	तालबेहट	2002	1231.724	मथरा डांग
537.	मऊ	तालबेहट	तालबेहट	1244	539.179	मऊ
538.	मडावरा	मड़ावरा	महरौनी	6643	1884.44	मडावरा
539.	मदनपुर	मड़ावरा	महरौनी	1291	2196.505	मदनपुर
540.	मरोंली	बार	महरौनी	1480	1280.603	मरोंली
541.	महरौनी ग्रामीण	महरौनी	महरौनी	4994	1062.518	
542.	महाराजपुरा	मड़ावरा	महरौनी	502	678.35	
543.	मऊ माफी	बिरधा	ललितपुर	474	348.744	
544.	मगरपुर	बिरधा	ललितपुर	512	1230.369	
545.	मड़ना	बिरधा	ललितपुर	121	268.037	
546.	मड़वारी	जखौरा	ललितपुर	2101	647.417	मड़वारी
547.	मनगुवां	जखौरा	ललितपुर	844	429.546	
548.	मसौरा कलां	जखौरा	ललितपुर	2539	1035.131	मसौरा कलां
549.	मसौरा खुर्द	जखौरा	ललितपुर	2608	2288.416	मसौरा खुर्द
550.	मलावनी	जखौरा	ललितपुर	148	453.441	
551.	महोली	बिरधा	ललितपुर	1586	535.597	महोली
552.	महेशपुरा	जखौरा	ललितपुर	545	237.487	
553.	महरौनी खुर्द	जखौरा	ललितपुर	987	525.211	
554.	महर्रा	जखौरा	ललितपुर	467	225.453	महर्रा
555.	मानपुरा	मड़ावरा	महरौनी	421	284.985	
556.	मानिकपुर	महरौनी	महरौनी	1189	504.222	मानिकपुर
557.	मावलैन	तालबेहट	तालबेहट	548	1420.559	
558.	मादौन	बिरधा	ललितपुर	1848	288.223	मादौन
559.	मामदा	बिरधा	ललितपुर	236	224.12	
560.	मिर्चवारा	जखौरा	ललितपुर	1602	989.34	मिर्चवारा
561.	मिर्चवारा	बार	महरौनी	1963	4140.396	मिर्चवारा
562.	मिनौरा	जखौरा	ललितपुर	765	368.971	
563.	मिदरवाहा	महरौनी	महरौनी	1693	2636.138	मिदरवाहा
564.	मुड़ारी	बिरधा	ललितपुर	602	412.993	मुड़ारी
565.	मुडिया	मड़ावरा	महरौनी	441	357.817	
566.	मुडिया	महरौनी	महरौनी	141	240.78	

567. मुकुटौरा	तालबेहट	तालबेहट	461	230.804	
568. मुहारा	जखौरा	तालबेहट	2941	939.286	मुहारा
569. मेरती कलां	बिरधा	ललितपुर	1269	661.12	मेरती कलां
570. मैगुवां	महरौनी	महरौनी	1012	701.867	मैगुवां
571. मैनवार	महरौनी	महरौनी	1634	1160.095	मैनवार
572. मैंनवारा	जखौरा	ललितपुर	2052	12373.172	मैंनवारा
573. मैखुवां	बिरधा	ललितपुर	392	293.893	
574. मैनवार	बिरधा	ललितपुर	1579	2075.381	मैनवार
575. मैलवारा खुर्द	बिरधा	ललितपुर	1178	470.928	मैलवारा खुर्द
576. मैलवारा कलां	बिरधा	ललितपुर	777	706.971	
577. मैलार	जखौरा	ललितपुर	262	673.036	मैलार
578. मौगान	बार	महरौनी	1641	1121.979	मौगान
579. रक्सा	बार	तालबेहट	39	272.394	
580. रजपुरा	तालबेहट	तालबेहट	931	192.75	रजपुरा
581. रजावन	तालबेहट	तालबेहट	1131	1716.298	रजावन
582. रमपुरा कठवर	तालबेहट	तालबेहट	868	1393.544	रमपुरा कठवर
583. रखवारा	मड़ावरा	महरौनी	1276	1733.045	रखवारा
584. रनगाँव	मड़ावरा	महरौनी	3617	1464.049	रनगाँव
585. रमगढा	मड़ावरा	महरौनी	1320	951.719	रमगढा
586. रमपुरा	बिरधा	ललितपुर	370	687.233	
587. रमेशरा	महरौनी	महरौनी	1731	1526.725	रमेशरा
588. रमेशरा	बिरधा	ललितपुर	793	564.235	
589. रघुनाथपुरा	जखौरा	ललितपुर	1310	470.019	रघुनाथपुरा
590. रजौरा	बिरधा	ललितपुर	244	432.956	
591. रजवारा	बिरधा	ललितपुर	3754	1365.741	रजवारा
592. रसोई	जखौरा	ललितपुर	501	406.362	
593. रसोई	बिरधा	ललितपुर	602	425.747	
594. रानीपुरा	जखौरा	ललितपुर	4042	478.222	रानीपुरा
595. रामनगर	जखौरा	ललितपुर	354	84.124	
596. राजपुर	तालबेहट	तालबेहट	2673	1601.343	राजपुर
597. राधापुर	तालबेहट	तालबेहट	652	306.631	
598. रामपुर	तालबेहट	तालबेहट	2008	1100.573	रामपुर
599. रायपुर	जखौरा	तालबेहट	2007	1157.689	रायपुर
600. रारा	तालबेहट	तालबेहट	663	648.234	
601. रीछपुरा	बिरधा	ललितपुर	480	934.189	
602. रुकवाहा	महरौनी	महरौनी	1674	854.546	रुकवाहा
603. रोंड़ा	जखौरा	ललितपुर	3157	1048.052	रोंड़ा

604. लड़वारी	बार	तालबेहट	1945	1070.389	लड़वारी
605. लखंजर	मड़ावरा	महरौनी	596	7146.43	
606. लरगन	महरौनी	महरौनी	1425	1376.964	लरगन
607. ललितापुर	मड़ावरा	महरौनी	364	756.528	
608. लुहर्रा	महरौनी	महरौनी	1387		लुहर्रा
609. लहरैन	महरौनी	महरौनी	760	403.115	लहरैन
610. लखनपुरा	जखौरा	ललितपुर	1725	907.649	लखनपुरा
611. ललितपुर ग्रामीण	जखौरा	ललितपुर	1152	2088.186	ललितपुर ग्रामीण
612. लागौन	जखौरा	ललितपुर	388	1057.612	लागौन
613. लालौन	तालबेहट	तालबेहट	1181	524.064	लालौन
614. लिधौरा	मड़ावरा	महरौनी	713	563.921	लिधौरा
615. लिधौरा	बिरधा	ललितपुर	15	167.95	
616. श्यामपुरा	मड़ावरा	महरौनी	59	143.46	
617. शाहपुर	तालबेहट	तालबेहट	230	213.324	
618. संसुवा	तालबेहट	तालबेहट	182	855.535	
619. सरखड़ी	तालबेहट	तालबेहट	614	757.148	
620. सरखडी	मड़ावरा	महरौनी	841	1282.546	सरखडी
621. सहसा	तालबेहट	तालबेहट	84	132.952	
622. सहसूती	तालबेहट	तालबेहट	58	97.635	
623. सक्तू	मड़ावरा	महरौनी	389	420.631	
624. सकरौनी	महरौनी	महरौनी	6	171.019	
625. सड़कोरा	महरौनी	महरौनी	832	638.381	सड़कोरा
626. सतलींगा	महरौनी	महरौनी	244	413.967	
627. सतवांसा	महरौनी	महरौनी	1575	1731.993	सतवांसा
628. सतरबांस	बिरधा	ललितपुर	2889	8897.799	सतरबांस
629. समोगर	महरौनी	महरौनी	2045	1698.311	समोगर
630. सगोरिया	बिरधा	ललितपुर	881	399.001	
631. सजा	बिरधा	ललितपुर	20	567.78	
632. सतगता	जखौरा	ललितपुर	1168	568.209	सतगता
633. सतौरा	बिरधा	ललितपुर	1088	1030.743	सतौरा
634. सलैया	बिरधा	ललितपुर	786	584.234	सलैया
635. साँकरवार कलां	जखौरा	ललितपुर	502	1371.88	
636. सांकरवार खुर्द	जखौरा	ललितपुर	239	295.304	
637. साढूमल	महरौनी	महरौनी	4117		साढूमल
638. सारसेंड	तालबेहट	तालबेहट	820	756.559	सारसेंड
639. सिंगरवारा	मड़ावरा	महरौनी	575	190.276	
640. सिंदवाहा	महरौनी	महरौनी	3446	1943.546	सिंदवाहा

641. सिगैपुर	बिरधा	ललितपुर	1354	1410.311	सिगैपुर
642. सिरसी खेड़ा	जखौरा	ललितपुर	41	196.5	
643. सिरसी	जखौरा	तालबेहट	2134	1677.744	सिरसी
644. सिमरधा	बिरधा	ललितपुर	931	236.795	सिमरधा
645. सिलगन	जखौरा	ललितपुर	2791	899.014	सिलगन
646. सिमरिया	बार	महरौनी	830	650.632	
647. सिमिरिया	महरौनी	महरौनी	1154	1473.776	
648. सिलावन	महरौनी	महरौनी	2845	2776.35	सिलावन
649. सिवनी कलां	जखौरा	ललितपुर	83	686.454	
650. सिवनी खुर्द	जखौरा	ललितपुर	816	760.24	
651. सीरौन	मड़ावरा	महरौनी	1426	789.247	सीरौन
652. सीरौन कलां	जखौरा	ललितपुर	1326	605.724	सीरौन कलां
653. सीरौन खुर्द	जखौरा	ललितपुर	1110	555.567	सीरौन खुर्द
654. सुनौरा	तालबेहट	तालबेहट	662	582.163	सुनौरा
655. सुनौरी	तालबेहट	तालबेहट	2407	1138.057	सुनौरी
656. सुनपुरा	तालबेहट	तालबेहट	105	157.931	
657. सुकलगुवां	महरौनी	महरौनी	492	464.925	
658. सुकाड़ी	महरौनी	महरौनी	1191	591.39	सुकाड़ी
659. सुनौनी	मड़ावरा	महरौनी	488	610.082	
660. सुनवाहा	बार	महरौनी	1863	1401.329	सुनवाहा
661. सुनवाहा गिरंट	बार	महरौनी	13	554.751	
662. सुखपुरा	बिरधा	ललितपुर	13	159.312	
663. सुरउवा	जखौरा	ललितपुर	267	421.056	
664. सुरवारा	जखौरा	ललितपुर	39	454.085	
665. सूडर	जखौरा	ललितपुर	124	1906.755	
666. सूरी कलां	बार	महरौनी	988	725.427	सूरी कलां
667. सूरी खुर्द	बार	महरौनी	902	439.333	
668. सेमरा डांग	बार	तालबेहट	1325	668.712	सेमरा डांग
669. सेमर खेड़ा	मड़ावरा	महरौनी	481	358.607	
670. सेमरा भागनगर	बार	महरौनी	1924	10859.13	सेमरा भागनगर
671. सेमरा बुजुर्ग	बार	महरौनी	511	342.694	
672. सेमरा	बिरधा	ललितपुर	709	462.479	सेमरा
673. सेरवांस खुर्द	जखौरा	ललितपुर	29	1546.643	
674. सेरवास कलां	तालबेहट	तालबेहट	2129	578.998	सेरवास कलां
675. सेवर	जखौरा	ललितपुर	30	202.204	
676. सैदपुर	महरौनी	महरौनी	5929		सैदपुर
677. सैपुरा खालसा	बिरधा	ललितपुर	275	149.528	

678. सैपुरा मुजुप्ता	बिरधा	ललितपुर	633	426.121	
679. सोंरई	जखौरा	तालबेहट	996	508.627	सोंरई
680. सोंरई	मड़ावरा	महरौनी	3650		सोंरई
681. सोजना	महरौनी	महरौनी	6324		सोजना
682. सौल्दा	मड़ावरा	महरौनी	356	1019.54	
683. हंसगुवां	तालबेहट	तालबेहट	639	754.395	
684. हंसार कलां/हंसारा	बिरधा	ललितपुर	137	1407.781	
685. हंसार कलां खुर्द	तालबेहट	तालबेहट	1685	1457.037	हंसार कलां खुर्द
686. हँसारी	तालबेहट	तालबेहट	465	427.53	
687. हंसारी	तालबेहट	तालबेहट	426	334.4	
688. हंसेरा	मड़ावरा	महरौनी	558	361.534	
689. हंसरा	मड़ावरा	महरौनी	447	458.942	
690. हंसरी	मड़ावरा	महरौनी	512	1411.352	
691. हजारिया	तालबेहट	तालबेहट	365	236.678	
692. हनौता	तालबेहट	तालबेहट	295	340.186	
693. हनौतिया	बिरधा	ललितपुर	353	120.004	
694. हनूपुरा	बार	तालबेहट	1569	776.762	हनूपुरा
695. हर्षपुर	जखौरा	तालबेहट	3191	3157.175	हर्षपुर
696. हरदारी	बिरधा	ललितपुर	122	684.711	
697. हिगौरा	तालबेहट	तालबेहट	892	258.65	

ग: गैर आबाद ग्राम

क्र. गैर आबाद स्थान का नाम	*तहसील*	*क्षेत्रफल (हे.)*
1. अटकना	महरौनी	78.185
2. असौरा	महरौनी	70.795
3. अमरपुर	महरौनी	230.479
4. उमरिया वीरान	ललितपुर	266.356
5. कपडेर खुर्द	तालबेहट	569.685
6. कुंवरपुरा	महरौनी	6967.073
7. कुंवरपुरा	तालबेहट	172.401
8. कंवरपुरा	तालबेहट	75.498
9. कैलवारा	ललितपुर	459.817
10. खिरिया खुर्द	ललितपुर	136.723
11. खिरिया कुम्हैडी	महरौनी	870.094
12. खैरी	महरौनी	235.129
13. चौका	ललितपुर	79.7

14. चौबारो	ललितपुर	141.378
15. छायन	महरौनी	300.38
16. छीपरा	महरौनी	139.305
17. जमुनियां कलां	महरौनी	626.184
18. जमुनियां खुर्द	महरौनी	196.669
19. जरुवा	महरौनी	215.382
20. झिलगुवां	ललितपुर	231.637
21. टीकरा गिरंट	महरौनी	599.77
22. डगडगी	महरौनी	143.779
23. तलगुवां	महरौनी	143.604
24. नाचनी	ललितपुर	382.061
25. नैनपुर	महरौनी	226.572
26. प्याऊ	ललितपुर	119.525
27. पपौरा	महरौनी	428.118
28. पठारी	ललितपुर	219.781
29. पटका	महरौनी	46.924
30. पटना सिंदवाहा	महरौनी	245.759
31. पियरा	महरौनी	601.274
32. ब्योहार पुरा	ललितपुर	220.117
33. बकलवारा	ललितपुर	532.083
34. बम्होरी बलीराम	महरौनी	234.011
35. बम्हौरी विरधा	ललितपुर	369.312
36. बहरावट	ललितपुर	476.971
37. बरखेरा	ललितपुर	299.509
38. बीर गिरंट	महरौनी	117.087
39. बीजरी	महरौनी	238.868
40. भगवाहा	ललितपुर	416.474
41. भैसर्रा	महरौनी	222.736
42. मछरका	महरौनी	134.016
43. मड़खेरा	महरौनी	545.909
44. मलऊवा	महरौनी	113.978
45. महुवा खेड़ा	महरौनी	380.825
46. मानिक चौक	ललितपुर	810.531
47. मेरती खुर्द	ललितपुर	194.742
48. मोनावरी	ललितपुर	217.807
49. रामपुर	महरौनी	178.713
50. रिछा	ललितपुर	218.953

51. लहर	महरौनी	656.409
52. शिवपुरा	ललितपुर	107.667
53. सांकली	ललितपुर	146.133
54. सिलावन गिरंट	महरौनी	362.759
55. हंसनवारा	ललितपुर	446.178
56. हजारिया	महरौनी	328.541
57. हद्दा	महरौनी	574.781
		23765.147

1. सभी आंकड़े संबंधित सरकारी विभाग की वेबसाइट से प्राप्त। जनगणना वर्ष 2001 के अनुसार

(घ) उपर्युक्त सूची में न आए ऐसे स्थान-नाम, जो जिले की मतदाता सूची के अनुभागों में दिए गए हैं[2]

क्र.	*स्थान का नाम*	*तहसील*	*क्र.*	*स्थान का नाम*	*तहसील*
1	*2*	*3*	*1*	*2*	*3*
1.	लखऊ	तालबेहट	9.	हटवारा	तालबेहट
2.	कछयाना-मोतीखेरा	तालबेहट	10.	वादीवर कलां	तालबेहट
3.	टूंड़ासर	तालबेहट	11.	वादीवर खुर्द	तालबेहट
4.	घुरवारा	तालबेहट	12.	विघा	तालबेहट
5.	बोलाई	तालबेहट	13.	माताटीला	तालबेहट
6.	बंशीपुरा	तालबेहट	14.	मजरा खिरिया	महरौनी
7.	बृजनगर	तालबेहट	15.	चीरा हार	ललितपुर
8.	पुनिया खेरा	तालबेहट			

2. http://ceouttarpradesh.nic.in/pdf2009/A226 & A227, searched on 30.1.2009 के आधार पर

(ङ) नगर क्षेत्रों के प्रमुख मुहल्ला-स्थानों के नाम[3]

क्र.	*स्थान - शहर*	*तहसील*	*क्र.*	*स्थान - शहर*	*तहसील*
1	*2*	*3*	*1*	*2*	*3*
1.	आज़ादपुरा	ललितपुर	8.	तालाबपुरा	ललितपुर
2.	सिविल लाइंस	ललितपुर	9.	लक्ष्मीपुरा	ललितपुर
3.	सुभाषपुरा	ललितपुर	10.	चौबयाना	ललितपुर
4.	गांधीनगर	ललितपुर	11.	चमरयाना	ललितपुर
5.	श्रद्धानंदपुरा	ललितपुर	12.	कसाईमंडी	ललितपुर
6.	चिरोलपुरा	ललितपुर	13.	मऊठाना	ललितपुर
7.	नदीपुरा	ललितपुर	14.	रामनगर	ललितपुर

15.	चांदमारी	ललितपुर	39.	ढुरा (मवेशी) बाजार	ललितपुर
16.	नेहरूनगर	ललितपुर	40.	कायस्थपुरा	महरौनी
17.	बंशीपुरा	ललितपुर	41.	लुहरयाना	महरौनी
18.	बजरियापुरा	ललितपुर	42.	कछिया कुआं पुरा	महरौनी
19.	सरदारपुरा	ललितपुर	43.	पंडों का पुरा	महरौनी
20.	भदइंयापुरा	ललितपुर	44.	मलैयापुरा	महरौनी
21.	रैदासपुरा	ललितपुर	45.	चौधरीपुरा	महरौनी
22.	अजीतापुरा	ललितपुर	46.	शेख का कुआं पुरा	महरौनी
23.	हरदीला	ललितपुर	47.	अथाईपुरा	महरौनी
24.	लकड़यापुरा	ललितपुर	48.	टीकमगढ. रोड	महरौनी
25.	तलैयापुरा	ललितपुर	49.	पुराना बाजार	महरौनी
26.	महावीरपुरा	ललितपुर	50.	ललितपुर रोड	महरौनी
27.	खिरकापुरा	ललितपुर	51.	जरुवापुरा	महरौनी
28.	सिद्धपुरा	ललितपुर	52.	सोजना रोड	महरौनी
29.	घुसयाना	ललितपुर	53.	नया बाजार	महरौनी
30.	बड़ापुरा	ललितपुर	54.	खरवांचों का पुरा	महरौनी
31.	पिसनारी	ललितपुर	55.	सरफयाना	तालबेहट
32.	रावतयाना	ललितपुर	56.	तिबरयाना	तालबेहट
33.	कटरा बाजार	ललितपुर	57.	चौबयाना	तालबेहट
34.	सावरकर चौक (सनीचरा चौराहा)	ललितपुर	58.	गंज	तालबेहट
			59.	हजारिया महादेव-पाली	ललितपुर
35.	बांध कालौनी	ललितपुर	60.	कुरयाना-पाली	ललितपुर
36.	छत्रसालपुरा	ललितपुर	61.	नटयाना-पाली	ललितपुर
37.	झंसियापुरा	ललितपुर	62.	पंडियाना-पाली	ललितपुर
38.	रावतयाना	ललितपुर	63.	टिपुआ गाँधी चौक-पाली	ललितपुर

3. मतदाता सूची, ललितपुर गजेटियर तथा शोधकर्ता द्वारा किए स्थानों के सर्वेक्षण पर आधारित

च- वनग्राम

1. गौना रेंज तीन
2. तालबेहट रेंज नौ
3. बार रेंज चार
4. महरौनी रेंज
5. मड़ावरा रेंज तीन
6. ललितपुर रेंज चार

कुल चौबीस

परिशिष्ट दो

(क) प्रमुख प्रत्यय

		तालबेहट	*महरौनी*	*ललितपुर*	*योग*
1.	अ	6	8	6	20
2.	अई	3	4	2	9
3.	अऊ	.	1	1	2
4.	अना	2	.	3	5
5.	अनी	.	.	3	3
6.	अइया	.	.	1	1
7.	अगा	.	.	1	1
8.	अया	.	.	1	1
9.	अऊवा	.	1	4	5
10.	अहरी	.	.	1	1
11.	अरऊ	.	.	1	1
12.	अवा	.	.	1	1
13.	अवरी	.	.	1	1
14.	अट	.	4	.	4
15.	अवली	.	3	1	4
16.	अवटा	.	1	.	1
17.	अरान	1	2	.	3
18.	अवलैन	1	.	.	1
19.	अर/रा/र्रा/री	1	7	9	17
20.	अवांस/अवांसा	.	1	4	5
21.	अलौन	.	.	1	1
22.	अरिया	.	1	.	1
23.	अवनी	3	1	1	5
24.	अरो	.	1	.	1
25.	अवरा	.	.	.	0
26.	अटा	.	.	1	1
27.	आ	36	35	64	135
28.	आई	1	4	3	8

29.	आरी	6	5	10	21
30.	आवर	1	.	.	1
31.	आवन	3	2	1	6
32.	आहा	1	.	.	1
33.	आहो	.	.	1	1
34.	आर	.	2	1	3
35.	आवली	.	1	1	2
36.	आऊ	.	.	1	1
37.	आहट	.	1	.	1
38.	आँव	1	1	.	2
39.	आटा	.	3	.	3
40.	आड़	.	1	.	1
41.	आव	.	1	.	1
42.	आना	.	4	.	4
43.	आरा	.	2	3	5
44.	आड़ी	.	1	.	1
45.	आह	.	1	.	1
46.	आना	.	1	.	1
47.	आवल	.	.	1	1
48.	आय	.	.	2	2
49.	आवट	.	.	1	1
50.	इया/यां	6	14	20	40
51.	इयारी	.	.	1	1
52.	इल	.	.	2	2
53.	ई	9	17	13	39
54.	ईसा	.	.	1	1
55.	उवा	1	4	2	7
56.	ऊ	.	1	.	1
57.	एही	.	.	1	1
58.	एला	2	.	.	2
59.	एंगा	1	.	.	1
60.	एंदा	1	.	.	1
61.	एंड़	1	.	.	1
62.	एड़ी	1	.	1	2
63.	ऐन	.	1	.	1
64.	ऐरा/एर	3	1	4	8
65.	एठी	.	.	1	1
66.	ओ/ओं	3	.	2	5
67.	ओनी	.	1	.	1

68.	ओरा	.	2	1	3
69.	ओगर	.	1	.	1
70.	ओखरा	.	1	.	1
71.	ओली	.	1	1	2
72.	ओवरा	.	.	1	1
73.	ओई	.	.	1	1
74.	ओदी	.	.	1	1
75.	औरी	4	5	6	15
76.	औरा	9	15	17	41
77.	औना	1	2	.	3
78.	औठा	1	.	.	1
79.	औन	3	2	7	12
80.	औड़ी	.	2	.	2
81.	औता	1	.	.	1
82.	औंदा/औदा	.	2	7	9
83.	ओंदा/औद	.	.	.	0
84.	औली	.	4	3	7
85.	औनी	.	9	2	11
86.	औल्दा	.	1	.	1
87.	औनियां	.	1	1	2
88.	औला	.	.	2	2
89.	औल	1	1	1	3
90.	औदिया	.	1	2	3
91.	औथरा	.	.	1	1
92.	औतिया	.	.	1	1
93.	औड़ा	.	1	.	1
94.	ना	.	1	.	1
95.	वा/वां	1	.	1	2
96.	दा	.	1	3	4
97.	न	.	1	.	1
98.	का	.	1	.	1
99.	वाना	.	.	1	1
100.	लींगा	.	1	.	1
101.	खड़ी	.	1	.	1
102.	वाहा	.	6	2	8
103.	छौल	.	1	.	1
104.	गाना	.	1	.	1
	योग	115	204	242	561

(ख) प्रमुख उपसर्ग

		तालबेहट	*महरौनी*	*ललितपुर*	*योग*
1.	सु	2	.	.	2
2.	वि	2	.	2	4
3.	अ	.	2	1	3
4.	दु	.	.	1	1
	योग	4	2	4	10

(ग) प्रमुख पूर्वपद

		तालबेहट	*महरौनी*	*ललितपुर*	*योग*
1.	विघा	.	.	1	1
2.	नया	1	.	1	2
3.	सेमर/रा	1	3	.	4
4.	गेवरा	1	.	.	1
5.	पहाड़ी	.	2	.	2
6.	कारी/कारो/काला	3	1	1	5
7.	खिरिया	3	6	4	13
8.	खैरी	1	.	.	1
9.	खैरा	1	.	.	1
10.	पुरा	2	.	.	2
11.	जमौरा	1	.	.	1
12.	बिनेका	1	.	1	2
13.	चीरा	.	.	1	1
14.	कुआ	.	2	1	3
15.	बम्हौरी/बम्होरी	3	5	5	13
16.	मऊ	.	.	1	1
17.	वर्मा	1	.	.	1
18.	महुवा	1	.	.	1
19.	ताल	.	.	1	1
20.	पूरा	2	.	.	2
	योग	22	19	17	58

(घ) प्रमुख परपद

		तालबेहट	*महरौनी*	*ललितपुर*	*योग*
1.	पुरा	10	9	27	46
2.	पुर	9	16	8	33
3.	गुवां	7	7	3	17
4.	गाँव	.	3	2	5
5.	धाना	.	.	3	3
6.	वास/वांस/वांसा	2	2	4	8
7.	खेड़ा/खेरा/खिरिया	3	3	5	11
8.	सागर	.	2	.	2
9.	बेहट	1	.	1	2
10.	वारा/वार/वारी	4	10	18	32
11.	तला	.	2	1	3
12.	कली	1	1	.	2
13.	मजरा	.	1	.	1
14.	नगर	.	.	3	3
15.	बाज़ार	.	.	2	2
	योग	37	56	77	170

(ङ) प्रयुक्त विभेदक

1.	कलां	10	5	13	28
2.	खुर्द	8	10	14	32
3.	बुजुर्ग	.	2	.	2
4.	डांग	5	.	.	5
5.	वांसी	1	.	.	1
6.	खेत	1	.	1	2
7.	पहाड़ी/पहाड़/पठार	1	.	2	3
8.	टोरन	1	1	1	3
9.	माफ/माफी	2	1	1	4
10.	घाट	.	1	2	3
11.	बेहटा	1	.	.	1
12.	सर	1	.	.	1
13.	गिरन्ट	.	5	.	5
14.	गुढ़ा	.	.	1	1
15.	पचौड़ा	1	.	.	1

16.	बिहार	1	.	.	1
17.	खड़ैत	1	.	.	1
18.	शहना	1	.	.	1
19.	उवारी	.	1	.	1
20.	कुम्हैड़ी	.	1	.	1
21.	भारंजू	.	1	.	1
22.	लटकन्जू	.	1	.	1
23.	मिश्र	.	1	1	2
24.	कछया	.	1	.	1
25.	घोसी	.	1	.	1
26.	मड़ावरा	.	3	.	3
27.	भागनगर	.	1	.	1
28.	सिंदवाहा	.	2	.	2
29.	नाराहट	.	2	.	2
30.	बलीराम	.	1	.	1
31.	बहादुर सिंह	.	1	.	1
32.	कुवां	.	1	.	1
33.	वीरान	.	.	1	1
34.	डोंगरा	.	.	2	2
35.	छतारा	.	.	1	1
36.	पाली	.	.	2	2
37.	कोड़र	.	.	1	1
38.	तिवारी	.	.	1	1
39.	खालसा	.	.	1	1
40.	मुजुप्ता	.	.	1	1
41.	सेमरा	.	.	1	1
42.	गोरी	.	.	1	1
43.	नकीब	.	.	1	1
44.	बिजलौन	.	.	1	1
45.	राइन	.	.	1	1
46.	नांगल	.	.	1	1
47.	विरछा	.	.	1	1
48.	वंशा	.	.	2	2
49.	महावत	.	.	1	1
50.	जागीर	.	.	1	1
51.	स्वामी	.	.	1	1
52.	बाग	.	.	1	1
	योग	35	43	59	137

संदर्भ-स्रोत सूची

(क) हिंदी ग्रंथ

1. अभिधान अनुशीलन, डॉ. विद्याभूषण 'विभु', हिंदुस्तानी अकेडमी उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 1958
2. आंचलिक-स्थान-अभिधान-अनुशीलन, डॉ. कामिनी, आराधना ब्रदर्स, कानपुर, प्रथम संस्करण 1983
3. उपनाम: एक अध्ययन (हिंदी उपनामों का अनुशीलन एवं अन्वेषण), डॉ. शिवनारायण खन्ना, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, प्रथम संस्करण 1978
4. चंदेलकालीन कला और संस्कृति (चांदपुर-दूधई के परिप्रेक्ष्य में), डॉ. महेंद्र वर्मा, रामानंद विद्या भवन, नई दिल्ली 1992
5. चंदेलकालीन बुंदेलखंड का इतिहास, डॉ. अयोध्याप्रसाद पांडेय, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण 1968
6. झांसी की रानी (उपन्यास), महाश्वेता देवी, अनुवादक डॉ. रामशंकर द्विवेदी, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण द्वितीय आवृत्ति 2003
7. नाम विज्ञान, डॉ. चितरंजन कर, विवेक प्रकाशन, रायपुर, प्रथम संस्करण 1982
8. निषाद बांसुरी, श्री कुबेरनाथ राय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण 1974
9. प्रतीक शास्त्र, श्री परिपूर्णानंद वर्मा, उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ तृ0 सं. 2006
10. पाणिनिकालीन भारतवर्ष, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, तृतीय संस्करण 1996
11. बानपुर विविधा, प्रधान संपादक पं. बाबूलाल द्विवेदी, संपा. डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी, पं. जानकी प्रसाद द्विवेदी स्मृति सेवा समिति छिल्ला (बानपुर) ललितपुर, 2008
12. बुंदेली: इतिहास और संस्कृति, संपादक डॉ. कपिल तिवारी, आदिवासी लोककला अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल, प्रथम संस्करण 2005
13. बुंदेली और उसके क्षेत्रीय रूप, डॉ. कृष्णलाल 'हंस', हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, प्रथम संस्करण 1976
14. बुंदेली-भाषी क्षेत्र के स्थान-अभिधानों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन, डॉ. कामिनी, आराधना ब्रदर्स कानपुर प्रथम संस्करण 1985

15. बुंदेलखंड का वृहद् इतिहास (राजतंत्र से जनतंत्र), डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी, भारत भवन पुरानी टेहरी टीकमगढ़, प्रथम संस्करण 1991
16. बुंदेलखंड के मूर्तिशिल्प, डॉ. महेंद्र वर्मा, प्रकाशन विभाग सूचना मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008
17. बुंदेलखंड: साहित्यिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक वैभव, डॉ. रमेशचंद्र श्रीवास्तव, बुंदेलखंड प्रकाशन बांदा, प्रकाशन वर्ष अलिखित, 2004 ई में ख़रीदी गई।
18. भारत का भाषा सर्वेक्षण (खंड 1 भाग 1), जॉर्ज ग्रियर्सन, अनु0 डॉ. उदयनारायण तिवारी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, तृतीय संस्करण 1979
19. भारत की भाषा समस्या, डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, तृतीय संस्करण 1989
20. भाषा-भूगोल, डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वितीय संस्करण 2007
21. भाषा विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल इलाहाबाद, 48वां संस्करण 2004
22. भीली लोकमाताएं (दशपुर जनपद के भील जनपद की सहचर देवियां), डॉ. पूरन सहगल, सं. डॉ. कपिल तिवारी, आदिवासी लोककला एवं तुलसी साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद भोपाल, 2009
23. मिथक और यथार्थ, डॉ. दामोदर धर्मानंद कोसंबी, अनुवादक डॉ. नंदकिशोर नवल, ग्रंथशिल्पी दिल्ली, हिंदी संस्करण द्वितीय 2001
24. लोधी राजपूत: एक संक्षिप्त परिचय, पं. बाबूलाल द्विवेदी, लोधी राजपूत समाज कुआगांव (बानपुर) ललितपुर, संवत् 2028
25. वैदिक इंडैक्स (वैदिक नामों और विषयों की व्याख्यात्मक अनुसूची) भाग 1 एवं भाग 2, ए.ए. मैक्डोनेल एवं ए.बी. कीथ, अनुवादक श्री रामकुमार राय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी प्रथम संस्करण क्रमशः संवत् 2018 एवं संवत् 2019
26. शब्द परिवार कोश, डॉ. बदरीनाथ कपूर, राजपाल एंड संज दिल्ली, 1995
27. शब्द श्री, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984
28. संस्कृति के चार अध्याय, डॉ. रामधारीसिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 1962 पुनरावृत्ति
29. सांस्कृतिक भूगोलकोष, श्री श्यामसुंदर भट्ट, मोदी एंटरप्राइजेज, अजमेर रोड जयपुर, द्वितीय संस्करण 2004
30. श्रीरामचरित मानस, गोस्वामी तुलसीदास, गीताप्रेस गोरखपुर, 49वां संस्करण, संवत् 2052
31. हिंदी: उद्भव, विकास और रूप, डॉ. हरदेव बाहरी, किताब महल इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1965 प्रस्तुत संस्करण 2008
32. हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के समान तत्व, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, हिंदुस्तानी अकेडमी इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2005
33. हिंदी भाषा, डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रथम सं. 1966 प्रस्तुत संस्करण, 2008
34. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास, डॉ. उदयनारायण तिवारी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण 2007

35. हिंदी भाषा का इतिहास, डॉ. भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण 2004
36. हिंदी व्याकरण, पं. कामता प्रसाद गुरु, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, संवत् 2017
37. हिंदी शब्द सामर्थ्य, डॉ. कैलाश चंद्र भाटिया, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, 2007
38. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, पेपर बैक संस्करण तृतीय, संवत् 2060

(ख) अंग्रेजी ग्रंथ

1. Orissa: From Place Names in Inscriptions (260 BC-1200 AD), Dr. Malti Mahajan, Sharda Publishing House, Inderlok Delhi, 2003
2. The Forts of Bundelkhand, Rita Sharma & Vijay Sharma, Rupa & Co. New Delhi, 2006.

(ग) गजेटियर्स, प्रतिवेदन (रिपोर्टें), अभिनंदन ग्रंथ, स्मारिकाएं, मानचित्र

1. Report on the Antiquities in the District of Lalitpur, North-West Provinces India, Poomo Chandra Mukherjee, Indological Book House Delhi/Varanasi, 1972.
2. Jhansi Gazetteer, Chapter XIX (Smt) Esha Basanti Johsi, Government of Uttar Pradesh, 1965.
3. उत्तर प्रदेश जिला गजेटियर्स- ललितपुर, प्रमुख संपादक डॉ. वीरेंद्र सिंह, उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, 1997
4. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (1988-89) विकास खंड जखौरा जनपद ललितपुर, सं. डॉ. राकेश तिवारी, उ0 प्र0 राज्य पुरातत्व विभाग लखनऊ, 1994
5. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (1989-90) विकास खंड बार जनपद ललितपुर, सं. डॉ. राकेश तिवारी, उ0 प्र0 राज्य पुरातत्व विभाग लखनऊ,
6. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (1990-91) विकास खंड महरौनी जनपद ललितपुर, सं. डॉ. राकेश तिवारी, उ0 प्र0 राज्य पुरातत्व विभाग लखनऊ, 1997
7. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (1993-94) विकास खंड मड़ावरा जनपद ललितपुर, सं. डॉ. राकेश तिवारी, उ0 प्र0 राज्य पुरातत्व विभाग लखनऊ, 2001
8. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (1995-96) विकास खंड तालबेहट जनपद ललितपुर, सं. डॉ. राकेश तिवारी, उ0 प्र0 राज्य पुरातत्व विभाग लखनऊ, 2001-02
9. पुरातात्विक सर्वेक्षण रिपोर्ट (1996-97) भाग 1 एवं 2 विकास खंड बिरधा जनपद ललितपुर, सं. डॉ. राकेश तिवारी, उ0 प्र0 राज्य पुरातत्व विभाग लखनऊ, संस्करण क्रमश: 2003 एवं 2004
10. बुंदेलखंड का लोकजीवन (1994-95 में संस्कृति विभाग उ.प्र. द्वारा कराया गया सर्वेक्षण) श्री अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' नमन प्रकाशन उरई, द्वितीय संस्करण 2004
11. बुंदेलखंड: प्रकृति और पुरुष (प्रो. प्रेमनारायण रूसिया अभिनंदन ग्रंथ), सं. कैलाशबिहारी द्विवेदी एवं अन्य, प्रो. प्रेमनारायण रूसिया अभिनंदन समारोह समिति टीकमगढ़, 2002

12. श्री गणेश प्रसाद वर्णी स्मृति ग्रंथ, संपादक पन्नालाल साहित्याचार्य, श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन विद्वत्परिषद वर्णी जैन शताब्दी, संवत् 2031, सन् 1974
13. ललितपुर जनपद स्वर्ण जयंती स्मारिका '98, प्रधान संपादक एवं प्रकाशक श्री संतोष कुमार शर्मा ललितपुर
14. ललितपुर, विकास पुस्तिका 2007, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग ललितपुर, 2006-07
15. बुंदेलखंड संवाद (संयुक्त बुंदेलखंड प्रगतिशील जनवादी लेखक सम्मेलन 2002) सं. सुधा गुप्ता, 14-15 सितंबर 2002
16. मानचित्र जनपद ललितपुर श्री बांकेलाल, जिलाधिकारी ललितपुर (11.11.1978 से 3.6.1982) अमित सेल्स कारपोरेशन झोकन बाग, झांसी

(घ) वेबसाइटें

1. http://www.censusindia.gov.in/Census_Data/Village_Directory/List_of_Villages/
2. http://lalitpur.nic.in/census2001
3. http://upgov.nic.in/spatrika
4. http://en.wikipedia.org/wiki/Place_name_origins
5. http://www.absoluteastronomy.com/topics/Toponymy
6. http://ceouttarpradesh.nic.in/pdf2009/A226 & A227
7. http://www.colorado.edu/csilw/arapahoproject/coplacenames/placenaming.html
8. http://www.fun-with-words.com/reviews_landscape_place_name.html
9. http://www.irfca.org/docs/Place_names.html
10. http://lawmin.nic.in/legislative/election
11. http://sec.up.nic.in/keystatistics/listofgrampanchayats
12. http://www.pustak.org/bs/home.php?mean=....
13. http://www.mapsofindia.com/maps/uttarpradesh/districts/lalitpur.htm
14. http://rni.nic.in/display-place.asp
15. http://shabdavali.blogspot.com
16. http://in.jagran.yahoo.com/local/uttarpradesh/4_1_5800985
17. http://bhuvan2.nrsc.gov.in
18. http://irrigation.up.nic.in/pbr/bhaunrat.htm and utari.htm

(ङ) कोश ग्रंथ

1. उर्दू हिंदी शब्दकोश, संकलनकर्ता मुहम्मद मुस्तफ़ा खां, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ, 11वां संस्करण 2006
2. ज्ञान शब्दकोश, संपादक श्री मुकुंदी लाल श्रीवास्तव, ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, संशोधित संस्करण 1993
3. बुंदेली शब्दकोश, डॉ. कैलाशबिहारी द्विवेदी, सत्येंद्र प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2002
4. संस्कृत हिंदी कोश, श्री वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1969 पुनर्मुद्रण 1997

5. समांतर कोश (हिंदी थिसारस) अनुक्रम खंड एवं संदर्भ खंड, अरविन्द कुमार एवं कुसुम कुमार, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2006 तीसरी आवृत्ति 2005
6. ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी-अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश, सं. डॉ. सुरेश कुमार एवं डॉ. रमानाथ सहाय, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008 चौथी आवृत्ति 2008

(च) अप्रकाशित पी-एच.डी उपाधि शोध प्रबंध

1. स्थान-नामों का व्युत्पत्तिगत, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन (जालौन जनपद के संदर्भ में), डॉ. यामिनी, विक्रम वि.वि. उज्जैन, स्वीकृत 1972
2. भारतीय मुस्लिम पुरुषों के अभिधान: संस्कृति एवं भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ. मधुर उप्रेती, डॉ. भीमराव अंबेडकर वि.वि. आगरा, स्वीकृत 1991
3. जनपद कानपुर के स्थान-नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, डॉ. सुशील कुमार पांडेय, छत्रपतिशाहूजी महाराज वि.वि. कानपुर, स्वीकृत 1989

(छ) पत्र-पत्रिकाएं

1. बुंदेली बसंत 2009 एवं 2010 संपादक डॉ. बहादुरसिंह परमार, बुंदेली विकास संस्थान बसारी, छतरपुर, 2009 एवं 2010
2. वाक् (संस्कृत), मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी, जून 1999
3. चौमासा, वर्ष 24 अंक 77, जुलाई-अक्टूबर 2008, सं. डॉ. कपिल तिवारी, आदिवासी लोककला एवं तुलसी साहित्य अकादमी भोपाल
4. सम्मेलन पत्रिका (शोध त्रैमासिक) भाग 88 संख्या 1 पौष-फाल्गुन संवत् 2059 (सन् 2002), संपादक श्री विभूति मिश्र, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग
5. दैनिक जागरण कानपुर, 5 फरवरी 2009 एवं 26 अप्रैल 2009
6. ईसुरी अंक 1, बुंदेली पीठ डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर
7. डॉ. रामशंकर द्विवेदी उरई द्वारा दिनांक 17.11.2009 को प्राप्त शोध-कार्यों की सूची

(ज) पुस्तकालय

1. केंद्रीय पुस्तकालय, डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, सन् 2003 में
2. कंन्द्रीय पुस्तकालय, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, फरवरी, 2009 में
3. केंद्रीय पुस्तकालय, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, मई 2009 में
4. केंद्रीय पुस्तकालय, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा, दिसंबर 2007 में
5. केंद्रीय पुस्तकालय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, नवंबर 2004 में
6. पुस्तकालय, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, जून 2009 में
7. पुस्तकालय, गांधी महाविद्यालय, उरई, सन् 2003 से
8. पुस्तकालय, दयानंद वैदिक महाविद्यालय, उरई, दिनांक 16 नवंबर 2009 को
9. राजकीय जिला पुस्तकालय, उरई, सन् 2003 से